ममता कालिया का कथा - साहित्यःपरिवेशगत यथार्थ

(हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय की पीएच .डी

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध – प्रबंध)

2018

शोध - छात्रा

रूपा म. नाईक

शोध - निर्देशिका

डॉ.इशरत खान

प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

गोवा विश्वविद्यलय, गोवा

गोवा विश्वविद्यलय, तालेगाँव - गोवा- 403206

CERTIFICATE

As per the University Ordinance, I certify that the thesis entitled **"MAMATA KALIA KA KATHA SAHITYA: PARIVESHGATH YATHARTH" "ममता कालिया का कथा-साहित्यः परिवेशगत यथार्थ"** is a record of research work done by the candidate Ms. Rupa M. Naik during the period of study under my guidance and that it has not previously formed the basis of the award to student for any degree, diploma, associateship, fellowship or any other similar title. The thesis represents independent work on the part of student.

Date :

Research Guide,
Dr. Isharat Khan
(Dean),
Department of Hindi,
Goa University.

DECLARATION

I, the undersigned hereby declare that the thesis entitled **"Mamta Kalia Ka Katha Sahitya: Pariveshgath Yatharth"** has been written exclusively by me and no part of this thesis has been submitted earlier for the award of this University or any other University.

Date :
Maheshwar.Naik
Place : Goa University,
Taleigao-Plateau, Goa.

Ms.Rupa

Lecturer,
Rosary College Of
Commerce & Arts, Navelim,
Salcete - Goa.

प्राक्कथन

साठोत्तरी कथासाहित्य में ममता कालिया का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका अनुभव संसार गहन एवं व्यापक है। इन्हीं अनुभवों के कारण उनके साहित्य में कल्पना की उड़ान कम और यथार्थ की भूमि अधिक है। इसी के परिणाम स्वरूप उनका संपूर्ण साहित्य यथार्थवादी परिवेश की उपज है। उनके पात्र भी हमारे आस-पास के देखे-सुने प्रतीत होते हैं। उनमें सत्-असत् परिवेश दोनों ही देखने को मिलते हैं। उनके पात्र परिवेश के अनुकूल ही आचरण करते है। उनके पात्र एवं घटनाएँ काल्पनिक लोक के नहीं लगते। समाज के यथार्थ को यथार्थवादी भाषा के प्रस्तुत करने के कारण उनके लेखन में स्वाभाविकता आ गई है। उनके कथा साहित्य में सामाजिक एवं शैक्षिक परिवेश का दस्तावेज बन गया है। यही ममता कालिया के कथासाहित्य की विशेषता रही हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को सुविधा की दृष्टि से पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। साहित्यकार का दृष्टिकोण, उसका जीवन-दर्शन, चिंतन तथा परिवेश, उसके साहित्य को प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता रहता है। इसीलिए किसी भी साहित्यकार के जीवन, व्यक्तित्व व परिस्थितियों का ज्ञान उसके साहित्य को समझने में सहायक सिद्ध होता है। इसीलिए प्रथम अध्याय में ममता कालिया के जीवन एवं साहित्य का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत ममता जी के जन्म, शिक्षा-संस्कार, परिवेश, आचार-विचार, मित्र-परिवार, नौकरी, साहित्य लेखन की प्रेरणा तथा साहित्य का परिचय दिया गया है। इसके साथ ही उनके स्वभाव की विशेषताओं को भी अंकित किया है। उनका व्यक्तित्व एक प्रकार से आत्मसंयत और सद्भावना युक्त है। वे आक्रमक या एग्रेसिव नहीं है। समायोजन उनके व्यक्तित्व का खास गुण है। ममता जी, जीवन को सहजता से जीने में विश्वास रखती है। इसलिए दिखावे से उन्हें परहेज है। ममता जी के अब तक आठ उपन्यास तथा लगभग

दस कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इसके अतिरिक्त उन्होंने नाटक एवं बाल साहित्य भी लिखा है। ममता जी को कई पुरस्कार प्राप्त हुए है।

'परिवेशगत यथार्थ एवं साहित्य' नामक द्वितीय अध्याय के अंतर्गत परिवेश एवं यथार्थ के अर्थ, परिभाषा स्वरूप विविध रुपों की चर्चा की गयी है। इसी के साथ परिवेशगत यथार्थ एवं साहित्य के पारस्पारिक संबंधों को स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है।

'ममता कालिया का कहानी साहित्यःपरिवेशगत यथार्थ' नामक तृतीय अध्याय में कहानियों का विस्तृत विवेचन किया गया है। सामाजिक परिवेशगत यथार्थ, पारिवारिक परिवेशगत यथार्थ, राजनीतिक परिवेशगत यथार्थ, आर्थिक परिवेशगत यथार्थ, धार्मिक परिवेशगत यथार्थ, सांस्कृतिक परिवेशगत यथार्थ, शैक्षिक परिवेशगत यथार्थ के आधार पर कहानियों का विश्लेषण किया गया है। ममता जी की कहानियों में परिवेशगत यथार्थ के विविध आयामों को तलाशने की कोशिश की है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है- 'ममता कालिया का उपन्यास साहित्यःपरिवेशगत यथार्थ' इसके अंतर्गत भी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक परिवेश को उपन्यास में यथार्थ रूप से अभिव्यक्त किया है।

पंचम अध्याय का शीर्षक है- 'ममता कालिया का कथासाहित्यः भाषा एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य' इसके मुख्य रूप से ममता जी के कथासाहित्य का भाषिक यथार्थ के रूप विश्लेषण किया गया है। इसका उत्तम उदाहरण है, उपन्यास 'दुक्खम सुक्खम' इस उपन्यास का केंद्र मथुरा एवं वृंदावन हैं। वहाँ ब्रजभाषा बोली जाती है। इसीलिए संपूर्ण उपन्यास में ब्रजभाषा छायी हुई है। इससे उपन्यास में स्वाभाविकता आ गयी है।

'उपसंहार' शीर्षक के अंतर्गत सम्रग शोध का सार प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध-कार्य को संपन्न करने में हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय की वरिष्ठ व्याख्याता आदरणीय डॉ. इशरत खान के प्रति में हृदय से ऋणी हूँ। उनके प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं स्नेह के कारण ही यह शोध-प्रबंध का कार्य संभव हो सका।

हिंदी विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ.रवींद्रनाथ मिश्र की मैं विशेष आभारी हूँ। उन्होंने मुझे शोध कार्य के लिए संपूर्ण सहयोग दिया।

आदरणीय डॉ.बी.के.शर्मा रोहिताश्व की मैं आभारी हूँ। उन्होंने मुझे शोध-कार्य करने की अनुमति दी, श्रीमती वृषाली मांद्रेकर का भी हमेशा सहयोग प्राप्त रहा। श्रीमती संजना नाईक के सहयोग के लिए धन्यवाद।

रोझरी महाविद्यालय के व्यवस्थापन के सचिव तथा प्राचार्य डॉ.सीमांव डीनिस के सौजन्य के प्रति आभारी हूँ। रोजरी महाविद्यालय के सभी सहयोगी प्राध्यापकों के प्रति मैं आभारी हूँ।विद्या प्रकाशन, कानपुर के प्रति विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने बिनावलंब ग्रंथों की माँग पूरी की।

अध्ययन के लिए विविध ग्रंथालयों से ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ तथा अन्य प्रकार की सामग्री एकत्रित करनी पड़ी। उन सभी ग्रंथालयों के प्रति विशेष आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरी इस शैक्षिक सफलता में मेरे माता-पिता, भाई के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। इस शोध प्रबंध के टंकन का काम श्रीमती कपिला देसाई ने अत्यंत सुचारू रूप से किया जिसके लिए मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे जीवन-साथी, श्री.सुजय देसाई की प्रेरणा तथा स्नेहल सहयोग की छाया मुझे सदैव मिलती रही। उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना महज एक औपचारिकता होगी।

शोध कार्य के दौरान, स्नेह से वंचित रहकर भी अपनी प्यार भरी शिकायतें मन में ही रखने वाली बेटी यश्वी के प्रति स्नेह।

इस शोध-कार्य को संपन्न करते समय जिन व्यक्तियों ने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहयोग दिया है उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

दिनांकः 11/01/2017 भवदीय

स्थानः माडल – मडगांव

गोवा. (रुपा म. नाईक)

" ममता कालिया का कथा – साहित्यः परिवेशगत यथार्थ "

अनुक्रमणिका

1) <u>कथाकार ममता कालियाः जीवन एवं साहित्य</u> 1 - 75

1.1 जीवन-परिचय

1.2 व्यक्तित्व के विविध आयाम

1.3 साहित्य-सृजन के प्रेरणा स्त्रोत

1.4 साहित्यिक-परिचय

2) <u>परिवेशगत यथार्थः एवं साहित्य</u> 76 - 110

2.1 परिवेशः अर्थ एवं परिभाषा

2.2 परिवेश का स्वरूप एवं वैशिष्ट्य

2.3 यथार्थःअर्थ एवं परिभाषा

2.4 यथार्थ एवं यथार्थवाद

2.5 यथार्थ: स्वरूप एवं विशेषताएँ

2.6 परिवेशगत यथार्थ के रूप

2.7 परिवेशगत यथार्थ एवं साहित्य

3) <u>ममता कालिया का कहानी साहित्यःपरिवेशगत यथार्थ</u> 111 - 191

3.1 सामाजिक परिवेशगत यथार्थ

3.2 पारिवारिक परिवेशगत यथार्थ

3.3 राजनीतिक परिवेशगत यथार्थ

3.4 आर्थिक परिवेशगत यथार्थ

3.5 धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेशगत यथार्थ

3.6 शैक्षिक परिवेशगत यथार्थ

4) <u>ममता कालिया का उपन्यास साहित्यः</u>

<u>परिवेशगत यथार्थ</u> 192 - 273

4.1 सामाजिक परिवेशगत यथार्थ

4.2 पारिवारिक परिवेशगत यथार्थ

4.3 राजनीतिक परिवेशगत यथार्थ

4.4 आर्थिक परिवेशगत यथार्थ

4.5 धार्मिक-सांस्कृतिक परिवेशगत यथार्थ

4.6 शैक्षिक परिवेशगत यथार्थ

4.7 वैश्विक परिवेशगत यथार्थ और ममता कालिया का कथा साहित्य

5) <u>ममता कालिया का कथा साहित्यः भाषा एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य</u> **274 – 311**

5.1 भाषा एवं शिल्प का विवेचन

5.2 भाषिक वैशिष्ट्य

5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

6) उपसंहार **312 - 327**

6.1 ममताजी का कथा साहित्यः उपलब्धियाँ एवं समस्याएँ

सहायक ग्रंथ-सूची

1. कथाकार ममता कालियाः जीवन एवं साहित्य

किसी भी संवेदनशील एवं समर्थ रचनाकार को पहचानने एवं उसकी रचनात्मक शक्ति एवं क्षमता को व्याख्यायित करने से पूर्व उसकी सर्जनात्मक आधारभूमि को समझना अति आवश्यक होता है। यह आधारभूमि किसी भी साहित्यकार को समझने में सहायक होती है। इसकी प्राप्ति रचनाकार को अपने बचपन, युग एवं परिवेश से ही होती है। घर-परिवार के वातावरण के अनुसार व्यक्ति के प्रतिभा के बीज प्रस्फुटित होते हैं। रचनाकार का युग और उसके परिवेश के साथ उसके व्यक्तित्व की गूंज उसकी कृतियों में होती है। वंशानुगत स्वभाव, प्रकृति और परिवेश संबंधी विशेषताएँ उसके कृतियों के माध्यम से उभरती है। लेखक अपनी संवेदना, विशेष से अपना अंतरंग टाटोलता है फिर अपने आसपास के परिवेश से कच्चा माल उठाता है और रूपांतरित कर उसे एक नया रूप देता है, नई संज्ञा देता है। रचनाकार अपने समकालीन समय को व्यापक संदर्भी से जोड़ता चला जाता है। “रचना के गठन में निहित रचनाकार का अपना निज का एकांत है- चिंतन है उसका चिंतन, उसकी सोच है जो गहरे में उसकी मानसिकता की जड़ों से उभरी है। वही उसके परिवेश और मूल्यों से जुड़ी जुटी है। उनमें रसी-बसी है।”**(1)**

दरअसल लेखक जो सोचता है, जीता है और लिखता है वह मूल रूप से उसी का संजोया हुआ नहीं होता। लेखक के अनजाने ही, एक परंपरा, एक जीवन शैली, अंदर बाहर की एक दुनिया उसे घेरे रहती है। अतःरचनाकार के साहित्य का वस्तुपरक मूल्यांकन करने के लिए परिस्थितियों, अनुभवों, प्रेरणाओं और विचारों आदि की जानकारी आवश्यक होती है।

1.1 जीवन परिचय

जब किसी कलाकार की कृतियाँ हमें प्रभावित करती हैं तब हमारे मन में उस कलाकार को अच्छी तरह से जानने की जिज्ञासा पैदा होती है। इस जानने के प्रयास में ही हम रचनाकार के जन्म, शिक्षा एवं पारिवारिक वातावरण को जानने की कोशिश करते हैं।

1.11 जन्म तिथि एवं स्थानः

ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरी मथुरा के निकट प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण एक रम्य स्थली है- वृदांवन। इसी वृंदावन में हिंदी की कथाकार ममता कलिया का जन्म 2 नबंवर 1940 को हुआ। आपका बचपन आगरा एवं मथुरा में बीता। मथुरा के बारे में वे कहती है- "बचपन की यादों के बारे में कहना हो तो मुझे मथुरा की शिलाओं के समान लगनेवाले कछुए बहुत याद आते हैं। "**(2)**

आगे वे कहती है-"जन्म और अबोध बचपन का मेरा सारा ज्ञान तो सुना सुनाया है।"**(3)** "बचपन में वे चेचक, काली खाँसी और गर्दन तोड बुख़ार जैसे अनेक रोगों से ग्रस्त रही। इसका उल्लेख उन्होंने मुन्नी कहानी में किया है।"**(4)**

1.12 परिवारः

ममता जी के परिवार में माताजी, पिताजी और एक बहन है। इनकी माँ इन्दुमति अग्रवाल प्राचीन परम्पराओं को माननेवाली थी। ममता जी के पिता विद्याभूषण अग्रवाल, संभुदयाल कॉलेज, गाजियाबाद के प्रिंसिपल तथा लेखक भी थे। साहित्य के प्रति पिताजी की गहरी रूचि के कारण और स्वयं लेखन कार्य करते रहने के कारण उनके घर में हमेशा साहित्यिक गोष्ठियाँ होती रहती थी।

ममता जी की वैचारिकता को सजाने-संवारने में उनकी माँ एवं पिता का बड़ा योगदान रहा। आकाशवाणी के डायरेक्टर के रूप में उन्होंने काम किया है। ममता जी का कहना है- "मेरी सारी रचनाओं के वे प्रखर आलोचक भी रहे। मेरे उच्चारण को सुधारने में मेरे पिताजी ने काफी सहयोग दिया। गलत उच्चारण बरदाश्त नहीं कर पाते थे।"**(5)**

ममता जी की एक बहन है- प्रतिभा जो बचपन से ही ललित कलाओं में निपुण रही है। शादी के बाद उन्होंने नौकरी कर ली और आज वे अवकाश प्राप्त कर चुकी है। इस संदर्भ में ममता जी कहती है-"उसकी वजह से, मेरी ओर लोगों की उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाना मुझे अखर जाता था। उसकी शादी हो जाने के बाद मेरा कॉलेज जीवन काफी अच्छा रहा। लंबे अरसे तक मध्य प्रदेश के कॉलेज में किसी को यह नहीं पता था कि हम दोनों बहने है। दोनों बहने, दो अलग अलग ध्रुवों में केंद्रित थीं।"**(6)**

ममता जी का परिवार, सामंतीय परिवार था। उसमें दादी और पिताजी का कठोर अनुशासन था। अपने परिवार के बारे में उन्होंने "सब दिन होत न एक समान" आलेख में लिखा है।

इसमें से कुछ उद्धरण दृष्टव्य है- "घर में दादी थी, जो हम बहनों के लिए वत्सल, पर माँ के लिए डिक्टेटर थीं। तब की सिर्फ यही याद है कि घर में जब समूचा परिवार इकट्ठा बैठता था, अच्छी खासी बातों के बीच अचानक विवाद शुरू हो जाता। बाबा अपनी आढ़त के नफे-नुकसान को सर्वोपरि मानने, भारत चाचा अपनी आजादी और जीवन मूल्यों को और पापा अपने बौद्धिक अभिमान को। दृष्टिकोणों की टकराहट में चाचा के कुर्ते फट जाते, माँ कोने में बैठकर आँसू बहाती और दादी चूल्हे की लकड़ी से अपना सिर पीटती। बहुत जल्द पिता ने उत्तर प्रदेश त्याग दिया और दिल्ली चले आए। सीताराम बाजार के अँधेरे मकान में मेरी बहन को प्लुरिसी और मुझे चेचक ने पकड़ लिया। माता-पिता के लिए वे कठिन

दिन रहे होंगे, पर जल्द ही परिवार इस सबसे निकलकर उस पटरी पर आ गया, जहाँ साहित्य की रसधार ले इन सब जख्मों को भर दिया।"(7) वे अपने जीवन की दूसरी अविस्मरणीय घटना इस प्रकार व्यक्त करती हैं, मैंने नया नया लिखना सीखा था। मैं आँगन में, दीवारों पर, स्लेट पर अक्षर-ज्ञान का प्रदर्शन करती रहती थी। बैठक की दीवार पर सेलखड़ी की एक सुंदर मछली टँगी थी। एक दिन मैं कुर्सी पर खड़ी होकर मछली के नीचे लिख रही थी 'मछली'। तभी मेरा हाथ उलटा और मछली और कुर्सी समेत मैं धड़ाम से गिर गई। माँ ने मुझे एक थप्पड़ मारते हुए कहा "आने दे आज पापा को, तेरी वह पिटाई होगी कि सब लिखना-बिखना भूल जाएगी। मैं अपना दुखता सिर और आहत मन किए काँपती रही। एक प्रार्थना मेरे अंदर निरंतर चलती रही- हे भगवान, पापा से मेरी शिकायत न हो। वे तो जान ही निकाल देंगे।"**(8)** पापा का क्रोध हमारी स्मृतियों में इस कदर भयंकर था कि उनके दफ्तर से लौटने के समय हम एकदम दुबक जाते। भारत चाचा के बच्चों ने उनका नाम 'डाँटने वाले ताऊजी' रखा था। जैसे ही पापा दफ्तर से आए, बैठक में घुसे कि उनकी नज़र सूनी दीवार पर पड़ी। "मछली कहाँ गई ?" पापा ने पूछा। माँ ने कहा, "पूछो मुन्नी से। सारा दिन शैतानी करती रहती है। इसी ने तोड़ी है।" मेरा कान उमेठकर पूछा गया, "कैसे टूटी?"मैंने रूआँसी आवाज में कहा, "पापा, हम मछली के नीचे लिख रहे थे-मछली। जैसे ही हमने 'ली' की टोपी लगाई मछली गिर पड़ी। हमने नहीं तोड़ा पापा।"**(9)**

आश्चर्य! पापा ने कुछ नहीं कहा। माँ दृश्य से सरककर रसोई में चली गई। पापा ने अपने कागजों में से एक कागज मुझे देकर कहा, "चलो, इस पर बीस बार मछली लिखकर दिखाओ। इस तरह एक जालिम शाम का शांत, अनाटकीय अवसान हुआ। लिखित शब्द की शक्ति से यह मेरा पहला परिचय था।"

इस प्रकार माता इंदुमति और पिता विद्याभूषण अग्रवाल के असीम प्रेम के साथ उन्होंने अपने जीवन की शुरूआत की। एक कोमल, चंचल, विशाल तथा प्रियदर्शनी बालिका अपने परिवार के साथ परवान चढ़ने लगी।

1.13 शिक्षा:

ममता जी ने मुंबई, पूना, इंदौर जैसे महानगरों में शिक्षा प्राप्ति की। उनके स्कूली जीवन का आरंभ गाजियाबाद से हुआ है। पूना से उन्होंने एस.एस.सी परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1961 में इंदौर के विक्रम विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा उच्च श्रेणी में पास की। इसके पश्चात सन् 1964 में दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए की उपाधि प्राप्ति की। इसके पश्चात श्रीमती नातीबाई दामोदर ठाकरसी महिला महाविद्यालय(एस.एन.डी.टी)मुंबई तथा सन् 1973 से 'महिला सेवासदन डिग्री कॉलेज' इलाहाबाद में प्रधानाचार्या की हैसियत से नौकरी की। अब वे अवकाश प्राप्त करके अपने प्रिय लेखन कार्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। सेवा-भाव तथा नारी चिंतन ही उनके लेखन का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

1.14 वैवाहिक जीवनः

आपका विवाह 12 दिसंबर 1964 में रवींद्र कालिया से हुआ। एक साहित्यिक गोष्टी में उनका परिचय रवीन्द्र जी से हुआ। रवीन्द्र जी ने पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी की उपाधि प्राप्त की। वे 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में काम करते थे। आज हिंदी साहित्य के रचनाकार के रूप में जाने जाते हैं। ममता जी को सफल कथाकार बनाने में उनके पति रवींद्र कालिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जब भी वे कोई कहानी या उपन्यास लिखती हैं तो इसके प्रथम

आलोचक रवींद्र जी ही होते हैं। इसके साथ ही जब आलोचक एवं पाठकगण ममता जी के साहित्य की प्रशंसा करते हैं तो रवींद्र जी अत्यंत प्रसन्न होते है।

इस प्रकार, वह ममता जी को लेखन कार्य के लिए प्रोत्साहित करते रहते है। अपने पति रवींद्र जी के संबंध में वे कहती है, "सन् 1965 की जनवरी में रवींद्र कालिया से मिलना मेरे रचनाधर्म के लिए एक ऐसा द्वार बना जिसने मेरे सोच विचार और जीवन की गति बदल दी। पहली ही मुलाकात में उन्होंने मुझे अज्ञेय और निर्मल वर्मा की रचनाओं के सम्मोहन से निकाल बाहर खड़ा किया। उन्होंने मेरी आँखों पर से पापा का चश्मा उतारकर, अपनी नज़र से जीवन को देखने जानने के लिए उकसाया। वे न मिलते तो मैं ममता अग्रवाल ही रह जाती और दृष्टि के धुंध-जाल में ही समय बिता देती। रवि के दुस्साहस और दबंगई ने मुझे एक नई रचनात्मक ऊर्जा से भर दिया। यह एक ऐसा शख्स था, जिसके रचना संसार में गद्य और भाव-संसार में पद्य का अजस्त्र प्रवाह था। साधनों की सीमा उसे कहीं बाधित नहीं करती थी, जितना वह दोस्ती और नौकरी में बेबाक और स्वाभिमानी था, उतना ही प्रणय में। जब भी, जहाँ भी मुझे बोलना होता, रवि कहते, "जाओं, बेधड़क बोलकर आना, बबर शेर की तरह जीना सीखो।"**(10)** आपके बड़े बेटे का नाम अनिरुद्ध है जो मुंबई में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में नेशनल सेल्स मैनेजर है। प्रबुद्ध इलाहाबाद में सोफ्टवेयर कंपनी में तकनीकी विशेषज्ञ है।

आजकल वे दिल्ली में रहती है और सतत साहित्य सृजन में रत्त है। ममता जी को साहित्य-सृजन के लिए अनेक पुरस्कारों से नवाज़ा गया है जो इस प्रकार है-

1.15 सम्मान एवं पुरस्कार:

1. 'सर्वश्रेष्ठ कहानीकार एवं कहानी' पुरस्कार, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद 1976

2. ‘उसका यौवन’ कहानी संग्रह पर ‘उ.प्र.हिंदी संस्थान’ का यशपाल सम्मान-1985
3. रचना सम्मान, अभिनव भारती, कोलकात्ता 1990
4. ‘उ.प्र.हिंदी संस्थान’ महादेवी वर्मा अनुशंसा सम्मान ‘एक पत्नी के नोट्स’ उपन्यास पर 1998
5. ‘सावित्री बाई फूले’ पुरस्कार, 1999, ‘बोलने वाली औरत’ कहानी-संग्रह पर।
6. ‘मानव संसाधन मंत्रालय’ की ओर से (सृजनात्मक-लेखन हेतु) पुरस्कार, 2002।
7. सदस्य, परामर्शदाता समिति, इग्नु दिल्ली।
8. निर्णायक मंडल की सदस्य, साहित्य अकादमी हिंदी समिति 1988-91।
9. निर्णायक मंडल की सदस्य, साहित्य अकादमी हिंदी अनुवाद समिति 1994।
10. सदस्य, अकादमिक व कार्यकारी निति, शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर।
11. म.प्र.साहित्य परिषद के मैथिलीशरण गुप्त सम्मान के निर्णायक मंडल की अध्यक्ष 2001।
12. सदस्य, कार्यकारिणी समिति, दीक्षा उ.प्र.राज्य तकनीकी परिषद, लखनऊ 1996।
13. हरिश्चंद्र पत्रकारिता पुरस्कार, भारत सरकार, निर्णायक मंडल की अध्यक्ष 1998-99।
14. उ.प्र. हिंदी संस्थान का ‘साहित्य-भूषण’ सम्मान, 2004। इस प्रकार विभिन्न देशी-विदेशी साहित्यिक संस्थानों की अध्यक्षा तथा सदस्या आदि की सफल

भूमिका निभाकर ममता जी सशक्त महिला कथाकार का स्थान प्राप्त कर चुकी है।

1.2 व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम

किसी भी रचनाकार का व्यक्तित्व उसके कृति में झलकता है। इसलिए उनके व्यक्तित्व को उनके साहित्य-सृजन से अलग नहीं किया जा सकता। ममता जी का व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली है। उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती है। वे मृदुभाषी, स्नेहमयी तथा मिलनसार है। वहीं दूसरी और वे लेखकीय व्यक्तित्व के अनुरूप पैनी नज़र वाली तेज़ तर्रार नारी भी प्रतीत होती है। आप में अन्याय के खिलाफ लड़ने तथा विद्रोह करने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। जब मैं उनके निवास स्थान पर उनसे मिलने गयी। तब उनके व्यक्तित्व से मैं बहुत प्रभावित हुई। ममता जी के माथे पर बड़ी सी बिंदी उनके व्यक्तित्व को और अधिक गरिमामय बनाती है। ममता जी सादा जीवन उच्च विचारोंवाली महिला है। बाह्य चमकदमक से उन्हें घृणा है। सादगीपूर्ण रहन सहन उनके जीवन का अंग है। इसलिए दिल्ली जैसे महानगर में रहने के बावजूद वे वहाँ की चमकदमक से दूर ही रहीं। लेखन कार्य के अलावा चुपचाप चिंतन मनन करना, प्राचीन विश्व प्रसिद्ध पुस्तकें पढ़ना, हिंदी पिक्चर देखना, और साड़ी खरीदना उन्हें पसंद है।

उनके संपर्क में आनेवाले, हर एक व्यक्ति का वह स्वागत अपनी खूबसूरत मुस्कराहट से कहती है। इसका प्रभाव उनके अध्यापकीय जीवन में भी दिखाई देता है। वह स्टाफ के साथ घुलमिल कर रहती थी जिसके कारण सभी उन्हें प्यार से ‘बड़ी दीदी’ कहती हैं।

ममता जी के स्वभाव में सबसे प्रमुख विशेषता है, उनका दूसरों के प्रति मदद करने का भाव। जब कोई भी उनसे उनकी रचनाओं की माँग करता है तो वे तुरंत अपनी रचनाएँ दे देती है। वे किसी को भी खाली हाथ लौटने नहीं देती है। इसलिए कभी-कभी उनके पास अपनी लिखी रचनाएँ भी उपलब्ध नहीं रहती है। जब मैं उनसे मिलने गई तो उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं, साक्षात्कारों आदि से मेरी मदद की जिसमें उनके साहित्य से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री थी। ममता जी एक प्रभावशाली लेखिका होने के साथ ही साथ ईमानदार भी है। यह ईमानदारी उनकी रचनाओं में मिलती है और इसका अनुभव मुझे उनसे मिलने के पश्चात ही हुआ।

वे अत्यंत मिलनसार प्रवृत्ति की है। अपने व्यस्त जीवन में भी घर आए मेहमानों का ध्यान रखती और उनकी हर संभव, सहायता करती है। वे 'अतिथि देवो भव' की साकार मूर्ति है। निडर व्यक्तित्व की धनी ममता जी अपनी बात साहसपूर्वक कहती है उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता उनके कथा साहित्य में विभिन्न पात्रों के माध्यम से भी उजागर होती है। 'आत्मीया'(जिंदगी सात घंटे बाद की)', 'सुजाता' '(लगभग प्रेमिका)', 'चंदा' '(बसंत-सिर्फ एक तारीख)', 'अपर्णा' '(जाँच अभी जारी हैं)' आदि पत्रों के चरित्र में ममता जी के व्यक्तित्व को देखा जा सकता है।

वस्तुतः वे एक स्वाभिमानी महिला है, पर अहंकार उन्हें छूकर भी नहीं है।

1.3 साहित्य-सृजन के प्रेरणा स्त्रोत

किसी भी साहित्यकार का साहित्य उसके सतत प्रयास एवं अनवरत साधना का प्रतिफल होता है। लेकिन इसके साथ उसके सृजन के कुछ प्रेरणास्त्रोत भी होते है। प्रेरणा से ही व्यक्ति, साधारण से महान साहित्यकार बनकर प्रसिद्धि प्राप्त करता है। जैसे ऋषियों की

प्रेरणा से ही डाकू-वाल्मीकि, ब्रह्मज्ञानी तथा रामायण जैसे महान ग्रंथ के रचयिता बन गए, रत्नावली की प्रेरणा से पत्नी प्रेम में निमग्न तुलसीदास, श्रीराम के भक्त बने तथा रामचरितमानस जैसे श्रेष्ठ ग्रंथ की रचना की। रचनाकार के बाह्य प्रेरणा स्त्रोतों को जानना आवश्यक है। क्योंकि रचनाकार के रचनात्मक प्रतिभा के विकसित होने में इन प्रेरणास्त्रोतों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

ममता जी के लेखन का प्रथम प्रेरणा स्त्रोत उनका अपना परिवार था। जहाँ कठोर अनुशासन था वहीं साहित्य के प्रति गहरी रूचि थीं। उनके पिता घर पर अनेक गोष्ठियाँ करवाते थे। बड़े-बड़े साहित्यकारों को आमंत्रित करते थे। इन गोष्ठियों में ममता कालिया सम्मिलित होती थी। उन्होंने निश्चय किया कि वे भी बड़ी होकर कहानियाँ लिखेंगी, तब तो मेरे पापा मुझसे खुश होंगे। इस संदर्भ में ममता जी के विचार इस प्रकार है.... “हमारे घर पर गोष्ठी का आयोजन था। माँ रसोई में केवड़े का पानी और इलायची की चाय बना रही थीं। बैठक में धवल चादरें बिछी थीं। एक-एक कर साहित्यकार आते जा रहे थे। विष्णु प्रभाकर, विजयेंद्र स्नातक, इंद्र विद्यावाचस्पति, प्रभाकर माचवे, श्रीकृष्ण, रांगेय राघव, देवराज दिनेश और बाबूराम पालीवाल। अंत में आए जैनेंद्र कुमार, जिन्हें अपनी कहानी का पाठ करना था। पापा ने उन्हें श्रद्धा से झुककर प्रणाम किया। कहानी मेरी समझ में नहीं आई, पर मैंने देखा, सब श्रोता मंत्र-मुग्ध जैनेंद्र जी को सुन रहे थे। गोष्ठी खत्म होने पर, सबको विदा देंने के बाद पापा कमरे में आए और बोले, “यादगार दिन है, आज जैनेंद्र जी ने मेरे आग्रह का सम्मान किया। इतने बड़े रचनाकार और कोई नहीं उनमें।”**(11)** पापा से हम डरते भी थे और उनकी श्रद्धा भी करते थे। जैनेंद्र जी श्रद्धेय के श्रद्धापात्र थे, यानी हमारे लिए ध्रुवतारा। उस दिन मुझे लगा बड़ी होकर मैं भी कहानियाँ लिखा करूँगी, तब पापा मानेंगे मुझे।

ममता जी के लेखन के सबसे बड़े प्रेरणा स्त्रोत उनके पापा थे। वे कहती है- “सबसे बढ़कर मेरे पापा, जिनकी हिंदी-अंग्रेजी साहित्य की प्यास अदम्य थी, जिनके साथ चर्चा करके पढ़ने का आनंद ही कुछ और था। मेरे सबसे बड़े प्रेरणा स्त्रोत रहे।”

पढ़ने की प्रवृत्ति उनमें बचपन से ही थी। बचपन में ही ममता जी ने हिंदी साहित्य पढ़ना शुरू कर दिया था। अतः पढ़े साहित्य और जीवन के आए उनके अनुभव से मिलकर, उन्होंने अपनी जीवन दृष्टि बनायी।

उनके घर के पास एक छोटी सी दूकान थी जहाँ दो आने रोज पर किताब मिलती थी। ममता जी ने वहीं से बहुत-सी पुस्तकें लेकर पढ़ी। अश्क जी की ‘बड़ी-बड़ी आँखें’, कृशन चंदर का ‘बावन पत्ते’, धर्मवीर भारती का ‘गुनाहों का देवता’ और रांगेय राघव का ‘मुर्दों का टीला’, आदि उपन्यासों का परिचय उसी दुकान से मिला। राजेंद्र यादव, मन्नू भंडारी, मोहन राकेश, कमलेश्वर, उषा प्रियंवदा की रचनाओं से प्रेरणा लेकर ममता जी कहानी लेखन की ओर आकर्षित हुई।**(12)**

उनके लेखन का दूसरा प्रमुख प्रेरणा स्त्रोत रहा है, साहित्यिक नगरी इलाहाबाद। वे इस संदर्भ में लिखती है, “1970 में इलाहाबाद आकर बस जाना हमारे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण मंजिल रही। सिर्फ यही नहीं कि इस शहर ने हमें जीविका प्रदान की, इसने हमें सामान्यता का सौंदर्य शास्त्र, स्वाभिमान का वर्चस्व और एकाग्रता का उन्मेष सिखाया। न जाने लोग इलाहाबाद कैसे छोड़कर चले जाते हैं। यह शहर नहीं, एक शउर है। यहाँ शोध, बोध और अर्थ है। जहाँ निजता का सम्मान है, रचनाधर्मिता की सार्थकता है। इस शहर के बड़े से बड़े रचनाकार और छोटे से छोटे रचना प्रेमी में ये सब विशेषताएँ अगर मुझे लगातार विस्मित, प्रभावित और प्रेरित करती हैं तो इसमें विचित्र कुछ भी नहीं है। आरंभ के वर्षों में अश्क जी और उनके परिवार ने हमें यहाँ बसने में जैसा स्नेह संबल दिया, उसने हमारे

आगामी जीवन और रचना क्षेत्र की हदें तय कर दीं। मेरा यह विस्मय अभी तक बना हुआ है कि जिन शीर्ष रचनाकारों को पुस्तकों के पन्नों में पढ़ा, वे यहाँ कितनी सहजता से न सिर्फ मिले, वरन पथ के साथी भी बनते गए। पंत जी, महादेवी, अश्क जी, इलाचंद्र जोशी, अमरकांत, शेखर जोशी, शैलेश मटियानी, ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, शांति मेहरोत्रा, गोपेश जी, स्मृति-श्रृंखला बहुत लंबी है। इसी शहर में परिवार में दो शिशु आए, यहीं नौकरी मिली यहाँ किश्तों पर सही, घर और घर का कुछ साज-सामान आया, यहीं रहकर दो दर्जन किताबें लिखी गई।"**(13)**

तीसरे प्रेरणास्त्रोत के रूप में उनके पति रवींद्र कालिया रहे है। इसके अतिरिक्त सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश भी उनका प्रेरणा स्त्रोत रहा है।

1.4 साहित्यिक परिचय

साठोत्तरी हिंदी कथा-साहित्य को समृद्ध करने में कथाकार ममता कालिया का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आप बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार है। वे उत्कृष्ट कथाकार, गंभीर उपन्याकार वैचारीक एवं विश्लेषणात्मक पत्रकार, सूक्ष्म दृष्टि संपन्न समीक्षक एवं पारखी संपादक रही है। उनका संपूर्ण साहित्य उनकी विचाराधारा एवं जीवन के प्रति आस्था का साक्षी है। उसके साहित्य का परिचय इस प्रकार दिया जा रहा है।

1.41 कहानी साहित्य

ममता कालिया का कहानी साहित्य विभिन्न आयामों को स्पर्श करता है। दांपत्य जीवन के विभिन्न अवसाद काम-संवेदना, नारी का अंतर्द्वन्द्व घुटन, संत्रास, मध्यवर्ग का चित्रण, महानगरीय जीवन की भागदौड़, आधुनिक जीवन की यांत्रिकता आदि को सजग

ढंग से प्रस्तुत किया है। ममता कालिया का कहानी संसार व्यापक है। अबतक ममता जी के कुल 12 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने लगभग 127 कहानियाँ लिखी है। इसके द्वारा लिखित कहानियों की संख्या 127 है।

इनकी कहानियों का केंद्र बिंदु नारी जीवन ही रहा है। ममता जी नौकरी के सिलसिले में भी वे कई शहरों में घूमी है। महानगरीय जीवन से और वहाँ की नौकरी पेशा नारी समस्याओं, तकलीफों से परिचित हो गयी और उन्हीं अनुभवों को उन्होंने अपनी कहानियों में उतारा है। वे कहानी को सबसे अधिक 'फ्लैक्सीबल' विधा मानती हैं।

ममता जी के कहानी संग्रहों का परिचय इस प्रकार दिया जा रहा है।

1. छुटकारा

ममता कालिया का यह पहला कहानी संग्रह है जिसका प्रथम संस्करण सन् 1969 में प्रकाशित हुआ है। इसका चतुर्थ संस्करण सन् 1983 में निकला। इसमें कुल चौदह (14) कहानियाँ संकलित है। इसकी अधिकतर कहानियाँ नारी मन की पीड़ा तथा उसके अंतर्मन की दशा को दर्शाती है। एक नारी अपने जीवन को जिस गहराई से, संवेदना से और तीव्रता के साथ जी सकती है, उतना पुरूष नहीं जी सकता। यह बात इन कहानियों द्वारा दिखाई गयी हैं।

(i) बड़े की पूर्व सांझः

इस कहानी के केंद्र में एक क्लब है जहाँ का यह नियम है कि मोमबत्ती खरीदने पर ही किसी युवती के साथ डान्स करना होगा। 'बड़े दिन की पूर्व सांझ' में एक नवदंपति 'मैं' और उसका पति रूप डांस करना चाहते है। रूप शराब पीने में मस्त है। भार्गव नाम का व्यक्ति कल्ब में आता है। वह चाहता हे कि रूप की पत्नी उसके साथ नाचे। लेकिन भारतीय

संस्कृति में पली पत्नी, रूप की ओर देखती है और कहती हैं 'मैं' शादी शुदा हूँ यहाँ मेरे पति है।"**(14)**

भार्गव रूप से उसकी पत्नी के साथ डान्स करने की अनुमति माँगता है। रूप अपनी पत्नी के साथ डांस करने की अनुमति भार्गव को दे देता है। डांस करते-करते वे आऊट हो जाते हैं। उसके पश्चात्य वह (पत्नी) रूप को देखने सीधे बार में पहुँच जाती है। इसके पश्चात वह दोनों वापस होटल में पहुँच जाते हैं। इस में नवदंपति द्वारा भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के गिरते स्तर को दर्शाया गया है।

(ii) वे तीन और वहः

प्रस्तुत कहानी में महानगरों में, मकान न मिलने की वजह से एक ही दफ्तर में काम कर रहे दो दोस्त एक कमरे में रहने लगते हैं। खाना वे स्वयं ही बनाकर खाते हैं। लेकिन फिर भी जब उन्हें पता चलता है कि महीने की बीस तारीख के बाद उनके कॉफी और सिगरेट के लिए पैसे नहीं बचते तो वे 'प्रयाग' नाम के एक और व्यक्ति को रूम में रख लेते हैं जो उनके साथ किराया शेअर करता है। एक दिन प्रयाग बीमार पड़ जाता है तो बैंक में काम कर रही, स्वभाव से बहुत ही रूखी उसकी बहन को बुलाया जाता है। वह जब आती है तो बहन के बारे में वे बातें करने लगते है। उन दोनों मित्रों में से एक तो चाय बनाकर उस पर प्रभाव डालने की कोशिश करता है परंतु वह ध्यान नहीं देती। इस प्रकार इस कहानी में मकान न मिलने की समस्या को दिखाया गया है।

(iii) यह जरूरी नहीं:

इस कहानी के केंद्र में कार्यालय में काम करने वाला एक व्यक्ति है। वह सदैव भय से ग्रसित रहता है। जैसे देर से दफ्तर पहुँचने का भय, देर से घर वापस आने का भय, दस रूपये का नोट भुनाने का भय, इंक, पेंसिल की रिफिल घिसने का भय, ब्लेडों का दाम बढ़ने का भय आदि। ये सारे भय, आम आदमी को हमेशा त्रस्त करते रहते है। इसमें दफ्तरी जीवन की त्रासदी को चित्रित किया है।

अपने अफसरों के बारे में कई तरह की गलत धारणाएँ उनके मन में थी। समाचार पत्र के दफ्तर में काम करते हुए वे चारों ओर सिर्फ सुचनाएँ ही सुचनाएँ ढूढ़ते थे और न मिलने पर अफसरों के नाराज होने का डर रहता था। इस सब में चपरासी ही सबसे खुश प्राणी था। वे अपने अफसरों और चपरासी को खुश करना चाहते थे। इस प्रकार महानगरीय जीवन में लोगों को अपने अफसर के अधीन रहकर कैसे काम करना पडता है, इसका यहाँ चित्रित किया गया है।

(iv) बीमारीः

'पैसा' किस तरह रिश्तों में दरार पैदा करता है, अपनी बीमार बहन को देखने के लिए भाई गाँव से आता है। वह यह दर्शाता है कि मानों उस बहन पर उपकार कर रहा है। जब बहन अपने ऊपर हुए खर्च के बारे में पूछ़ती है तो वह एक पर्चा देता है जिसमें उसके लिए लाए गए फलों का खर्चा भी लिखा गया है। वह दुखी होती है और अस्पताल में ही रहना पसंद करती है।

(v) छुटकाराः

छुटकारा कहानी में अकेलेपन से त्रस्त नायिका की मनोदशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। कहानी की नायिका 'मैं' अपने कॉलेज जीवन के मित्र बत्रा से मिलने जाती है। वह उसे गंभीर दिखता है। पहले जैसे नहीं हँसता है न ही लतीफे सुनाता है। 'मैं' को भी उससे मिलने में पहले जैसा मजा नहीं आता। उसके साथ कॉलेज के कैंटीन में बैठना उसे अखरने लगता है। अपने प्रेम-संबंधों में वैचारिक जटिलता का वह बोध महसूस करती है। वह सोचती भी है-"मैं चुप हो गयी। मैं घर जाना चाहती थी असल में मैं आना ही नहीं चाहती थी। चलते हुए मुझे लगा था जैसे मैं शून्य में शून्य, नियत कर रही हूँ। और प्रेम संबंधों के साथ-साथ बत्रा से छुटकारा पा लेती है।"**(15)**

(vi) जिंदगी सात घंटे बाद कीः

प्रस्तुत कहानी की नायिका आत्मीया ऑफीस में 10 से शाम के 5 तक काम करती है। लेकिन अकेलेपन के कारण उसे अपनी जिंदगी, जिंदगी नहीं लगती। उसे रविवार का दिन बिल्कुल पसंद नहीं है। उसे अलग-अलग किताबें पढ़ने में रूचि है। सही समय और उमर के दौरान वह शादी के महत्व नहीं देती है। लेकिन जैसे-जैसे उसकी उम्र बीतने लगी उसे अपने जीवन में अकेलापन महसूस होने लगा। ऑफिस में सात घंटे तो बीत जाते लेकिन बाकी के समय को अकेली स्थिति में गुजरना उसके लिए समस्या हैं।

(vii) साथः

प्रस्तुत कहानी के नायक अशोक और नायिका सुनंदा एक ही दफ्तर में काम करते है। वह उसकी स्टेनों कम, प्रेमिका अधिक है। इस कहानी में प्रेम के त्रिकोण को आधार बनाया गया है। सुनंदा नामक लड़की एक ऐसे व्यक्ति के साथ रहती है जो अपनी पत्नी से अलग हो

गया है, लेकिन उनका तलाक नहीं हो पाया है। सुनंदा आज की आधुनिक लड़की है जिसे अशोक के साथ घूमने, रहने में कोई आपत्ति नहीं है। इस कहानी में आज के समाज में नैतिक मूल्यों में होने वाले पतन को दर्शाया है। अशोक और सुनंदा के माध्यम से स्त्री और पुरूष के बिना विवाह के प्रेम के स्वरूप को उजागर किया है।

(viii) बेतरतीबः

इस कहानी का नायक कला केंद्र में काम करता है। उसी के साथ काम करने वाली नायिका संतोष प्रेम का अनुभव प्राप्त करने के लिए ललायित है। वह हमेशा आनंद को अपने प्रति आकर्षित करने के बहाने कहती भी है-"आनंद जी, आप घर नहीं आए कभी?.....तुम बड़े पैसिव हो आनंद।"**(16)** लेकिन आनंद उससे बचना चाहता है। वह आनंद की हमेशा मदद करती है। लेकिन आनंद उससे हँसने से भी डरता है क्योंकि वह उसका गलत मतलब निकाल सकती है। उम्र के अधिक होने के कारण अविवाहित रहने वाली कुछ लड़कियाँ, लड़कों को अपने जाल में किस तरह फँसाती है इसी कारण लड़के उनसे किस तरह भागते हैं यह इस कहानी में बताया गया है।

(xi) वेः

अरूणा और 'वह' के माध्यम से एक लड़की का लड़के के साथ शारीरिक संबंध बनाना आज के आधुनिक युग में गिरते मूल्यों को दर्शाता है। वे दोनों दोस्त होने के बावजूद भी रात में एक साथ सोते हैं। अरूणा का भाई रात भर उसका इंतजार करता है लेकिन उसे कोई 'फरक' नहीं पड़ता वह प्रगतिशील विचारों से प्रभावित है इसका चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है।

(x) दो जरूरी चेहरेः

प्रस्तुत कहानी की नायिका मिनाती अपने दुतर्फा स्नेहल संबंधों के बनाए रखने के प्रयत्न से ही कुण्ठन होती है। जहाण प्रेम संबंधों में दिन पर दिन श्याम के प्यार करने की हिम्मत बढ़ती जा रही थी। वहीं दूसरी ओर श्याम और भाई साहब की रिश्तों का तनाव देख कर मिनाती का मन उदास हो जाता है। भाई साहब की पत्नी और बेटा प्लेन ऍक्सिडेंट में मर गए थे। मिनाती की शादी के बाद श्याम उसे अपने भाई से मिलने नहीं देता इसलिए वह परेशान रहती थी। मिनाती के पेट में दर्द के कारण उसका ऑपरेशन किया जाता है। श्याम और भाई वहाँ मौजूद रहते है। ऑपरेशन के बाद जब उसे होश आता है तब उसे दो चेहरे दिखाई देते हैं। एक लड़की का शादी के बावजूद अपने घरवालों से रिश्ता तोड़ना कितना मुश्किल होता है इसका चित्रण कहानी में किया है।

इसके अतिरिक्त अपनी कहानी में पाश्चात्य सभ्यता के परिवेश में विवाहपूर्व, पति-पत्नि के समान संबंध स्थापित करनेवाले दाम्पत्तियों का चित्रण है। उसी शहर में कहानी में शादी के बाद स्त्री जीवन में होनेवाले परिवर्तन और उनसे उत्पन्न नायिका की कुण्ठिओं का विश्लेषण है।

(xi) पिछले दिनों का अंधेरा

पिछले दिनों का अंधेरा नामक कहानी में रोमानी वातावरण में विवाहपूर्ण अनैतिक संबंध स्थापित करनेवाले नायक-नायिका की मनोदशा का यथार्थ चित्रण है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि छुटकारा कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियाँ नारी जीवन की त्रासदी को अपने सशक्त रूप में अभिव्यक्त करने में समर्थ सिद्ध होती है।

2. एक अदद औरत

ममता जी का यह दूसरा कहानी संग्रह है। जो सन् 1975 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल 45 कहानियाँ संकलित है। इस संग्रह की अन्य कहानियों का परिचय इस प्रकार दिया जा रहा है।

(i) बसंत-सिर्फ एक तारीखः

'बसंत-सिर्फ एक तारीख' कहानी की नायिका चंदा अपनी पारिवारिक समस्याओं के बावजूद घर से बाहर निकलकर इस वास्तविक जगत का स्वच्छंद रूप से अनुभव करना चाहती है। वह कहती है-"मेरी संवेदना वसंत का आनंद ले रही थी।"(17) आधुनिक काल में लोग इतने व्यस्त हैं कि वे प्रकृति एवं ऋतुओं का आनंद भी नहीं उठा सकते। मेरी चेतना एक महत्वाकांक्षी योजना बना रही थी। वसंत के पहले दिन एक औरत नौकरी की तलाश में अपनी एक परिचिता प्रधानाध्यापिका के पास चली जाती है। उसका यह सोचना है कि वसंत के पहले दिन सभी लोग खुश होकर उसे नौकरी दे देंगे। लेकिन उसे कोई भी परिवर्तन देखने को नहीं मिलता और वह अचरज में पड़ जाती है। प्रधानाध्यापिका का अपनी सहयोगियों के साथ व्यवहार देखकर उसके दिल का वसंत चला जाता है।

(ii) राएवालीः

'राएवाली' बचपन से ही त्रस्त एक औरत की कहानी है। विवाह के पश्चात कालिंदी का ससुराल में लक्ष्मी नाम रख दिया जाता है। फिर वह राए की होने का कारण उसका नाम राएवाली पड़ गया। अपने पति से ज्यादा पढ़ी लिखी होने के बावजूद हमेशा उसको लताड़ सुननी पड़ती वह काम तो नहीं करता लेकिन रोब झाड़ता था। जब उसकी माँ का स्वर्गवास होता है तब उसे मायके जाने से रोका जाता है। देवर की सगाई में उससे ढोलक बजाने के लिए कहा जाता है। उसे रोने भी नहीं दिया जाता। परिवार के साथ-साथ सांसारिक जीवन में भी अजीवन प्रताडित रहने वाली नारी की कारुणिक कथा का उजागर किया है।

(iii) तस्की को हम न रोयेः

प्रस्तुत कहानी की नायिका आशा अपने मोटापे के कारण त्रस्त है उसके बाल भी सफेद होने लगते हैं। पति पत्नी के तनावग्रस्त एवं संघर्षमयी जीवन का उल्लेख इस कहानी में किया है।

(iv) खाली होता हुआ घर

पिता-पुत्री के संबंध को सुमित्रा और उसके पापा के माध्यम से उजागर किया गया है। उसकी माँ हमेशा बीमार रहती है। सुमित्रा के पापा उसे बहुत पढ़ाना चाहते हैं। अनेक अपेक्षाएँ वह अपनी बेटी से रखते हैं। कॉलेज के आखिरी वर्ष में किन्हीं कारणों से वह पढ़ाई नहीं कर पाती है। वह युनिवर्सिटी में ग्यारहवे नंबर पर आती है। सुमित्रा के लेखक पापा की यह पहली पराजय थी। इस प्रकार वह तीसरे दर्जे में पास होती है। एडमिशन लेने के बावजूद एम.ए.बी.एड. में वह फेल हो जाती है। छः महीनें के पश्चात वह 'सी' क्लास क्वाटर में रहनेवाले पाँच सौ रूपए कमाने वाले लड़के के साथ, पापा के इच्छा के विरूद्ध शादी करती है। इसी कारण से पिता को अत्यंत दुःख होता है।

3. सीट नंबर छह

यह ममता कालिया का तीसरा कहानी संग्रह है जो सन् 1976 में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल बारह कहानियाँ संकलित हैं। इसमें नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को सूक्ष्मता से दर्शाया गया है। इसमें संकलित कहानियों का परिचय दिया जा रहा है।

(i) सीट नंबर छहः

आत्मकथा शैली में लिखी इस कहानी में प्रौढ़, अविवाहित स्त्री की मानसीक दशा का वर्णन किया गया है। जो एक हाईस्कूल की अध्यापिका है, और छुट्टियों में अपने घर जाने के लिए ट्रेन से सफर कर रही है। सीट नंबर उसे मिली हुई है। अचानक वहाँ एक लोअर बर्थ की बंगाली दंपति आते हैं। पत्नी के मोटी होने के कारण वह अपनी सीट उसको दे देती है। ऊपर वाली सीट पर उसे सोने के लिए जाना पड़ता है लेकिन उस मोटी औरत के पति के अच्छे व्यवहार के कारण वह चुप रहती है। सुबह जब नायिका पर्स निकालने के लिए झटके से उठती है तो वह गिरने को होती है इसी बीच उसे बंगाली पति गिरने से बचा लेता है। उसके कोमल व्यवहार पर उसे आश्चर्य होता है। प्रस्तुत कहानी में प्रौढ अविवाहित नारी की कथा है जिसके सफर में अपरिचित पुरूष द्वारा मिले स्नेह का प्रसंग वर्णित है।

(ii) लगभग प्रेमिकाः

प्रस्तुत कहानी में विवाहित और नौकरी पेश स्त्री के अंतर्द्वंद्व को स्पष्ट किया गया है। कुमार की पत्नी मुंबई में नौकरी करती है। और उसका पति दिल्ली में नौकरी खोज रहा है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए कृष्णा ककड से प्रेम करने का प्रयास करती है। परंतु जैसे ही उसको अपने पति का पत्र मिलता है कि उसे नौकरी मिल गयी है और वह नौकरी छोड़कर आ जाए। तो वह कृष्णा का दिल तोड़कर, पति के पास जाने के लिए तैयार हो जाती है। संपूर्ण कहानी के केंद्र में मुंबई महानगर है। आधुनिक काल में स्त्री केवल वक्त काटने के लिए किसी भी पुरूष से प्रेम करने लगती है। स्त्रियों के इस नैतिक पतन को चित्रित करना ही ममता कालिया का मुख्य उद्देश्य रहा है।

(iii) जितना तुम्हारा हूँ

प्रस्तुत कहानी में संयुक्त परिवार और अंतरजार्तिय विवाह जैसी समस्याओं को उद्घाटित किया गया है। संयुक्त परिवार का रघु घरवालों की मर्जी के खिलाफ श्वेता के

साथ शादी करता है। लेकिन परिवार वाले श्वेता को दिल से स्वीकार नहीं करते। उसकी गलती न होने पर भी सभी रघु के सामने उसका अपमान करते हैं। शादी के एक वर्ष बाद रघु ट्रेनिंग के लिए शिकागो जाता है और श्वेता को साथ नहीं ले जाता। घरवाले उसपर अत्याचार करते हैं। लेकिन एक साल बाद जब रघु वापस आता है तो वह बेफिक्र और मस्त आदमी बन जाता है। उसकी, शराब और औरतों में रूचि बढ़ चुकी है। वह जब श्वेता से कहता है- "क्योंकि जितना मैं तुम्हारा हूँ उतना ही हवाओं का हूँ, दिशाओं का हूँ, रास्तों का, पहाडों का हूँ, महफिलों का हूँ.....मंजिल का...."।**(18)** यह सुनकर श्वेता एकदम टूट सी जाती है। इस प्रकार से वह रात्री में बेफिक्र होकर सो जाता है। लेकिन श्वेता के दिल को ठेस पहुँचती है। जो व्यक्ति विवाह के पहले अपनी प्रेमिका को पाने के लिए सारे शहर तक को आग लगा देनेवाला रघु अब श्वेता को गौण स्थान देने लगता है।

(iv) गुस्साः

प्रस्तुत कहानी एक वृद्ध दंपति के जीवन की घटनाओं पर आधारित है। वृद्ध पत्नी माया के गुस्सैल स्वभाव के कारण उसका पति घर छोड़कर चला जाता है इसी घटना को केंद्र में रखकर यह कहानी लिखी गयी है।

(v) बातचीत बेकार हैः

प्रस्तुत कहानी में नायिका विनिता के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि आज की नारियाँ पारिवारीक जिम्मदारियों के बोझ तले कैसे दबी है। पुरूष के अहंकार और नारी की कमजोरी का फायदा उठानेवाला नायक सत्येंद्र श्याम के वक्त घर लौटने के बाद आराम करता। इसी वजह से विनिता सोचती है कि शादी के चार साल बाद उसका जीवन सिर्फ रसोई और प्रसुतिगृह तक सीमित हो गया है।

(vi) प्यार के बादः

इस कहानी में एक प्रेमी युगल है साहनी और बंगालन लड़की । उनके प्यार की चर्चा हर जगह है। उसी शहर में रहने वाले विलास और उसकी पत्नी उन्हें देखना चाहते हैं। एक दिन विलास और उसकी पत्नी टेपरिकार्डर इश्तिहार देखकर खरीदने जाते है। साहनी और बंगालन टेपरिकार्डर 800 रुपये में बेचते हैं। बाद में विलास और उसकी पत्नी को पता चलता है कि वे ही मशहूर प्रेमी है। मशहूर प्रेमी पहले तो किसी का ख्याल नहीं रखते लेकिन सुविधा के लिए अपनी चीजें बेचने के लिए तैयार हो जाते हैं।

(vii) पीली लड़कीः

इस कहानी में सोना नामक विवाहित कमजोर लड़की को आधार बनाया गया है। उसका पति कॉलेज में हिंदी का लेक्चरर है जो हमेशा घर देर से आता है और पत्नी की उपेक्षा करता है। शादी से पहले वह ऐसा नहीं था लेकिन अब उसकी दिनचर्या में सोना के लिए कोई जगह नहीं है। उसने जाँच परखकर अपना पति चुना है लेकिन फिर भी शादी के बाद उसमें परिवर्तन आ जाने के कारण उसका जीवन दुःखों से भर जाता है।

(viii) आत्मरक्षाः

आत्मरक्षा कहानी में मैं के अंतर्मन को आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत करके ममता जी ने जीवन साथी के अधिकारों से वंचित स्त्री का चित्रण किया है।

(xi) उपलब्धिः

प्रस्तुत कहानी में पारिवारिक संघर्ष को रेखांकित किया है। कहानी का नायक चेतन और प्राची का प्रेमविवाह है। प्रेस के काम में वह हमेशा व्यस्त रहता है। प्राची को अचानक शादी की सालगिराह याद आती है और वह चाव से खाना बनाती है। लेकिन चेतन को याद रहने के बाद भी वह व्यस्त है। उनका बेटा जब जुलूस पर पानी फेंकता है तो बहुत बड़ा

फसाद होता है और उसका प्रेस तोड़ दिया जाता है। उसी बीच उसका बेटा गुम हो जाता है जिसे एक मुसलमान अपने घर सुरक्षित रूप से रखता है। बेटा मिलने पर उसे लगता है उसे कोई खास नुकसान नहीं हुआ उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि तो शेष है।

(x) आजादीः

ममता जी ने एक अनपढ़ बूढ़ी दादी का चित्रण किया है जो पति अधीनस्थ है। उनके पति एक दुकान चलाते है लेकिन वह कंजूस है दादी के पीठ पर आए फोडे के लिए पैसे नहीं देते। आजादी के बाद दादी अपनी पोती से कहती है कि आजादी को पुडिया में बाँधकर लाए। स्कूल में मिले बताशे अपनी दादी के लिए पुडिया में बाँधकर करती है। स्त्री को ऐसी आजादी का क्या फायदा जहाँ वह खुद आजाद नहीं है।

4. प्रतिदिन

सन् 1983 में प्रकाशित ममता जी का यह चतुर्थ कहानी-संग्रह है। जिसमें कुल 8 कहानियाँ संकलित है। इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ वर्तमान जीवन की जटिलता के मध्य नारी-जीवन की विभिन्न त्रासदियों को शब्दबद्ध करने में समर्थ है।

(i) काली साड़ी:

इस संग्रह की प्रथम कहानी है जिसमें नौकरीपेशानारी के स्वाभाविक आकांक्षाओं को लेकर उसके मोहभंग तथा उसके मानसिक द्वंद्वों को उजागर किया है।

(ii) आपकी छोटी लड़की:

यह तेरह वर्ष की लड़की की कथा है जो कार्यकुशल होकर भी अपने परिवार द्वारा उपेक्षित है।

(iii) माँ:

इस कहानी में एक बेटी अपनी माँ के दुखों को व्यक्त करती है।

(iv) लैला मजनू:

इस कहानी में लेखिका ने दंपतियों के पूर्ण समर्पण, प्रेम का विश्लेषण किया है। वहीं दूसरी ओर परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ उठाने वाली महानगरीय नारी के तनाव को शब्दबद्ध किया है।

(v) एक जीनियस की प्रेमकथाः

प्रस्तुत कहानी में नारी शोषण का चित्रण किया गया है। कहानी का नायक संदीप सुसंस्कृत एवं उच्चवर्गीय है। कविता जैसी पढ़ी-लिखी लड़की को, वह अपने प्यार के जाल में फँसाकर उससे शादी करता है। आई.ए.एस अधिकारी होने का फायदा उठाकर वह कविता को अपनी बातों में फँसाता है। इसी के साथ वह साहित्य में भी अधिक रूचि रखता है। शेरों-शायरी, कविताऐं आदि को माध्यम बनाकर वह सुंदर स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। छोटी सी उम्र में प्रतिभा, अकड़ और बुद्धि के बल पर वह अपना आत्मविश्वास दिखाता है। इस प्रकार इस कहानी में ममता जी अफसरी जीवन और पारिवारिक जीवन में पैदा हुई दरार का चित्रण करती है।

(vi) तोहमतः

इस कहानी में दो सहेलियों का चित्रण किया है आशा और सुधा। दोनों एक साथ पढ़ती है और दोनों ही एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करती है। सभी शिक्षक उनसे खुश थे। एम.ए. के बाद दोनों आई.ए.एस बनना चाहती है। वे शाम के वक्त घूमने निकलती है। एक दिन अचानक वह शाम के वक्त रास्ता भटक जाती है।वे दोनों झाड़-झंखाड़ में पहुँच

जाती है। अंगारों का ढेर, नरमुण्ड आदि देखकर वह डर जाती हैं और भागने लगती है। आशा का दुपट्टा काँटों में उलझकर फट जाता है और शलवारों की सिलन उखड़ जाती है। चेहरा पसीने से तर ब तर हो जाता है। बाहों पर खरोचें तक आ जाती है। दोनों जब घर पहुँचती है तो सभी उन्हें ताने देते हैं। सभी उन पर तोहमत लगाते हैं। लेकिन उनके साथ क्या घटित हुआ यह जानने की जरूरत किसी को महसूस नहीं होती है।

(vii) मंदिराः

प्रस्तुत कहानी में मंदिरा नामक युवती की कहानी को रेखांकित किया गया है उसकी उम्र अड़तीस वर्ष की है लेकिन दिखने में वह अट्ठारह की लगती है। वह सुंदर और स्वभाव से कोमल हृदय वाली युवती है। उसके पति वाजपेयी जी कर्मठ विचारों वाले व्यक्ति है। मंदिरा युनिवर्सिटी में पढ़ाती है उसका शिबिर नामक लड़का भी है जो होस्टल में रहकर पढ़ाई करता है। युनिवर्सिटी तक ही उसका जीवन सुखी रहता है। वह जीने का प्रयास करती है लेकिन घर आते ही उसका दिल डूब जाता है। उसका पति एक नीरस व्यक्ति है जो न दुःख में विचलित होता है और न ही सुख में। मंदिरा को कभी-कभी लगता है कि वह अपने पति के साथ नहीं बल्कि पिता के साथ रह रही है। मंदिरा अपने नाम के समान ही बहुत सारी उमंगों को लेकर पारिवारिक जीवन में 'रोमांच' का अनुभव करना चाहती है किंतु नीरस स्वभाव वाले पति को पाकर उसकी उमंग तितर-बितर हो जाती है। परम आल्हाद के क्षण भी उसके ऊपर से ऐसे गुज़र जाते हैं जैसे रेलगाड़ी के ऊपर स् पंछी। इसी बीच वह अपने मन को तैयार कर अपने विभाग के विवाहित पुरूष सुविमल बनर्जी के प्यार करने की सोचती है। इस कहानी में नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है।

(viii) कवि मोहनः

प्रस्तुत कहानी में एक बेरोज़गारी से त्रस्त एक युवक की मानसिकता को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

5. उसका यौवन

सन् 1985 में प्रकाशित ममता जी का यह पाँचवा कहानी-संग्रह है। सामान्य से सामान्य, सूक्ष्म संवेदनाओं को लेकर लिखी गई यह कहानियाँ नारी-जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती है। संग्रह में कुल 13 कहानियाँ संकलित है। शीर्षक कहानी संग्रह के पहले स्थान पर है।

(i) उसका यौवन

प्रस्तुत कहानी एक सुशिक्षित युवा बेरोजगार की कहानी है। परिवार का हर कोई विराम को अलग दृष्टि से देखता है। उसका हमेशा से यह सपना रहा है कि वह मुंबई चला जाए और सभी फिल्मी तारिकाएँ उसके हृदय से स्वागत करे। बी.ए. पास न होते हुए भी वह यह समझता कि वह एक अच्छा शिक्षक बन सकता है। वह कोई काम नहीं हैं। वह कोई काम नहीं करता है इसलिए परिवार के सभी सदस्य उससे नाराज रहते हैं। आत्मकथात्मक शैली में लिखी इस कहानी में विराम का मनोविज्ञानिक चित्रण अत्यंत सफलता के साथ लिया है।

(ii) अपने शहर की बत्तियाँ:

प्रस्तुत कहानी में दो दोस्तों का चित्रण किया है जो एम.ए करने के बाद भी बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त है। उन्हें नौकरी तो नहीं मिलती लेकिन वे सिर्फ अर्जिया भेजने और इंतजार करने में ही अपना समय बिताते हैं। इसी के साथ दोनों युवक अपने

घरवालों की आशा-आशंकाओं के बारे में भी विचार करते हैं। कभी कभी किसी कारणवश उन्हें अपने घरवालों से भी झूठ बोलना पड़ता हैं। पैसों के लिए कारण बताने पड़ते है। अपने शहर की बलियों को देख उन्हें राहत महसूस होती है। आदमी कहीं भी जाए लेकिन अपने शहर को वह हमेशा अच्छा मानता है।

(iii) आहारः

प्रस्तुत कहानी में दफ्तर के नीरस वातावरण में, मनोरंजन क्लब की स्थापना
करके, विविध प्रकार से मन बहलाने वाले विवाहित कर्मचारियों पर व्यंग्य किया गया है।

(iv) पचीस साल की लड़कीः

पचीस साल की उम्र की पचीस परेशानियाँ होती है, इसे कहानी की नायिका के द्वारा दर्शाया गया है। एक तरफ विवाह न होने का डर तो दूसरी ओर समाज की संदेह दृष्टयों का भय, अपनी उम्र पचीस वर्ष हो जाने से अपराध भावना से ग्रस्त नायिका को चित्रित किया गया है।

(v) राजू

राजू कहानी की नायिका भी अधूरेपन की समस्या से ग्रस्त है। राजू का जन्म क्या हुआ उसने अपने पति को ही खो दिया। राजू की आँखों में दर्द होने के कारण वह गलत दवा दे बैठती है। अंधश्रद्धा को अपनाने वाली 'भग्गो' परिवार के लिए अपशकुनिया सिद्ध हो जाती है। अपने ज्ञान के अधूरेपन का अहसास उसे हर वक्त होता है। जैसे ही वह अपने छोटे भाई की शादी में पहुँचती है नानी का चेहरा उतर जाता है। मौसी कहती है "ब्याह शादी के मेले ठेले सुहागिनों के होते है, कोई दूध-पीती बच्ची तो नहीं हो जो समझाया जाय।" **(19)**

उसे काल कोठरी में बिठाया जाता है। अपने जीवन के अभावोंको भग्गो पूरी समझ चुकी है। वह क्षण भर भी बारात में रुकना अनुचित समझते हैं।

(vi) अट्ठावनवाँ सालः

प्रस्तुत कहानी में दिन-रात दफ्तर में व्यस्त रहने तथा अवकाश प्राप्ती के बाद अपनी गैरजिम्मेदारी सरकारी अफसर की मानसिक दशा का चित्रण किया है।

(vii) मनहुसाबीः

मनहुसाबी कहानी की नायिका 'उषा' के जन्म की कहानी कुछ ऐसी विदारक है कि उसका 'व्यक्तित्व' आजीवन पूर्णत्व प्राप्त न कर सका। मनहुसाबी का मूल नाम उषा होने पर भी वह जीवन में 'मनहूस' समझी गई। उसने माँ से सुना है। जब वह पेट में आयी, माँ को बहुत गुस्सा आया था। माँ ने उसे मिटाने के लिए सबकुछ किया। अपने पेट पर मुक्के मारे, मेथी उबालकर पी पर उसे कुछ नहीं हुआ। दादी ने कहा, "बेटा हुआ तो कथा कहने, बेटी हुई तो घूरे पे डाल देंगे या अस्पताल में ही छोड़ आयेंगे।" **(20)** उसके रूप रंग स्वास्थ खराब होने के साथ-साथ घर की आर्थिक स्थिति भी अच्छी न थी। अतः उषा को 'मनहूस' कहकर पुकारा जाने लगा।

(viii) मनोविज्ञानः

इस कहानी की नायिका कविता पुरूष(पति) के अंह द्वारा सदैव प्रताड़ित रहती है। मनोरूग्ण पति 'नवीन' किसी अन्य द्वारा अपनी पत्नी की हुई प्रशंसा सह नहीं पाता। विवाह के प्रथम वर्ष के साथ-साथ प्रथमोल्लास भी खत्म हुआ और सारी ऊपरी आधुनिकती के बावजूद नवीन के प्राचीन संस्करण का बोध भी कविता को हुआ। वह लोगों से कुतर्क

करता लेकिन उसे पता होता कि वह गलत है लेकिन होर मानना उसे नापसंद था। इस प्रकार मनोरूग्ण पति का यहाँ वर्णन किया गया है।

(xi) आसमारी:

आधुनिक काल में जगह की कमी किस प्रकार महसूस होती है और पुरानी आलमारी की वजह से जगह की कमी से तंग आकर नायिका आलमारी कैसे बेच देती है, इसका वर्णन किया है। आसमारी घर का एक हिस्सा है उसका पति एक भी चीज यहाँ की वहाँ होना पसंद नहीं करता। पत्नी के इस व्यवहार से पति एवं बच्चा भी मायूस हो जाते हैं। इस प्रकार किसी निर्जीव चीज के प्रति भी हमारे दिल में कैसा मोह होता है इसका वर्णन किया है।

(x) बिटियाः

यह एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसकी शादी तय करने के लिए दहेज के रूप में उसके पिता की जान से प्यारी स्कूटर भी देने के लिए तैयार हो जाते है। उनकी बेटी अपने कॉलेज के एक लड़के के प्रति आकर्षित है लेकिन जब वह उससे प्यार का इजहार करता है तब तक उसकी शादी तय हो जाती है। उसके प्रति आकर्षित होने के कारण उसे भी दुःख होता है। और वह बीमार हो जाती है उसके पिता उसे स्कूटर पर बिटाकर अस्पताल ले जाते है तब अचानक से ट्रक सामने आ जाता है और उनका कंट्रोल खो जाता है और एक्सिडेंट में उनकी बेटी मर जाती है। यह कहानी दहेज प्रथा के परिणामों का सप्रमाण चित्रण है।

(xi) दर्पणः

प्रस्तुत कहानी की नायिका 'बानी' का उपयोगितावादी पति शादी के बाद ही अपने प्रभुत्व को कुछ इस तरह इस्तेमाल करने लगा कि हर बात में उसकी अनुमति अनिवार्य

थी। शाम को जब पति दफ्तर से लौटकर आता “बानी कपड़े बदल, हाथ मुँह धो एकदम तरोताजा रहती। उसकी इच्छा थी की उसका पति उसकी ओर देखे। लेकिन पति के लिए उसका समस्त रूप लावण्य मात्र रात्रि कालीत संपदा थी”। इस तरह बानी बेतरह अकेली रह जाती।

(xii) नयी दुनियाः

प्रस्तुत कहानी में शिक्षा के अभाव के कारण पारिवारिक सदस्यों द्वारा उपेक्षित लड़की के अकेलपन को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

6. जाँच अभी जारी है

ममता कालिया का यह कहानी संग्रह 1989 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में कुल सोलह कहानियाँ संकलित है जो 160 पन्नों में पूरी हो जाती है। इस संग्रह की विशेषता यह है कि अधिकतर कहानियाँ नारी समस्या के साथ अन्य कई समस्याओं को दिखाने वाली है, जैसे-साहित्यकारों की समस्या, बेरोजगारी की समस्या पुलिस का भ्रष्टाचार, छोटे बच्चों की समस्या आदि। नारी समस्या के अंतर्गत पति अधिनस्थ स्त्री की समस्यायें अधिकारियों के लंपटपन की वजह से स्त्री के सामने आनेवाली समस्याएं, दापंत्य जीवन का संघर्ष आदि कई तरह की समस्याए हमें देखने को मिलती है।

(i) सेमिनार:

इस संग्रह की प्रथम कहानी है जिसमें ममता जी ने साहित्यकारों के संदर्भ में लिखा है। सेमिनार के बहाने लेखक कभी कभी प्रकाशकों को कुछ दिनों के लिए टाल देते हैं। चाहे

उस सेमिनार में उस लेखक की तरह लिखने वाले लोग हो, न उसकी तरह सोचने वाले साथी है। आजकल ऐसी भी लेखिकाएं होती है तो अपने निजी जीवन की झलक को दर्शाने वाली कहानियाँ लिखती है। इनकी कहानियों में आज-कल वे क्या कर रही है, इस बात का पता चलता है। आधुनिकता के नाम पर ये सिगरेट, शराब पीती है। ऐसे सेमिनार में प्रस्तुत की जानेवाली कोई भी रचना क्यों न हो, अध्यक्ष उसकी सरहना ही करते हैं। ऐसा लगता है कि मानो सेमिनार से ज्यादा ये सैर करने आए हो।

(ii) उमस:

इस कहानी में शादी के कई सालों बाद जब उन दिनों के रिश्तों में एक तनाव सा दिखाई देने लगता है, जब पति न तो पत्नी से प्यार करता है, न बच्चे से। जबकि साब उससे जल्दी काम निबटाने की अपेक्षा रखता है। ऐसे वक्त स्त्री को एक उमस महसूस होती है और वह जीना ही नहीं चाहती है तब उसकी क्या स्थिती होती है इसका वर्णन किया गया है। हर वक्त काम और दो मीठे बोल बोलनेवाला कोई नहीं। उसकी सास उसे बार-बार ताने देती रही थी। वह अपने पति के दोस्तों के बीच बोलती है तो कभी थककर सो जाती है तो हमेशा के लिए सो जाने के बारे में सोचती जाती है। तब उसे न कोई रोकने वाला होगा, न टोकने वाला।

(iii) जाँच अभी जारी है:

इसमें बैंक के क्षेत्र में चल रहे भ्रष्टाचार, स्त्रियों को नौकरी करते वक्त आने वाली समस्याएँ, अधिकारियों का स्त्री लंपटपन आदि बातों का वर्णन किया गया है। कहानी की नायिका एक राष्ट्रयकृत बैंक में काम कर रही है और बैंक क्षेत्र को आदर्श क्षेत्र मानती है। वहाँ भ्रष्टाचार हो ही नहीं सकता ऐसी उसकी धारणा है। उसे एक केस में उलझाया जाता है। उसकी फाइल घूमती रहती है लेकिन उसकी जाँच कभी खत्म नहीं होती।

(iv) रजत जयंती:

इस कथा में एक पति-पत्नी अपने शादी की रजत जयंती मना रहे हैं। सभी दोस्त उनकी मदत करते है उनकी पत्नीयाँ भी मदत करती इस बीच पति-पत्नी लड़ते-झगड़ते हैं। जब उनका रहस्य पूछा जाता है नायक कहता है कि इसी तरह लड़ते-झगड़ते जीवन के पच्चीस साल बीत गए।

(v) इक्कीसवी सदी:

इसमें पुलिस विभाग में होने वाले भ्रष्टाचार को बताया गया है। विनोद और रेखा जब घूमने चले गए थे, अचानक बारिश की वजह से होटल में ठहरते हैं। होटल के टायलेट में रेखा बाल पोंछने जाती है और गायब हो जाती है। थाने में रिपोर्ट लिखने के लिए जब विनोद जाता है तब थानेदार इंकार कर देता है। होटल में छानबीन के बाद रेखा न मिलने पर थानेदार बड़े अफसर के पास जाता है। होटल के पीछे की रेल लाईन पर रेखा की क्षत-विक्षत लाश पायी जाती है।

(vi) दांपत्य:

प्रस्तुत कहानी में पति-पत्नी का व्रणन किया गया है जिनकी शादी को बीस साल हो चुके हैं। दिनभर मेहनत से थकी पत्नी जब सो जाती है तब उसका पति उससे बात करना चाहता है, उसकी पत्नी का शारीरिक सौंदर्य तो नष्ट हो ही चुका है साथ ही वह उसकी मोहब्बत को मशक्कत समझने लगती है। इस प्रकार कई सालों बाद दांपत्य जीवन की मधुरता नष्ट हो जाती है इसका चित्रण किया है।

(vii) नया त्रिकोण:

इस कहानी में नायक, नायिका औऱ तीसरे स्थान पर जीजी है। उन दोनों का जीना

हराम हो गया है। जीजी अपनी चीजें गुम कराती और गुस्सा घर के लोगों पर उतारती। छोटी छोटी बात पर वह नायिका को डाँटती। नायक इस सोच में पड़ गया था कि इस त्रिकोण से बाहर कैसे निकले।

(viii) प्रिय पाक्षिक:

बेरोजगारी से तंग नायक एक महिला पत्रिका के दफ्तर में काम करने लगता है तो उसके दोस्त उसे चिढ़ाते रहते हैं। वह मजबूरी में यह नौकरी करता है। इस कहानी में पुरूषों की बेरोजगारी का चित्रण किया है।

(ix) अनुभव:

प्रस्तुत कहानी में मध्यवर्गीय परिवारों में होनेवाले नौकरों की स्थिति का चित्रण किया है।

(x) पहली:

आमतौर पर महीने के आखिर में घर में एक चीज है तो दूसरी नहीं। इसी वजह से पहली तारीख घर में त्यौहार की तरह होती है। यह कहानी आर्थिक समस्या को उठाती है।

(xi) नायक:

इस कहानी में कॉलेज के एक लड़के की मानसिक स्थिति को बिगाड़ने वाले और गलत रास्ते पर ले जाने वाले अध्यापक का चित्रण किया है।

(xii) वर्दी:

इस कहानी में पुलिस विभाग में काम कर रहे सिपाही का वर्णन किया है जो अपनी मर्जी से सारी चीजें बाजार से मुफ्त लाता है और घर वालों पर रोब चलाता है। एक दिन वह

उन दोनों को पीटता है। वर्दी इन सभी बातों की जड़ है यह मानकर उसका बेटा वर्दी को होली में जला डालता है।

(xiii) चोट्टिन:

यह कहानी आर्थिक समस्या को दर्शाती है। बारह साल की लड़की औक उसकी माँ बर्तन माँजने का काम करती हैं। लड़की कभी कभी चोरी करती है। उसके पास जाँधिया नहीं है कि वह न हो सके।

(xiv) झूठ:

प्रस्तुत कहानी का संपादन अपना प्रभाव जमाने के लिए एक लेखिका से झूठ बोलता है दोनों अपने बारे में गलत जानकारी देते हैं। सामने जाने पर खीझ से भर उठते हैं।

(xv) शॉल:

प्रस्तुत कहानी में एक औरत जो अनपढ़ है और स्कूल में काम करती है। सभी अध्यापिकायें अपनी खाली समय में उससे चाय की मांग करते हैं। लेकिन चंदा इकट्ठा कर शॉल देने की जब बात आती है तो सभी उसे ताने देती है। इससे नाराज होकर वह शॉल वापस कर देती है।

(xvi) इरादा:

इस कहानी की नायिका शिक्षित है लेकिन पति अधिनता होने के कारण अपनी पति के कहने पर और माँ की बीमारी पर मायके जाना चाहती है तब वह उसपर संदेह व्यक्त करता है। जाने से इंकार कर देने पर भी वह संदेह व्यक्त करता है तो फिर वह जाने का इरादा बता देती है। इस संग्रह की सभी कहानियों में नारी समस्याओं को उजागर करते हुए स्त्रियों की मानसिकता को प्रस्तुत किया है।

7. बोलनेवाली औरत

बीसवीं सदी के अंतिम दशक, सन् 1998 में ममता जी द्वारा लिखी गई कहानियों का यह सातवां कहानी-संग्रह है। विवेच्य संग्रह में कुल 13 कहानियाँ संकलित है। शीर्षक कहानी संग्रह के पहले स्थान पर है। प्रस्तुत संग्रह की अधिकांश कहानियाँ नारी जीवन की समस्या के साथ-साथ वर्तमान जीवन की जटिलता को प्रदर्शित करती है।

(i) बोलनेवाली औरत:

प्रस्तुत कहानी का नायक कपिल और नायिका शिखा के माध्यम से पारिवारिक संबंधों को उजागर किया है। कपिल अपने व्यवसाय से बचा हुआ समय अखबारों, पत्रिकाओं और दोस्तों में बिताता। अकेली शिखा घर में कैद दिन बिताती रहती है। वह अपने जीवन के पिछले दस सालों और अगले बीस सालों पर नजर डालती और घबरा जाती है। वह सोचती है न जाने कब, कैसे वह फुलटाइम, गृहिणी बनती गयी। जबकि उसने जीवन में एक अलग तस्वीर को देखा था। उसके पति को एक गांधारी चाहिए थी जो सिर्फ गूँगी और बहरी बनी रहे। शिखा ने अपने परिवार में परिवार की शर्तों पर रहते रहते न सिर्फ वह अपनी शक्ल खो बैठी है वरन् अभिव्यक्ति भी।

(ii) मेलाः

'मेला' नामक कहानी में धार्मिक स्थानों पर साधु संतों द्वारा किए जाने वाले दुर्रव्यवहार और व्यभिचार को अभिव्यक्त किया है।

(iii) जनम:

जनम कहानी की नायिका 'मनोरमा' दुबारा लड़की का जन्म देने के कारण ससुराल के सदस्यों द्वारा उपेक्षित है। वह स्वयं को किसी भी कीमत पर संतुष्ट न कर पायी।

मनोरमा की दैनिक चर्चा जेल में रहने वाले कैदी की दिनचर्या से ज्यादा कठोर थी। मनोरमा के लिए अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए मशक्कत और मान-मनोबल दोनों निहायत जरूरी थे। दादी अपनी बहू द्वारा इस बार 'बेटा' पैदा होने की लालसा रखती है। अस्पताल में दादी का चेहरा पीला पड़ गया। मनोरमा अपनी बच्ची को देखकर सोचती है कि वह फिर से छली गयी है। वह अपने मन को असंतोष छिपाए छिपा नहीं पायी।

(iv) रोशनी की मारः

रोशनी की मार के केंद्र में एक अछूत नारी है। प्रस्तुत कहानी अपने परिवार का पेट भरने के लिए घरों में काम करती है। अछूत होने के कारण उसके जीवन में अनेक समस्याएँ आती है। हें इस कहानी में रेखांकित किया गया है।

(v) सेवा:

इस कहानी में एक परिवार का चित्रण किया है जिसमें माता पिता और बेटा बहू रहते है लेकिन आजकल की पश्चात्य सभ्यता से आकर्षित होकर अपनी सभ्यता को भूलने वाले बेटा और बहू इसके शिकार हो जाते है। उनके दुष्परिणामों को प्रकट करने वाली यह कहानी है। दिखावे के लिए बहू बेटा अपनी बीमार माता-पिता को औपचारीक सेवा करते है।

(vi) तासीरः

तासीर नामक कहानी में ममता जी ने पति-पत्नी के अटूट संबंधों को रेखांकित किया है जो हमेशा एक दूसरे का सहारा बनते है। अपनी पत्नी के अभाव में कंसल बाबू त्रस्त जीवन व्यतीत करते है। वह न तो किसी को कुछ बता सकते हैं और न ही बोल सकते हैं। इस कहानी में वह अपने जीवन के अंतिम क्षणों को उजागर करते है। जिंदगी के अंतिम अंश को वह इस कहानी में प्रस्तुत करता है।

(vii) किताबों में कैद आदमीः

प्रस्तुत कहानी एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अपने रोजमर्रा के काम से अवकाश प्राप्त करता है और अपने जीवन में अकेला होने का एहसास करता है। अवकाश प्राप्ति के बाद जिस प्रकार अकेला व्यक्ति अपने अकेलेपन से ग्रस्त होता है उसी प्रकार वह अपने अकेलेपन को उजागर करता है।

(viii) पर्याय नहीं:

प्रस्तुत कहानी एक डॉक्टरी पेशा रखने वाले पति और पत्नी की है जो अपने पेशे को अधिक महत्व देते हैं। इस के साथ अर्थ संबंधी नैतिक-अनैतिक विचारधाराओं के संघर्ष को प्रस्तुत किया है।

(ix) एक अकेला दुःख:

प्रस्तुत कहानी की नायिका 'नीता' ने तो अपने भाई के परिवार को स्वयं बनते-बिगडते देखा है। बड़ा सुख था उस परिवार में। अकेली बहन का दुःख भी अकेली। भाई की मृत्यु के बाद असहाय नीता के लिए अपने विवाह की उमंग भी छूटती हुई महसूस हुई। समय के साथ वह समझौता करती है वह अपनी भाभी को उसके पास आकर रहने के लिए कहती है शायद वे दोनों एक दूसरे का सहारा बने। नीता की चेतना ने यह स्वीकार किया था कि अपने लिए, "वर्तमान एक चुनौती तो अतीत एक शरण स्थल है।" उसे अपनी वास्तविक परिस्थिति का बोध हो जाता है।

(x) अर्द्धांगिनी:

प्रस्तुत कहानी की नायिका 'रूपा' तो वैसे रूपसी थी। शादी के बाद वह आँखों में काजल लगाती। वह अपने पति से भी उतना ही प्यार पाती है। वह पति की सराहना,

आराधना को अपना भाग्य और अधिकार मानती है। शादी के बाद स्तन कैंसर के कारण सर्जरी में रूपा का बायाँ वक्ष देह से अलग कर दिया जाता है। अब रूपा को लगता है "एक वही दरिद्र हो गई। शेष नारी संसार उतना ही रूप संपन्न है जितना पहले था। उसकी संवेदनाओं में अब उत्साह के लिए कोई स्थान नहीं था। उसके एहसास के साथ उसका समूचा आत्मविश्वास अकबका गया। उसे लगता वह अधूरी नारी है। उसे अपना जीवन निस्तेज, निरर्थक और निष्प्रयोजन दिखाई देता। "**(21)**

(xi) बच्चाः

'बच्चा' नामक कहानी के केंद्र में एक ऐसा परिवार है जो पूर्णरूप से पाश्चात्य सभ्यता में डूबा है। ऐसे पारिवारिक परिवेश में बेचे के मानसिक संघर्ष को दर्शाया गया है।

8. मुखौटा

ममता जी का यह आठवाँ कहानी संग्रह है जो सन् 2003 में प्रकाशित हुआ। विवेच्च संग्रह में कुल 18(अट्ठारह) कहानियाँ संकलित है, जिसमें से दो कहानियाँ 'आलमारी' और 'लड़कियाँ' अन्य संग्रहों में प्रकाशित हो चुकी है। इनमें से कुछ प्रमुख कहानियों का परिचय इस प्रकार दिया जा रहा है।

(i) चिर कुमारीः

'चिर कुमारी' प्रस्तुत संग्रह की प्रथम कहानी है। प्रस्तुत कहानी में ममता जी ने पैतीस वर्ष की अविवाहीत नौकरीपेशा नारी के विवाह संबंधी के मानसिक अंर्तद्वंदों को उजागर किया है।

(ii) परदेसः

'परदेस' कहानी में पाश्चात्य सभ्यता और भारतीय सभ्यता का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। जिसमें दो वृद्ध नारियाँ विदेशों में रहते हुए भी अपने संस्कारों के बलबूते पर भारतीय संस्कृति की भव्यता दिव्यता को उद्घाटित करती है।

(iii) एक रंगकर्मी की उदासीः

प्रस्तुत कहानी में जीवन को आकर्षक बनाने की महत्वकांक्षा तथा दोहरा झूठ जीने की आशकां में अस्थिर युवक की मानसिकता को ममता जी ने बड़ी मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है।

(iv) बाल बाल बचने वालेः

इस कहानी की नायिका आत्मकथात्म शैली में जीवन के 'भय' को शब्दबद्ध करती है। कहानी में वर्तमान जीवन की आकस्मित घटनाओं के प्रति संवेदनशील रहने वाली नायिका का बखुबी चित्रण किया गया है।

(v) श्यामाः

'श्यामा' नामक कहानी में एक ऐसी नारी का चित्रण किया गया है जो पति द्वारा प्रताडित है। इसी कारण अर्थ प्राप्ति के लिए जीवन संघर्ष करती है और सफल हो जाती है।

(vi) मान लो किः

इस कहानी में पिता-पुत्र के संवेदनशील संबंधो को दर्शाया गया है।

(vii) प्रतिप्रश्नः

प्रतिप्रश्न कहानी की नायिका 'महिमा' को अविवाहित रहने की अपनी स्थिति वरदान स्वरूप लगती है। अपने 'अहं' के प्रति सदैव सचेत रहने वाली महिमा एक अदद

पुरूष की सेवा में अपने जीवन का संपूर्ण समर्पण सोच भी नहीं सकती थी। इस प्रकार नायिका के वैचारिक एवं मानसिक संघर्ष की प्रस्तुत किया गया है।

(viii) सफरः

'सफर' नाम के कहानी में मातृ प्रेम को उजागर किया गया है।

(ix) उत्तर अनुरागः

प्रस्तुत कहानी की नायिका 'रेनू' पति समर्पिता पत्नी होते हुए भी मोहभंग की स्थिति का शिकार बनी है। पति के प्रति अत्याधिक अनुराग होने पर भी किसी दूसरी 'औरत' का प्रवेश रेनू को विरक्त बना देता है। रेनू अपने पति को बॅटता हुआ नहीं देख सकती अपने मोहभंग की स्थिति का वर्णन करते हुए रेणू मिसेस मिश्रा से कहती है- "कितना अजीब है न कि शादी में सफर शरीर से शुरू हो कर शरीर तक ही बना रहता है।" आकस्मित मोहभंग की स्थिति में रेनू की चेतना अब पुरूष की वृत्तियों का मनोमन अनुसंधान कर रही है।

(x) रोगः

'रोग' कहानी में ममता जी ने मध्यवर्गीय नौकरीपेशा परिवार में तबादले के कारण उत्पन्न होने वाली मानसिक समस्याओं को अंकित किया है।

(xi) सीमाः

'सीमा' कहानी में पति अधिनस्थ पत्नी के मानसिक संघर्ष को उजागर किया गया है।

(xii) एक दिन अचानकः

कहानी में अनपेक्षित दुर्घटना का शिकार होने वाले अचेत बेटे के दुखों को सहते सहते माता-पिता की कारण गया है।

(xiii) रिश्तों की बुनियादः

इस कहानी में दहेज समस्या को दर्शाया गया है। भाई भाभी के साथ रहती नायिका भयावह एवं त्रासद जीवन दिखाया है।

(xiv) दूसरा देवदासः

यह एक प्रेम कहानी है।

(xv) बाण गंगाः

'मुखौटा' संग्रह की यह अंतिम कहानी है इसमें निम्न मध्यवर्ग की असुशिक्षत की भावना मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है। इस प्रकार विवेच्य संकन की अधिकतर कहानियाँ 21 वी सदी के भयावह परिवेश को बेबक ढंग से प्रस्तुत करती है।

9. निर्मोही

प्रस्तुत कहानी संग्रह 2004 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल सत्रह संग्रह कहानियाँ संकलित है।

(i) निर्मोहीः

निर्मोही नामक कहानी में ममता जी ने निर्मोही एवं नीरस राजा सूरसेन की पत्नी फूलमती के अमर प्रेम की व्यथाओं को उजागर किया है। यह कहानी नारी जीवन की त्रासदी की जीवंत प्रमाण है।

(ii) सुलेमानः

सुलेमान कहानी में नौकरी पेशा परिवार में आने वाली मर्यादाओं के माध्यम से जीवन में सपनों की बुनियाद को परखना चाहा है।

(iii) ऐसा ही था वहः

इस कहानी के मुख्य पात्र पिता और पुत्र है। इसमें पिता पुत्र के अनुशासन युक्त जीवन की झांकी प्रस्तुत की है।

(iv) दिल्लीः

प्रस्तुत कहानी में ऐसे परिवार का चित्रण किया गया है। जिसमें चिंताओं से ग्रस्त दंपत्तियों का चित्रण किया है। दिल्ली जैसे बड़े शहर में जहाँ परिवारों में होने वाले विघटन, व्यावसायिक, आर्थिक और सामाजिक जटिलता को इन दंपत्तियों के माध्यम से उभारा है।

(v) वह मिली थी बस में:

प्रस्तुत कहानी में एक ऐसी स्त्री का चित्रण किया है जो विवाहित है। पति अधीनस्त होने के बावजूद अपना परिवार अच्छे से संभालती है। फिर भी घर से बाहर निकल ने के बाद वह पूरी मानसिक चिंताओं से घिरी रहती है। ममताजी ने इसका यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

(vi) बांगडूः

प्रस्तुत कहानी में पारिवारीक संबंधों को दिखाया है। एक परिवार में माता-पिता की गरिबी के कारण उनका बेटा महानगर में रहने वाले अपने चचेरे भाई के परिवार में दिन-रात छोटे-बड़े कामों में व्यस्त रहने लगता है। उसका नाम सत्यदेव है। ममता जी ने उसके निश्च्छल स्वभाव का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण किया है।

(vii) बाथरूम:

इस कहानी में पारिवारीक समस्याओं को दिखाया गया है। इसमें नई नवेली बहू के मानसिक तनाव एवं द्वंद्व को अत्यंत सूक्ष्मता से शब्दबद्ध किया गया है।

(viii) सिकंदर:

सिकंदर कहानी में पारिवारीक समस्याओं को दिखाया गया है। अर्थाभाव के कारण परिवार को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण किया है।

(ix) नमकः

नमक कहानी में नारी की मानसिक स्थिति को उजागर किया गया है। ममता जी ने ढलती उम्र में खान-पान की समस्याओं से ग्रस्त नारी के मानसिक आक्रोश
शब्दबद्ध किया है।

(x) पिकनिकः

प्रस्तुत कहानी पारिवारीक समस्याओं को चित्रित करती है।

(xi) खानपानः

इस कहानी में ममता जी एक नौकरीपेशा, अविवाहित और सुशिक्षित स्त्री के वैचारिक द्वंद्व को उजागर किया है।

(xii) बोहनीः

प्रस्तुत कहानी में व्यावसायिक परिवेश को दिखाया है। इसी के साथ व्यवसाय में जुड़े लोग जैसे दुकानदार अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए क्या करते है किस हद तक गिरते है उनकी मनोदशा का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया गया है।

(xiii) मुन्नीः

मुन्नी कहानी की मुन्नी दो साल की उम्र तक तीन जानलेवा बीमारियों का सामना कर चुकी थी, चेचक, काली, खाँसी और गर्दनतोड़ बुख़ार। क्लास में सभी लड़कियाँ उसकी उपेक्षा करती है। अपने अह की सुरक्षा हेतु एक लड़की के साथ लड़ाई करनेवाली मुन्नी अपनी मदर से माफी नहीं माँगती। वह अपने परिवार द्वारा दिए गए संस्कारों को प्रतिष्ठित करती है।

(xiv) समयः

प्रस्तुत कहानी में एक वृद्ध नारी के मानसिक संघर्ष को दर्शाया गया है।

उपयुक्त कहानियों के अतिरिक्त उड़ान, पीठ, सवारी कहानियाँ भी विविध समस्याओं को दर्शाती हैं।

10. थिएटर रोड़ के कौवे

प्रस्तुत कहानी संग्रह का प्रकाशन 2007 में हुआ। इसमें कुल 26 कहानियाँ है। जिसमें से 19 कहानियाँ पूर्व प्रकाशित अन्य कहानी संग्रहों में संकलित है। कुछ प्रमुख कहानियों का परिचय इस प्रकार दिया जा रहा है।

(i) सूनीः

'सूनी' कहानी की नायिका का नाम तो था सुनंदा लेकिन उसे ज्यादातर लोग सूनी या 'सूनी' ही कहते थे। सही समय पर उसकी शादी न होने के पीछे उसके माँ की बड़ी अहम भूमिका थी। माँ का कहना था कि वे सूनी के लिए ऐसा वर चाहती है जो उन्हीं के साथ आकर रहे, कभी ऊंची आवाज में न बोले, माँ के लिए सेवा भाव रखे। सूनी को लगता उसके सारे इरादों पर माँ एक लाल बत्ती की तरह टिकी हुई है। इनके रहते उनसे मुक्त होना उसके बस की बात न थी। और दूसरी ओर सूनी विवाह को लेकर स्वयं सक्रिय होना हास्यस्पद मानती थी। इस प्रकार ममता जी ने पढ़ी लिखी अविवाहित नौकरीपेशा नारी के अकेलेपन को चित्रण किया है।

(ii) छोटे गुरूः

छोटे गुरू कहानी में प्रौढ़ नारी की मनोदशा के साथ ही सक्रिय समाज की सात्विक विचार धारवाले पुरूषों के अच्छे व्यवहार का भी चित्रण किया गया है।

(iii) खुशकिस्मतः

प्रस्तुत कहानी की नायिका एक बड़े कॉलेज में क्लर्क का काम करती है। लेकिन वह मात्र एक छात्रा के अघोषित परिक्षा फल को लेकर उसके भाई द्वारा क्रोध से फेंके गए पेपरवेट का शिकार बन गयी थी।

(iv) नए दोस्तः

प्रस्तुत कहानी में बीमार बेटे के कारण माता-पिता के तनाव एवं अंर्तद्वंद्व को दर्शाया गया है।

(v) थिएटर रोड के कौवेः

प्रस्तुत कहानी की नायिका 'बेला' पति के घर रहने पर भी स्वयं को अकेला महसूस करती है। इसमें नारी के अंर्तद्वंद्व को स्पष्ट किया गया है।

11. पच्चीस साल की लड़की

प्रस्तुत कहानी संग्रह सन् 2007 में प्रकाशित हुआ इसमें कुल 12 कहानियाँ है। 10 कहानियाँ पूर्व कहानी संग्रह में संकलित हैं। यहाँ दो कहानियों का परिचय दिया जा रहा है।

(i) कौवे और कोलकोताः

'कौवे और कोलकोता' नामक कहानी में दो सगी बहनों के अविवाहित नौकरी पेशा जीवन की त्रासदी को अंकित किया गया है।

(ii) अकेलियाँ दुकेलियाँ:

प्रस्तुत कहानी ममता जी द्वारा लिखित सबसे लंबी कहानी है इसमें सुशिक्षित, नौकरी पेशा नारी की विभिन्न मनोदशा का विश्लेशण किया गया है।

12. काके दी हट्टी

प्रस्तुत कहानी संग्रह 2010 में प्रकाशित हुआ है। इसमें 16 कहानियाँ संकलित हैं। इनमें से 5 कहानियाँ पहले प्रकाशित हो चुकी हैं।

(i) काके की हट्टी:

प्रस्तुत कहानी 'काके दी हट्टी' के केंद्र में एक कॉलोनी है। वहाँ काके की एक छोटी सी दुकान है। काके कॉलोनी में रहनेवाले की हर संभव मदत करता है। काके लोगों को उनके नाम से नहीं बल्की नंबरों से जानता है। काके तुरंत ही उनकी चीजों को घर पहुँचा देता है।

लेकिन थोडे दिनों में उसके दुसान के सामने 'ए बी सी' सुपर स्टोर खुल जाता है। कॉलोनी के सभी लोग आर्थिक सुविधाओं के कारण उस स्टोर से अपनी जरूरत का सामान खरीदने लगते हैं और काके की दुकान को अनदेखा कर देते हैं।

(ii) एक रिश्ता तो थाः

प्रस्तुत कहानी प्रेम संबंधों को उजागर करती है। इसकी नायिका इति मन ही मन अपनी कॉलोनी में रहने वाले युवक आदि नायर से प्रेम करती है जो एक ही कंपनी में कार्यरत है। इति को यह पता नहीं है कि आदि उसे पहचानता है या नहीं। वह दफ्तर में लोगों से ज्यादा इंटरनेट और सैलफोन से अधिक चिपका रहता है। एक दिन अचानक दफ्तर में हड़ताल के कारण आदि इति को दफ्तर तक लिफ्ट देता है। लेकिन गाड़ी पेड़ से टकराने के कारण उन दोनों का उसी टैक्सी में देहांत होता है।

(iii) जाते हुए लोगः

इस कहानी में प्रतिदिन समाज में होनेवाले बच्चों के जन्म और लोगों की मृत्यु पर प्रकाश डाला है। जिस तरह किसी कारणवश मनुष्य का देहांत होता तो लोग उसपर दुःख व्यक्त करते है और जन्म के दौरान खुशियाँ व्यक्त करते हैं।

(iv) सुरक्षा का आतंकः

पंजाब जो आज भी हिंदुस्तान के नक्शे पर धडकता है। न जाने कहाँ से, यहाँ घुसा था आतंकवाद। ऐसी ही एक युनिर्वर्सिटी में आतंकवाद का साया था। हिंदी और संस्कृत विभाग पर खतरा था। कुलपति ने यह आदेश दिया कि प्रोफेसरों को एक गार्ड दिया जाय. गार्ड होने के बावजूद वह असुरक्षित महसूस करते है। उन्हें लगता वह बड़ी मुश्किल से जी रहे हैं। डॉ.चंद्रा तो स्कूटर से आता जाता था जो हिंदी विभाग में थे और संस्कृत विभाग के

डॉ.धर्मपाल शास्त्री साइकिल से युनिर्वर्सिटी आते जाते थे। छ महीने बाद हालात बदल गए। हर एक विद्यार्थी शक के घेरे में था। सबके मन में सुरक्षा का आतंक फैला था। सब लोग डर-डर कर जी रहे थे। सुरक्षित होने के बावजूद प्रोफेसर और विद्यार्थी किस तरह आतंकिय वातावरण में जी रहे हैं इसका चित्रण किया है।

(v) दूसरी आज़ादीः

यह कहानी विवाहित तमन्ना और उसके पति वसीम की है जो अपनी शादी के बाद अपनी पत्नी पर पाबंदी लगाता है जैसे अपने माता-पिता से न मिलना, उसे और पढ़ने की इच्छा है लेकिन वह इंकार कर देता है। वैवाहिक जीवन के टूटे रिश्तों को यह कहानी उजागर करती है।

(vi) बीतते हुएः

प्रस्तुत कहानी में विवाहित जीवन में पति और पत्नी के बिगड़ते संबंधों को चित्रित किया है।

(vii) जोरदार तालियाँ:

इस कहानी में कॉलेज में मनाये गए शिक्षक दिवस के कार्यक्रम का उल्लेख किया गया है। जहाँ हर एक शिक्षक को सम्मानित किया गया है। कार्यक्रम के उपरांत जोरदार तालियाँ बजाई गई।

(viii) एक पति की मौतः

प्रस्तुत कहानी एक तलाकशुदा स्त्री की है जिसका नाम सिया मिश्रा है। तेरह साल के बाद उसे यह खबर मिली है कि उसका पति मर चुका है। इस बात पर कोई खेद व्यक्त

नहीं करती। वह कॉलेज में पढ़ाती है। पति पत्नी के टूटे संबंधों को इस कहानी में प्रस्तुत किया है।

(xi) छोटे खिलाडीः

इस कहानी में अपर्णा द्वारा फिल्म पर लिखा गया लेखन कार्य को और उसके प्रकाशन हेतु उठाए गए सवाल को चित्रित किया गया है।

(x) फिर भी प्यारः

यह कहानी नायिका वहिनशिखा और उसके प्रेमी के अटूट प्रेम संबंधों को दर्शाया गया है।

(xi) वारदातः

प्रस्तुत कहानी के केंद्र में एक परिवार की है जिसमें माता-पिता और बेटा-बहू है।

अच्छे कॉलोनी में रहते हुए भी सब लोग अपनी ही दुनिया में खोए रहते हैं। कोई किसी की मदद नहीं करना चाहता झंझट मोल लेना नहीं चाहता।

1.42 उपन्यास साहित्य

हिंदी साहित्य में ममता कालिया उपन्यासकार के रूप में भी जानी जाती है। उनके अब तक आठ उपन्यास प्रकाशित हो चुके है जो इस प्रकार है।

1. बेघर

2. नरक दर नरक

3. प्रेम कहानी

4. लड़कियाँ

5. एक पत्नी के नोट्स

6. दौड़

7. दुक्खम सुक्खम

8. अँधेरे का ताला

ममता जी के उपन्यासों का परिचय इस प्रकार दिया जा रहा है।

1. बेघर

बेघर ममता कालिया का पहला उपन्यास है जो सन् 1971 में प्रकाशित हुआ। यह कृति अपनी ताजगी और तेवर से एक बारगी, जागरूक पाठकों और आलोचकों का ध्यान आकर्षित करती है।

स्त्री-पुरूष के शारीरिक संबंध को केंद्र में रखकर लिया गया यह उपन्यास आधुनिक समाज में पुरूष का मानसिक संकीर्णता, संस्कारबद्ध जड़ता तथा संदेह वृत्ति को व्यक्त करता है। एक लेखिका द्वारा इतने गहन गंभीर विषय पर उपन्यास लिखा जाना उस समय सबका आष्चर्य की बात लगी थी। पुरूष को केंद्र में रखकर नारी समस्या रूग्ण उद्घाटन करना ममता जी का लक्ष्य रहा है। उपन्यास का नायक परमजित रूग्ण मानसिकता से ग्रस्त है। बंबई जैसे महानगर में उसे कंफर्ट रेफ्रिजरेजन कंपनी में साधारण सा काम मिल जाता है इसी कंपनी में वह तरक्की करता हुआ चिक एजंट बन जाता है।

2. नरक दर नरक

नरक दर नरक सन् 1975 में प्रकाशित ममता जी का यह दूसरा उपन्यास है प्रेमविवाह की समस्याओं को परतदर परत खोलते चलने वाला यह उपन्यास आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का चित्र प्रस्तुत करता है।

इस उपन्यास का नायक जोगेंदर साहनी उर्फ जगन चंदीगढ़ के एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में पला बढ़ा युवक है। आधुनिक काल के शिक्षित बेरोजगार नवयुवकों का प्रतिनिधित्व करनेवाला जगन भी एक बेरोजगार है।

एम.ए. अंग्रेजी में करके भी जगन कई सालों तक रोज़गार न प्राप्त कर सका। समय चक्र से आहत होकर भी एक दिन जगन मुंबई के केजिया कॉलेज अडतालीस प्रतिशत अंकों के बावजूद प्रवक्ता के रूप में नौकरी प्राप्त कर लेता है। जगन अब छुट्टियों में भी घर नहीं जाना चाहता है। वह इन छुट्टियों में 'समर इंस्टिस्यूट' में काम करने के लिए तैयार हो जाता है इसी इंस्टिटूट में जगन का परिचय उषा से होता है। जो इस उपन्यास की नायिका है।

उषा के व्यक्तित्व में एक प्रकार का पैनापन, असहंमति तथा चुनौती का भाव था जो जगन को प्रभावित करता है। वह उसके प्रति आकर्षित होता है और उषा के समक्ष अपने प्यार का इज़हार कर देता है और वह भी जगन के प्रति समर्पित हो जाती है। फलतः वे विवाह कर लेते है।

इसके पश्चात उन्हें आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है। कॉलेज के प्रधान अध्यापक तथा प्रबंधक उसके हर काम में मनिमेख निकालने लगते है। वे उसे चेतावनी देते हुए करते हैं-"आपको एज.ए. टीचर अपने रोल के बारे में अधिक सीरियस और संस्था के प्रति अधिक सिन्सियर भी होना चाहिए।"**(22)**

कॉलेज कैंटीन में हुए उपद्रव के मामले में उसे फँसाकर बिना आरोपपत्र दिए ही, उसे निलंबित कर दिया जाता है। काफी संघर्ष के बाद वह इलाहाबाद में एक प्रेस खरीदता है।

उसका काम बहुत अच्छा चल निकलता है लेकिन वह परिवार, पत्नी एवं बेटे के लिए समय नहीं निकल पाता है। इस प्रकार पति-पत्नी के संबंधों में एक दरार सी पड़ जाती है। मुहर्रम के जुलूस पर बबलू के हाथ से पानी गिरने से उत्तेजित भीड़ उसके प्रेस को आग लगा देती है लेकिन उषा और बबलू बच जाते हैं। यही खबर उसको संतुष्टि देती है।

इस उपन्यास में एक अन्य दंपत्ति की कथा भी चलती है- विनय गुप्ता और सीता गुप्ता। सीता की समस्या, उषा से बिलकुल अलग है। उषा का पति व्यवसाय में डूबकर धीरे धीरे उसे भूलता जा रहा है तो विनय की पत्नी, सीता अपनी नौकरीगत व्यस्तताओं के कारण तथा गृहस्था के दोहरे बोझ से दबकर धीरे धीरे पति से दूर होती जा रही है। दोनों के अपने अपने नरक हैं।

नरक दर नरक में उस मौजूदा समाज व्यवस्था का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

जिसमें मध्यवर्गीय शिक्षित युवकों को अपनी सारी प्रतिभा, ईमानदारी, मेहनत और प्रथम श्रेणी की डिग्रियों के बावजूद रोजगार के लिए दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है। लेखिका ने बंबई के शैक्षणिक परिवेश में व्याप्त शिक्षकों और अधिकारियों की गुटबंदी भ्रष्टाचार, अध्यापकों के प्रति, अधिकारियों की साजिश व्यवस्था के प्रति छात्रों के असंतोष अध्यापकों की घुटनभरी जिंदगी आदि का भी प्रामाणिक चित्रण किया है।

ममता जी ने प्रस्तुत उपन्यास में आर्थिक परिवेश एवं शैक्षणिक परिवेश को उजागर किया है। जीवन की धुरी अर्थ पर ही टिकी रहती है। अर्थाभाव के कारण दोनों दंपत्तियों का जीवन नरकमय बन जाता है।

3. प्रेम कहानी

ममता जी का तीसरा उपन्यास 'प्रेम कहानी' सन् 1980 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में प्रमुख रूप से प्रेमविवाह की सामाजिक एवं व्यावसायिक समस्याओं को उजागर किया गया है। उपन्यास का आरंभ कहानी की नायिका 'जया' की पारिवारीक समस्याओं से होता है।

जया जब दिल्ली से मथुरा आता है तो वहाँ उच्च शिक्षा में प्रवेश पाने के बाद भी उसे कॉलेज में अपनी रूचि का विषय नहीं मिल पाता। छुट्टी में उसके साथ समय बिताने वाली 'यशस्विनी' जया से दोस्ती कर लेती है। उससे प्रभावित होकर जया दिल्ली विश्वविद्यालय में एम.ए. करने की ज़िद करती है। माता-पिता के विचार विनियम से आखिर जया के रहने का प्रबंध दूर के रिश्ते की आंटी के घर किया जाता है और जया मन मारकर वहाँ रह लेती है। इसके अलावा उसका मनोरंजन यशस्विनी करती। यशस्विनी, अपनी सहेली फरीदा के भाई मुहम्मद से प्रेम करती है। यशस्विनी र जया का वह मनोरंजन का विषय बन जाता है। इसी बीच आंटी के पति जया के साथ रात में अनैतिक व्यवहार करने का असफल प्रयास करते है जिसके कारण जया के कोमल हृदय में पुरूषों के बनावटी व्यक्तित्व से घृणा उत्पन्न होती है। इसी के फलस्वरूप घर छोड़कर होस्टल में रहने का निर्णय लेती है। सागर-पार छात्र समिति की सचिव के रूप में जया को नियुक्त किया जाता है। उद्घाटन समारोह में जया की मुलाकत 'गिनेस' से होती है। दिल्ली के बी.एस. अस्पताल में वह हाऊस-सर्जन का काम करता है। भारतीय संस्कारों को अपनाने वाला गिनेस जया के प्रति आकर्षित होता है। आकर्षण का रूपांतर प्रेम में होता है और दोनों विवाह के बंधन में बाँध जाते हैं। अस्पताल का बढ़ता काम और मरीजों की बढ़ती जिम्मेदारी को लेकर अपने आदर्शों के अनुसार वह समस्याओं का समाधान करने में विश्वास करता है। और उतनी लगन से मरीजों की सेवा करता है। मरीजों के प्रति सेवा

उसके पारिवारीक सुखों में दरारें उत्पन्न करती है। जया घर पर अकेली पड़ जाती है और दिन-रात अस्पताल में रहने वाला गिनेस जया की कुण्ठा की कारण बन जाता है। इस प्रकार जया और यशस्विनी की प्रेमकहानी दो अलग धाराओं में रहकर भी त्रासदी को स्पर्श करती है। जया सफल और यशस्विनी असफल प्रेम में अकेले ही संघर्ष करती है।

4. लड़कियाँ

प्रस्तुत उपन्यास सन् 1987 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास का पुनःसंस्करण 2007 में हुआ। उपन्यास की कथा नायिका और सहनायिका के अविवाहित जीवन के अकेलेपन से प्रारंभ होती है इसी के साथ उनके असुरक्षित जीवन की विभिन्न चेतनाओं को विस्तार रूप से चित्रित किया गया है। कहानी की अविवाहित नायिका 'लल्ली' एक विज्ञापन एजेंसी में काम करती है। बंबई जैसे बड़े शहर में तीन सौ छत्तीस फ्लैट में अकेली रहने वाली नायिका अपने अकेले जीवन का रोना रोते हुए अपने जीवन के आम अभावों को व्यक्त करती है।

नायिका का बॉस हामिद अपनी कज़िन कहलाने वाली बीस वर्ष आयु वाली अफशाँ को नायिका के फ्लेट में टहराने का प्रबंध करता है। वह स्वीकार भी करती है क्योंकि बॉस होने के कारण वह अपने एजेंसी के कार्य में बाधा उत्पन्न नहीं करना चाहती। अफशाँ भी अविवाहित और उसके अकेलेपन को दूर करने का विकल्प थी। वह मॉडेलिंग की दुनिया में कुछ कर दिखाने हेतु अपने घर से निकली थी वह हमेशा अपने कार्य में व्यस्त रहती। दोनों ही अपनी असुरक्षित और सुरक्षितता पर विचार करती। अफशाँ की चपलता और भोलापन, पेशेवर मॉडलों के लिए चुनौती बनकर आया। लल्ली भी विज्ञापन एजेंसी में तन्मयता से समर्पित होती रही, किंतु में असुरक्षितताओं का चिंतन बना रहा।

एक दिन नायिका को अफशाँ के पर्स में एक करार मिलती है भयभीत होकर दूसरे ही क्षण में नायिका को अफशाँ के रूम में एक पिस्तोल प्राप्त होती है जिससे नायिका डर जाती है। एक दिन अचानक भरी रात को अफशाँ पर दो आदमियों द्वारा हमला बोल दिया जाता है। नायिका उनपर पीतल के रॉड से हमला करती है। इसके पश्चात शारीरिक हानि से तो दोनों बच गई लेकिन मानसिक क्षति का अंदाजा लगाना उनके लिए असंभ था। अपनी असुरक्षितता के प्रति हमेशा सचेत रहने वाली दोनों नायिकाएँ इस घटनाओं से प्रति भाव-विप्लवित हो उठती है। अंत में दोनों हथियार फेंक कर इंसानी मुहब्बत का अनुभव करती है। और असुरक्षितताओं से बोझिल दोनों नायिकाएँ एक दूसरे को हिम्मत देकर विदा लेती है।

5. एक पत्नी के नोट्स

प्रस्तुत उपन्यास सन् 1997 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास एक ऐसे पुरूष के मन को विश्लेषित करने की कोशिश करता है कि चाहे उसकी पत्नी कितनी भी बुद्धिमान क्यों न हो, वह उससे दो कदम पीछे ही चले।

संदीप एक अत्यंत बुद्धिमान आई.ए.एस अफसर है। वह साहित्य में अत्याधिक रूचि रखता है, जिसके बलबूते पर वह हर कही अपना प्रभुत्व जमा लेता है। वह एम.ए. भी प्रथम श्रेणी में पास कर चुका है और आई.ए.एस. की परिक्षा भी बिना विशेष श्रम के पास हो गया है। वह जब दफ्तर आता था तब हर रोज एक लड़की विश्वविद्यालय जाने के लिए उसी रास्ते से जाकर रिक्शा ढूँढ रही होती। उसका सौंदर्य, उसकी सादगी, उसके चेहरे की तेजस्विता, भोलापन, कौमर्य इन सभी को देखकर वह मुग्ध होता था। इस प्रेम की परिणति

विवाह में होती है। कुछ समय पश्चात संदीप घर पर देर से लौटने लगा। संदीप अपनी प्रज्ञा एवं अफ्सरी हैसियत का उपयोग अन्य स्त्रियों को अपने प्रति आकर्षित करने के लिए भी करता है। वह अपने मित्र की पत्नी को तरह तरह के शेर सुनाकर प्रभावित करता । इसी प्रकार भार्गव दंपत्ति के भोजन पर बुलाए जाने पर वह कविता के समक्ष मिसेस भार्गव को अपने प्रति आकर्षित करता है। कविता इस वजह से उससे रूठती लेकिन वह अपनी काव्यात्मक हथियार से संवेदनशील कविता को आहत करता। इसी बुद्धी और चातुर्य से वह कविता को एक पल में शरो-शायरी से खुश करता और दूसरे पल में मानो कुतुबमीनार से धकेल देता।

संदीप अपनी प्रतिष्ठा के आधार पर लेक्चरशिप की नौकरी दिलवाता है लेकिन कविता के बढ़ते जन-संपर्क एवं कार्य-समय पर आरोप लगाकर उसपर शक भी करता है। संदीप, कविता की संवेदनशीलता और सहनशीलता का फायदा उठाता है और उससे दुर्व्यवहार करता है कविता अपनी बहन की शादी में जाती है जहाँ गलती से अस्मिता का मंगेतर अस्मिता समझकर कविता से बात करता है। जब वह अपने नौकर सोहन के साथ सामान्य बातचीत करता है तब वह उसपर लाच्छन लगाता है परिणामतः कविता अपने मनोरूग्ण पति से अलग होना चाहती है।

6. दौड़

दौड़ उपन्यास 2000 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास की कहानी एक सुशिक्षित परिवार के वर्तमान मानसिक द्वंद्वों को प्रस्तुत करती है। पवन और सघन जैसे दो पुत्र बहुराष्ट्रीय कंपनियों से जुड़े भारतीय चरित्र है। इनके माता पिता भी इलाहबाद जैसे शहर की सभ्यता और संस्कार के सूत्रधार है। बड़ा बेटा राकेशएम.बी.ए. की शिक्षा प्राप्त कर

अहमदाबाद में एल.पी.जी.गैस कंपनी के मार्केटींग विभाग में नौकरी कर लेता है। उत्पादन, विपणन और विक्रय की नितियों को दिन-रात अनुभव करने वाला पवन अपने नाम के समान उपभोक्ता संस्कृति के विधायक तत्वों को अपने जीवन में स्थान देता है। अपने जीवन तो अधिक सशक्त बनाने वाला पवन अपने माता-पिता की आकांक्षाओं को रौंदकर स्टैला जैसी अत्याधुनिक लड़की से शादी करता है। बड़े भाई पवन का समर्थन करने वाला सघन संगणकी विश्व का बादशाह बनने की लालसा में ताईवान की सॉफ्टवेयर कंपनी में नियुक्त हो जाता है। वह तो हद ही पार कर देता है। दो दिन बाज़ार विश्व का मुवायना क्या किया, अपनी पिता के जीवन की तरक्की की तुलना स्वयं से ही करने लगा। अकेलेपन के साथ सबसे जान लेवा होते हैं उदासी और पराजय बोध। इसी उदासी और पराजय बोध ने रेखा और राकेश को आहत कर दिया। बाजारीकरण के कारण परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों को चित्रण ममता जी प्रस्तुत उपन्यास में करती है।

7. दुकखम सुकखम

दुकखम सुकखम उपन्यास का प्रथम संस्करण सन् 2009 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का शीर्षक बच्चों के एक खेल गीत से लिया गया है। रेल का खेल खेलते बच्चों की लय में दादी जोड़ती, “कटी जिंदगानी कभी दुक्खम, कभी सुक्खम, कभी दुक्खम, कभी सुक्खम।” लीला और इंदु भी साथ देने लगती, “कटी जिंदगानी कभी दुक्खम कभी सुक्खम।” बच्चों भी कतार एक-दूसरे के कपड़ों का सिटा पकड़े छत पर गोल घूमती, “छकपक्कम, पकछक्कम, छकपक्कम, पकछक्कम।” बिल्लू सबसे आगे इंजन बना अपनी हथेली मुँह के आगे रखकर आवाज़ निकालता, “कूsssI”**(23)**

उपन्यास के केंद्र में एक परिवार है जिसकी तीन पीढ़ीयों की कथा कहीं गई है। पहली पीढ़ी मथुरा में रहने वाले लाला नत्थीमल और उनकी पत्नी विद्यावती की है। दूसरी पीढ़ी है- लीला, भग्गों, कविमोहन और कवि की पत्नी इंदु की है। उनकी दो बेटियाँ है प्रतिभा और मनीषा। तीसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। इस परिवार की मुखिया है-दादी संपूर्ण उपन्यास में दादी छायी हुई है। उपन्यास का प्रारंभ दादी से होता है। वह दूसरी पोती(मुन्नी) के पैदा होने से दुःखी हो उठती है। जैसे ही डॉक्टरजी ने सूचना दी कि अम्मा मुबारक हो, पोती हुई है- इसकी गहरी प्रतिक्रिया अम्मा में होती है। उनकी दशा का बयान करती ममता जी कहती है-"दादी कै चेहरा पीला पड़ गया। अब तक ऑपरेशन-थिएटर के दरवाजे से सटी खड़ी थी, अब धम्म से बेंच पर बैठ गयी। उनकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया, हलक में आँसुओं का नमक महसूस हुआ। उनकी छोटी लड़की भगवती साथ आयी थी। वह भी माँ की हालत देख रूआँ सी हो गयी ऐसे इसमें उसका भी कोई दोष रहा हो। धीरे-धीरे दादी की चेतना लौटी। वे उठकर अस्पताल के फाटक के बाहर निकल आयीं, ताँगा तय किया और भग्गो के साथ वापस मथुरा लौट चली। वृंदावन से इतनी निराश वह पहली बार लौटी थी।"**(24)**

बड़ी पोती बेबी(प्रतिभा) के जन्म पर लौटी थी जितना वह प्रसन्न थी उतनी छोटी पोती(मुन्नी) के जन्म पर दुखी थी। मानव जीवन तो दुःख सुख के दायरे में ही सीमटा रहता है। कभी जीवन में दुःख और सुख आता रहता है। दादी विद्यावती अपने सारे दुःखों को भूलकर दोनों पोतीयों में मस्त हो गई थी। जब होली के दिन दोनों पोती खो जाती है तो उनका वजूद तड़प उठता है। और बच्चीयों के मिल जाने पर प्रसन्न हो उठती है। इसी तरह जब मुन्नी को नाना ले जाते है तो उनकी व्याकुलता देखने लायक थी। उसका एक उदाहरण उल्लेखनीय है जीजी का अपना मन तड़फड़ में पड़ा था। पंजे का घाव चस-चस करने लगा

था। उसी पर सुकी हुई वह प्रार्थना के शिल्प में बुदबुदा रही थी बंसीवारे रखियो लाज, बंसीवारे रखियो लाप्त। बेबी का गुलगुला बोझ बदन पर पड़ा तो जीजी विहलता में रो पड़ी, अरे मेरी लाड़ो-काडो कहाँ थी तू रली अबेर। ऐ छिद्दू इधर आ। कहाँ मिली छोरी मोय बता। **(25)**

उपन्यास की समाप्ति विद्यावती(दादी) के देहांत से होता है इसका असर अधिक उनकी मनीषा पोती पर होती है। वह निश्चय करती हुई कहती है- मनीषा जानती है दादी की याद में कहीं कोई स्मारक खड़ा नहीं किया जाएगा। न अचल न सचल उसके हाथ में यह कलम है। वह लिखेगी अपनी दादी की कहानी। **(26)**

ममता कालिया ने मथुरा की पृष्ठभूमी में इस उपन्यास को रचा है। वैसे कथा के सूत्र दिल्ली आगरा और बंबई तक है। दूसरी कथा कवि और इंदू प्रतिभा और मनीषा से जुड़ी है। कवि अपने पिता के व्यवसाय को न अपनाकर कहीं अच्छी सर्विस करना चाहता है। वह प्रतिभाशाली विद्यार्थी, अध्यापक, अधिकारी रहा है। इस संबंध में वह पिता से उसकी समय समय पर टकराहट होती रहती है। वह मथुरा दिल्ली के कॉलेजों पर अध्यापकीय जीवन निर्वाह करता हुआ। पूना के ऑल इंजिया रेडियो(आकाश वाणी) में अधिकारी हो जाता है। जो इंदु ससुराल में बहू बनी रहती थी। लेकिन जब वह पूने में पति के संग रहने लगी। वह पूरी आधुनिका बन गयी थी। उसने अपने बॉल कटवा लिए थे लिपीस्टिक पाउडर से अपने चेहरे को सजाती सँवारती है। जिस बड़ी बेटी प्रतिभा को वह चाहती थी वह एडवट टाइजिंग कंपनी जाकर विख्यात मॉडल बन जाती है। छोटी बेटी ने अपने माता-पिता, दादी का साथ निभाया। वही इस कहानी की नेरेटर है।

8. अँधेरे का ताला

ममता कालिया का यह उपन्यास सन् 2010 में प्रकाशित हुआ। अँधेरे का ताला में ममता ने अपने चिरपरिचित परिवेश- कॉलेज की अध्यापिकाओं, छात्राओं और अन्य कर्मचारियों के जीवन- को चित्रित किया है। निराला की प्रसिद्ध कविता की पंक्तियों को सामने रखते हुए ममता ने अँधेरे का ताला खोलने वालों की असलियत को अपने सुपरिचित व्यंग्य-विनोद-भरी शैली में उकेरा है। शिक्षा का क्षेत्र किस तरह की उथल-पुथल का शिकार है, इसका एक दस्तावेज़ी चित्रण ममता ने इस उपन्यास में किया है और अंत में नंदिता और उसकी छात्राओं की हिम्मत पाठक को एक अदम्य साहस से भर जाती है। उपन्यास की खुबी यह है कि ममता ने कहीं भी उपदेश देने की कोशिश नहीं की, बल्कि इस अँधेरे के अक्स खींचते हुए उजाले के द्वीपों पर भी नज़र डाली है।

स्वासंत्र्योत्तर भारत के शिक्षित, संघर्षरत और परिवर्तनशील समाज का सजीव चित्र इस उपन्यास में अपने बहुरंगी आयामों में दिखायी देता है। हिंदी कथा-जगत में ममता कालिया की तरह लिखने वाले रचनाकार विरल हैं जो गहरी आत्मीयता, आवेग और उन्मेष के साथ जीवन के धड़कते क्षण पाठक तक पहुँचा सकें। इनके लेखन में अनुभूति की ऊष्मा अनुभव की ऊर्जा के साथ रची-बसी है।

1.43 नाटक साहित्य

कथासाहित्य के अलावा ममता कालिया जी ने नाटककृतियां भी लिखी है। जो इस प्रकार है- ‘आप न बदलेंगे’, ‘आपकी छोटी लड़की’, ‘आत्मा अठन्नी का नाम है’, ‘यहाँ रोना मना है’, ‘जान से प्यारे’

(i) आप न बदलेंगे:

ममता जी का नाट्यसंग्रह आप न बदलेंगे सन् 1989 में प्रकाशित हुआ। इस नाट्यसंग्रह के मुख्य पृष्ठ पर ही प्रख्यात नाट्य आलोचक नेमिचंद्र जैन जी ने लिखा है- "मैंने तुम्हारा नाटक पढ़ लिया था। सबसे पहली तो बात यह कि इसमें बहुत ही सामयिक और महत्वपूर्ण थीम को उठाया गया है। दहेज के सवाल पर हर स्तर पर कुछ न कुछ लिखा जाना चाहिए और मुझे खुशी है कि तुमने इस समस्या पर ध्यान केंद्रीत करने के लिए नाटक का सहारा लिया। दूसरे तुम्हारी भाषा में बहुत कसावट है और नाटकीयता भी है। प्रारंभीक दृश्य बड़े सघन लगते हैं और कार्यव्यापार में भी एक तरह की नाटकीय क्रूरता का अहसास होता है, जो जरूरी है।"(27)

प्रस्तुत नाटक की नायिका नीता एक मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री है और वह अपने बच्चों तथा पति से भी नाराज है क्योंकि वे सभी उसे तंग करते रहते है। उसे एक लैंप मिल जाता है जिसमें होने वाला जिन पहले ही दिन उसे चीनी, मिट्ठी का तेल, वनस्पती घी सब तो ला जिसमें होने वाला पति बोल बोलेगा, बच्चें आज्ञाकारी बाद में वह तैयार हो जाती है।

यह नाटक स्त्री के मन की अभिलाषा को प्रकट करता है कि उसका पति और उसके बच्चे उसे मनुष्य समझे, उससे प्यार करें। वह सिर्फ मशीन की तरह काम करती रहती है और कोई भी उसकी तरफ ध्यान नहीं देता, न उसे कोई दो बोल मीठे बोलता है। यही मध्यवर्गीय स्त्री की शोकांतिका है।

(ii) आपकी छोटी लड़की:

इस नायक में नायट की नायिका घर की सबसे छोटी लड़की है। उसकी बड़ी बहन हर एक कला में माहिर है, उसे कई तरह के इनाम मिलते है। और जो छोटी लड़की है वह साधारण है। इसी वजह से वह पूरी तरह से उपेक्षित ही रही है।

(ii) आत्मा अठन्नी का नाम:

प्रस्तुत नाटक दहेज समस्या पर लिखा गया है। इस नाटक की जो बहु है वह अपने साथ ढ़ेर सारा दहेज लायी है फिर भी उसकी सास, ननद, देवर आदि सभी उससे नाराज रहते है। ये सभी उसे बार-बार तंग करते है और साथ ही साथ उससे बहुत सारा काम करवाते हैं। तंग आकर वह उनके खाने में खाना बनाते समय थूक दिया करती है। उसका एक देवर सतीश जो सुशिक्षित बेरोजगार है, वह उसके साथ दया की दृष्टि रखता है परंतु सतीश के पिता अपने बेटे के मन में उसकी पत्नी के बारे में गंदी बातें बताकर, स्वंय भी उसकी तरफ गंदी दृष्टि रखकर उसे तंग करते हैं। और अंत में जब सतीश अपनी मर्जी से शादी कर लेता है और अधिक रूपए नहीं दे सकते तो वे सभी मिलकर उसका गला घोंट देते हैं।

(iv) यहाँ रोना मना है:

इस नाटक में पहले सावन के झूलों पर झूला झूलती लड़कियाँ और आसपास की औरतों की जमघट में चल रही बातचीत को दिखाया है। दूसरे दृश्य में कालिंदी के पति से किराए की पोशाख उतरवायी जाती है। उसके बाद बहू की तारीफ की जाती है और उसका नाम लक्ष्मी रखा जाता है। लेकिन बाद में घर में उससे कोई खुश नहीं रहता क्योंकि उसकी सास का कहना है कि उसे कोई काम नहीं आता। इसी वजह से मोहन कालिंदी का पति उस पर रोब जमाकर उसे मारने दौड़ता है।

आज भी औरतों को ससुराल में किन तकलिफों का सामना करना पड़ता है, इस बात का पता हमें इस नाटक से चलता है।

(v) जान से प्यारे:

इस नाटक में डॉ.कौशिक एक फॉर्म्यूला ढूँढ़ निकालते हैं जिसमें मरा हुआ जीव फिर जी उठाने की क्षमता है। उनका शिष्य अविनाश उनपर संदेह व्यक्त करता है। वह कहता है कि ऐसा नुस्खा कोई नहीं चाहेगा। वे दोनों तय करते हैं कि रोज अखबारों में शोक-समाचार

पढ़कर कलेजा मुँह के आ जाता है, इन के दुःख मैं दूर करूँगा लेकिन जब वे पहले घर से भावनगर चले जाते हैं। दूसरे घर में बहू ही आक्रमक बन जाती है और अपनी तकलीफें बताने लगती है। अपने द्वारा की गयी सेवा बताती है। फिर वे दोनों मुहब्बत नगर चले जाते हैं जहाँ एअरक्रैश में मरे कैप्टन शर्मा की विधवा के साथ बात करते हैं। घर में जाते ही वहाँ पत्नी की मौत की वजह से पति शोककुल है लेकिन वह भी उन्हें इंकार कर देता है और जब डॉ.मान जाते हैं कि मौत जालिम तो है पर उससे भी ज्यादा जालिम जिंदगी के कायदे हैं।

1.44 बाल साहित्य

(i) ऐसा थी बजरंगी (बाल उपन्यास)-अप्राप्य

ममता जी एक ऐसी साहित्यकार रही है जिन्होंने साहित्य की कई विधाओं में एक साथ साहित्यसृजन किया है। उन्होंने काव्य से साहित्य सृजन का आरंभ किया और बाल साहित्य में पदार्पण किया। उनका यह उपन्यास सिर्फ छोटे बच्चों के लिए लिखा गया है। आजकल यह अप्राप्य होने की वजह से इसका कथानक आदि के बारे में बहुत कोशिश करने के बावजूद भी पूरी जानकारी नहीं मिल सकी है। उनका यह बाल उपन्यास बहुचर्चित रहा और उनकी इस कृति को सभी ने सराहा है।

1.45 अन्य साहित्य

ममता कालिया का उसका यौवन, नई दुनिया, अपने शहर की बत्तियाँ, आहार कहानियाँ छपी है। इनमें से कुछ कहानियाँ संग्रहीत हो चुकी है।ममता जी ने कहानियों एवं

उपन्यासों के अलावा अन्य भी साहित्य विधाओं की रचना की है। सिर्फ कहानी और उपन्यास लिखकर ही वे रूक नहीं गयी हैं तो उन्होंने कविताएँ नाटक और बाल उपन्यास भी लिखे हैं।

ममता कालिया ने बी.ए. में पढ़ते वक्त ही कविताओं का सृजन करना आरंभ कर दिया।

सन् 1978 में उनका प्रथम कविता संग्रह 'ए ट्रिब्यूट टू पापा एण्ड पोयमस्' नाम से प्रकाशित हुआ। लेकिन वे मानती है कि "मैं शुरू में कविता लिखती थी लेकिन मैंने पाया की कविता इतनी संक्षिप्त होती जा रही है कि उसको किसी भी तरह सार्थक रूप में कायम रखना संभव नहीं है।"**(28)** यही सोचकर वे साहित्य की विधाओं की ओर मुड़ गयीं। कहानी यह उनकी प्रिय विधा रही है। इसी के साथ उन्होंने उपन्यासों का सृजन किया। इसके तुरंत बाद उन्होंने नाटक या एकांकी के क्षेत्र में कदम रखा।

ममता जी ने नाटकों के संदर्भ में 'नेमिचंद्र जैन' जी ने कहा है- "मैंने तुम्हारा नाटक पढ़ लिया था। सबसे पहली बात जो यह है कि इसमें एक बहुत ही सामयिक और महत्वपूर्ण थीम को उठाया गया है। दहेज के सवाल पर हर स्तर पर कुछ लिखा जाना चाहिए और मुझे खुशी है कि तुमने इस समस्या पर ध्यान केंद्रित करने के लिए नाटक का सहारा लिया। दूसरे तुम्हारी भाषा में बहुत कसावट और नाटकीयता भी है। प्रारंभिक दृश्य बड़े सघन लगते हैं और कार्य-व्यापार में भी एक तरह की नाटकीय क्रूरता का अहसास होता है जो जरूरी है।"**(29)**

इतना सब करते समय ममता जी ने बच्चों के लिए कुछ करने की ठान ली थी और उन्होंने बालोपयोगी उपन्यास ऐसा था बजरंगी लिखा। इसके अलावा तो उन्होंने बच्चों के

लिए और कुछ न लिखा परंतु उनकी यह कोशिश नाकाम न रही। बहुत कोशिश करने के बावजूद भी यह उपन्यास स्वंय लेखिका के पास भी न मिल सका।

'ए ट्रिब्यूट टू पापा एण्ड पोयमस्' ममताजी का 1970 में प्रकाशित अंग्रेजी काव्य संग्रह है। इसमें ममता जी ने आम जीवन में आने वाले घटनाओं का अत्यंत साधारण शब्दों में वर्णन किया है। सबसे पहले तो ममता जी ने अपने पिता को श्रद्धांजलि अर्पित की है और बाद में बंधन, नजरिया, एक दूजे के लिए, रविवार का गीत, समर्पित अध्यापक, जैसे को तेसा, जैसी कविताएँ लिखी हैं। अत्यंत ही सीधी, सरल, गद्यात्मक भाषा में ये कविताएँ लिखी गयी हैँ। इनमें से सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण कविता पापा को श्रद्धांजलि है।

'सिर्फ शुभेच्छा' इस कविता में कवियत्री कुछ संभावनाओं पर विचार करते हुए वास्तविक स्थिति को भूलकर कल्पना में रममाण होती है। वह सोचती है कि उनके साथ बहुत सारी बातें हो सकती है, बहुत कुछ हो सकता है।

'बंधन' इस कविता में ममता जी ने अपने बारे में कुछ कल्पनाएँ की हैं। वह कुछ ऐसी बातें करना चाहती हैं जो उन्होंने पहले कभी नहीं की। जैसे वह समाज में सिर उठाना चाहती है।

'दृष्टिकोण' इस कविता में ममता जी यह बताना चाहती है कि दुनिया को हम जिस नजरिए से, जिस दृष्टि से देखते हैं, वैसी ही दुनिया दिखाई देती है। अगर हरी ऐनक लगाकर दुनिया को देखा जाए तो वह हरी नज़र आती है और अगर पीला लगाकर देखा जाए तो पीली।'

सक्रिय जीवन' कविता में ममता कालिया ने किसी प्रौढ़ स्त्री के सक्रिय जीवन का वर्णन करती है।

'रविवार का गीत' यह कविता एक ऐसी स्त्री का वर्णन करती है जो अपने पति के वियोग में होस्टल में अकेली तड़प रही है।

'निर्वाक' कविता में ममता जी ने दोनों के झगड़े के परिणामस्वरूप निर्वाक बनी स्त्री का वर्णन क्या है। वह कहती है कि "वह किस तरह गालियाँ दे सकेगी उसके लिए कौन से शब्द इस्तेमाल करेंगी।" 'प्यार की चिंता' इस कविता का प्रेमी अकेलेपन की जेल में बंद है और वह अपनी प्रेमिका के बारे में सोचते-सोचते कथा करता है इसका वर्णन किया है।

निष्कर्षः

स्वातंत्र्योत्तर कथाकारों में ममता कालिया का महत्वपूर्ण योगदान है। इस अध्याय में ममता जी के जीवन, सृजन और चिंतन से परिचित होने के बाद यह परिलक्षित होता है कि ममता जी ने बचपन से ही साहित्य के प्रति रूचि है। पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए उन्होंने साहित्य सर्जन किया। अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं और विभिन्न विधाओं में उन्होंने साहित्य किया है। उपन्यास और कहानियों के अलावा साहित्य की अन्य विधाओं का भी सृजन करने में सफलता पायी है। उन्होंने अपनी कविताओं में विवाह, प्रेम आदि विचार प्रस्तुत करने में आप सफल दिखायी देती है। नाटक विधा में उन्होंने नारी मन की कोमल भावनाओं को स्पर्श किया है। नारी के प्रति न्याय देने की कोशिश ममता जी ने अपने नाटकों में की है। उनके नाटक में अधिकतर उपेक्षित महिलाओं को ही न्याय देने का प्रयास दिखायी देता है। अपने बच्चों के लिए भी एक बालोपयोगी उपन्यास लिखा है। कुल मिलाकर साहित्य जगत में अन्य साहित्यकारों की तरह ममता जी का नाम भी सबसे अग्रणीय है।

संदर्भ सूची

1. कृष्णा सोबतीः सोबती एक सोहबतः पृ.396
2. डॉ. सानप शामः ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतनाः पृ.114
3. डॉ. फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.10
4. डॉ. फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.10
5. डॉ. सानप शामः ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतनाः पृ.148
6. डॉ. फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.10
7. ममता कालियाः दौड़ः पृ.93
8. ममता कालियाः दौड़ः पृ.93
9. ममता कालियाः दौड़ः पृ.93-34
10. ममता कालियाः दौड़ः पृ.101
11. ममता कालियाः दौड़ः पृ.94
12. ममता कालियाः दौड़ः पृ.97-98

13. ममता कालियाः दौड़ः पृ.101-102

14. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.9

15. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.47

16. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.78

17. ममता कालियाः खुशकिस्मतः पृ.108

18. ममता कालियाः प्रतिनिधि कहानियाः पृ.63

19. ममता कालियाः उसका यौवनः पृ.52

20. ममता कालियाः उसका यौवनः पृ.58

21. ममता कालियाः बोलनेवाली औरत: पृ.87

22. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.29

23. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमः पृ.140

24. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमः पृ.9

25. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमः पृ.62

26 .ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमः पृ.274

27. डॉ. फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.58

28. डॉ. फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.142

29. डॉ. फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.142

2. परिवेशगत यथार्थ एवं साहित्य

साहित्य की रचना शून्य में नहीं हो सकती। उसका कोई न कोई आधार होता है। कथा साहित्य में वातावरण के अनुसार कथा की पृष्ठभूमि तैयार की जाती है। इसी कारण कथासाहित्य में पाठक को यथार्थ बोध का आभास होता है। किसी भी वातावरण की प्रेरणा से ही सब कार्य व्यापार होते है।

साहित्य का आधार मनुष्य और उसका परिवेश होता है। उसका संसार, उनकी दुनिया दारी, रहनसहन, परिवार-समाज का संस्कार, शिक्षा, धर्म, सोच आदि परिवेश की श्रेणी में आते हैं। स्थान-परिवर्तन से परिवेश भी परिवर्तित हो जाता है। समय, परिवेश आदि के कारण साहित्य भी बदलता रहता है। परिवेश का प्रभाव उपन्यास की अपेक्षा कहानियों में अधिक पड़ता है। प्राख्यात आलोचक डॉ.नामवर सिंह नें 'नई कहानी' पत्रिका में परिवेश के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए इसे कथासाहित्य का अनिवार्य अंग बताया है।

वस्तुतःपरिवेश समाज से बनता है और साहित्य समाज के माणदण्ड अथवा प्रतिमान होते है। साहित्य का अर्थ है जो सबके हित में लिखा जाए वही साहित्य समाज सापेक्ष होता है, न कि समाज निरपेक्ष।

समाज निरपेक्ष साहित्य चिरस्थायी नहीं होता, न ही उसकी कोई प्रासंगिकता होती है। समाज को समाहत करके ही साहित्य अपनी सार्थकता सिद्ध करता है। यानी कथा साहित्य का भी प्रेरक तत्व समाज है।

साहित्यकार समाज की यथार्थ स्थिति का अंकन अपने साहित्य में करता है।महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "जाति विशेष के उत्कर्षापकर्ष का, उसके, ऊंच-नीच भावों का उसके धार्मिक विचारों और सामाजिक संगठन का, उसकी ऐतिहासिक घटनाओं और राजनीतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है तो उसके ग्रंथ-साहित्य में मिल सकते है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक आसक्ति या निर्जीवता और सामाजिक सभ्यता तथा असभ्यता का निर्णायक एकमात्र साहित्य है"। 1.डॉ.विनय कुमार पाठक, हिंदी साहित्य की वैचारिक पष्ठ भूमि(पृ.72)

इस प्रकार कहना युक्तिसंगत होगा कि कथाकार देशकाल और परिवेश को उद्घाटित किए बिना कथा-साहित्य की रचना नहीं कर सकता। साहित्य, समाज और देश से ही ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त कर संभावनाओं और असंभावनाओं की खोज में संलग्न होता है।(कथाकार समाज के बाह्य परिवेश के साथ उस परिवेश से प्रभावित आंतरिक स्वरुपों और घटनाक्रमों तथा मानवीय संवेदनाओं की अनुभूति कराता है।

इस संबंध में डॉ.आदित्यप्रसाद त्रिपाठी का मत उल्लेखनीय है-

"आज परिवेश केवल स्थूल संसार का ही पर्याय नहीं, सूक्ष्म जगत के चिंतन से भी संबंध है। जब हम परिवेश का उपयोग करते हैं तो उसमें केवल बाह्य वातावरण ही नहीं आता, उसके साथ वह मानसिकता भी उभरती है जो उस वातावरण की ही उद्भावना है। उस मानसिकता के साथ जुड़े होते हैं-ज्ञान, अनुभव, संवेदन, विचार, चिंतन आदि सारे बोधात्मक स्तर। साहित्य का चैतन्य इसी स्तर पर परिवेश के बाह्य स्वरूप को आत्मसात

कर उसे बोधात्मक बनाकर पेश करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्‌घाटन बोध के आधुनिक तकनीक के संदर्भ में हुआ है।"**(1)**

उपर्युक्त उद्धरण से यह स्पष्ट होता है कि परिवेश का बाह्य एवं आंतरिक दोनों परस्पर संबंध होते हैं।

2.1 परिवेश : अर्थ एवं परिभाषा

जैसे ही कोई भी शब्द चर्चा में आता है, आलोचक उसकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ के विषय में चिंतन मनन करने लगते हैं। इसी तरह हिंदी साहित्य में बहुचर्चित शब्द 'परिवेश' का अर्थ की परिभाषा पर आलोचकों ने विचार किया है। इसलिए कथा साहित्य में परिवेश के महत्व पर विचार करने से पूर्व परिवेश शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं परिभाषा को जानना आवश्यक है।

परिवेश की व्युत्पत्ति

'संस्कृत-शब्दार्थ कौस्तुभ' के अनुसार परिवेश शब्द की व्युत्पत्ति इसप्रकार हुई है-

परिवेश.....परिवेश, परिवेष, परीवेष

(पु.)परि विश्‌-धत्र पेक्ष उपसर्गस्य दीर्घः

परि विषू-धत्रू-धत्रू पेक्ष उपसर्गस्य दीर्घ।

परसना या परोसना, घेरा, परिधि।

सूर्य या चंद्र का पार्श्व या घेरा।

चंद्र मंडल, सूर्य मंडल।

कोई ऐसी वस्तु जो चारों ओर से घेरकर किसी वस्तु की रक्षा करती है। **(2)**

हिंदी में परिवेश को देशकाल, वातावरण भी कहा जाता है। उर्दू में इसे माहौल कहा जाता है तथा अंग्रेजी में परिवेश के लिए 'Milieu' (मील्यु)शब्द प्रयुक्त होता है।**(3)**

2.11 परिवेश का अर्थ

कोशगत अर्थ- परिवेश का कोशगत अर्थ अस प्रकार है-

1. संस्कृत कोश

(i) 'संस्कृत-हिंदी कोश' में 'परिवेश' को 'परिवेषणम्' कहा गया है। इसके अनुसार 'परिवेषणम्' का अर्थ है- (ii) भोजन परोसना(सेवा के लिए) प्रस्तुत रहना, भोजन वितरण करना, (iii) लपेटना घेरना. (iv) सूर्य मंडल, चंद्र मंडल (v) परिधि| **(4)**

2. हिंदी शब्दकोश

(i) 'मानक हिंदी कोश' के अनुसार परिवेश का अर्थ है, परिधि, घेरा, प्रभा-मंडल, बदली के समय सूर्य या चांद के चारों ओर दिखाई देने वाला घेरा. **(5)**

(ii) 'बृहत हिंदी कोश' में इसका अर्थ बतलाया गया है, "घेरना, वेष्टन, किसी रचनाकार का वह विशिष्ट वातावरण जो उसके लेखन से संसक्त होता है और उसे प्रभावित करता है।"**(6)**

(iii) 'वैज्ञानिक पारिभाषिक कोश' के अनुसार परिवेश का अर्थ है-"वे स्थितियाँ, परिस्थितियाँ तथा वातावरण जो किसी के विकास अभिवृत्ति आदि को प्रभावित करती है।"**(7)**

(iv) 'नालंदा अघतन कोश' के अनुसार परिवेश का अर्थ है-"घेरा परिधि, परोसना,

किले की दीवार, सूर्य या चाँद का घेरा आदि।”**(8)**

3.अंग्रेजी कोश

According to readers Digest universal Dictionary “A pervading quality, effect or mood, especially as associated with a particular place, feelings (of good, evil etc) that the mind receives from a place conditions etc”**(9)** (....किसी स्थान परिस्थिति विशेष में दिमाग द्वारा ग्रहण की जाने वाली(अच्छी, बुरी) भावनाएँ। वे परिस्थितियाँ, प्रभाव जो किसी स्थान विशेष में अपना प्रभाव डालती है)

कोशगत अर्थों के अनुसार परिवेश का अर्थ घेरा या वातावरण से लगाया जाता है जिनसे व्यक्ति प्रभावित होता है। व्यक्ति के चारों ओर जो कुछ भी है, वह उसका परिवेश होता है। परिवेश में वह सभी शक्तियाँ, प्रभाव, परिस्थितियाँ आदि विद्यमान रहती हैं जो प्राणी के व्यवहार और मानसिक विकास को प्रभावित करती हैं जिनसे व्यक्ति साधारण होते हुए भी अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों पर विशिष्ट प्रभाव छोड़ते हैं।

2.12 परिवेश की परिभाषा-

कोशगत अर्थों के साथ ही आलोचकों एवं विद्वानों ने परिवेश को परिभाषित करने का प्रयास किया है. जो इस प्रकार है-

1. हिंदी विद्वानों की परिभाषाएँ

(i) डॉ.नामवर सिंह ने 'परिवेश' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है, "मेरे लिए परिवेश ऐसा अमूर्त प्रत्यय नहीं है जिसका साहित्य से कोई रिश्ता न हो और साहित्य कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी व्याख्या जीवन तथा परिवेश से अलग रखकर की जा सके। साहित्य, रचनाकार के मन का ऐसा लड्डू भी नहीं है जिसे रचनाकार जब चाहे, बना ले और जब चाहे खा ले एवं जिसका रचनाकार की परिस्थितियों से कोई लेना देना न हो, प्रत्युत साहित्य एक निश्चित परिस्थिति में पैदा होता है और वह परिस्थिति उसकी स्वेच्छा को मर्यादित करती है।"**(10)**

(ii) डॉ.गणपति चंद्र गुप्ता, परिवेश के बारे में कहते हैं, "हमारे विचार से परिवेश का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसके अंतर्गत कवि की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आंदोलनों एवं आश्रयों तक को लिया जा सकता है जो सर्जन की प्रक्रिया को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं।"**(11)**

(iii) उपन्यासकार के लिए परिवेश की व्यापकता की व्याख्या करते हुए डॉ. रघुवंश लिखते हैं, "एक के लिए परिवेश उसका वह सारा जीवन है जो वस्तुतः उसके युग का रूप है। समस्त स्थानीय, देशीय, राष्ट्रीय और यहाँ तक की अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम उसका परिवेश हो सकता है। जितना कुछ उसके अनुभव के अंतर्गत वर्तमान देशकाल में समेटा जा सकता, उसे परिवेश माना जा सकता है। किसी भी दृष्टि, शैली या स्तर का लेखक अपने परिवेश से मुक्त होकर, यथार्थ जीवन का उपन्यासकार नहीं हो सकता।"**(12)**

(iv)'परिवेश' के संबंध में मुंशी प्रेमचंद के विचार हैं, "साहित्यकार अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए अविचलित रहना संभव नहीं होता है।"**(13)**

(v) त्रिलोक तुलसी भी रचना में परिवेश को महत्वपूर्ण मानते है और साहित्य को परिवेश की ही अनुकृति अथवा प्रतिच्छाया स्वीकार करते हुए कहते हैं...."परिवेश मन और साहित्य ये तीनों साहित्य रचना के बुनियादी घटक हैं क्योंकि परिवेश लेखक मनस के माध्यम से साहित्य के रूप में अभिव्यक्ति पाता है तथा साहित्य परिवेश का ही विकृत रूप है।"**(14)**

(vi)हिंदी शब्दकोश (पारिभाषिक कोश) के अनुसार परिवेश की परिभाषा इस प्रकार है-" देशकाल-कथात्मक साहित्य में वर्णित कार्यों की वास्तविकता की प्रतीति कराने के लिए उनके घटित होने के स्थान तथा समय का निर्देश करना आधुनिक कला की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। परंतु देश-काल के अंतर्गत केवल स्थान और समय ही नहीं, रीति-रिवाज, रहन सहन के ढंग, पात्रों की वेशभूषा, उनके शिष्टाचार, आचार-व्यवहार, विचार-चिंतन, वार्तालाप की भाषा-शैली तथा कथा की प्राकृतिक पृष्ठभूमि आदि सभी बातें आ जाती हैं, जो कथा को स्वाभाविक वातावरण प्रदान करती है।"**(15)**

2. पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाएः

(i) मनोवैज्ञानिक बोरिग, लेगफ्रीड एवं वील्ड के अनुसार "व्यक्ति के परिवेश से तात्पर्य उन सभी उत्तेजनाओं के योग से है जिनको वह जन्म से लेकर मृत्यु तक ग्रहण करता है।"**(16)**

(ii) ऐरिक न्यूटन परिवेश को पर्याप्त महत्व देते हुए संपूर्ण कलाकृति का जनक एवं पालक मानते हैं "कलाकृति एक बच्चा है कलाकार उसकी माँ तथा परिवेश उसका पिता

है।"(17) इस प्रकार विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि परिवेश में बाह्य परिस्थितियों से उत्पन्न उन सभी तथ्यों एवं तत्वों को समाविष्ट किया जा सकता है जो किसी न किसी प्रकार साहित्यकार के सर्जन कार्य को प्रभावित करते है। ये परिस्थितियाँ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार की हो सकती है।

2.2 परिवेशः स्वरूप एवं वैशिष्ट्य

2.21 परिवेश का स्वरूपः

कथा साहित्य के मूल तत्वों में देशकाल, वातावरण एवं परिवेश को भी एक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। कोई भी साहित्यकार अपने साहित्य से जुड़े सत्य या घटनाओं को प्रस्तुत करने हेतु इस तत्व का आयोजन करता है। किसी भी परिवेश में यथार्थता का गहरा रंग होना चाहिए। यदि धार्मिक परिवेश को प्रस्तुत करना है तो उससे जुड़े सामाजिक,सांस्कृतिक परिस्थितियों, धर्म, रीति रिवाजों, भाषा आदि का चित्रण होना आवश्यक होता है।

किसी देश-काल, समाज एवं जाति के ही परिवेश के मुख्य रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इस दृष्टि से साहित्य की स्वाभाविकता एवं सत्यता की वृद्धि होती है। यहाँ तक कि ऐतिहासिक, प्राकृतिक, भौगोलिक परिस्थितियों को प्रस्तुत किया जाता है।

इस प्रकार हिंदी के प्रमुख साहित्यालोचकों ने कथा साहित्य में परिवेश का स्वरूप स्पष्ट किया है। डॉ.जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने कथासाहित्य में वातावरण अथवा परिस्थिति योजना का स्वरूप स्पष्ट करते हुए बताया है कि "इसका प्रधान उद्देश्य होता है, संपूर्ण कथानक के भीतर आयी हुई क्रियाओं और परिणामों का क्रमसंगत क्रमन्यास। वातावरण

की स्थानीयता से अभिप्राय वातावरण में उन तत्वों के समावेश से होता है जो किसी स्थान विशेष की सब बातों का विवरण प्रस्तुत करती हैं। उसे दूसरे शब्दों में आँचलिकता भी कहा जा सकता है।"**(18)**

किसी भी परिवेश में स्थानीय भाषा, मुहावरे, लोकोत्तियाँ, लोगों का व्यवहार आदि सब का प्रयोग स्थानीयता की रक्षा के लिए किया जाता है। इस तरह से परिवेश सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को अपने आप में समाहित करके अपना प्रभाव पाठक पर छोड़ता है।

2.22 परिवेश का वैशिष्ट्य

परिवेश, कथा साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारे शरीर में एक भी अंग का न होना हमें विकलांगों की श्रेणी में रख देता है। इसी प्रकार साहित्य भी मानव शरीर के समान ही है, जिसके कथानक, पात्र, कथोपकथन, परिवेश, भाषाशैली, तथा उद्देश्य आदि अलग अलग अंग है। इन सबके अभाव में किसी भी रचनाकार को अपनी रचना के विषय में सोचना भी व्यर्थ होगा। किसी भी साहित्यकार को अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करने के लिए उस घटना के घटित स्थल, वहाँ के रहन-सहन, वहाँ की व्यवस्था, आसपास की स्थितियों का पूरा-पूरा वर्णन करना आवश्यक है। क्योंकि इसके बिना कोई भी घटना मात्र घटना ही रह जाएगी। इस तरह से वह किसी भी पाठक को आकर्षित नहीं कर पाएगी। न इसका प्रभाव साहित्यकार के साहित्य पर होता है न ही उसका सत्य उभरकर आता है न ही तथ्य एवं उद्देश्य। इसके कारण वह झूठा साबित हो सकता है। कोई भी घटना, पात्र के साथ जुड़कर अपनी सहानुभूति उत्पन्न नहीं कर सकेगा। पाठक के मन में संवेदना तथा समाज के सत्य से परिचित कराने हेतु साहित्यकार को अपनी कृति में परिवेश का निर्माण करना पड़ता है।

"इस विश्व में जिस भी वस्तु का निर्माण हुआ है, गोचर या अगोचर, लघु या महान, श्रेष्ठ या अश्रेष्ठ, उत्कृष्ट या निकृष्ट, जड़ या चेतन प्रत्येक का थोड़ा बहुत महत्व है। यहाँ तक कि खोटे सिक्के तक का भी समय पड़ने पर महत्व प्रतीत होता है। जिस प्रकार वास्तविक तथा व्यावहारिक जीवन में और जगत में प्रत्येक सत्ता का महत्व होता है उसी प्रकार साहित्य जगत में भी साहित्य की विभिन्न विद्याएँ विभिन्न तत्व तथा विभिन्न विचारधाराएँ अपना विशेष महत्व रखती है।"**(19)**

कथासाहित्य में कहानी के संदर्भ में यह कहा गया है कि परिवेश कहानी के लिए कितना महत्वपूर्ण है। अपने जीवन में भी जिस प्रकार परिवेश मनुष्य को प्रभावित करता है, उसी प्रकार साहित्यकार को तथा पात्र को, कथ्य को, कथानक की स्थितियों को परिवेश प्रभावित करता है। इसी के कारण कथानक लेखक को प्रोत्साहित कर आगे निकल जाता है। कोई भी साहित्यकार पहले परिवेश का निर्माण करता है जिसके कारण पात्रों की मानसिकता उसे परिवेश को कारण क्रियात्मक रूप देती है।

परिवेश हमेशा पाठक की दृष्टि को रचना से बांधकर उसे संतुष्ट करता है। किसी भी पाठक को कहानी या उपन्यास पढ़ते समय उसमें गहराई से डूब जाने में ही परिवेश की सार्थकता है। पाठक परिवेश में मग्न होकर सबकुछ भूल जाता है जैसे की वह उसका ही एक अंग है। इसकी कारण यह है कि कोई भी परिवेश पाठक के भावों, मनोदशाओं, संवेगों को उद्घाटित करने की शक्ति रखता है। वह अपने आप को वर्णित घटनाओं एवं पात्रों से स्वतःअपने आप को समझता है।

बाबू गुलाबराम का परिवेश के विषय में विचार है कि-

"कथानक को वास्तविकता का आभास देने के लिए वातावरण मुख्य है। कथानक के पात्र भी वास्तविक पात्र की भाँति देशकाल के बंधन में रहते हैं। यदि वे भगवान की भाँति

देशकाल के बंधन से परे हो तो वे भी हम लोगों के लिए अभेद रहस्य बन जाएंगे। इसलिए देशकाल का भी वर्णन आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति के निर्माण में वातावरण का भी हाथ होता है। जिसप्रकार बिना अंगूठी के नगीना शोभा नहीं देता उसी प्रकार बिना देशकाल के पात्रों का व्यक्तित्व भी स्पष्ट नहीं होता है और घटनाक्रम के समझने के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है। आजकल बढ़ते हुए वस्तुवाद के समय में देशकाल का महत्व और भी बढ़ गया है।"**(20)**

कोई भी साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। जिसमें बड़े रोचक ढंग से समाज का चित्रण किया जाता है। इसलिए साहित्य और समाज का गहरा संबंध है। इसी के मनुष्य को भी समाज का मुख्य अंग माना गया है क्योंकि साहित्य उसी समाज का दर्पण है जो व्यक्ति समूह है। साहित्य में व्यक्ति किस प्रकार किन परिस्थितियों में जीता है उसकी रूपरेखा खिंची जाती है, पारिवारिक समस्यायें, हालात, सामाजिक स्थितियाँ आदि साहित्यिक भाषा में 'परिवेश' कहा गया है।

"प्रत्येक युग के परिवेश की निजी अस्मिता और स्वतंत्र विचारभूमि होती है। प्रत्येक युग के साहित्य की कुछ विशिष्टताएँ होती है, जो उस युग के प्रभाव व परिस्थितियों पर निर्भर करती है। यदि लेखक तीव्रता के साथ युग सत्य से साक्षात्कार नहीं करता तो वह मार्मिक और शाश्वत साहित्य का सृजन नहीं कर पाता। वस्तुतः परिवेश की चेतना से विहीन आत्मा निर्जीव है, अभिव्यक्ति के सर्वथा अयोग्य है। परिवेश विभिन्न ऋतुओं के समान है। इससे रचनारूपी पौधे को अंकुरित पल्लवित और पुष्पित होने में सहायता मिलती है। परिवेश काल का वह सामायिक अंश है, जिससे प्रताड़ित, पीड़ित तथा आनंदित उद्वेलित और प्रेरित होकर कोई रचनाकार किन्ही शुभ उद्देश्यों की सृष्टि करता है और इस प्रकार अपनी कृति को सामयिकता की समा से परे, कालकी परिधि में ले जाता है।"**(21)**

कोई भी साहित्यकार अपने कथानक की वास्तविकता के लिए परिवेश, अवस्था, तथा नयी परिस्थितियों का सहारा लेता है। साहित्य गद्य या पद्य से संबंधित होता है परिवेश का सहारा लिए बिना उसके अस्तित्व की कल्पना करना भी असंभव है। जैसे की माता-पिता ही अपने बच्चे के परिवेश को बनाते है। साहित्य का उद्भव परिवेश के बिना एक मात्र कल्पना लगता है। बिना परिवेश के कथ्य मात्र कथ्य के रूप में रह जाता है। इसलिए परिवेश को साहित्य का महत्वपूर्ण एवं आवश्यक तत्व के रूप में स्थान मिला है।

2.3 यथार्थ : अर्थ एवं परिभाषा

यथार्थ से मानव जीवन को एक नयी प्रेरणा मिलती है। जीवन को प्रेरित करने का कार्य भी यथार्थ के बिना असंभव है। यथार्थ पर चिंतन और मनन होना जरूरी है इसी के साथ जीवन की सच्चाइयाँ भी स्पष्ट रूप से होनी चाहिए। यथार्थ जितना ही उच्चकोटी का होता है वह मानव समाज को पूर्ण इकाई के रूप में प्रयुक्त करता है। किसी भी साहित्य की रचना करने वाला रचनाकार बहुत ही संवेदनशील साहित्यकार होता है। किसी भी रचनाकार का संबंध सामाजिक संघर्ष और उनकी परिस्थितियों से होना चाहिए। वह वस्तु जगत का चित्र न खींचते हुए अपनी भावनाओं, संवेदनाओं को वस्तु से जोडने की कोशिश करता है।

कथासाहित्य में यथार्थ को केंद्रीय महत्व प्राप्त है। यथार्थ और यथार्थवाद का अधिक गहरा संबंध है, जिसके कारण कथा साहित्य को नयी दिशा मिली है। कहानीकार 'चंद्रधर शर्मा गुलेरी' की 'उसने कहा था' तथा कथाकार 'प्रेमचंद' की 'कफन' कहानियाँ अलग-अलग स्थिति पर लिखी गई हैं लेकिन भारतीय समाज का यथार्थ चित्र प्रकट करती है। यथार्थ से मानव जीवन को एक नयी प्रेरणा मिलती है।

2.31 यथार्थ का अर्थः

"यथार्थ दो शब्दों से मिलकर बना है यथा और अर्थ यानी जैसा है वैसा। अतः यथार्थ का अर्थ यानी जैसा है वैसा। अतःयथार्थ का अर्थ हुआ वास्तविक, खरा, प्रामाणिक, विश्वसनीय आदि अर्थात जो वस्तु जैसी हो उसे उसी रूप में या यथार्थरूप में ग्रहण करना। इससे संबंधित दो शब्द मिलते है यथार्थ और यथार्थवाद। अंग्रेजी भाषा में यथार्थ के लिए 'Real' शब्द का प्रयोग होता है। इसका तात्पर्य है 'as it is' (जो जैसा है वैसा) लिया गया है। Real के साथ ism जोड़कर साहित्य में प्रयुक्त अभिव्यक्ति को Realism यथार्थवाद कहा जाने लगा अर्थात साहित्य की एक विशिष्ट पद्धति जिसके अनुसार कलाकार को अपनी कृति में जीवन के यथार्थ रूप का अंकन करना चाहिए।"

कोशगत अर्थः

1. संस्कृत कोश

"संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार यथार्थ का अर्थ है 'यथार्थ' वि. तथ्य का विवरण, सत्य, सुनिश्चित, यथाचित, उपयुक्त वि.सं और विशुद्ध सत्य का अनुकल्प भी।" **(22)**

2. अंग्रेजी कोश

अंग्रेजी कोश में यथार्थ का अर्थ इस प्रकार दिया गया है-

(i) इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलौसफी एण्ड साइकौलोजी- "यथार्थ का अभिप्राय प्लेटों के अनुसारःवस्तुनिष्ठ अनुभव होना और यथार्थ में प्रभेद नहीं है। अरस्तु के अनुसार वह रूप और पदार्थ का संयोजन है।" **(23)**

(ii) कौलिन्स जेम डिक्शनरी के अनुसार यथार्थ का अर्थ है-

"यथार्थ-वास्तविक, निरपेक्ष, सकारात्मक, खरा, प्रामाणिक, विश्वसनीय, विपरीतार्थक, अवास्ताविक, निषेधात्मक, अप्रामाणिक, कृत्रिम, आकस्मिक।"**(24)**

(iii) अंग्रेजी हिंदी कोश में यथार्थ का अर्थ है-

"यथार्थ वास्तविकता, असलियत, यथार्थता, सच्चाई, यथार्थवादिता, यथार्थसत्ता, यथार्थतत्व। **(25)**

(iv) एवरीमैंस एनसाईक्लोपीडिया के अनुसार यथार्थ का अर्थ इस प्रकार दिया गया है-

"यथार्थ का विचार सभी प्रकार के दार्शनिक विवेचन की प्रमुख कठिनाई है, क्योंकि इसमें अस्तित्व तथा पदार्थ की प्रकृति का भी प्रश्न निहित है। यथार्थ की धारणा सापेक्ष है, निपेक्ष नहीं, यथार्थ की सामान्य धारणा बाह्य प्रतीति की धारणा से प्रायः अतिरिक्त नहीं है। यथार्थ स्वंय अपने अंतिम रूप में तत्व मीमांसा का अज्ञात विषय है। यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि बाह्य यथार्थ शब्द एक मनोवैज्ञानिक सापेक्षता है.... यह स्पष्ट है कि जब अयथार्थ शब्द का प्रयोग किया जाता है तो वह यथार्थ के निषेध का वाचक न होकर यथार्थ से से कोटिक्रम एवं मात्रा के भेद का ही घोतक है।"**(26)**

(v) दि रीडर्स डाईजेस्ट ग्रेट, इनसाइक्लोपीडिया डिक्शनरी के अनुसार यथार्थ का अर्थ है-

"यथार्थ, संज्ञा, वास्तविकता, मूल्य से सादृश्य, वास्तविक अस्तित्व जो सत्य है, बाह्य प्रतीतियों में अंतनिहीत तत्व, विद्यमान वस्तु यथार्थ की वास्तविक प्रकृति।"**(27)**

3. हिंदी कोश :

हिंदी कोश में यथार्थ का अर्थ इस प्रकार दिया गया है-

'संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर' के अनुसार यथार्थ का अर्थ है-

(i) "यथार्थ-अव्य (सः) ठीक/वाजिब/उचित जैसा होना चाहिए, वैसा।"**(28)**

(ii) 'मानक हिंदी कोश' में यथार्थ का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया गया है-

1. जो अपने अर्थ (आशय, उद्देश्य, भाव आदि) के ठीक अनुरूप हो। ठीक वाजिब, उचित।

2. जैसा होना चाहिए, ठीक वैसा। विशेषःयथार्थ और वास्तविक में अंतर

3. सत्य पूर्वक **(29)**

कोशगत साक्ष्यों के आधार पर 'यथार्थ' का व्यंजित अर्थ स्पष्ट हो जाता है। जो वस्तु में ही अंतर्निष्ठ हो, प्रत्यक्ष हो, जो अब घटित हो रहा है। अतीत नहीं है, भावी या सैद्धांतिक भी नहीं है। जो सुनिश्चित है, प्रामाणिक है, सत्यपरक है, खरा तथ्यपरक है। यह काल्पनिक, असत्य अनुमानित, प्रातिभासिक और आदर्श के विपरीत है। जो जीवन का वास्तविक रूप है।

2.32 यथार्थ की परिभाषा

भारतीय एवं पाश्यात्य विद्वानों ने यथार्थ को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है जो इस प्रकार है-

1 पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाएँ-

पाश्चात्य विद्वानों ने यथार्थ को इस प्रकार परिभाषित किया है।

(i) प्लेटो का मत है कि 'यथार्थ' जड़ है। कोई विचारवान व्यक्ति ही उसकी पकड़ कर सकता है। यथार्थ का ज्ञान कोई विशेषता नहीं है, उसकी प्रतीति कराने वाले में विशेषता रहती है। रूप, आकार, रचाव, सार्त्र के तर्क अनुसार यथार्थ है, परन्तु 'जेने' प्रत्युत्तर में कहते हैं कि जो दृष्टिगोचर होता है, वह यथार्थ से भी यथार्थ है। **(30)**

(ii) डेनियम ग्रांट ने यथार्थ के संबंध में अपना मत अभिव्यक्त करते हुए कहा है:"यथार्थ से अभिप्राय ऐसी वस्तु से है, जिसे उपलब्ध किया जाता है, और उपलब्धि एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसके कारण उसकी अवधारणा कभी स्थिर नहीं हो सकती है।" **(31)**

(iii) इब्सन ने यथार्थवाद के बारे में अपना विचार प्रस्तुत किया है कि-"मनुष्य समाज की संतान है अर्थात सामाजिक परिस्थिति के अनुसार ही मनुष्य स्वभाव अथवा

मानवीमन बन जाते है। इसलिए मनुष्य के परिवेश का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है।" **(32)**

(iv) हेरी शॉ ने यथार्थवाद के अर्थ का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है-"विषय वस्तु का ऐसा वर्णन जिसमें नित्यप्रति के जीवन का प्रायः तथाकथित मध्यवर्ग या निम्नवर्ग के जीवन का पूरी सावधानी से चित्रण किया जाता है।" **(33)**

2 भारतीय विद्वानों की परिभाषाएँ

हिंदी विद्वानों ने यथार्थ को इस प्रकार परिभाषित किया है।

(i) "शिवकुमार मिश्र कहते हैं कि 'यथार्थवाद' में रचनाकार व्यापक परिवेश के बीच से आवश्यक वस्तु का चुनाव करता है। जीवनानुभवों को तराशता है, और उन्हें कलात्मक रूप प्रदान करता है। अतः जो सृष्टि सामने आती है, बाह्य जगत अथवा वास्तविकता का प्रतिरूप ग्रहण करती है। लेकिन उसका रूप रचनाकार द्वारा रचाया जाता है। यह रूप यथार्थ की संगति में होता हुआ भी उसकी 'फोटो-ग्राफ्कि' अनुकृति नहीं होता, और न ही उस प्रतिबिम्ब के सामने होता है जिसे दर्पण ज्यों का त्यों प्रस्तुत करता है।" **(34)**

(ii) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी कहते हैं कि- "यथार्थवाद वस्तुओं की पृथक-पृथक सत्ता का समर्थक है। वह समष्ठि की अपेक्षा व्यष्टि की ओर अधिक उन्मुख रहता है। यथार्थवाद का संबंध प्रत्यक्ष वस्तु जगत है।"**(35)**

(iii) श्रीमती महादेवी वर्मा यथार्थवाद के विषय में कहती हैं-"यथार्थ की कविता को जीवन के उस स्तर पर रहना पड़ता है जहाँ से वह हमें जीवन के उस भिन्न वर्णी चित्र ही नहीं देती, प्रत्युत उसमें व्यक्त जीवन के प्रति प्रतिक्रियात्मक संवेदना भी होता है।"**(36)**

(iv) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है-"यथार्थवाद कला के क्षेत्र में ऐसी एक मानसिक प्रवृत्ति है, जो निरंतर अवस्था के अनुकूल परिवर्तित और रूपायित होती है।"**(37)**

(v) प्रेमचंद्र का कहना है- "यथार्थवाद चरित्रों को पाठक के सामने उनके यथार्थ को नग्न रूप में रख देता है उसे इससे कुछ मतलब नहीं कि सच्चरित्रता का

परिणाम बुरा होता है या कुचरित्रता का परिणाम अच्छा है"।**(38)**

(vi) रामचंद्र वर्मा ने कहा है कि-"यथार्थवाद में आदर्शों का ध्यान छोड़कर उसी रूप

कोई चीज या बात लोगों के सामने रखी जाती है जिस रूप में वह नित्य या प्रायः सबके सामने आती रहती है। उसमें कर्ता न तो अपनी ओर से टिप्पणी करता है, न अपना दृष्टिकोण बतलाता है और निष्कर्ष निकालने का काम दर्शकों या पाठकों पर छोड़ देता है।" **(38)**

(vii)डॉ.त्रिभुवनसिंह यथार्थवाद के संदर्भ में लिखते हैं-"जो साहित्यकार मानव जीवन एवं समाज का संपूर्ण वास्तविक चित्र काल्पनिक संसार से न लेकर वास्तविक संसार से लेता है, उसे ही हम यथार्थवादी साहित्यकार कह सकते हैं।

यथार्थवादी कलाकार अपनी प्रतिभा के बल पर बाह्य पदार्थों का यथातथ्य चित्र उपस्थित करता है। अतः इस प्रकार के चित्र प्रस्तुत करते समय वह अपनी भावुकता तथा अनुभूतियों का सहारा लेता है उनके बाधक नहीं होने देता"। **(39)**

2.4 यथार्थ एवं यथार्थवाद

यथार्थवाद का अर्थ है, साहित्य की एक विशिष्ट पद्धति जिसके अनुसार कलाकार अपनी कृति में जीवन के यथार्थ रूप का अंकन करता है। हम जीवन में जिसका प्रत्यक्ष

अनुभव कर सकते हैं वह यथार्थ है और यथार्थ की कलात्मक अभिव्यक्ति ही यथार्थवाद है। इस संदर्भ में शिवकुमार मिश्र का कहना है अपने समय के क्रांतिकारी वैज्ञानिक आविष्कारों, औद्योगिक प्रगति एवं दर्शन की प्रखर निष्पतत्तियों से प्रेरित और अनुप्राणित एक सर्वांगपूर्ण जीवन दृष्टि तथा कला-दृष्टि के रूप में 'यथार्थवाद' का उद्भव 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध्द में हुआ। इसके पूर्व साहित्य में उसकी स्थिति का वाद अथवा आंदोलन के रूप में न होकर चित्रण को अधिक पूर्ण, वातावरण को अधिक सजीव तथा रचनाशीलता को अधिक सार्थक और स्वाभाविक बनाने वाली एक सहज नैसर्गिक रूप में थी। सभ्यता के प्रारंभ में जबकि आदिमानव ने गुफाओं के चित्र बनाए, तो उसने यथार्थ के प्रति अपनी सहज स्वाभाविक रूचि का ही परिचय दिया। सभ्यता के विषय के साथ ही साथ रचनाकारों की रूचि यथार्थ चित्रण की ओर बढ़ती गई। शेक्सपियर, सरवेन्तीस, रेबेलेज तथा हिंदी के रचनाकारों की रचनाओं में यथार्थ का यहीं रूप देखने को मिलता है। समाजवादी यथार्थवाद, सामाजिक यथार्थवादी, आलोचनात्मक यथार्थवाद, अतियथार्थवाद, ऐतिहासिक यथार्थवाद,आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद आदि यथार्थवाद के प्रकार हैं।

2.5 यथार्थ: स्वरूप एवं विशेषताएँ

2.51 यथार्थ का स्वरूप

यथार्थ न तो पूर्ण एवं निर्दोष मानव की अपेक्षा करता है और न प्रेम अथवा साहस के मनोरंजक क्रिया कलाप प्रस्तुत करता है। वह तो जीवन को उसके यथावत् रूप में चित्रित करने का संकल्प लेकर चलता है इसलिए यथार्थवाद में वर्तमान का चित्रण भूतकाल और भविष्यकाल की अपेक्षा अधिक होता है। यथार्थवाद में जीवन के अनेक रूपों का उद्घाटन

होता है। हर्ष और उल्लास संपन्नता और गरीबी, स्वस्थता और रुग्णता आदि मनुष्य जीवन की यथार्थ घटनाओं का वर्णन यथार्थ का अंग है। जीवन जितना जटिल बनता है यथार्थ उतना ही रूपात्मक।

2.52 यथार्थ की विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. परिवेश के प्रति जागरुकताः

इस युग का कथाकार अपने युगीन परिवेश के प्रति अत्यंत सचेत होता है। कथाकार परिवेश से आंतरिक रूप से जुड़ा हुआ होने के कारण परिवेश की भयावह स्थितियों को पूरी ईमानदारी से उजागर करता है। वास्तव में लेखक अपनी रचनाओं के जिन पात्रों का यथार्थ चित्रण करता है वह परिवेश की ही देन होते हैं।

2. नारी समस्या का यथार्थ रूपः

महिला लेखिकाओं का दृष्टिकोण ज्यादातर नारी-जीवन की बहुमुखी समस्याओं एवं उसकी आत्मपीड़ाओं की सूक्ष्म एवं गहरी अभिव्यक्ति करने में हुई है। इस युग की नारी को कोई भूमिकाओं में संघर्ष करना पड़ता है जैसे माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका आदि। इस प्रकार कार्य-शैली, जीविका तथा अपनी अस्मिता स्थापना के लिए व्यग्र नारी अपने जीवन परिवेश की कई सीमाओं पर संघर्ष कर रही है। आज की नारी अपनी पहचान बनाने में परंपरागत निजी मूल्य परंपराओं को खुद तोड़ रही है।

3. यथार्थ की नयी अभिव्यक्तिः

स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में चित्रित यथार्थ बहुआयमी है। यथार्थ की खोज करते समय इस युग के कथाकारों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के प्रसंगों एवं स्थितियों को पूरी

ईमानदारी से चित्रित किया है। सामान्य मनुष्य की जिन्दगी में जीवन जीने की विषम आर्थिक स्थितियाँ वैज्ञानिकीकरण, औद्योगीकरण और तकनीक के विकास से उत्पन्न नवीन स्थितियाँ और समस्याएँ बनी हुई हैं। पूँजीवादी व्यवस्था के परिणाम स्वरूप अनेक समस्याओं का मनुष्य सामना कर रहा है, जैसे नैतिक मूल्यों का पतन, महानगरीय जीवन की त्रासदी, भ्रष्ट राजनीति आदि के चित्र साहित्य में अंकित किया जाने लगा। साहित्य में जीवन के हर पहलू का यथावत् चित्र हमें दिखाई देता है। आज के साहित्यकार केवल यथार्थ का चित्र ही अंकित नहीं करता बल्कि वे उन कारणों का भी पता लगाना चाहते हैं जो मनुष्य की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी है।

4. राजनीति का यथार्थ रूपः

इस युग का कथाकार राजनीतिक गतिविधियों के प्रति पूरी तरह सर्तक है। इस राजनीति ने गाँव और नगर को पीडित और आक्रांत किया है। इस पीड़ा को कथाकारों ने बड़ी आत्मीयता से अभिव्यक्त किया है। इसी प्रकार चुनावों की सच्चाई, मूल्यों की उपेक्षा तथा सत्ता को सुरक्षित रखने हेतु किए जो रहे प्रयास आदि कुल मिलाकर स्वार्थ केंद्रित राजनीति का यथार्थ रूप साहित्य में दिखाई दे रहा है।

2.6 परिवेशगत यथार्थ के रूप

प्रस्तुत शोध प्रबंध में परिवेशगत यथार्थ के कुछ रूप निर्धारित किए गए है जो इस प्रकार है-

1. सामाजिक परिवेशगत यथार्थ
2. पारिवारिक परिवेशगत यथार्थ
3. धार्मिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ

4. आर्थिक परिवेशगत यथार्थ

5. राजनीतिक परिवेशगत यथार्थ

6. शैक्षिक परिवेशगत यथार्थ

उपर्युक्त रुपों के आधार पर ही ममता कालिया के कथा साहित्य का मूल्यांकन किया गया है। इसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार दिया जा रहा है।

1-2. सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेशगत यथार्थः

समाज परिवर्तनशील है। स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक सामाजिक परिवेश में बहुत परिवर्तन आया है। आधुनिक युग में व्यक्ति, परंपरागत समाज और परिवार से दूर होता गया है। वह अपने गाँव को छोड़कर जीविकोपार्जन के लिए देश के सभी कोनों में पहुँचा है। इस युग में आर्थिक सहयोग के लिए नारी को नौकरी करनी पड़ी। स्त्री घर से बाहर पुरूषों के संपर्क में आयी। फलतःप्रेमविवाह, अंतर्जातीय विवाह प्रचलित हुए। संयुक्त परिवार की बुनियाद हिल गई। एकल परिवार अस्तित्व में आने लगा। पुराने मूल्यों का विघटन प्रारंभ हुआ और व्यक्ति चेतना का अधिकाधिक विकास हुआ। आधुनिक युग में नारी सामाजिक स्तर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुई। 20 वीं शती का अंतिम दशक नारी जीवन और दलित जीवन की दृष्टि से सदैव याद किया जाता रहेगा। इन दोनों क्षेत्रों में समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा, स्वातंत्र्य की भावना, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा अस्मिता की पहचान आदि कारणों से नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई है। इसीलिए भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नारी परंपरागत मान्यताओं को खंडित करती हुई अपने विकास की नई भावभूमी तलाशने लगी है। आज शिक्षित अशिक्षित, घरेलू एवं कामकाजी, शहरी एवं ग्रामीण सभी क्षेत्रों में नारी की मानसिकता में बदलाव आ रहा है। नारी-जीवन से

संबंध विवाह, दांपत्य, परिवार, रोज़गार, काम-प्रेम आदि आयाम बदलते हुए संदर्भ खोज़रहे हैं। इस दशक की महिला उपन्यासकारों ने आधुनिक चेतना संपन्न नारी के इसी रूप को अपने उपन्यासों में गौरवपूर्ण स्थान दिया है। 'शेष यात्रा' '(उषा प्रियंवदा)', 'आपका बंटी' '(मन्नू भंडारी)', 'एक जमीन अपनी'', आवाँ' '(चित्रा मृदगल)', 'नरक दर नरक', 'दुक्खम सुक्खम' '(ममता कालिया)', आदि के उपन्यासों में नारी-जीवन से संबंधित विभिन्न पक्षों की जाँच पड़ताल की गई है।

3. धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेशगत यथार्थ

भारतीय संस्कृति धर्मशास्त्र एवं सामाजिक रूढ़ियों द्वारा नियंत्रित थी। मध्यकाल में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान था। जो अधर्म का मार्ग अपनाता था उसे जाति से बाहर कर दिया जाता था। भारत में इहलोक की अपेक्षा परलोक, मोक्ष प्राप्ति, कर्मवाद एवं पुनर्जन्म में अधिक विश्वास किया जाता था। समाज परंपरागत मान्यताओं एवं रूढ़ियों से बुरी तरह जकड़ा हुआ था। विज्ञान एवं अद्योगिकीकरण के कारण समाज में सभी क्षेत्रों में परिवर्तन आया। सामाजिक परिवर्तन के फलस्वरूप संस्कृति में बदलाव आना स्वाभाविक था। भारत में अंग्रेजी प्रभाव के साथ ही पश्चिमी एवं पूर्वी संस्कृतियों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई। इसी के साथ बीसवीं शती में अनेक विचारधाराओं एवं मान्यताओं का प्रवेश हुआ। इससे भी हमारा जीवन एवं साहित्य प्रभावित हुआ। इस दृष्टि से गाँधी दर्शन, अरविंद की योग-साधना, रवींद्र की प्रकृति उपासना तथा इकबाल की विचारधाराएँ महत्वपूर्ण कही जा सकती हैं।

4.आर्थिक परिवेशगत यथार्थ

वर्तमान में, भारत की आर्थिक परिस्थिति कैसी है यह सब जानते हैं कई लाख करोड़ रुपयों का विदेशी ऋण, उदारीकरण और भूमंडलीकरण की विषम परिस्थिति के चलते आज

हमारा देश मृत्युप्राय अवस्था में है। कई लाख के छोटे-बड़े मंझोले कारखाने बंद हो चुके हैं। विश्व के शक्तिशाली और अमीर देशों के स्वार्थी पेपेंट कानूनों और खुले बाजारों की अर्थनीति के कारण हमारी भारतीय कृषि को जबरदस्त धक्का लगा। आज भारत में, उच्च शिक्षा प्राप्त युवावर्ग रोज़गार की तलाश में शहर-शहर भटक रहे हैं। हजारों-करोड़ों रुपयों का कर्ज़ बैंकों से लेकर, करोड़पति व्यवसायी लोग कर्ज़ अदा नहीं कर रहे, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से करों का बोझ देश के गरीब और मध्यवर्ग को ढोना पड़ रहा है, हालांकि मुट्ठी-भर धनी लोगों द्वारा काले धन में वृद्धि हो रही है। सरकार की ओर से इस समस्या के समाधान के लिए कोई प्रयत्न नहीं हो रहे हैं। आज के सांप्रदायिक कारणों में अर्थ भी एक महत्वपूर्ण कारक है। इस संदर्भ में भगतसिंह का कथन विशेष महत्वपूर्ण है।

5-6 राजनीतिक एवं शैक्षिक परिवेशगत यथार्थ

आज की सामाजिक व्यवस्था का सर्वाधिक शक्तिशाली तत्व है-राजनीति आज देश में हिंसा, आतंक भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, राजनीतिक संघर्ष एवं सांप्रदायिकता आदि अपनी चरम सीमा पर पहुँची हुई है। अराजकता, असुरक्षा से देश संत्रास से भर उठा है। 20 शती के अंतिम दशक में दो महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुई। पहली ऐतिहासिक घटना थी- 6 दिसंबर 1992 में बाबरी मस्जिद गिरने की जिसने हमारे धर्मनिरपेक्ष स्वरूप पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया। दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी-आर्थिक उदारीकरण की इससे देशकाल आयात-निर्यात व्यापार मुक्त हुआ। इस नीति से बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अधिक से अधिक मुनाफा कमाया इसके परिणामस्वरूप देश की आर्थिक व्यवस्था चरमरा गई। राजनीतिक विडंबनाओं और विकृतियों को केंद्र में रखकर लिखे गए उपन्यासों में बिस्त्रामपुर का संत(श्रीलाल शुक्ल), जुलूस वाला आदमी (रामाकांत), पगली घंटी(हृदयेश), जंगल जहाँ से शुरू होता है(संजीव),

आदमखोर (श्रवणकुमार गोस्वामी), सभापर्व (बदीउज्जमा), वे जहाँ कैद हैं(प्रियवंद), ममता कालिया का कथासाहित्य उल्लेखनीय है।

उपर्युक्त परिवेशगत यथार्थ के विविध रूपों का विस्तार से विवेचन अध्याय तीन और अध्याय चार में किया जाएगा।

2.7 परिवेशगत यथार्थ एवं साहित्य

परिवेशगत यथार्थ का अर्थ है अपने समकालीन युग के परिवेश का अंकन करना। सभी रचनाकारों की कृतियों में अपने युग का परिवेश उभरकर आता है। क्योंकि अपने समय की समस्याओं का अकन रचनाकार ही कर सकता है। इसीलिए कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। किसी भी साहित्य का इतिहास अपने युगीन परिवेश की उपज होता है। इसीलिए भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्योहास के सभी लेखकों ने साहित्य में परिवेश के महत्व को स्वीकार किया है। यद्यपि अंगरेजी साहित्य के विभिन्न इतिहासकारों द्वारा यह धारणा बहुत पहले प्रचलित हो चुकी थी कि किसी भी जाति के साहित्य का इतिहास उस जाति के सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण को ही प्रतिबिंबित करता है या साहित्य की प्रवृत्तियाँ संबंधित समाज को एक सुव्यवस्थइत सिद्धांत के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय फ्रेंच विद्वान तेन(Taine) को है जिन्होंने अपने अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में प्रतिपादित करने का श्रेय फ्रेंच विद्वान की विभिन्न प्रवृत्तियों के मूल में मुख्यतः तीन प्रकार के तत्व सक्रिय रहते हैःजाति(Race), वातावरण (Milieu), क्षण विशेष (Moment)। तेन ने अपनी व्याख्या के द्वारा यह भलीभांति स्पष्ट किया कि किसी भी साहित्य के इतिहास को समझने के लिए उससे संबंधित जातीय परंपराओं, राष्ट्रीय और

सामाजिक वातावरण एवं सामायिक परिस्थितियों का अध्ययन विश्लेषण आवश्यक है। **(40)**

इसी प्रकार के विचार जर्मन चिंतकों ने भी व्यक्त किए है। ए.एच कॉफे ने महान कवि गेटे की साहित्यिक प्रवृत्तियों की व्याख्या युगीन चेतना के आधार पर ही किया है। इसी प्रकार मार्क्सवादी, मनोवैज्ञानिक चिंतकों ने युगीन परिवेश को महत्वपूर्ण माना है। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्योतिहास का विवेचन-विश्लेषण परिवेश में परिप्रेक्ष्य में किया है। इस संदर्भ में उनका कथन उल्लेखनीय है-"जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है। अतः कारणस्वरूप इन परिस्थितियों का किंचित दिग्दर्शन भी साथ ही साथ आवश्यक होता है। इस दृष्टि से हिंदी साहित्य का विवेचन करने में यह बात ध्यान में रखनी होगी कि किसी विशेष समय में लोगों में रूचि विशेष का संचार और पोषण किधर से और किस प्रकार हुआ। "**(41)**

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि आचार्य शुक्ल ने साहित्येतिहास के प्रति एक निश्चित सुस्पष्ट दृष्टिकोण का परिचय देते हुए युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में साहित्य के विकास क्रम की व्याख्या करने का प्रयास किया है। इससे ज्ञात होता है कि किसी साहित्यिक रचना के पीछे उसका परिवेश महत्वपूर्ण हो जाता है उसी का यथार्थ चित्रण करने का दायित्व रचनाकारों पर होता है। ऐसा कहा जाता है कि 1916 से 1936 का भारतीय

इतिहास खो जाए तो उस समय का समग्र इतिहास प्रेमचंद के कथासाहित्य से पता चल सकता है।

प्रेमचंद के अनुसार उपन्यासकार को अपनी रचना के बीच आसपास की जंदगी से ही मिलते है।इसके लिए उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स के पिकविक पेपर्स, जार्ज इलियट के साइलस मार्नर, हाथर्न के स्कारलेट वेटर आदि के उदाहरण दिए हैं। अपनी प्रसिद्ध रचना रंगभूमि के बारे में उन्होंने लिखा है कि उसका बीजांकुर उन्हें अपने ही गाँव के एक अंधे भिखारी से मिला था। इसके अतिरिक्त कुछ लेखकों को अपने उपन्यासों के लिए अंकुर अन्य लेखकों की पुस्तकों से मिल जाते हैं। इस कथन के समर्थन में प्रेमचंद ने हालकेन के एटर्नल सिटी(हिंदी-अनुवाद-अमरावती), मेटरलिंक के मोमाबोन, देवकीनंदन खत्री के चंद्रकांता आदि का उदाहरण दिया है। प्राचीन कथाओं का आधार लेकर भी उपन्यास लिखे जाते है। **(42)**

साहित्य की सृष्टि मूलतः परिवेशगत यथार्थ चित्रण के लिए ही हुई है। यथार्थ की उपेक्षा करके साहित्य निष्प्राण हो जाता है। वास्तविक जगत् के यथार्थ की अपेक्षा साहित्यिक यथार्थ महत्वपूर्ण हो जाता है। कोई भी साहित्य निर्जीव चित्र बहुत अंतर पाया जाता है। साहित्यकार अपनी अनुपम चित्रोपमता तथा अनुभूतियों के बल के द्वारा जो वास्तविक मानव जीवन का चित्र खींचता है, उसे हम यथार्थ चित्रण कह सकते है। यथार्थ की मदत लेकर लिखा गया साहित्य समाज के विकास में मदत करता है। यह माना गया है कि यथार्थ निरंतर रूप धारण करता है उसकी कभी मृत्यु भी नहीं होती, यह बात सच भी है क्योंकि किसी न किसी रूप में यथार्थ दृष्टिकोण होता है। आधुनिक युग में यथार्थ का विरोध भी हुआ है। जितने साहित्यिक आंदोलन उभरकर आये यथार्थवादी चेतना का विरोध

दिखाई देता है। यथार्थ से संबंधित साहित्य में वास्तविकता तटस्थ दृष्टि आदि का होना जरूरी है।

निसंदेह हम कह सकते है कि यथार्थ का महत्व साहित्य में अत्याधिक है, यथार्थ के आधार पर हम समाज का सही चित्र देख सकते हैं।

आज के यथार्थ पर प्रकाश डालते हुए फास्ट लिखते हैं-"आज का यथार्थ बेजोड़ है। एक निरंतरता उस कल के यथार्थ से जोड़ती है जैसे कि वह इस निरंतरता का हिस्सा बनकर कल या आने वाले कल से अलग भी है। आज से सौ वर्ष या बीस वर्ष जो सच था वह जरूरी नहीं है कि आज भी सच हो।"**(43)**

यथार्थ का मुख्य उद्देश्य साहित्य में समस्त वास्तविकता का अंकन करना होता है। साहित्य को सच्चे अर्थ में समाज का चित्रण करने की क्षमता "यथार्थवाद" से मिली है। किसी भी व्यक्ति के बाह्य क्रियाओं तक पहुँचना मूल-स्रोतों तक पहुँचना की क्षमता और मानव जीवन साहित्य में असंख्य रुपों चित्रित होने लगता है।

साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार से यथार्थ का अध्ययन किया जाता है। 1.कथावस्तु का चुनाव 2. पात्रों की भाषा 3. संवाद तथा 4. वर्णन प्रणाली आदि में यथार्थ के अनेक रूप मिलते हैं। साहित्य में केवल तत्कालीन समाज का यथातथ्य चित्र-मात्र नहीं होता बल्कि उनके भीतर वर्तमान परिस्थितियों को बदल देने की एक जीवंत शक्ति होती है।

यथार्थवाद की चर्चा लेखकों ने अधिकतर साहित्य में चरित्र चित्रण के साथ की है। जीवन का सविस्तार और स्पष्ट चित्र गद्य में ही सर्वसाधारण के समस्त सुगमत से रखा जा सकता है। इस संदर्भ में त्रिभुवन सिंह का कहना है, "इसीलिए साहित्य की इतनी लोकप्रियता हुई और इसीलिए यथार्थवाद पद्य में अपनी दाल गलती न देखकर साहित्य में बखटके हाथ-पाँव फैलाया। साहित्य के अंदर तिथियों और नामों के अतिरिक्त सब सत्य

होता है और रचनाकार अपनी रचना यथार्थ कि कठोर भूमि पर ही करता है, कल्पना के शून्य धरातल पर नहीं।" **(44)**

प्रतिदिन हमारा जीवन विश्व की एवं आंतरिक हलचलों से प्रभावित रहता है। आज हम एक विषम स्थिति में जी रहे हैं। किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष भाव, स्वार्थ की भावना और उसे दूर करने का प्रयास हम करते है। जिसने मानव को अधिक व्यस्त एवं शंकालु बनाया है उसके कारण मानव को उतना अवकाश नहीं मिलता की वह प्रत्येक समस्या का सुधार करे। हिंदी साहित्य की सभी महिला कथाकारों ने समय की समस्याओं को अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। इस दृष्टि से कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मेहरुन्निसा परवेज, चित्रा मुदगल, नासिरा शर्मा, सूर्यबाला एवं ममता कालिया आदि महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि साहित्य और परिवेशगत यथार्थ एक-दूसरे से आबद्ध रहते है।साहित्य में परिवेश पूरे यथार्थ, सच्चाई एवं वास्तविकता से आता है। साहित्य की एक विशिष्ट चिंतन-पद्धति, जिसके अनुसार कलाकार को अपनी कृति में जीवन के यथार्थ रुप का अंकन करना चाहिए। यह दृष्टिकोण वस्तुतः आदर्शवाद का विरोधी माना जाता है। वस्तुतः तो आदर्श उतना ही यथार्थ है, जितनी कि कोई भी यथार्थवादी परिस्थिति। जीवन में यथार्थ की कल्पना दृष्कर है। किन्तु अपने पारिभाषिक अर्थ में यथार्थवाद जीवन की समग्र परिस्थितियों के प्रति ईमानदारी का दावा करते हुए भी प्रायः सदैव मनुष्य की हीनताओं तथा कुरूपताओं का चित्रण करता है। यथार्थवादी कलाकार जीवन के सत्य को उजागर करता है।

संदर्भ सूची

1. आदित्यप्रसाद त्रिपाठीः औपन्यासिक समीक्षा और समीक्षाएः पृ. 39-40
2. प्रो. दिनेशभाई किशोरीः हिमांशु जोशी की कहानियों के परिवेश का अनुशीलनः पृ.16
3. डॉ. हरदेव बाहरीः संक्षिप्त अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोशः पृ.232
4. वामन शिवराम आप्टेः संस्कृत-हिंदी कोशः पृ.560
5. रामचंद्र वर्माः मानक हिंदी कोशः पृ.428
6. कालिका प्रसादः बृहत हिंदी कोशः पृ.656
7. डॉ. सरिता वशिष्ठः निर्मल वर्मा की कहानियों का विदेशी परिवेशः पृ.2
8. पुरूषोच्चम नारायण अग्रवालः नालंदा अघतन कोशः पृ.51

9. Reader’s Digest universal Dictionary: pg.110

10. प्रो.नामवर सिंहः इतिहास और आलोचनाः पृ.36

11. मधुमालती(पत्रिका) 975 पृ.111

12. डॉ. रामदरश मिश्र, ज्ञानचंद्र गुप्त(संपादक) हिंदी के आंचलिक उपन्यासः पृ.90

13. प्रेमचंदः हंस पत्रिकाः 1932 पृ.40

14. डॉ.ज्ञानवती अरोड़ाः समकालिन हिंदी कहानी यथार्थ के विविध आयामः पृ.226

15. डॉ. धीरेंद्र वर्माः हिंदी साहित्य कोश भाग (1) पृ.660

16. डॉ.ज्ञानवती अरोड़ाः समकालिन हिंदी कहानी यथार्थ के विविध आयामः पृ.212

17. डॉ.ज्ञानवती अरोड़ाः समकालिन हिंदी कहानी यथार्थ के विविध आयामः पृ.49

18. डॉ.सुरेश सिंहाः हिंदी कहानी उद्भव और विकासः पृ.110

19. डॉ. सरिता वशिष्ठः निर्मल वर्मा की कहानियों का विदेशी परिवेशः पृ.5

20. डॉ. सरिता वशिष्ठः निर्मल वर्मा की कहानियों का विदेशी परिवेशः पृ.6

21. डॉ. विपिन गुप्तः हिंदी नाटक में समसामयिक परिवेशः पृ.13

22. कार्ल कैपलरः संस्कृत इंगलिश डिक्शनरीः पृ.427

23. डॉ.धीरजभाई वणकरः कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थः पृ.158

24. डॉ.धीरजभाई वणकरः कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक

यथार्थः पृ.158

25. फादर कामिल बुल्केः अंग्रेजी हिंदी कोशः पृ.543

26. डॉ.धीरजभाई वणकरः कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थः पृ.158

27. दि रीडर्स डाईजेस्ट ग्रेट एनसायक्लोपीडीक डिक्शनरी(उपर्युक्त संदर्भ मैंने डॉ.धीरजभाई वणकर कृत कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ नामक ग्रंथ से उद्धृत किया है) पृ.735

28. रामचंद्र वर्माः (संपादक) संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर

29. रामचंद्र वर्माः (संपादक) मानक हिंदी कोशः पृ.435

30. डॉ.धीरजभाई वणकरः कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थः पृ.159

31. डॉ.धीरजभाई वणकरः कमलेश्वर की कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थः पृ.159

32. डॉ. मंजुषाः भीष्म साहनी के उपन्यासों में यथार्थवादी परिदृश्यः पृ.22

33. Harry Shaw: Dictionary of Literacy terms

34. उमेश शास्त्रीः हिंदी साहित्य का निबंधात्मक इतिहासः पृ.265

35. उमेश शास्त्रीः हिंदी साहित्य का निबंधात्मक इतिहासः पृ.265

36. उमेश शास्त्रीः हिंदी साहित्य का निबंधात्मक इतिहासः पृ.265

37. प्रेमचंदः उपन्यास नामक लेख-गद्य
काव्य-तरंगिनीः पृ.502

38. रामचंद्र वर्माः मानस हिंदी कोषः पृ.435

39. डॉ. त्रिभुवनसिंहः हिंदी उपन्यास और यथार्थवादः पृ.44

40. डॉ. नगेंद्रः हिंदी साहित्य का इतिहासः पृ.23

41. आचार्य रामचंद्र शुक्लः हिंदी साहित्य का इतिहासः पृ.1

42. प्रेमचंदः व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पाठ्य-सामग्री एम.एच.डी-14 हिंदी उपन्यास-1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय मानविकी विद्यापीठः पृ.41

43. रामदत्थ मिश्र के उपन्यासों में यथार्थ, डॉ.झेड एम. जंघाले पृ.29

44. त्रिभुवन सिंह, हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद पृ.45

3. ममता कालिया का कहानी साहित्यःपरिवेशगत यथार्थ

साहित्य का आधार मनुष्य और सामाजिक परिवेश होता है। परिवेश व्यक्ति के इर्द-गिर्द ही रहता है। उसका संसार, उसकी दुनियादारी, रहन-सहन, स्वयं का परिवार, समाज का संस्कार, शिक्षा, धर्म, सोच आदि परिवेश के ही अंतर्गत आते है। जगह बदलने से परिवेश भी बदलता है और परिवेश बदलने से मूल्य बदल सकते है। कहानियों में तथ्य की अपेक्षा परिवेश महत्वपूर्ण हो जाते है। कथाकार एवं परिवेश का घनिष्य संबंध होता है। वह अधिकांशता अपने पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश से ही विषय उठाते है और उन्हें कहानी का रूप दे देते हैं। मानवीय चेतना का परिवेश से इतना निकट और बहुआयामी संबंध है कि परिवेश को दृष्टि में रखे बिना हम मानवजीवन के निरंतर बदलते स्वरूपों को नहीं समझ सकते। परिवेश और मानव की अंतश्चेतना दोनों एकदूसरे से दोहरे रूप में प्रवाहित है। "जहाँ व्यक्ति के क्रियाकलाप परिवेश का निर्माण करती है वहीं परिवेश व्यक्ति को प्रभावित करता है। हमें अपनी अनुभूतियों और व्यक्तिगत संवेदनाओं को सर्वथा व्यक्तिगत मानने का अभ्यास है। वे वास्तव में हमारे व्यक्तित्व के प्रकृति के साथ अपने सामाजिक परिवेश के साथ संघर्ष था घात-प्रतिघात का परिणाम है।"**(1)**

समाज के विभिन्न घटकों का अपना एक विशिष्ट परिवेश होता है, जिसका व्यक्तिविशेष के जीवनदर्शन से गहरा संबंध होता है। इसी परिवेश में तत्कालीन समाज का उत्थान और पतन होता है। कवि या लेखक अपने परिवेश का प्रतिनिधि होता है। उसे जैसा मानसिक खाद्य मिलेगा, उसकी कृति भी वैसी ही होगी। सामाजिक समस्याओं, विचारों और भावनाओं का जहाँ वह स्रष्टा है, वहीं इनके द्वारा निर्मित परिवेश से वह स्वयं प्रभावित

भी होता है। साहित्यकार अपने परिवेश से अछूता रहकर जी नहीं सकता। डॉ.नामवर सिंह का इस संदर्भ में कहना है कि, "यह सही है कि सृजन के क्षणों में रचनाकार केवल यही सोच रहा होता है कि जो कुछ उसके भीतर पक रहा है उसे किसी समस्त इंद्रियाँ सिमट कर उसी रचना के बिंदु पर केंद्रित हो जाती हैं। यहाँ तक तो उसका रचना-कर्म स्वांतःसुखाय कहा जा सकता है, किंतु इस स्वांतःसुखाय में उसकी सारी साधना और सारा व्यक्तित्व अंतर्निहित होता है-दृष्टिकोण, उद्देश्य अनुभव, अनुभूति, विचार, विश्वास वगैरह सब कुछ इसी के अंतर्गत आ जाता है। इन तमाम बातों को वह स्वयं कहे या नहीं, लेकिन साहित्यिक कृति के रूप में इन सबका फल हमारे सामने आता है।"(2)

रचना के मूल में रचनाकाल की अनुभूति का साथ तो होता ही है किन्तु परिवेश के साथ गहरी एवं आत्मीय संबद्धता उसकी रचना को ईमानदार और प्रमाणिक बनाती है। परिवेश की जीवंतता के कारण ही प्रेमचंद का समस्त लेखन, उनके समय की परिस्थितियों पर कारगर टिप्पणियाँ मानी जाती है। इसी के साथ ही साथ रेणु का 'मैला आँचल', उषा प्रियमवदा की वापसी, तथा ज्ञानरंजन की पिता आदि उपन्यास एवं कहानियाँ इसलिए महत्वपूर्ण है कि ये रचनाएँ लेखकों द्वारा अनुभूत परिवेश की देन है।

ममता कालिया का लेखन स्वतंत्रता के बाद का है। इसलिए स्वातंत्र्योत्तर परिवेश ही ममता जी के रचनात्मक मानसिकता के विषय में सहायक रहा है। स्वातंत्रता के बाद का भारतीय परिवेश के अनेक बदलाव हुए है। युगीन परिवेश से संबंधित घटनाओं के विभाजन की विभीषिका, बाह्य आक्रमण तथा समाज में सामंती शक्ति के रूप स्थापित करने का क्रम, मध्यवर्गीय जीवन और चिंतन में तीव्र बदलाव आदि मुख्य रहे है। लेकिन भारतीय परिवेश में नारी की स्थिति में सबसे अधिक बदलाव आए है। इन बदलावों ने ममता जी के साहित्य को विशेष रूप से प्रभावित किया। ममता जी ने अपनी कहानियों में सामाजिक

परिवेश, पारिवारिक परिवेश, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश, आर्थिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश एवं शैक्षिक परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है। इनमें सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश इनकी कहानियों का आधार बिंद रहा है जिनका परिचय इस प्रकार दिया जा रहा है।

3.1 सामाजिक परिवेशगत यथार्थ

मनुष्य और समाज का गहरा संबंध है। समाज की व्यवस्था इस तरह से बनायी गयी है कि सब लोग यहाँ सुरक्षा महसूस करे। कोई भी सामाजिक परिस्थितियाँ मनुष्य को प्रभावित करती है। साहित्यकार का जन्म भी सामाजिक परिस्थियों के मध्य होता है। वह समाज में घटने वाली सच्ची घटनाओं को साहित्य में प्रतिबिंबित करता है। डॉ. राज्यश्री अग्रवाल के शब्दों में-"मनुष्य की सृजनात्मक शक्तियों का विकास समाज से ही संभव है। नये विचारों और कल्पनाओं को समाज में ही निरीक्षण, परीक्षण, प्रयत्न एवं मूल्यों के द्वारा सक्रियता से ही साकार किया जा सकता है।"**(3)** साहित्य को ही समाज से जुड़ी एक घटना कहा जा सकता है। आजकल सामाजिक 'परिवेश' में सहज मानव को हम गायब होता देख सकते है। पैसों का दानव अपने पैरों तले सब को कुचल रहा है। हमारी अस्मिता खण्डित हो रही है। मनुष्य स्वतंत्र होने की कोशिश कर रहा है या प्रदर्शन करता है। सभी सामाजिक आदर्श नष्ट हो गए है। समाज में एक ओर शिक्षा की प्रगति को लेकर बड़ी-बड़ी बातें की जाती है वहीं दूसरी ओर बेकारी बढ़ रही है। सामाजिक अव्यवस्थाओं एवं भ्रष्टाचार से जनजीवन त्रस्त है। साधारण व्यक्ति का जीवन तो नरक के समान हो गया है। समाज में लक्ष्मी और देवी मानी जानेवाली नारी को भी अपमानित होना पड़ता है। इसके अलावा सामाजिक यथार्थ से यह तात्पर्य है कि मनुष्य जिन सामान्य क्रियाओं के सच्चे चित्र उभारता है। वह समाज से जुड़ा यथार्थ है। सामाजिक शब्द की व्याख्या करते हुए डॉ. सुरेश

धोगंड़ा ने लिखा है कि-"व्यक्ति या मनुष्य इन्ही प्राथमिक या द्वितियक समूहों का सदस्य होता है।"(4) सामाजिक यथार्थ के कारण साहित्य में अभिरूचि पैदा होती है, क्योंकि साहित्य का प्रयोजन किसी भी सचाई को वास्तविक तौर पर चित्रण करना होता है।

इस प्रकार सामाजिक यथार्थ को रुपायित करते समय हम समाज में व्याप्त कुरीतियों का वर्णन करते है जैसे बलात्कार, व्याभिचार, चोरी, डकैती, भीड़-भाड़ आदि। इस सब का जिम्मेदार हम पुरूष वर्ग को मानते है लेकिन आज की आधुनिक स्त्रियाँ अपने अंग-प्रदर्शन को एक फैशन का रूप मानती है। जिस्से यह बात स्वाभाविक है कि पुरूषवर्ग उनके प्रति आकर्षित होता है। इसके अलावा आम आदमी का जीवन संघर्ष या बेचारगी, टूटते परिवार, स्त्री पुरूष के नये संबंध निम्न मध्यवर्ग का वैषम्यपूर्ण जीवन, सरकारी व्यवस्था, भ्रष्टाचार, पुलिस व्यवस्था, अभावग्रस्त और त्रस्त युवावर्ग, उपेक्षित वृद्धजन, वैवाहिक और विवाहेत्तर नर-नारी संबंध, सामाजिक अंधविश्वास आदि स्वातंत्र्योत्तर से लेकर वर्तमान सामाजिक परिवेश की उपज है। सामाजिक परिवेश के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जाएगा-

3.11 विवाह-पूर्व प्रेमसंबंध:

स्वातंत्रता प्राप्ति के पश्चात नारी के विवाह-पूर्व प्रेम संबंध वैयक्तिक एवं सामाजिक धरातल पर अधिक निर्भर रहते हैं जिसमें कुंठा, तनाव द्वंद्व, भटकाव और शोषण आदि स्थितियाँ उभरकर सामने आयी है। लेकिन आज परिवेश के बदलाव के साथ विवाह-पूर्व प्रेम संबंधों के प्रति नारियों में भी चेतना आ रही है। ममता जी ने नारी के इस चेतना संपन्न-रूप को कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। 'छुटकारा' कहानी की नायिका अपने प्रेमी 'बत्रा' की बुद्धिवादी सोच के कारण प्रेम-संबंधों को उचित अन्जाम न दे सकने से

कुंठित हो जाती है। उसे विवाह-पूर्व प्रेम-संबंधों की सच्चाई का बोध हो चुका है। इस संदर्भ में वह सोचती है-"मैं चुप हो गयी। मैं घर जाना चाहती थी। असल में मैं आना ही नहीं चाहती थी। चलते हुए मुझे लगा जैसे मैं शून्य में शून्य से समय नियत कर रही हूँ।"**(5)**

इस प्रकार वह नायिका अकेलेपन से त्रस्त हो जाती है। उसकी मनोदशा का वर्णन इस प्रकार किया गया है। "पहले तो वह होता था और होती बेशुमार सबर, अफवाहें लतीफें वाक्यांश हँसी और तेवर।"**(6)**

इस प्रकार के संबंधों के कारण नारी का पारिवारीक जीवन भी त्रासदी से परिपूर्ण हो जाता है। इसको 'दो जरूरी चेहरे' की 'मिनाती' के माध्यम से दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त 'बेतरतीब', 'बिटिया' मुखौटा तथा खिड़की कहानियों में भी इन संबंधों को स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार ममता जी ने विवाह पूर्व प्रेम-संबंधों में नारी की कोमल भावनाओं को समझने, जानने की कोशिश की है।

3.12 असफल प्रेमविवाह:

नारी-जीवन में विवाह का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विवाह-पूर्व जीवन की प्रेमिका जब विवाह के पश्चात 'पत्नी' के रूप में जीवन प्रारंभ करती है तब अपनी बदलती हुई भूमिकाओं के साथ-साथ अपने परिवेश में भी परिवर्तन अनुभव करती है। आज प्रेमविवाह के नकारात्मक पहलू ही सामने आ रहे है। प्रेमी-प्रेमिका में यदि विवाह हो भी जाता है तो प्रेम कायम नहीं रह पाता है। उसका स्वरूपबदल जाता है। इस संबंध जैनेंद्र जी कथन है- "विवाह कितना ही प्रेमविवाह है पत्नी यथार्थ पर आकर निरी स्त्री होने पर देवतापन से नीचे आता है और मनुष्य बनता है।"**(7)** ममता जी की अधिकांश कहानियों में प्रेमविवाह की समस्याओं को रेखांकित किया गया है। 'जितना तुम्हारा हूँ', 'पीठ', 'एक जीनियस की

प्रेमकथा', 'उपलब्ध', 'पीली लड़की' आदि कहानियों में असफल प्रेमविवाह को दर्शाया गया है। 'पीली लड़की' कहानी की नायिका 'सोना' का भी प्रेमविवाह हुआ है। पुरूष की मानसिकता के बनावटीपन का अनुभव उसे होता है।

यही कारण है कि विवाहोपरान्त सोना दिन-ब-दिन अंतर्मुखी होती जाती है। प्रेम में जान कुर्बान कर देनेवाला प्रोफेसर प्रेमी, सामाजिक संपर्क बढ़ाने के चक्कर में सोना को समय नहीं दे पाता है और वह अकेलेपन का शिकार हो जाती है। वह उदासी के क्षणों में सोचती है-"पहले तो ऐसा नहीं था। उन दिनों में अगर सात बजे मिलने को कहती तो यह छःबजे ही बस स्टॉप पर आ जाता। कभी में कहती हम लोग एक-दूसरे से बारे हो गए तो तो कहता, कोई बात नहीं, बोर होंगे भी तो साथ-साथ।"**(8)**

किन्तु सोना को आज सत्य के वास्तविक रूप का बोध हो चुका था। इस प्रकार ममता की कहानियों में अधिकांश नायिकाएं प्रेम और विवाह की आन्तरिक पीड़ा को महसूस कर चुकी है। वे प्रेम की असलीयत को समझ चुकी है।

3.13 विवाहित नारी के प्रेमप्रसंग:

ममता जी कहानियों में विवाहित नारी के प्रेम प्रसंगों का चित्रण भी किया गया है। 'लगभग प्रेमिका' कहानी की नायिका, नौकरी के कारण पति से अलग होस्टल में रहती है। वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए, अपने पति के मित्र कृष्णा कक्कड़ से प्रेम करने का प्रयास करती है। वह उसके साथ घूमने जाती है। वह कहती है-"सामने से एक बेहद जवान लड़की मिनी ड्रेस में आ रही थी। कृष्णा उसे ध्यान से देख रहा था। मुझे लगा, मैं साथ न होती, तो वह जरूर सीटी बजाता.... मैंने विदा ली।**(9)** इस तरह अकेलेपन के कारण वह कृष्णा कक्कड़ से प्रेम करने लगती है।

3.14 अनमेल विवाह:

स्त्री शिक्षा के कारण स्त्रियों की मानसिक स्थिति में बदलाव आया है, जिसके कारण वह आर्थिक रूप से स्वालंबी हुई है और अपने परिवार को भी संभालती है, लेकिन जब उनके विवाह का प्रश्न आता है तब उनके परिवार वाले जबरदस्ती उसकी शादी किसी ऐसे व्यक्ति से करा देते है जो उसके लाय़क नहीं होता या.....

उनकी बराबरी नहीं कर सकता। कभी-कभी उनके विचार मेल नहीं खाते इसे हम अनमेल विवाह भी कह सकते है। जो कभी सफल नहीं होता किसी न किसी कारणवश उनकी जिंदगी नरक से भी बत्तर हो जाती है। इसे ममता कालिया ने अपनी कहानियों में यथार्थ रूप में चित्रित किया है जो इस प्रकार है-

'राएवाली' नामक कहानी में एक स्त्री का चित्रण किया है जो 'राए' की होने के कारण उसका नाम 'राएवाली' पड़ गया। वह बहुत ही पढ़ी लिखी थी। उसकी शादी उसकी मर्जी के खिलाफ की जाती है। उसका पति अनपढ़ है। वह कोई काम नहीं करता बल्कि उसपर रोब झाड़ता रहता है। कुछ कारणवश उसे वेश्या बनना पड़ता है लेकिन उसके परिवारवालों को लगता है कि 'राए की छोरी काम की कोरी'। हर वक्त उसका पति मोहन उसपर चिल्लाता रहता है, "जुबान लड़ाती है, बदजात कहीं की। मेरी माँ को कुछ कहा तो जीभ काढ़ कर धर दूँगा"।**(10)** शादी के बाद उन दोनों के विचार न मिल पाने के कारण उनकी जिंदगी तहस नहस हो जाती है।

'मंदिरा' नामक कहानी की नायिका मंदिरा अपने नाम के समान ही बहुत सारी, उमंगों को लेकर अपने पारिवारिक जीवन में 'रोमांच' का अनुभव करना चाहती है।लेकिन उसका पति जो शादी को बिल्कुल भी महत्व नहीं देता। नीरस स्वभाव वाले पति 'वाजपेयी'

को पाकर उसकी जिंदगी, उमंग तितर-बितर हो जाती है। उसे लगने लगा कि उसका शादीशुदा जीवन किसी काम का नहीं है। उसपर यह विवाह थोप दिया गया है। अपने पति के बारे में सोचते सोचते उसे लगा, "यह कैसा पति है, न दुःख में विचलित होता है न सुख में परम आल्हाद के क्षण भी उसके ऊपर से, ऐसे गुजर जाते हैं जैसे रेलगाड़ी के ऊपर से पंछी।"**(11)**

ममता कालिया की दर्पिण नामक कहानी में नायिका (बानी) का शादी से पूर्व जो जीवन था वह अलग था वह हँसती-खेलती, पढ़ी-लिखी युवती है लेकिन बिना जाँच परख के उसके परिवार वाले उसकी शादी करा देते है। शादी के तुरंत बाद उसे अपना जीवन व्यर्थ महसूस होने लगता है।'बानी' को यह लगता था कि- उसकी देह में सरगम का सा उतार-चढ़ाव है। उसके शरीर का एक-एक अपयव अलग-अलग अस्तित्व जताता था। "उसने कई बार सोचा की शादी के बाद वह सबसे पहले जो चीज खरीदेगी, वह होगा दर्पण।"**(12)** शादी के बाद उन दोनों में अनबन होने लगी। उनके विचार मोल नहीं खाते एवं उसका पति अपने प्रभुत्व का कुछ इस तरह इस्तेमाल करने लगा था कि हर बात में उसकी अनुमति अनिवार्य थी।

इसप्रकार ममता कालिया ने आज के समाज में अनमेल विवाह से संबंधित कुछ स्थितियाँ इन कहानियों के माध्यम से उजागर की हैं।

3.15 दहेज की समस्या:

प्राचीन काल से चली आ रही इस दहेज समस्या को हम आज भी देख सकते है। आधुनिक काल तक आते-आते इसका रूप बहुत ही विस्तृत एवं भयावह हो गया है। आये

दिन अखबारों में, दूरदर्शन पर देखने को मिलता है। समाज में यह एक भीषण बीमारी के रूप में उभर रही है।

आज के वर्तमान दौर में दहेज को शोषण माना गया है। आज विवाह से पूर्व दहेज जैसी समस्या के कारण युवतियाँ अपने भीतर कुण्ठा महसूस करती है। इस कुप्रथा के कारण आज प्रत्येक कन्या अपने स्वाभिमान पर एक प्रश्न चिन्ह पाती है। माता-पिता अपना सर्वस्व लुटा कर भी अपनी बेटी का विवाह करना चाहते है। विवाह के अवसर पर अधिकांश परिवार अपने आप को प्रगतिशील, आदर्शवादी एवं शिक्षित दर्शाने के चक्कर में दहेज लेने से इन्कार कर देते हैं। परंतु विवाह के पश्चात वे शिक्षित सभ्य लोग एहसान जताने, ताने मारने, नीचा दिखाने से बाज नहीं आते। आज दहेज की बलि वेदी पर पति की उपस्थिति में सैकडों औरतें जला दी जाती हैं। कन्या बड़ी होने पर माता-पिता के ऊपर विवाह का भय सवार हो जाता है। उनकी एक ही इच्छा होती है कि किसी तरह लड़की के हाथ पीले हो जाए और वे गंगा नहाए।

इसका यथार्थ रूप ममता कालिया ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है जो इसप्रकार हैः-

ममता जी के 'बिटिया' नामक कहानी में दहेज प्रथा का रूप स्पष्ट किया है। कहानी की नायिका 'मधुरिमा' को इसका ज्ञान है कि उसके पिता शादी में कितना खर्चा उठा सकते हैं। वरपक्ष जब 'लिस्ट' भेजते है तो वह अपने परिवार को चिंता ग्रस्त देखती है। नायिका की "माँ शारदा रूआँसी हो गयी, कहाँ तो सोच रहे थे खींचतान कर दस हजार की पड़ेगी।"**(13)** माँ का दिमाग सारा दिन कतरब्योंत में लगा रहा। बस ले देकर उसके ब्याह का सेट है उसी पर नज़र लगी रहती है, "मैं तो नहीं देने की, कर ले जो मर्जी।"**(14)** उसने मन ही मन यह दृढ़ निश्चय किया। अंत में विवाह से पहले ही मधुरिमा की एक सड़क दुर्घटना में

मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु से परिजनों को दुख तो होता है साथ ही संतोष भी कि उन्हें अब दहेज नहीं एकत्रित करना पड़ेगा।

'रिश्तों की बुनियाद' नामक कहानी में 'प्रीति' के पास दहेज के लिए न पैसा है, न देने वाला पिता ही है। उसकी भाभी उसे कटु शब्द सुनाती है। चार साल पहले जब उसकी माँ का देहांत हुआ तब उसकी जिम्मेदारी भाभी पर आ गयी। बात-बात में भाभी कहती है, "औरों के सास ससुर मरते हैं, तो भरा घर छोड़ जाते हैं। यहाँ हमारे मत्थे छोड़ गए हैं यह पचास हजार की बिल्टी।"**(15)** "माँ तो भाई के आसरे रहती पुराना मकान बेचकर 10 हजार भैया को दफ्तर में तरक्की दिलाने में बतौर घूस दे दिए गए, पुराने पीतल के बर्तन बेचकर भाभी नए स्टील के बर्तन ले आई.....एक सिर्फ प्रीति बची थी, जिसकी उलट-पलट नहीं की जा सकी"।**(16)**

प्रीति को इसका बोध हुआ की माँ धीरे-धीरे गीली आँखों से अपने घर को बेटे के घर में समाते देखती गई और जिस दिन उनसे लगभग वह साढ़े पाँच तोला सोना भी ले लिया गया जो उन्होंने प्रीति के ब्याह के लिए रखा था। तो वह टूट जाती है।

ममता जी की 'अकेलियाँ दुकेलियाँ' नामक कहानी की नायिका जब अपने विवाह के बारे में सोचती, दिमाग में भक्-भक् एक लाल रोशनी जलती और वह ठण्डी पड़ जाती। शायद अखबारों ने उसकी मानसिकता को चौपट कर डाला था। वह विवाह एवं दहेज के कारण होनेवाले अत्याचारों पर सोचती है एवं घबराती है- "कोई ऐसा दिन न था जब विवाहित नवयुवतियों को मार डाले जाने के सचित्र समाचार न छपते हों।.....अच्छे पढ़े लिखे, बेरोज़गार लड़के एक अदद स्कूटर, फ्रिज या टी.वी. के लिए अपनी पत्नी को जला मारने में कोई संकोच न करते।"**(17)** इस डर का पिरणाम यह हुआ कि वह शादी की तरफ बिल्कूल विमुख हो गयी थी।

ममता जी की 'खिड़की' नामक कहानी में भी स्वयंवर को पुनर्जीवित किया है एवं दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीति के भय को भी दिखाया गया है। यह हमें शिवचरण बाबू के इस वाक्य से पता चलता है। उनकी तीन लड़कियाँ है जो पढ़ी लिखी है- "आज जाब समाज में दहेज दिन दूनी, रात चौगुनी छटा दिखा रही थी, शिवचरण बाबू को स्वयंवर जैसी प्रथा के बारे में सोचना अच्छा लग रहा था। कभी-कभी वे कहते भी, तो अपनी बेटियों को फूलों के गहनों में विदा करूँगा। इन्हें मैंने पढ़ा-लिखा दिया, अब जो इनकी कद्र करें वह मेरे सामने याचना कर इन्हें ले जाए।"**(18)**

इस प्रकार ममता कालिया ने अपनी कहानियों में नायिकाएँ दहेज प्रथा के प्रति विरोधी मानसिक आक्रोश को प्रदर्शित करना चाहती है।

3.16 भ्रष्टाचार:

आजकल के वर्तमान दौर में भ्रष्टाचार को शिष्टाचार माना जाता है आम आदमी भी भ्रष्टाचार की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। अच्छी नौकरी प्राप्त करने के लिए बड़े से छोटे लोगों को पैसे देने पड़ते है। हमारा समाज भ्रष्ट आचारों एवं विचारों से भरा पड़ा है। सच्चाई कही गुम हो गयी है। पैसे के नामपर पाखंड, खून, अत्याचार, यह सारी कुरीतियाँ हमारे समाज को भ्रष्टाचार के रास्ते ले जा रही है। भ्रष्टाचार एक प्रकार की हिंसा है और उतना ही घातक है, आज की राजनीति के इस विकृत पक्ष ने हमारे सामाजिक जीवन को अधिक प्रभावित किया है। धन के कारण ही समाज में लोग अनैतिक काम करते है। अधिक धन कमाने के लिए लोग भ्रष्टाचार का सहारा लेते है। इस अर्थ व्यवस्था के कारण ही हमारे समाज में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। प्रायः यह देखने को मिलता है कि सरकारी व अर्द्धसरकारी कार्यालयों-दफ्तरों में भ्रष्टाचार चरम-सीमा पर है। "हाल के वर्षा में भ्रष्टाचार के सबसे

अधिक उल्लेखनीय क्षेत्र वे रहे हैं, जिनमें व्यापारियों ने परमिटों और लाईसेंसो की अर्जियाँ दी है। शासन के अंदर उक्त क्षेत्रों में निरीक्षण और देखरेख का समुचित प्रबंध नहीं रहा और निश्चित रूप से गलत तरीकों से फायदे उठाए गए।"**(19)**

भ्रष्टाचार फिलहाल की सबसे भयंकर समस्या है। भ्रष्टाचार एक राक्षस है, जो सर्व व्यापक है और सर्वशक्ति संपन्न है। जीवन का कोई भी क्षेत्र भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं है। रिश्वतखोरी, काला बाजारी, जमाखोरी, भाई-भतीजावाद आदि इसके कई रूप है। कथाकार ममता कालिया ने अपनी कहानियों में भ्रष्टाचार का भयावह चित्र खींचा है इसका यथार्थ रूप हमारे सामने निम्नलिखित कहानियों का माध्यम से रखा गया है।

'जाँच अभी जारी है' नामक कहानी की नायिका अपर्णा बैंक में हो रहे भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है। जिसके कारण उसे अकारण ही अपने विरूद्ध एक जाँच का सामना करना पड़ता है। उसे एक केस में उलझाया जाता है क्योंकि वह अधिकारियों का कहना नहीं मानती। यह केस इतना उलझता चला जाता है कि उसकी जाँच कभी खत्म ही नहीं होती। वह ऑफिसों के चक्कर लगाती रहती है, फाइल दिखाती रहती है लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकलता लेकिन "खोया तो उसने और भी बहुत कुछ। अब उसे लगता है, जिस कारण से उसने खन्ना और सिन्हा से अदावत मोल ली, अब तो वह उस कारण की भी हिफाजत नहीं कर सकी।"**(20)**

'इक्कीसवी सदी' कहानी में पुलिस के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है। इस कहानी में नायक विनोद शादी शुदा है। वह अपनी पत्नी के साथ घूमने चला जाता है। जिस होटल में वह ठहरते है। वहाँ बाथरूम में गयी उसकी पत्नी गुमशुदा हो जाती है। रेखा(पत्नी) के अचानक से होटल के रूम में से गायब होने के कारण वह दुःखी हो जाता है। गायब होने की रिपोर्ट दर्ज कराने वह थाने पहुँचता है। तब वह थानेदार उसकी रिपोर्ट लिखवाने से इन्कार

करते हुए बताता है कि मुंशी नहीं है, फिर आ जाना। उसके बाद वह तुरंत उसी पर उल्टा आरोप लगा देता है कि उसका झगड़ा हो गया या दहेज का केस है। इस तरह उसका वह समय बरबाद कर देते हैं। इस तरह देर कर देने से बाद में उन्हें पछताना पड़ता है क्योंकि उन्हें रेखा की क्षत विक्षत लाश मिलती है। "बोरे के अंदर रेखा की लाश उसके सभी कोमल अंग किसी ने चाकू से गोद डाले थे। चेहरे पर भीषण वार के घाव थे। हाँ उसकी उँगली में पड़ी, सोने की अंगूठी अपनी जगह सही सलामत चमक रही थी। इससे यह सुबूत मिल रहा था कि हत्यारे अपराधी थे मगर चोर नहीं थे।"**(21)**

पुलिस की भ्रष्ट नीति को दर्शाती उनकी 'वर्दी' नामक कहानी में एक पुलिस सिपाही और उसके परिवार का चित्रण किया है। माँ और बेटा इनकी वजह से तंग आ चुके थे। वह पुलिस की वर्दी का सहारा लेकर सस्ती चीजें खरीदकर लाते। उसका बेटा राजू यह सोचकर क्रोधित होता है कि उसे पापा की लायी चीजें लेनी पड़ती है। यह चीजें लेने से उसका बेटा और उसकी पत्नी(आशा) जब इन्कार करते है तो सिपाही रामशंकर उन्हें पीटता, मारता है। इसी वजह के कारण उसे वर्दी पहनकर जाना अच्छा लगता था- "आशा पर वर्दी का रौब गालिब हो गया। वर्दी की ताकत जानने के बाद तो उसे लगने लगा कि रमाशंकर आटा भी पिसवाने जाए तो वर्दी पहनकर जाए। आशा कोरमाशंकर की वर्दी जादू की पोशाक जान पड़ती जिसे पहनकर वह मुश्किल से मुश्किल काम निपटा डालता। जिन औरतों के पति वर्दी नहीं पहनते थे, उन्हें आशा अभागा मानती वर्दी के बूते पर उसके पति को हर चीज मुक्त हासिल हो जाती।"**(22)** इसतरह पुलिसवाले अपनी वर्दी का गलत फायदा उठाते है और भ्रष्टाचार को किस तरह अपना लेते है इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने किया है।

ममता जी की 'नायक' नामक कहानी में जब नायक अमित अपने पिता के भ्रष्ट नीति से परेशान होकर गुस्सा आता है तो वह कहता है- "आप कचहरी में रात-दिन सच को

झूठ और झूठ को सच बनाते हैं, आपकी सारी प्रैक्टिस झूठ और मक्कारी पर टिकी है और बात आप मेरे रवैये की करते हैं। मैं कहता हूँ आप बेईमान है, शोषक हैं।"(23) इस बात का कोई भी प्रभाव उसके पिता पर नहीं होता बल्कि वह उससे कहते हैं- "अगर मैं झूठ न बोलता तो तुम कभी सच बोलने लायक न बन पाते बेटे। यह तुम्हारी गर्मी ठीक है पर इसे स्टेज के लिए सँभालकर रखो। हम अब हुए बुढ़े। जैसे जीते आए हैं, वैसे ही जिएँगे। तुम बाकी समाज को बदलो, हम भी तमाशा देखेंगे।"(24) इस प्रकार पुत्र के द्वारा पिता को भ्रटाचार करने से रोकने की वृत्ति को ममता जी ने इस कहानी में दर्शाया है।

'चोट्टिन' नामक कहानी में भी ममता जी ने पुलिस के भ्रष्टाचार को उजागर किया है। पैसों की कमी होने के कारण बारह साल की लड़की जाँघिया दुकान से चोरी करती है। पुलिस सिपाही उसे देखकर डाँटता है उसे ऊपर से नीचे तक देखता है। सिपाही की दिलचस्पी लड़की में न होकर दूकानदार से होती है। वह कहता है "का हो जो एक टुकड़हे जाँघिए के लिए बाजार सिर पर उठाए हो।"(25) सिपाही दूकानदार को चौकी तक ले गया और एक तरफ हटकर उसे डराने लगा। फिर एक जेब कतरे की सफाई से उसने दूकानदार की जेब से उसकी कमाई निकाल ली, चौंतीस रूपए और पचास पैसे।

ममता कालिया की यह सारी कहानियाँ भ्रष्टाचार के यथार्थ को संबोधित करती है और इसे कैसे रोकना है, इसका भी उत्तर हमें प्रस्तुत कहानियों में मिलता है।

3.17 नैतिक मूल्यों का पतन:

महानगरीय सभ्यता में जीवन मूल्य तथा नैतिक मूल्यों का जितना पतन हुआ है, उतना अन्य क्षेत्रों में नहीं हुआ। नगर हर व्यक्ति के आकर्षण का केंद्र रहा है। कस्बों तथा गाँवों से आये लोग शहरी चकाचौंध को देखकर इतने आकर्षित होते हैं कि अपनी सभ्यता

और संस्कृति को त्यागने लगते है। निरंतर बढ़ती भोगवादी दृष्टि के कारण हमारे प्राचीन नैतिक मूल्यों का पतन होने लगा। समय के साथ साथ मनुष्य के विचार भी बदल जाते हैं। किसी भी स्त्री पुरूष का संबंध सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर स्वीकृति नैतिक माना जाता है। स्त्री-पुरूषों के बीच जो संबंध होते है उसमें भी नियम होते हैं। यह सारे नियम परंपरागत रूप से चले आ रहे है। जीवन की मर्यादायें हमेशा नए संस्कार प्राप्त करती रहती है। आजकल नैतिक मूल्यों में निरंतर परिवर्तन होने के कारण संवेदनात्मक नैतिकता में परिवर्तन होता है। ममता कालिया की अधिकांश नायिकाँए पुराने आदर्शों के प्रति वितृष्णा का भाव प्रदर्शित करती है। ममता जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का पतन सहज एवं यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

'बीमारी' कहानी में ममता कालिया ने नैतिकता के प्रति विरोध चित्रित किया है। कहानी की नायिका अपनी असंख्य यातनाओं के बावजूद भी अपने घर में नौकर नहीं रखना चाहती क्योंकि समाज की संदेह-दृष्टि का उसे ज्ञान हो चुका है। घर में अकेली होने पर नौकर रखना उसे अनैतिक लगता है। उसकी इच्छा भी होती है नौकर रखने की लेकिन समाज की दोहरी मानसिकता से वह परिचित है। वह कहती है-"उन्हें बताना मुश्किल था कि अकेली लड़की के घर नोकर के साथ क्या क्या अफवाहें जुड़ जाती है। नौकरानियों से मेरी बहुत जल्द लड़ाई हो जाया करती थी। वे चोर होती थी और झूठी।.....डॉक्टर ने अबतक दवा भी खुद मँगवा कर दी थी।"**(26)**

'साथ' नामक कहानी में शादी से पहले साथ रहनेवाले अशोक और सुनंदा का वर्णन किया है। अशोक सुनंदा का बॉस है, अशोक ने अपनी पहली पत्नी से तलाक भी नहीं लिया है। जब कभी सुनंदा शादी के बारे में जिद करती है तो वह उसे साड़ी खरीदकर खुश कर दिया करता था। रूठ जाने पर उसे वह मना लेता ऐसे मौकों पर वह रसोई की पनाह लेती

क्योंकि “अशोक के ऑफीस से ही सही, पर मिस प्रधान का मंटरनिटीलीव पर जाना एक विस्फोटक घटना होगी और वह मिस प्रधान थी।”(27) शादी से पहले अनैतिक संबंध रखने वाले दांपत्य का चित्रण किया है।

‘वे’ कहानी में ममता जी ने बिना शादी-ब्याह के युवक युवती का एक साथ घुमना, रात में एक साथ एक कमरे में सो जाना अनैतिक नहीं माना जाता इसपर प्रश्न उठाया है। नायिका(अरूणा) और नायक एक साथ बस में सफर कर रहे थे। बर खराब होने से वह उसे अपने घर ले जाता है। अरूणा को कोई असुविधा महसूस नहीं होती- “अरूणा ने समझदारी से घर की एक मात्र चारपाई पर सोने लायक तैयारी कर ली। गुसलखाने से आकर उसने कुछ नहीं माँगा, पानी भी नहीं। कमरे में उसकी उपस्थिति उसे उतनी ही सहज और अनाटकीय लग रही थीं जितनी अपनी अरूणा के वहाँ होने से उसे जरा भी असुविधा नहीं हो रही थी।”(28) आधुनिक जीवन में कोई भी परायी लड़की को अनजान व्यक्ति से जान पहचान बढ़ाने में कोई झिझक नहीं है।

‘दो जरूरी चेहरे’ कहानी की ‘मिन्ना ’(मिनाती) नैतिकता के बंधनों को तोड़कर श्याम के साथ घूमती है अंधेरी गुफा में जाती है। वह कहती है- “अरे श्याम! उसने पहले दिन ही यों उधाड़ कर सामने रख दिया, ले देख, यह होता है लड़का और यह होती है लड़की और यह होता है रिश्ता।”(29) मिन्ना के लिए श्याम! भाई, परिवार, कॉलेज, पढ़ाई सबसे ऊपर था। मिन्ना कहती है- “अनुभव भय से शुरू होता और जब तक मैं विरोध करूं, पता नहीं कैसे, खुशी ऊपर आ जाती, सुख शिराओं में दौड़ता कि अचानक मैं पाती बदन मेरे काबू में नहीं है, बल्कि उसके किर्च-किर्च पलंग पर बिखरे हुए है।”(30)

‘रिश्तों की बुनियाद’ कहानी की प्रीति जाति व धर्म के सब बंधनों को तोड़कर मुस्लिम धर्म के परवेज से प्रेम करती है और अपनी आजादी के लिए विद्रोह करने को भी

तैयार है। वह अपनी लड़ाई स्वयं लड़ेगी। वह सोचती है मुँह खोलकर बेधडक घर के लोगों से कह देगी, "मैं परवेज के साथ जा रही हूँ एक नई जिंदगी की शुरूवात करने आप अगर कुछ दे सकते हैं तो सिर्फ आशीर्वाद दीजिए। आज इस लमहें से मैं एक बहुत बड़ी पाक बिरादरी का हिस्सा बनने जा रही हूँ, मुहब्बत की बिरादरी। इसमें न जात पात है न उँच-नीच, न हिसाब किताब है न महाजनी लेन-देन। मेरी जिंदगी मेरी अपनी है, इसमें आप दखल मत दीजिए, मैं रूँकूगी नहीं खुदा हाफिज़।"**(31)**

'लगभग प्रेमिका' कहानी की नायिका सुजाता अपने पति से कुछ समय के लिए दूर होने के कारण वह एक ऐसा प्रेम प्रंसग चाहती है जिससे उसके भविष्य में कोई परेशानी न हो-"मैं नहीं चाहती कोई शोहदे किस्म का प्रेमी पल्ले पड़ जाये और मेरा पारिवारिक जीवन मुसीबत में पड़ जाये। मैं चाहती थी एक सीधा-सादा, संक्षिप्त, सुरक्षित-सा प्रेम प्रसंग।"**(32)** वह अपने पति के मित्र से प्रभावित थी जिसका नाम कृष्णा कक्कड़। भाभी कहने पर कहती है-"मुझे ये रिश्ते-छाप संबोधन प्रिय नहीं।" मेरा सुंदर सा नाम है-सुजाता। वह उसे के.के कहके पुकारती। के.के द्वारा तारीफ करने पर उसे बहुत बड़ा कॉप्लीमेंट लगा। उसकी तीव्र इच्छा हुई कि "काश, कुमार इस वक्त यहाँ मौजूद होता, यह बात उसके सामने कहीं होती। सुजाता को अपने इस प्रेम प्रसंग पर कोई ग्लानी नहीं है।"

'पिछले दिनों का अंधेरा' कहानी की 'रूचि' इसी उन्मुक्त भोग की शिकार है। कहानी का नायक 'कपूर' के लिए दफ्तर से घर लौटने का अर्थ होता है, रूचि के पास लौटना। शाम को कपूर की थकान को दूर करने वाली रूचि आठ बजे तक उसके कमरे में रहती, फिर वह उसे घर छोड़ आता। आज "उन्होंने अंधेरा होने पर पाया, वे साथ-साथ अंधेरे की प्रतीक्षा कर रहे थे।..... अंधेरे को चीरता हुआ एक भर्राया स्वर पहले धीमे, फिर लगातार ऊँचे नीचे शुरू हुआ उसके शुरू होने के अचानकपन ने कपूर को धकेल सा दिया, उसे पता ही

नहीं चला की उस चेतना में रूचि के ओंठ उसके दातों में भिंच गए थे और वह घटने का प्रयत्न कर रही थी।" 32 अपने दैहिक शौषण का बोध उसे आज ही हुआ है। क्योंकि कपूर ने उसे, इससे पहले कभी इतना 'निचोड़' नहीं डाला था।

'अपत्नी' कहानी की नायिका 'लीला' शादी-शुदा प्रबोध के साथ रहती है और एक पत्नी समान जीवन व्यतीत करती है। विवाह से उसे कोई मतलब नहीं। प्रबोध अपनी पहली पत्नी को तलाक दे या ना दे उसे कोई फरक नहीं पड़ता। सहनायिका जब उसके घर आती है तो "लीला उठ चुकी थी और ल्बाउज के बटन लगा रही थी। जल्दी-जल्दी में हुक अंदर नहीं जा रहे थे।"**(33)** ऐसी अवस्था में लीला को देखकर सहनायिका प्रबोध के साथ 'उन्मुक्त' संबंधों में 'सीमा' बनाए रखना चाहती है।

'प्यार के बाद' कहानी में विलास व उसकी प्रेमिका एक ऐसे शहर में रहते थे जहाँ लड़की का ऊँचा ब्लाउज या नीचीं साड़ी भी बर्दाश्त नहीं की जाती थी। औरतों का बासी, मनहूस और अधेड़ दिखना, शायद इस शहर की नैतिकता का एक अनुवार्य अंग था। एक ही साईकिल पर आगे-पीछे बैछे हुए वे दोनों शहर के लिए धमकी थे। वे खादी भण्डार के शोख कुर्ते में कहीं भी पाये जा सकते थे। वे शहर में हर कहीं, एक दूसरे का हाथ पकड़े या कमर जकड़े मिल जाते थे। कई बार वे कोजीनुक के चौड़े दालान में कॉफी की कई प्लालियाँ एक दूसरे को घूरने और सहलाने के चक्कर में ठण्डी कर चुके थे। "उनके इस प्रेम से सारा शहर खफ़ा था।"**(34)** लेकिन विलास की प्रेमिका को इन सब बातों से कोई आपत्ति नहीं थी, न ही समाज द्वारा बनाए गए नैतिक नियमों की परवाह।

इस प्रकार ममता जी के नारी-पात्र विवाहपूर्ण अनैतिक संबंधों के प्रति आकर्षित होने पर भी अपनी अस्तित्व की स्थापना करने के लिए प्रयत्नशील दिखआई देते हैं। दैहिक

स्वच्छन्दता के होने पर भी वह अपनी सुरक्षितता-असुरक्षितता का ज्ञान रखते हैं। अतः उनकी चेतना समस्त बंधनों को अस्वीकार करना चाहती है।

3.18 महानगर की समस्या:

औद्योगीकरण एवं वैज्ञानिक प्रगति के कारण धीरे-धीरे इस देश में कस्बे उभरने लगे है। लोग गाँव को छोड़कर नोकरी के लिए महानगर में जाते है। गाँव से लोग कस्बे और कस्बे से उखड़कर नगर और महानगर में बस गए। लेकिन वर्तमान युग में गाँव एवं शहरों के रूप बदल रहे हैं। अपनी रोजी-रोटी के लिए लोग जैसे-जैसे शहरों में आने लगे। नगरों की संख्या बढ़ने लगी इसके कारण बढ़े-बढ़े महानगर बनते गए। महानगरों में लोगों की बढ़ती संख्या के कारण कई समस्याएँ निर्माण हो गयी। जैसे झोपड़पट्टी समस्या, मकान न मिलने की समस्या, महानगरीय जीवन की व्यस्तता, पाश्चात्य के प्रभाव स्वरूप क्लब, पार्टियाँ आदि। ममता कालिया कई सालों तक दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों में रही इसी कारण उन्होंने महानगरीय जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपने कहानी साहित्य में किया है। जो इस प्रकार है-

(i) मकान न मिलने की समस्या :

ममता जी की 'वे तीन और वह' नामक कहानी में मकान न मिलने की वजह से एक दी दफ्तर में काम करने वाले दो दोस्त एक ही कमरे में रहने लगते हैं। और जब किराये के लिए पैसे कम पड़ जाते हैं। हर एक चीज़ में पैसों की तंगी आ जाती है। इसके कारण वह अपने ही ऑफिस में काम कर रहे एक व्यक्ति को अपने कमरे में पार्टनर के रूप में रखते हैं।

उन्हें लगा "तंगी की हालत में प्रयाग का शामिल होना उन्हें अच्छा लगा था, हालाँकि उनके पास एक ही कमरा था, जिसमें तीसरी चारपाई लगाने के लिए उन्हें कमरे की एकमात्र कुर्सी फोल्ड कर देनी पड़ी थी।"**(35)**

ममता जी की 'आलमारी' कहानी में मकान एवं जगह की कमी की समस्या का चित्रण किया है। एक आलमारी की वज़ह से छोटे कमरे में किस तरह दिक्कत होती है इसका चित्रण किया है। पहले से ही घर में जगह कम थी। वह भीमकाय आलमारी पूरे कमरे को लगभग भर देती थी। जगह की समस्या दिन ब-दिन किस तरह बढ़ रही है इसका यह एक उदाहरण है।"मुझे यह आलमारी बिलकुल नहीं सुहाती थी। न मुझे इसकी ऊँचाई पसंद थी न चौड़ाई। इसका इतना बड़ा होना मुझे अपने छोटे होने के एहसास से भर देता। हम चारों के पास कुल मिला कर भी इतने कपड़े नहीं थे कि हम इसे पूरी तरह भर सकते।"**(36)** इस तरह चार लोगों के साथ आलमारी के कारण मकान में जगह की कमी को भी चित्रित किया है।

(ii) महानगरीय जीवन में व्यस्तता :

महानगरों में रहने वाले कर्मचारी सुबह अपने काम के लिए जाते है। वह शाम के वक्त देरी से वापस लौटते हैं। दिन भर की व्यस्तता में वह न तो अपने घर, पोशाक आदि की ओर ध्यान दे सकता है न अपने बच्चों की ओर। हफ्ते के काम छुट्टी के दिनों में पूरा करते हैं। उन्हें छुट्टी का दिन गुजारने में कठिनाई आती है। जैसे 'जिंदगी सात घंटे बाद की' कहानी की नायिका को- "रविवार का दिन बहुत लंबा लगता है। सुबह सुबह न बिस्तर से निकलने की जल्दी, न साड़ी प्रेस करने की हड़बड़ी, न नाश्ता निगलने की उतावली-बस देर तक लेटे खिड़की के काँचों पर लिपटी धूप का निर्विकार उजालापन देखते रहो, बीच-बीच में अखबार वाला, दूधवाला, डबलरोटी वाला सब की 'फ्लैट' चीखे सुनते रहो।"**(37)**

'शहर-शहर की बात' कहानी मुंबई शहर की व्यस्तता को दर्शाती है। वहाँ इस कहानी के पति-पत्नी काम जाने की जल्दबाजी में एक दूसरे के चेहरे और कपड़े भी भूलने लग गए थे। वहाँ आते जाते समय कई तरह के खतरे रहते थे, नायिका कहती है- "सच कहा जाए तो बंबई में अपने दिन ऐसे ही खतरों में बिताये थे-मकान छिन जाने का, नल में पानी न आने का, रेल किराया बढ़ जाने का, बरसाती न खरीद पाने का, बच्चा हो जाने का।"**(38)** बंबई शहर की सभी समस्याओं को यहाँ चित्रित किया गया है।

इस तरह ममता कालिया ने अपनी कहानियों के माध्यम से महानगर की सभी समस्याओं का बड़ी मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। जिस समस्या का उन्हें भी अनुभव हो चुका था।

(iii) मध्यवर्ग की जीवन शैली

जैसे की समाज से परिवार जुड़ा रहता है। जिस तरह समाज बदलता है। उसी तरह परिवार के आचार-विचार, मूल्यों को भी बदलना पड़ता है। घर में लोगों की मानसिक स्थिति भी बदलते है। यह चीजे हमें मुख्यतः मध्यवर्गीय परिवारों में देखने को मिलती है। ममता जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से इसका बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया है। 'मुहब्बत से खिलाइए' इस कहानी में मध्यवर्गीय जीवन उनके आचार-विचार और उनके घर में नौकरों की स्थिति आदि को दर्शाती है। इस कहानी में सुरेंद्र और अमिता, मेहता और बकुल के घर खाने के लिए जाते हैं। सुरेंद्र उनके घर एवं उनके बनाये खाने की स्तुति करता है। यह देखकर अमिता को गुस्सा आता है। उनके घर में नौकर को किस तरह खाना परोसा गया है इसका चित्रण किया है। मेहता और बकुल नौकर का बनाया खाना खाते लेकिन उसे मुहब्बत से खिलाने के कोशिश नहीं करते। "वह रसोई में चली गई। गैस के पास ही स्टूल पर बैठा दादू खाना खा रहा था। मोर्ट चावल और चने की पतली दाल। उसके हाथ में एक हरी

मिर्च थी, जिस वह हर बार थोड़ा सा कुतर रहा था। पता नहीं अमिता का भ्रम था या सच, पर दादू का चेहरा रूआँसा लग रहा था। अमिता को देख उसमें झेंपकर खाने पर से हाथ रोक दिया। आधि नज़र में ही उसका भोजन अमिता को इतना भयभीत कर गया कि उसने पूरी नज़र उठाकर देखा भी नहीं।" **(39)** इस प्रकार मध्यवर्गीय सोच में नौकरों की हिनता को बताया है।

ममता जी की 'पहली' नामक कहानी में मध्यवर्गीय की जीवन शैली का चित्र प्रस्तुत किया है। जहाँ नौकरी पेशा लोग अधिक हो, उनके जीवन में पहली तारीख कितना महत्व रखती है, इस बात का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है। परिवार के सभी सदस्य पहली का बेसबरी से इंतजार करते है। इस दिन बच्चे फीस, नये बस्ते के पैसे, पत्नी, महरी और धोबन के पैसे, घर खर्च के पाँच सौ, दूध के दो सौ, पैंसठ बिजली के और मकान का किराया 200रू. रिक्शावाले के अस्सी रुपये की माँग करते हैं। बच्चे जब रसगुल्ले की माँग करते हैं तो सिर्फ दो बेटों के लिए ही पैसे दिए जाते हैं। इन सब की वजह से कहानी का नायक अपनी बहन को राखी का नेग भी नहीं भेज सकता क्योंकि उसे कम पैसे दिए जाते है इसलिए पति-पत्नी में अनबन होती है वे कहते है- "दरअसल तुम चौके में ज्यादा खर्च कर देती हो।"**(40)** इस पर उनकी पत्नी गुस्से से कहती है- "क्या ज्यादा कर देती हूँ। तुम पांच सौ में घर चला कर दिखाओ तो जानूं। दस दिन में रो जाओगे।" **(41)**

इन कहानियों के माध्यम से लेखिका ने आज के दौर में मध्यवर्ग की स्थिति को रेखांकित किया है जो अपने परिवार को खुश रखने की कोशिश करते है। साथ ही साथ पैसों को भी बरबाद नहीं करते क्योंकि उनका जीवन एक दूसरे के ऊपर निर्भर रहता है।

3.2 पारिवारिक परिवेशगत यथार्थ

शब्दकोश के अनुसार परिवार का अर्थ परिजन, समूह, कुटुंब है। परिवार एक ऐसा मूल भूत संघठन है जिसमें माता-पिता, भाई-बहन आदि सदस्य एक दूसरे के रक्तसंबंध से जुड़े होते है। भारतीय परिवार एक दूसरे के प्रति स्नेह भाव, विश्वास और आत्मीय भाव रखता है। हमारे देश के प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार पद्धति थी लेकिन स्वातंत्र्योत्तर काल में औद्योगिकरण और पाश्चात्य प्रभाव से परिवार में विघटन होने लगा है। संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया है। प्रेम-विश्वास, परोपकार, सहयोग, जैसे गुणों का ध्यान हो रहा है और उसके स्थान पर तिरस्कार द्वेष, ईर्ष्या आदि बुराईयाँ पनप रही है। फलस्वरूप परिवार के सभी पात्र एक दूसरे से भयभीत और सहमें सहमें होते है इस पारिवारिक परिवेश की झाँकी लेखिका को कहानियों में दिखायी देती है।

ममता जी यथार्थवादी रचनाकार है। उन्होंने अपनी रचनाओं के इर्द-गिर्द की अनुभूतियों को ही अपने कथ्य का विषय बनाया है इसे निम्नलिखित बिंदुओं पर स्पष्ट किया जा सकता है-

3.21 दांपत्य संबंध (पति-पत्नी)

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विवाह अनिवार्य होता है। परिवार का निर्माण मूलतः दांपत्य संबंधों(पति-पत्नी) पर आधारित होता है। जो विवाह व्यवस्था द्वारा परिवार एवं दांपत्य का श्री गणेश करते है। परिवार की सुख समृद्धि, पति-पत्नी की आपसी समझधारी पर निर्भर होता है। लेकिन जहाँ दांपत्य संबंधों में प्रेम, आत्मीयता, विश्वास जैसे मूल्यों का पतन होने लगता है वही तनाव, अंर्तद्वंद्व, अकेलापन बढ़ने की संभावना रहती है।

किसी भी परिवार के केंद्र बिंदू पति-पत्नी होते है। अगर पति-पत्नी का दांपत्य संबंध अच्छा रहता है। तो परिवार भी सुचारू रूप से चलता है। जब दांपत्य जीवन में विघटन,

नीरसता एवं दरार आती है तो परिवार टूटने के कगार पे आ जाता है। ममता कालिया ने अपनी कहानियों में दांपत्य संबंधों के परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है जो इस प्रकार है। 'उनकी बातचीत बेकार है' नामक कहानी में घर में कैद स्त्री की मानसिक स्थिति को चित्रित किया है। पति उसे 'सबकुछ' दे सकता है लेकिन सुख और शांति नहीं। उसे यह लगने लगा की इन चार सालों में उसका कार्यक्षेत्र सिर्फ रसोई और प्रसूतिगृह ही रहे हैं। बच्चे उसे ज्यादा तंग करने लगे वह नाममात्र की गृहस्वामिनी बन जाती है। यहाँ तक की कुछ वर्षो बाद पति-पत्नी के बीच की बातचीत किसी काम की नहीं है, ऐसा उन्हें लगने लगता है। विनीता को अकेले में महसूस होता, "आँखों बंद कर जागते रहने से दिमाग को आराम नहीं मिलता, वरन वह तन जाता है।.....वही रोज का असंतोष और अफसोस गीले कबंल सा आकर उसके ऊपर गिर गया। उसे लगा वह खैरीयत से नहीं है, कभी भी नहीं थी।"**(42)** ममता जी की 'लगभग प्रेमिका' कहानी में प्रेम-विवाह के पश्चात्य परिवार में अस्थिरता का अनुभव करती है। वह कहती भी है- "अस्वाभाविक और अप्राकृतिक रिश्ते मुझे कभी अपील नहीं करते, चाहे वे कितने ही आधुनिक ढ़ंग से प्रस्तुत किये जाये। .....मेरे सिर में दर्द होने लगा।"**(43)**

'उपलब्धि' नामक कहानी में पति-पत्नी के झगड़ों और पारिवारिक संघर्ष को दिखाया गया है। विवाह के पहले हर क्षण अपने में समर्पित रहने वाला चेतन अब प्राची से दूर होता जा रहा था। चेतन, प्राची से बात करने आता तो उसे यह लगता कि वह शिकायतों, फरमाइशों और तुनक मिजाजियों की एक पिटारा बनी है। चेतन और प्राची दोहरे स्तरों पर अकेले होते जा रहे थे। यहाँ तक की चेतन आज अपनी शादी की सालगिरह भी भूलता जा रहा है। "आज प्राची का पारा 212 से सीधा शून्यांक पर पहुँच उसे पानी पानी कर गया

था।..... उसने लाल चेहरे से कहा था, चेतन आय एम सॉरी, मैंने सोचा था तुम्हें याद नहीं है, प्लीज.....।"**(44)**

'तरकी को हम न रोयें' इस कहानी में 'आशा' अपने कॉलेज के दिनों में क्वीन थी। किन्तु विवाह के पश्चात्य उसका व्यक्तित्व एवं जीवन बदल चुका है। उसका पति भी उसे अनदेखा करता है उसकी शादीशुदा जिंदगी में परिवर्तन आया है इसलिए वह कहती है "तुम्हारे दिन के सच और रात के सच में जमीन आसमान का फर्क होता है। तुम्हें यह भी याद दिलाना पड़ेगा कि हमारी शादी हुई थी सन् पचास में अब है सन् सत्तर।"**(45)**

ममता जी की 'एक जीनियस की प्रेमकथा' नामक कहानी में नारी-शोषण पर आधृत है लेकिन शोषण करने वाला पति संदीप संस्कृत, उच्चमध्यवर्गीय है। अपने मीठे बोलों को सहारा बनाकर कविता जैसी पढ़ी-लिखी लड़की को प्यार के जाल में फँसाकर शादी करता है। लेकिन शादी के बाद वह उसका अपमान करने से भी नहीं झिझकता। अपना प्रभाव जमाने हेतु वह कुछ भी कर सकता है। संदीप अपनी प्रतिभा को अन्य स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए हथियार के रूप में इस्तेमाल करने में प्रवीण था। घर से बाहर निकलते ही कविता की चेतना जागृत होती।

"सावधान, होशियार, तुम्हारा पति कार पर नहीं, शिकार पर गया है, उठो, लपको, पीछा करो। शहर सुखी विधवाओं और दुःखी सधवाओं से भरा पड़ा है, उसे बचाओ।"**(46)**

'दर्पण' नामक कहानी में पुरूष की मानसिकता को प्रकट किया है। कहानी की नायिका बानी की जब शादी हो जाती है तो उसका पति उसकी नौकरी छुड़ा देता है। वह चाहता था कि घर की हर एक बात में उसकी अनुमति अनिवार्य रूप से ले ली जाए। नायिका 'बानी' का उपयोगितावादी पति शादी के बाद ही अपने प्रभुत्व को कुछ इस तरह इस्तेमाल करने लगा कि हर बात में उसकी अनुमति आवश्यक थी। उसने"कई बार सोचा कि शादी के

बाद वह सबसे पहले जो चीज खरीदेगी वह देगी 'दर्पण'।"**(47)** शाम के वक्त दफ्तर से लौटकर आता तो "बानी कपड़े बदल, हाथ मुँह धो एकदम तरोताजा रहती। उसकी बेहद इच्छा होती पति एक बार उसकी ओर सराहना से देखें। लेकिन पति के लिए उसका समस्त रूप लावण्य मात्र रात्रिकालीन संपदा थी। जिसके प्रतिदिन में वह निरंतर निरपेक्ष बना रहता।"**(48)**

'दांपत्य' नामक कहानी में एक ऐसे पति-पत्नी का चित्रण किया है जो अपने शादी के बीस साल पूरेक चुके है। दिनभर मेहनत कर थकी पत्नी जब सो जाती है तो उसका पति उससे बातें करना चाहता है लेकिन वह सो जाती है। इसी के साथ वह हर बात में फायदा-नुकसान सोचती है जो उसके पति को कचोटती है। "उनके बीस साल के संग साथ की यह इतिहा थी कि उसकी पत्नी मुहब्बत को मशक्कत कहने लगी थी। उसने कई बार चाहा, सुनीता को इस बात के भैंडेपन से सचेत करे, लेकिन हर बार वह वह उसके चेहरे की चिड़चिड़हट, थकान और झाइयां देख कर चुप रह गया।"**(49)**

'अट्ठावनवा साल' कहानी की नायिका 'सुषमा' अपने पति के मौन अलगाव-युक्त संबंधों में अपना जीवन पशु के समान जीती रही। सुषमा अपने पति की बातों का कम ही जवाब देती थी। क्योंकि "वह जानती थी कि वे जवाब के लिए सवाल नहीं करते। जवाब तो उनके जेहन में पहले से ही तैयार रहता।"**(50)** इस अजीब रिश्ते में अलगाव की शुरूवात में सुषमा ने हताशा से देखा, फिर एक लंबी साँसभर समझौता भी कर लिया यह सोचते हुए किहर फूल का अपना बसंत होता है और अपना पतझड़। पति का सारा जीवन केवल कंपनी का हित सोचने में व्यतीत होता है।

'वर्दी' नामक कहानी की नायिका आशा अपने शादी के पश्चात्य पति के अत्याचारों का कभी विरोध नहीं कर पाती थी। दैहिक और मानसिक शोषक के साथ पति की हिंसा भी

सहती रहती थी। उनका एक राजू नामक बेटा भी था। उसे व्यक्त करता है तो शांति निर्वाक, निस्पंद अपने पति को देखती रह गई। उसे लगा ऐसे रोगी के साथ सारा जीवन कैसे, बीतेगा? शांति ने अपने पति से कहा, "रात मैंने सोचा था, मैं नहीं जाउँगी, पर अब मेरा इरादा बदल गया है। मैं अगली गाड़ी से जा रही हूँ। अब जब तुम्हारा दिमाग ठीक हो जाएगा, तभी वापस आउँगी।"**(52)**

'उत्तर अनुराग' कहानी में मिसेज खन्ना के पति ने उसकी पत्नी के जीवित रहते कभी परवाह नहीं की सदैव उसकी अवहेलना करता रहा, लेकिन मिसेज खन्ना की मृत्यु हो जाने पर वह, वो सभी कार्य करने लगता है जो उसे प्रिय थे। रात को नौ, "मैं चलूँ रेनू अकेली घबरा रही होगी।"**(53)** किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि खन्ना इतने आदर्श विधूर साबित होंगे। रेनू की असमय मृत्यु का एक बड़ा कारण पति का व्यवहार था। पति के शोषण और दमन से मुक्ति उसे मृत्यु के बाद ही मिली।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी कहानियों में ममता कालिया ने टूटते-बिखरते दांपत्य-संबंध को चित्रित किया है।

3.22 स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण

ऐसा कहा जाता है समाज में स्त्रियों को दोहरा दर्जा प्राप्त है। इसके लिए काफी हद तक वे स्वयं जिम्मेदार है। 'घायल की गति घायल जाने' इसके अनुसार एक पीड़ित दूसरे पीड़ित की पीड़ा को अच्छी तरह जान सकती है लेकिन समाज में कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी है जो अपने भले के लिए ही सोचती है। उन्हें दूसरी स्त्रियों के दुःख, दर्द का ध्यान ही नहीं रहता। ममता कालिया की अधिकांश कहानियाँ नारी केंद्रित है जिसमें पुरूष ही स्त्री का दुश्मन नहीं बल्कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है, उनकी कहानियों में नारियों के अनेक रूप एवं छवियाँ है।

जैसे कहीं नारी क्रूर है, तो कहीं ईर्ष्या एवं जलन का भाव है। कहीं नारी मानसिक और शारीरिक रूप से, किसी अन्य स्त्री का शोषण कर रही है, तो कहीं ताने, अपमान, तिरस्कार से लोगों का दिल छलनी करती रहती है। ममता कालिया की कुछ रचनाओं में प्रभुद्ध, सुश्क्षित, आर्थिक रूप से संपन्न एवं आत्मविश्वासी नारी भी शोषण का शिकार बनी हुई है। प्रायःये कहा जाता है पुरूष वर्ग ही स्त्री का शोषण करता है लेकिन एक स्त्री भी दूसरी स्त्री का शोषण करती है। परिवार में सास, बहू, जेठानी, ननद आदि रूपों में दूसरी नारी का शोषण करती दिखायी देती है। इसी को ममता कालिया ने अपने कहानियों के माध्यम से यथार्थ रूप मे स्पष्ट किया है।

'शॉल' नामक कहानी में नायिका 'ननकी' ने बहुत मेहनत करने के बाद अपनी बेकारी को दूर करने के लिए एक स्कूल में चपरासी की नौकरी स्वीकार कर ली थी। वह चाय बनाती, झाड़ू लगाती, सारा काम करती। परंतु हर एक अध्यापिका अपने-अपने खाली समय में चाय पीना चाहती है इसी वजह से उनका झगड़ा भी होता है। इसी दौरान बड़ी बहनजी ठंड से ननकी को बचाने के लिए चंदा लेकर एक शॉल ननकी को खरीदकर देते हैं। चंदा देना पड़ा इसलिए सभी अध्यापिकाएँ उसे ताने देती है। इस बात से वह शॉल को वापस लौटा देती है। यह हमें इस बात से पता चलता है जब वह कहती हैं, "नहीं बहनजी, आपके हाथ जोड़ित हैं, हम शॉल न लेब। सुबह से मार फबती सुन-सुन हमार छाती फट गयी।"**(54)**

'माँ' कहानी में पारिवारिक आंकाक्षाओं में होने वाले मोहभंग का अनुभव किया गया है। माँ परिवार में दिन रात काम करती है और अपनी सास की फटकार भी सुनती रहती है। उसकी एक नातीन भी है उसकी हर बात पर वह गलतीयाँ निकालती जब वह छोटी थी तब उसे बंदरिया उठाकर ले गयी तब उसे बचाने वाले दो लड़कों को लेकर दादी ने शक किया और पीटा भी था। बेटी अपनी पराधीन माँ की विवशता का स्मरण करती हुई कहती है- "माँ

का आधा जीवन प्रतीक्षा में बीत रहा था, आधा लड़ाई में। उन्हें बाबू की पढ़ाई और अव्वल आते हैं। वे सोचती, जब बाबू कमाने लगेंगे, उनके सारे दुख दूर हो जायेंगे।"**(55)**

दादी अपनी बहू को पूर्णतया अपने नियंत्रण में रखना चाहती है। दादी अपना हाथ नचा नचाकर अपनी बहू की गलतियाँ गिनाते हुए कहती है-

"देखो कैसी घुन्नी बनी बैठी है न काम से मतलब न काज से। एक हम थे। हमारी सास की ज़रा नज़र उठी नहीं कि उनके चरणों में लोटने लगते थे।"**(56)**

ममता कालिया की 'राएवाली' कहानी में कालिंदी की सास परंपरा एवं रूढ़ियों से ग्रस्त है विवाह के बाद जो उसकी सास ने किया था वही वह अपनी बहू कालिंदी के साथ दोहराती है। रात में वह अपनी बहू को पुकारती है। "अरी ओ क्या नाम है राएवाली जरा मेरी कमर तो दबा जा.....।"**(57)**

कालिंदी की सास रात में उसे देर तक सोने न देती और सुबह जल्दी उठकर चिल्लाने लगती। "नल आ गये, आ गये.....बड़ी कुण्ड खाली पड़ी है, कपड़े धुलने हैं, बाल्टियां भरनी हैं। रात बर्तनों में चुहिया मूत गई है। अरी बहू तने तो कुम्भकरन को मात कर दियौ। शरम कर दिन चढ़े भरतार को ले सोई पड़ी है।"**(58)**

'जितना तुम्हारा हूँ' कहानी की नायिका श्वेता प्रेमविवाह के बावजूद पति सास और जेठानी के विसंगत व्यवहार के कारण आज स्वयं को संकट से घिरी हुई पाती है। शिकागो ट्रेनिंग के लिए जानेवाला उसका पति, पाश्चात्य सभ्यता में डूबा, उसे अपने जीवन में गौण स्थान देने लगता है। श्वेता की जेठानी.....नहा लै तब छूना।"**(59)** इस प्रकार पारिवारिक कर्तव्यों की अतिशयता के कारण श्वेता बेसहारा हो जाती है। परिवार में अपने अकेलेपन का इतिहास प्रस्तुत करते हुए श्वेता सोचती है-"इस दैनिकता में दिलचस्पी की गुंजाईश कहाँ थी।.....श्वेता ने कई बार सोचा था क्या अब नापने का कोई थर्मामीटर नहीं आता।"**(60)**

श्वेता की जेठानी सुबह उठते ही नहाने के लिए पानी गरम करने को कहती है। उसे यह लगता है कि रात्रि में पति के पास रहने से वह अपवित्र हो गई है यदि सुबह श्वेता अपनी जेठानी से छू जाती है तो वह उसे डाँटते हुए कहती है "धोती बचाओ अपनी! देखती नहीं हम मर्दों के पास से आयी है। नहा लै तब छूना।" ममता जी की 'गुस्सा' नामक कहानी में सास(माया) एक ऐसी स्त्री है जो अपनी परंपरा एवं रूढ़ियों से बाहर नहीं निकलना चाहती। उनकी दो बहुएं हैं उसे अपनी दोनों बहुओं से इसलिए शिकायत है क्योंकि "उसकी एक बहू ने बिना पूछे बाल कटवा दिये और दूसरी ने तीसरी बार लड़की पैदा कर दी।"**(61)**

"ममता जी की 'आज़ादी' नामक कहानी में मुन्नी की दादी और उनके पति में झगड़ा होता और मुन्नी की माँ बीच-बचाव करने का प्रयास करती तो दादी उसे पता नहीं क्या-क्या बकने लगती। उसे 'राँड़', हरामजादी के साथ-साथ बाबा की पतुरिया भी कह डालती।"**(62)**

'राजू' नामक कहानी की नायिका भग्गो जो एक विधवा है। उसका एक बेटा भी है। उसका एक बेटा भी है। जब वह अपने भाई के विवाह में जाती है तो उसकी ताई व्यंग्य करेत हुए कहती "इत्ते दिन से न चिट्ठी न पत्री, अब आय के खड़ी हो गई शुभ घड़ी।"**(63)** एक अन्य रूढ़ि ग्रसित स्त्री नानी की उम्र की जर्जर बूढ़ी और अठन्नी भर माथे पर टीका लगाये थी बोली "भग्गो, ये कजहा कपूत तू घर छोड़ आती तो एक दिन में तेरा दूध न सूख जाता, बियाह के घर में लाकर खड़ा कर दिया सामने।"**(64)** भग्गो की बहन भी गुस्से से कहती है "बियाह शादी के मेले-ठेले सुहागिनों के होते हैं, कोई दूध पीती बच्ची तो हो नहीं जो कायदा समझाया जाये।"**(65)**

'बाथरूम' कहानी में जब कांता शादी कर ससुराल आती है तो उसकी जेठानी मुंह बिचकाकर कहती है "अब पढ़ी-लिखी बहुओं के पैर पड़े हैं राम रच्छा करें।"**(66)** जब कांता

बाथरूम जाने के लिए कहती है तब वे कहती हैं- “कह दो इटावावाली से, इतना ही बाथरूम का शौक है तो अपने बाप से कहो, आकर बनवा दैं। इत्ते बरस हमें इस घर में आए हो गए, हमने तो कभी बाथरूम नहीं देखा।”**(67)**

‘बोलने वाली औरत’ कहानी में बीजी ने त्योरी चढ़ाकर पूछा, “यह झाड़ू किसने खड़ी की है।”**(68)** जब उन्हें पता चला कि झाड़ू उनकी बहू शिखा ने रखी है तो वे डाँटने लगती है, “क्यों रखी थी। तुझे इतना नहीं मालूम कि झाड़ू खड़ी रखने से घर में दलिद्दर आता है, कर्ज बढ़ता है रोग जकड़ लेता है।”**(69)**

‘जनम’ कहानी में जो दादी है उनकी सास ने दादी से किस तरह का व्यवहार किया था लगभग वैसा व्यवहार ही वह अपनी बहू मनोरमा के स्था करती है। मनोरमा को जब दूसरी बेटी पैदा होती है तो दादी सोचती है, “एक मुँह और बडञ गया लीलने को।”**(70)** उन्हें बड़े तीखेपन के साथ अपनी तीनों प्रसूतियों पर उनका दिल कैसा टूटा था, कैसी अपमानित हुई थी वे अपनी ससुराल में। दादी मनोरमा का पेट उबाड़कर नाभि रोम देखना चाहती थी। “दादी का यकीन था कि नाभि से निकली रोम-रेखा अगर सीधी ढलान उतरती जाए तो बेटा पैदा होता है अन्यथा बेटी।”**(71)**

‘उमस’ कहानी की रानी(नायिका) की सास एक ऐसी स्त्री है जो अपनी बहू को अपने आदेशों का पालन एवं अपने निर्देशानुसार चलाना चाहती है। वे रानी के हर काम पर अपनी टिप्पणी करती और तानाशाह की तरह रानी से काम करवाती, “न करो तो हर काम बड़ा है, करो तो कुछ भी नहीं है। तेरी उमर पर मैं आधी-आधी रात तक कपड़े धोया करती थी, चक्की चलाना, भैंस की सानी-पानी करना, कंडी बनाना, सीना-पिरोना-इस सब की तो गिननी ही नहीं था। औरत जात का काम प्यार होता है, चाम नहीं। तुझे तो हिरनी की तरह होना चाहिए, बारहसिंगे की तरह नहीं की बस इड़ाती डोले।”**(72)**

इस तरह कहा जा सकता है कि आज भी हमारे समाज में एक स्त्री का दूसरे स्त्री के साथ किस तरह व्यवहार है, एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए वह किस हद तक गिर सकती है। इसका स्पष्ट रूप हमें ममता जी की उपर्युक्त कहानियों में दिखायी देता है।

3.23 कामकाजी नारी की दोहरी भूमिका:

घनश्याम दास भुतड़ा का कथन है- "नारी नौकरी करती हुई आर्थिक निर्भरता से संतोष प्राप्त करने की एवं पारिवारिक जीवन में 'एडजस्ट' न कर पाने के फलस्वरूप वह व्यर्थता बोध से भर जाती है। घर और बाहर के जीवन में समन्वय स्थापित न कर पाने से उसे नौकरी छोड़नी पड़ती है या तनाव की स्थिति को झेलते हुए अनचाहा जीवन व्यतीत करना पड़ता है।"**(73)** इस समस्या को ममता जी ने अपनी प्रस्तुत कहानियों में स्पष्ट किया है।

'जिंदगीःसात घंटे बाद की' नामक कहानी में आत्मीया नामक लड़की नौकरी करती है। दफ्तर में वह 10 से 5 तक काम करती है। ये सात घंटे जिंदगी की वह सही अर्थी में जीती है। अकेलेपन के कारण वह ऊब चुकी है। रविवार का दिन उसे पसंद नहीं है। वह किताबें पढ़ती है, बिना सायलेंसर वाली स्टोव का आवाज सुनती है जो उसे पसंद है। आत्मीया अपने मन की झुंझलाहट का चिंतन करती हुई अपनी 'स्व' को खोजना चाहती है। "उसे दिन ब दिन लगता है पाँच बजे के बाद वह जिंदगी जीती नहीं, बिताती है। पाँच बजे के बाद वह कुछ नहीं बचती। उसके व्यक्तित्व के पास रोज सिर्फ सात घंटे जीने को है-दस से पाँच।.....अफसरी से हट कट कर उसका कोई सेल्फ नहीं।"**(74)**

'मनहूसाबी' कहानी की उषा(मनहूसाबी) के जीवन में संघर्षी के कई कारण हैं, उसमें से प्रमुख है उसका सुंदर न होना। उषा एक स्कूल में शइक्षिका है वह घर और कार्यक्षेत्र दोनों

के बीच सामंजस्य बनाने के लिए संघर्ष करती है। उषा को अपना संघर्ष ऐसा लगता है मानो "गले में पड़ी नकली सोने की जंजीर से असंख्य बोतलें लटक रही हैं जिनमें तरह तरह के ज्वलनशील पदार्थ भरे हैं, पेट्रोल, मिट्टी का तेल, अपने माँ के डरपोकपने पर गुस्सा आता। अपनी और अपने माँ की प्रताड़ना का कारण उसे पिता की पुलिस की वर्दी लगती। होली के दिन "राजू ने लपक कर वर्दी लपटों में डाल दी और बिना किसी के बोले वापस घर में घुस गया।"(51) राजू को घर लौटकर कुछ देर बाद नींद आती है उसे लगने लगता है कि माँ को, पिता के शोषण, दमन और हिंसा से मुक्ति मिल जाएगी।

'इरादा' नामक कहानी में शांति अपनी शादी के बाद पति की सारी बात मानती है ताकि वह प्रसन्न रहे छोटी सी बात को लेकर जब वह उसपर शक

तेजाब और स्पिरिट। प्रायः उसे इन सब से ड़र नहीं लगता, धंधे से क्या डरना खतरा सिर्फ टक्कर का है।"(75) इस प्रकार ममता जी ने आधुनिक युग की दोहरी भूमिका रखने वाली स्त्रियों की स्थिति को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

3.24 रिश्तों में दरार:

ममता कालिया ने पारिवारिक रिश्तों को प्रधानता देते हुए अनेक कहानियाँ लिखी हैं। रिश्तों के धागे बहुत ही नाजुक होते हैं। परस्पर सामंजस्य के अभाव के कारणों से ये धागे तनकर टूट जाते हैं। किसी कारणवश यह जुड़ भी जाएँ तो इनमें अवश्य ही गाँठ पड़ जाती है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर आधुनिक काल में पारिवारिक जीवन में विघटन हो रहा है। शादी के बाद बेटा अपनी पत्नी के साथ अलग घर बसाना चाहता है। यही नहीं लेकिन और भी ऐसी अनेक कारणों से मानसिक उलझनों का सामना करते रिश्तों में दरार भी पड़ जाती है। यही कारण है कि समाज में परिवार का बदला हुआ रूप हम देख

सकते हैं। इसका उदाहरण हमें ममताजी की कुछ कहानियों में मिलता है। इस संदर्भ में उनका मानना है कि रिश्तों में दरार ज्यादातर पैसे के कारण आते है।

ममता जी ने 'बीमारी' कहानी में इसका चित्रण किया है। भाई बहन का रिश्ता सदीयों से गहरा होता लेकिन पैसों के खातीर आदमी इतना नीचे गिर सकता है यह इस कहानी से पता चलता है। प्रस्तुत कहानी की नायिका अविवाहित और नौकरीपेशा है। लेकिन वह अपने परिवार से दूर रहती है। अचानक जब वह बीमार होती है तो अपने भैया और भाभी को आठ दिन के लिए बुलाती है। उन्हें देखकर ऐसा लगता मानो दोनों सेंर करने के लिए आये है। भाई को अपने बहन की बीमारी का कोई दुःख नहीं लेकिन सेवा करने के स्थान पर बहन की बीमारी में अपने खर्च का हिसाब वह लगा देता है। बेचारी बहन का मानस कह उठता है, "कैश मैं अपने पास ही रख रही हूँ जरूरत पड़ सकती है। तुम चैक ले लोगे?"**(76)** उसे अपने अस्तित्व की चेतना का क्षण में एहसास होता है और वह अस्पताल में शरीक होने चली जाती है।

'छुटकारा' नामक कहानी में अकेलेपन के कारण नायिका की क्या मनोदशा है इसका चित्र ममता जी ने प्रस्तुत किया है। वह अपने प्रेमी से छुटकारा पाना चाहती है। उसका और उसके मित्र बत्रा के मैत्रीपूर्ण संबंधों में अब भावात्मकता के लिए कोई गुँजाईश नहीं थी। अनुशासनप्रिय बत्रा से अब वह केवल सामान्य बातचीत के अनुरूप ही संबंध रखना चाहती थी। जैसे पहले उनका रिश्ता था अब वह पुरी तरह बदल चुका था। वह कहती है- "मेरी कैजुएलनेस चटखकर टूट गयी। बत्रा की आवाज में कोई फर्क नहीं था। वही ज्यादा जागे रहने की तत्परता, पर उसके वाक्य मिलकर बातचीत नहीं बन रहे थे, वे कड़े लग रहे थे।"**(77)**

ममता कालिया की 'दांपत्य' नामक कहानी में एक शादी को केंद्र में रखते हुए लेखिका पति-पत्नी के बीच बीस साल के बाद हुए बदलाव के चित्रित करती है। पति अपनी पत्नी से वैसे ही प्यार की अपेक्षा रखता है लेकिन वह उसके चेहरे पर चिड़चिड़ाहट, थकान और झाइयाँ देखकर चुप रह जाता है। उसकी पत्नी को हर बात में फायदा नुकसान दिखायी देता है यह उसके पति को पसंद नहीं है। उन दोनों की सोच अलग-अलग होने के कारण उनके रिश्ते में दरार पड़ने लगी है। उसकी पत्नी मुहब्बत को मशक्कत समझने लगी थी। वह अक्सर कहती-"हे भगवान! तुम अभी तक सोयें नहीं। क्या कर रहे थे। पता नहीं, तुम्हें रोज-रोज मशक्कत करने की क्या पड़ी रहती है।"**(78)**

'नया त्रिकोण' नामक कहानी भी इसी तरह रिश्तों की दरार को प्रस्तुत करती है। इस कहानी में एक दादी है जो प्राचीन पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। वह चाहती है कि सारा परिवार उसकी सेवा करे। उसका बेटा और बहू उन्हें खुश रखने का प्रयास करते लेकिन उन दोनों जीजी के कारण तनाव उत्पन्न होने लगा। उसका बेटा आनंद सोचता है- "उसने जब भी त्रिकोण की कल्पना की थी तो रोमांटिक त्रिकोण की। उसकी कल्पना में अनीता, एक सीधी-सादी, चपटे बालों का कसा जुड़ा बनाने वाली पत्नी थी और त्रिकोण की तीसरी जगह एक अदत तेज-तर्रार कटे बालों वाली प्रेमिका के लिए खाली पड़ी थी। लेकिन सच्चाई यह थी कि इस तीसरी जगह पर जीजी आकर बैठ गयी थी।"**(79)**

'बातचीत बेकार है' नामक कहानी भी पति पत्नी के रिश्तों में किस तरह दरार उत्पन्न होती है और उन्हें एक दूसरे के साथ बातें करना भी अच्छा नहीं लगता। पत्नी 'विनीता' को पति अन्य सबकुछ तो दे सका लेकिन सुख और शांति नहीं। विनीता अपना सारा वात्सल्य रस परिवार के कर्तव्यों में सूख गया। उसे यह महसूस हुआ की इन चार सालों में उसका कार्यक्षेत्र सिर्फ रसोई और प्रसूतिगृह रह गये है। उसे यह महसूस होता है-

“आँखे बंद कर लेना सो जाने की कोई शर्त नहीं होती। आँखे बंद कर जागते रहने से दिमाग को आराम नहीं मिलता, वरन वह तन जाता है।.....वही रोज का असंतोष और अफसोस गीले, कंबल सा आकर उसके ऊपर गिर गया। उसे लगा वह खैरीयत से नहीं है, कभी भी नहीं थी।”**(80)**

‘गुस्सा’ कहानी की नायिका माया के गुस्सैल स्वभाव के कारण उसका पति हमेशा उसे घर छोड़कर चले जाने की धमकी देता है लेकिन माया अपने स्वभाव से मजबूर है और उसका पति एक दिन सचमूच घर छोड़कर चला जाता है तो- “माया को याद आय, वे अक्सर कहते थे, देख लेना, जिस दिन तुम्हारी इस किच-किच से तंग आ गया तो, उठा अपनी रामायण चला जाऊँगा, पीछे मुड़कर भी नहीं देखूँगा।”**(81)**

ममता जी ने ‘खाली होता हुआ घर’ कहानी की सुमित्रा मिश्रा अपने माता-पिता के संबँधों में स्थित तनाव के कारण अपने आप को मानसिक दृष्टि से क्षुब्ध हो जाती है। पारिवारिक तनाओं के कारण उसने अपना एक मुकाम ढूंढ निकाला है। अपने परिवार को छोड़कर सब रिश्ते नातों की पर्वा न करते हुए घर छोड़कर चली जाती है। इस मुकाम पर- “दिल्ली की एक घिचपिच कॉलोनी में एक ‘सी’ क्लास क्वार्टर था, एक अदद लड़का था और पाँच सौ रूपये मासिक आय।....इसी औसत की शायद उसे तलाश थी।” वह अपने परिवार के विरूद्ध जाकर प्रेम-विवाह कर लेती है। महीनों बाद वापस घर लौटने पर उसे लगा जैसे उसके पापा, माँ बदल चुके है कही न कही उस रिश्ते का धागा टूट सा गया है। वह उसके पापा का ही घर है लेकिन वहाँ रहना उसे अब अच्छा नहीं लगता।

माता-पिता की सेवा के लिए आज बेटे के पास समय नहीं है। ममता जी की सेवा कहानी इन्हीं रिश्तों पर आधारित है। इसमें नरोत्तम जी की पत्नी ब्रेन हैमरेज के कारण अर्धचेतन अवस्था में अपने बेटे विस्सू(विस्मय) को याद कर रही थी। लेकिन बेटे के पास

अपनी माँ की बीमारी की अवस्था में भी उनके लिए समय नहीं। विवश नरोत्तम ने अपनी पत्नी से कहा, “चला गया तुम्हारा विस्सू! आध घंटे को आया था। हाँ, तुम्हारा बेटा बिस्सू। इसे तुमने पाला पोसा। उसकी ज़रा-सी छींक आने पर तुम व्याकुल हो जाया करती थी। आज तुम बेहोश पड़ी हो और बेटे को फुर्सत नहीं तुम्हारे पास बैठने की। मुझसे कहता है नटशैल में बताइए ममी को क्या हुआ है।” भौतिकवादी इस युग में बहू-बेटे के इस बरताव के कारण वृद्ध माता-पिता बहुत अकेले हो गये है।

इस प्राकर ममता कालिया ने उपर्युक्त सभी कहानियों में किस प्रकार छोटी मोटी बात पर रिश्तें बिखरते है टूटते है। फिर से उन्हें जोडना कितना कठीन है इसका यथार्थपरक चित्रण किया है।

3.25 पारिवारिक सदस्यों की वैयक्तिक समस्याएँ:

पारिवारिक सदस्यों कुछ समस्याएँ ऐसी भी होती है समाज एवं परिवार से जुड़ी होते हुए भी वैयक्तिक होती है। यह समस्याएँ इस प्रकार हैं-

‘गुस्सा’ कहानी में पारिवारिक विघटन की समस्याओं के मध्य बहुओं के संकुचित व्यवहार से संत्रस्त, अस्थिर वृद्ध माता का मानसिकता एवं अंतर्द्वंद्वों को दर्शाया गया है।

‘अर्द्धांगनी’ नामक कहानी में पति के पूर्ण समर्पण के बावजूद भी गंभीर बीमारी के कारण चिंताग्रस्त विवाहित की मानसिकता को उजागर किया है। कहानी की नायिका को स्तनकैंसर हुआ है। आधी औरत की क्लपना मात्र से रूपा कुंठित हो जाती है। रूपा को लगता है कि वह आधी अस्पताल के कूड़ेदान में पड़ी है, आधी घर में। एक अहसास के साथ उसका समूचा आत्मविश्वास ही अकबका गया। उठते बैठते, लेटते-करवट लेते, बात करते उसे लगता वह आधी नारी है।**(82)**

बच्चों का चहुँमुखी विकास, केवल सुखी परिवार में ही संभव है वरना वह असामान्य व्यवहार करने लगता है। इस दृष्टि से आजकल परिवार का परिवेश दूषित होता जा रहा है। ममता कालिया ने इस दूषित परिवेश का यथार्थ चित्रण अपनी कहानियों में किया है। उनकी 'बच्चा' नामक कहानी में पाश्चात्य सभ्यता के परिवेश में परिवार के बिगड़े माहौल में बेटे के मानसिक संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

प्रायःदेखा गया है कि माता-पिता के झगडों का बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसी समस्या को ममता जी ने 'चिरकुमारी' कहानी में पैंतीस वर्ष की उम्र की अविवाहित, नौकरीपेशा नारी के विवाह संबंधी मानसिक द्वंद्वों को उजागर किया है। परिवार की सुखद कल्पना में उसने अपने माता-पिता के संबंधों में 'मौन' का अनुभव किया था। इसी मौन ने दिशा को 'विवाह' के प्रति विरक्त बना दिया था। कई किस्म की ज्यादतियों और कमियों का मुकाबला उसने अपनी शिक्षा और प्रखर चेतना से किया था। वह कहती है, "आज़ादी के पचास साल बाद भी लड़कियों के शौच जाने का कोई इंतजाम नहीं है। झुंड में निकली है, कोई सुनसान जगह देखकर बैठेंगी।.....इनका अपहरण बलात्कार कुछ भी असंभव नहीं है।"**(83)**

'आत्मरक्षा' कहानी की नायिका के अंतद्वर्द्व को दर्शाया गया है। अपने विवाह के साथ के चयन का अधिकार उसे नहीं है। यह उसकी त्रासदी मात्र वैयक्तिक ही नहीं, सामाजिक भी है। क्योंकि विवाह एक सामाजिक संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है। मोहल्ले में एक विधुर लड़का रहता है, पक्की नौकरी है। समय का मूल्य समझकर "मोहल्ले की ममतामयी महिलाओं ने सुधीर का खास खयाल रखना शुरू कर दिया। होता यह कि माँ सुबह सुधीर के लिए चाय लेकर पहुँचती तो पाती वहाँ पहले से ही एक ट्रे चाय रखी हुई है। रात के खाने को लेकर कई बार पड़ोसियों में झड़प हो जाती। उनके पकाए व्यंजनों को देख

कर हैरानी होती कि क्या एक दुःखी विधुर नौजवान को इतने पौष्टिक आहार की आवश्यकता हो सकती है।"**(84)** नायिका की सलाह लिए बिना उसकी शादी उस नौजवान से की गयी।

पारिवारिक तनाव के कारण मनुष्य का मनुष्य के साथ रिश्ता टूटने लगता। इसके कारण कोई भी व्यक्ति खुशहाल-जीवन नहीं जी सकता। पति-पत्नी, सास-बहू आदि रिश्तों में हमेशा तनाव दिखाई देता है। इसके कई कारण हो सकते है। ममता जी ने कहानियों में इसका यथार्थ चित्रण किया है। 'तस्की को हम न रोयें', 'खाली होता हुआ घर', 'उपलब्धि', 'लैला मजनूँ', 'मंदिरा' तथा 'रोग' आदि कहानियों में पात्रों में तनाव को देखा जा सकता है। इस संदर्भ में एक उदाहरण द्रष्टव्य है।

'तस्की को हम न रोये' कहानी में पति-पत्नी के बीच बढ़ते तनाव का चित्रण किया गया है। इस कहानी की नायिका 'आशा' शादी के कुछ दिन बाद ही अपने सौंदर्य को फूल के समान मुरछा हुआ पाती है। निजी रद्दोबदल के सिलसिले में उसको समझ में नहीं आ रहा था कि कब उसकी कमर आधा खुट चौड़ी हो गई, कब उसके बाल सफेद होने लगे, कब पति फैक्टरी से रात ग्यारह बजे लौटने लगा, कब बच्चों ने उसके साथ खेलना बंद कर दिया अपने अधूरेपन के अहसास से वह तनावग्रस्त हो जाती है। वह शीशे में अपना चेहरा देखती है और सोचती है- "वही चेहरा है, वही आँखें है, वही होंठ है, वही बाल है, लेकिन वह जादू गायब है जिसके आधार पर वह एक बार मसूरी में क्वीन चुनी गई थी।.....उसके लिए अतीतजीवी होते जाना एक अनिवार्य परिणति थी।"**(85)**

इस तरह अपने शारीरिक परिवर्तन के साथ-साथ पति के व्यवहार में होनेवाले परिवर्तन का बोध आशा को हो जाता है।

अहंकार मनुष्य को गलत राह चुनने पर मजबूर करता है। इसी कारण, दूसरों के प्रति द्वेष एवं स्वार्थ की भावना मन में उत्पन्न हो जाती है। इसी अहं भावना के कारण ही हमें कभी कामयाबी नहीं मिल सकती है। इसे ममता जी ने 'मनोविज्ञान' कहानी में चित्रित किया है। कहानी की नायिका 'कविता' पुरूष(पति) के अहंभाव द्वारा सदैव प्रताड़ित रहती है। मनोरूग्य पति 'नवीन' किसी अन्य द्वारा अपनी पत्नी की प्रशंसा सुनना सह नहीं पाता पति के इसी अहं के कारण कविता ता जीवन तनावग्रस्त हो जाता है।

इस प्रकार ममता कालिया ने पारिवारिक सदस्यों की वैयक्तिक समस्याओं को रेखांकित किया है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि परिवार में आजकल जो परिवेश उभर रहा है उसका यथार्थ चित्रण ममता जी ने अपनी कहानियों में किया है। इसी के साथ लेखिका ने कुछ ऐसे पात्रों की अवतारणा की है जो दूषित परिवेश में सुधार लाने का प्रयास भी करते हैं।

3.3 राजनीतिक परिवेशगत यथार्थ

आधुनिक युग के राजनीति को अंग्रेजी में (Politics) कहते हैं। यह राजनीतिक उथल पुथल का युग है। राजनीति का अर्थ देश की व्यवस्था एवं समाज की विभिन्न विकृतियों से लिया जाता है। 'राजनीति' का दूसरा अर्थ सुव्यवस्थित राज्य का संचालन भी हो सकता है। आजकल 'राजनीति' को भ्रष्टाचार के नाम से जोड़ा जाता है। कोई भी राजनेता समाज में भ्रष्टाचार के कारण वह मान-सम्मान की भावना नहीं पाता है। वह नेता होने के कारण उसे भ्रष्टाचारी कहा जाता है। कोई भी साहित्य राजनीति का दूसरा पहलू है जीवन के हर क्षेत्र में राजनीति व्याप्त है।

आजकल के बदलते समाज में राजनीति सही अर्थ में अपनी पहचान खो रही है। राजनीति आज एक व्यवसाय बन गयी है हर जगह पर भ्रष्टाचार होता है जैसे स्कूल, कॉलेज, समाज, नौकरी आदि। जो गरीबी के कारण त्रस्त है उसे राजनीति दबाकर समाप्त कर देती है। जैसे ही हमारा भारत देश आजाद हुआ राजनेताओं ने अपनी भ्रष्ट वृत्ति दिखानी शुरू की और अपनी जेब भरने का काम शुरू किया। लेकिन आज समाज इतना बदल चुका है कि राजनेता अपनी जेब भरने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं।

हर एक क्षेत्र में राजनीति अपना आसन जमाये बैठी है। इस संदर्भ में डॉ.कमल गुप्ता ने लिखा है- "स्वातंत्रता प्राप्ति के पश्चात व्यक्ति की राजनैतिक चेतना विविध स्वार्थी प्रवृत्तियों के रूप में प्रस्फुटित हुई। सदा के लिए आप-धापी ने राजनीतिक भ्रष्टाचार को जन्म दिया। भ्रष्टाचार के कारण प्रत्येक व्यक्ति निम्न और उच्च स्तर पर सत्तात्मक राजनीति की शतरंज में अपनी गोटी बैठाने के प्रयत्न में संलग्न हो गया। व्यक्तिगत स्वार्थी ने दल-बदलू राजनीति को जन्म दिया। राजनीतिक दलों के नेता एक के बाद दूसरा दल बदलते रहे। स्वतंत्रता पूर्व भारतीय जनता ने जो सपने संजोए थे। वे धराशायी हो गये। राजनीतिक हत्यायें, घेराव, हड़ताल, बंद और तथावत् प्रवृत्तियाँ राजनीतिक अभिशाप के रूप में सामने आयीं।"**(86)**

आज राजनीति में धर्म का अधिक प्रभाव दिखायी देता है। मनुष्य की सुरक्षा हेतु शासन तंत्र की व्यवस्था की जाती है। राजनीति मानव समाज की व्यवस्था को पूर्ण बनाती है। प्लेटो के अनुसार, "राज्य व्यक्ति का बृहत्तर रूप है। राज्य की समस्त संस्थाएँ मानव के ज्ञान, रूचि, योग्यता का प्रतीक है। मानवीय चेतना ही राज्य की चेतना है।"**(87)**

मनुष्य की चेतना जब कुमार्ग ग्रहण करती है तब दूषित राजनीति का जन्म होता है लेकिन दोष-विहीन चेतना के प्रयोग से जो राजनीति उत्पन्न होती है वह मानव-जीवन को कल्याणप्रद होती है।

3.31 राजनेताओं की स्वार्थनीति:

आजकल समाज में नेता किसी तरह अपनी जेब भरने के लिए दूसरों का नुकसान करते हैं और समाज में होने वाली घटनोओं को अनदेखा करने की कोशिश करते है इसका यथार्थ चित्रण किया गया है। अपने स्वार्थ के खातीर वह लोगों की चिंता नहीं करते। दंगे, फसाद, लुटमार आदि सब इन्ही की वजह से समाज में पनप रहे हैं।

आजकल के नेता जनता की समस्याओं की ओर किस तरह अनदेखा करते है इसका चित्रण ममता जी ने अपनी कहानी 'लड़के' में किया है। समाज में राजनेताओं को गालियाँ भी देने के बावजूद नेता लोग किस तरह हँसकर टाल देते हैं यह प्रस्तुत कहानी में दृष्टिगोचर है-

वे कहते है-"दिन प्रतिदिन वे मँहगाई, मिलावट और मक्कारी से भड़ते और जिंदा रहते। कभी-कभी लोगों को गुस्सा आता। गालियाँ देने लगते, कभी सरकार को, कभी अखबार को आखिर अपने भाग्य को। लीडर सुनते और लाड़ से हँस देते। उन्हें पता था ऐसी गुर्र-गुर्र तो लगी रहती है। पाँच साल बाद एक दिन जायेंगे, सारे शिकवा-शिकायत दूर कर देंगे।"**(88)**

3.4 आर्थिक परिवेशगत यथार्थ

भारत देश पहले धर्म प्रधान था लेकिन आजकल भारत देश अर्थ प्रधान हो गया है। अर्थव्यवस्था समाज का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। जीवन कार्य परिवेश के साथ बदलते रहते है। इसमें इसे समाज में रहकर अनुभव किया जा सकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कथासाहित्य में सारे क्रियाकलाप 'अर्थ' व्यवस्था पर टिका हुआ था।

आजकल आर्थिक व्यवस्था ही जीवन को गति दे रही है। आर्थिकता का प्रभाव साहित्यकार एवं उसकी रचना पर भी पड़ता है।"श्रेष्ठ साहित्य रचना के लिए समाज, लेखक और पाठक की आर्थिक स्थिति भी ठीक होनी चाहिए। यदि लेखक आर्थिक दृष्टि से मजबूत नहीं है तो उसके लेखन में अवश्य निराशा और अनास्था होगी।"**(89)**

आर्थिक परिवेश युगीन परिस्थितियों पर निर्भर रहता है। आज समस्त देश में लूटपाट, दंगे फसादों की वजह से अर्थव्यवस्था को हम चरमराता देख सकते है। मँहगाई बढ़ गई है अर्थसंकट से त्रस्त मध्यवर्ग और निम्नवर्ग को बेकारी, बेरोजगारी, मँहगाई ने अपंग बना दिया था, इसकी वजह से व्यक्ति असामाजिक कार्यों में प्रवृत्त होने लगा जिससे समाज का अहित हो सकता है। आर्थिक खुशहाली कैसे हो यही आज सबका सपना है।

आर्थिक अभाव मनुष्य के मन पर ही नहीं बल्कि उसके शरीर पर भी निशान छोड़कर जाती है। आर्थिक विषमता के कारण मनुष्य के मन में व्यर्थता का बोछ होता है और कभी कभी उसका बोलना अपराध बनता है।

"सबसे बड़ी चीज आज दुनिया में पैसा है, पोजीशन है। बाकी सब ढकोसला है। सब बकवास है। ताकत और पैसा और रौब दाब इनसे बढकर कोई चीज दुनिया में नहीं है। जिनके पास पैसा है, उसके पास सबकुछ है।"**(90)**

3.41 आर्थिक अभाव:

आधुनिक काल में लोग पैसों को महत्व देते हैं। पैसों के सामने उनके लिए कोई भी रिश्ता महत्व नहीं रखता है। रिश्तों का महत्व आजकल कम होने लगा है। रिश्तों में दरार आने का कारण भी पैसा ही है। वर्तमान युग में मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय बन गयी है। सन् साठ के बाद इस स्थिति में भयानक बदलाव आया है। नया मजदूर वर्ग, बेकार, शिक्षित युवा आर्थिक स्वतंत्रता की ओर अग्रसर कामकाजी महिलाएँ आदि की अभूतपूर्व बुद्धि के कारण आर्थिक ढाँचा एकदम से बदल गया है। आर्थिक अभाव ने आज के मनुष्य को पीसकर रख दिया है। बेकारी व महँगाई इन दोनों विभषिकाओं के बीच आज का मनुष्य अपना चेहरा खो चुका है। आर्थिक अभाव के कारण मनुष्य इतना मजबूर हो जाता है कि उसका विवेक काम नहीं करता। ममता कालिया ने आर्थिक अभाव को 'अनुभव', 'शॉल', 'पहली' आदि कहानियों में यथार्थ रूप दिखाया है।

'अनुभव' नामक कहानी में राजू नामक नौकर जो सच बोलने की कसम खाता है और घर में मेमसाहब के खिलाफ साक्ष्य देने के लिए उसे बुलाया जाता है तो वह सच बोल देता है इसी कारण उसे सौ का नोट देकर घर से निकाल दिया जाता है। "पाँच साल पहले वह गोरखपुर से दिल्ली आया था, तब से अब तक यह उसकी सातवीं नौकरी छूटी थी। पहली नौकरी उसे पहले ही दिन एक परिचित की सिफारिश पर मिल गई। तब से वह कभी सड़क पर नहीं रहा। एक छूटी, दूसरी मिल गई। आज अपने सामाने पर नहीं सोया था, गर्मियों में भी नहीं घर में ढीली ही सही उसके पास एक खटिया थी, टूटा ही सही, सिर पर छप्पर था। आज उसे लगा वह उस दिन से भी बुरे हाल में जब वह घर से दिल्ली आया था। इन पाँच बरसों का हिसाब अगर वह करे तो उसने क्या खाक कमाया। महीने में मुश्किल से पचास रूपये घर भेजे और जमा पूँजी सिफर। इस लंबे-चौड़े चका-चौंध भरे शहर में अपना कहने लायक कुछ भी तो नहीं रहा कभी, न घर न द्वार, न पता न ठिकाना। इससे ज्यादा सुखी तो

वह अपने उजड्ड शहर में रह लेता, कुछ नहीं तो सब्जी बेच लेता, पंक्चर लगा लेता था बोझा ढो लेता। पर फिल्में देख देख कर उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी तभी तो उसने सोचा कि किस्मत बनाने के कारखाने केवल कलकत्ता, बंबई और दिल्ली में लगे हैं।"**(91)**

'शॉल' नामक कहानी में स्कूल में काम करने वाली औरत का चित्रण किया वह सब के लिए चाय बनाने का काम करती है। ठंड की वजह से उसे शॉल की जरूरत महसूस होती है। पैसों के अभाव के कारण वह शॉल नहीं खरीद सकती तो बड़ी बहन सभी से दो-दो रूपये का चंदा इकट्ठा करके उसके लिए शॉल लाती है। लेकिन वह शॉल लेने से इंकार करती है और कहती है- "नहीं बहन, आपके हाथ जोड़ित हैं, हम शॉल न लेव। सुबह से मार फबती सुन-सुन हमार छाती फट गयी।"**(92)**

ममता कालिया की 'पहली' नामक कहानी में भारतीय मध्यवर्गीय परिवार में नौकरी करने वाले लोगों की संख्या अधिक है उनके जीवन में पहली तारीख कितना महत्व रखती है इसका चित्रण किया है। बच्चे फीस, नये बस्ते, घर खर्च के पाँच सो, दूध के दो सौ, बिजली एवं किराया आदि के हिसाब से घर में सभी पहली तारीख का इंतजार करती है। ताकि घर में प्यार से खा पी सके। निम्नलिखित वक्तव्य से 'पहली' मध्यव्रगीय जीवन में कितना महत्वपूर्ण है यह पता चलता है। "ये लों राजू और ये लो पप्पू। और यह रहा घर खर्च का पाँच सौ। ये दो सौ दूध के पैसठ रूपये बिजली के, ये दो सौ मकान किराया।"**(93)**

ममता जी ने अर्थाभाव मनुष्य को किस प्रकार मजबूर कर सकता है इस बात का चित्रण अपनी एक कहानी 'चोट्टिन' में किया है। इस कहानी में एक छोटी लड़की सुखिया का वर्णन किया है जो बारह साल की है। वह अपना पेट भरने के लिए चोरी करती है। उसकी माँ पैसों के खातिर बर्तन माँजने का काम करती है, दो चार गोलगप्पों के लिए घर के बर्तन बेच डालती है। रास्ते में मिले गॉगल को देखकर चाट खाती है। बेटी को नहाने की इच्छा होती है

लेकिन उसके पास जाँघिया नहीं है। इसलिए रास्ते पर लगी एक दुकान से जाँघिया चोरी करती है और भाग जाती है। अर्थाभाव के कारण बेटी सुखिया कहती है, "तुम मना क्यों नहीं कर देते अम्मा। बासन भांडे का काम तय हुआ है, हम्माली का नहीं।"**(94)** यह सुनकर माँ को अपनी स्थिति पर तरस आता है वह कहती है- "अरे खाक! घंटा भर देही मलोड़ी और एक सूखी चवन्नी टिका दी सेठानी ने। मैंने सोचा था कटोरदान में रखी बासी रोटियाँ दे देगी तो अपना एक जून का खाना चल जायेगा।"**(95)**

'फर्क नहीं' कहानी की नायिका अर्थोपार्जन की दृष्टि से पूर्ण रूप से अपने पिता पर निर्भर है। आजकल उसके पिता को जो बात परेशान करती है वह महँगाई, ब्याज व दर, रिटायरमेण्ट आदि है। आर्थिक तनाव में जीते हुए वह अपने जमाने की बात कह डालते। अर्थ कहानी की नायिका की सारी परेशानियों का प्रत्युत्तर बना रहता। ऐसे वक्त उसका मन यह महसूस करता- "काश मेरे पास, फिल्मों में जैसे दिखाया जाता है, रूपयों से भरा एक ब्रिफकेस होता जो मैं इन तीनों के बीच खोल कर रख देती और हर एक की प्रतिक्रिया देखने का दुर्लभ अवसर प्राप्त करती।"**(96)**

इस प्रकार अर्भाभाव के कारण मनुष्य किस प्रकार हर एक चीज से वंचित रह जाता है इसका चित्रण ममता जी ने यथार्थ रूप में अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।

3.42 **बेरोजगारी:**

वर्तमान जीवन में शिक्षित युवकों की बहुत ही बड़ी विसंगति है बेरोजगारी। आधुनिक हिंदी कहानीकारों ने बेरोजगारी को एक समस्या माना है। जिस देश में बेकारी की समस्या हो, वह देश में बेकारी की समस्या हो, वह देश न केवल आर्थिक दृष्टि से पिछड़ना

है, बल्कि वहाँ के लोगों के बीच अनेक बुराईयों का सृजन होता है। खाली दिमाग शैतान का घर होता है, यदि नवयुवकों को कॉलेज की पढ़ाई पुरी करने पर रोजगार नहीं मिले तो ये चोरी डकैती आदि बुराईयों में व्यस्त रहने लगते हैं। पढ़े-लिखे शिक्षित युवक-युवती की स्थिति आज सबसे अधिक दयनीय है। लेकिन देखा जाय तो भारत में हर व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पराधीन होता दिखायी देता है। बेरोजगारी हर व्यक्ति को आत्मनिर्भर होने से वंचित रखती है। बेकारी के कारण हर व्यक्ति रह गया है। इस संदर्भ में ममता कालिया की अनेक काहनियाँ मिलती है जो बेरोजगारी का यथार्थ रूप चित्रित करती है।

'उसका यौवन' नामक कहानी में आधुनिक काल की एक महत्वपूर्ण समस्या बेरोजगारी को चित्रित किया गया है। इस समस्या के कारण युवकों की मानसिक स्थिति कैसी हो जाती है और ऐसी मनोदशा में वे क्या क्या कल्पनाएं कर अपने दिल को बहलाते है। इसका चित्रण किया गया है। कहानी का नायक 'विराम' बेकार है उसे लगता है कि वह जन्म से ही अध्यापक है और उसके पास समय नहीं है वह शिक्षा व्यवस्था को दोष देता है। वह सपना देखता है कि वह मुंबई पहुँच गया और फिल्मतारकाएँ उसका स्वागत करती है। जब भी उससे कोई बी.ए का रिजल्ट पूछता है तो भन्नाकर कहता है- "अरे हरामजादों, तुम्हारे बच्चे ट्यूशन पढ़े, नकल करें, मास्टरों के तलवे चाटें और फर्स्ट आयें। हमें न चाँदी न सोना। दुनिया ठेंग पर। एक दिन आयेगा, खुद राष्ट्रपति इलाहाबाद आयेंगे उससे भेंट करने, उसे भारत रत्न उपाधि देने। अरे, यह वह नगर है जिसने तीन-तीन प्रधानमंत्री दिये हैं, कौन जाने, चौथा अस वक्त इसी खटिया पर पड़ा हो।"**(97)**

'अपने शहर की बत्तियाँ' नामक कहानी में ममता जी ने दो दोस्तों का चित्रण किया है जो एम.ए कर चुके हैं और इसी के साथ बेरोजगार है और नौकरी के लिए प्रयास कर रहे हैं। बेरोजगारी के प्रति उनका मानना है कि "अपने को बेकार और हताश पाने की बजाय उन्हें

अर्जियाँ भरना और इंतजार करना पसंद था, क्योंकि इस तरह वे एक अर्जी और दूसरी अर्जी के बीच की प्रतीक्षा का बोनस पा सकते थे।"**(98)**

ममता जी की 'प्रिय पाक्षिक' नामक कहानी में आधुनिक काल में नोकरी की समस्या कितनी तेजी से बढ़ती जा रही है और इसी वजह से बेरोजगारी युवकों को कौन-सी तकलीफों का सामना करना पड़ता है इसका चित्रण किया है। बेरोजगारी से तंग कहानी का नायक प्रत्युष एक महिला पत्रिका के दफ्तर में काम करने लगता है- "काफी दिन परेशान और खाली खुक्श रहने के बाद यह नौकरी हाथ आयी थी। अभी कुछ महीने उससे कोई कहता कि तुम 'प्रिया'में उपसंपादकी कर लो तो वह कहने वालों का खूब मजाक उड़ाता, 'प्रिया' एक महिलापयोगी पत्रिका थी जो राजधानी से छपती थी और जिसकी सर्कुलेशन लाखों में था।"**(99)**

'बसंत सिर्फ एक तारीख' नामक कहानी की नायिका चंदा चौधरी और उसका पति दोनों साहित्यकार है। लेकिन वे दोनों बेरोजगार है और नौकरी के लिए प्रयासरत्त है। इसलिए चंदा बसंत की पहली तारीख को दिल में नयी उमंग लेकर अपनी पहचान की प्राचार्या से नौकरी माँगने जाती है। लेकिन उसे केवल आश्वासन मात्र मिलता है- इस संदर्भ में कुछ उदाहरण दृष्टव्य है जो बेरोजगारी की यथार्थ त्रासदी को दर्शाता है।

1. "बेकार रहते-रहते मुझे तो यह भी भल था कि दस बजे का समय दफ्तर जाने का होता है। वर्षों से हमारे घर से कोई दफ्तर नहीं गया था। बेरोज़गारी हमारा पुश्तैनी रोजगार था"। **(100)**
2. "फिर भी हमारी गुज़र किसी तरह होती ही थी। दरअसल हम लेखन को समर्पित दंपती थे। सारी दोपहर हम कलम घसीटते थे, शामें कॉफी हाउस में बीततीं थी। सुबह हम अखबारों के दफ्तरों में ताक-झांक करते पाए जाते थे। ये सब अपने आप में

पूर्णकालिक काम थे। फिर भी समाज के मान्य अर्थों में हम बेरोजगार थे। हर महीना जब बीत जाता, हमें हलका अचंभा और गहरी खुशी होती कि हम भूख, महाँगाई, बीमारी और दुर्घटनाओं को चकमा देते हुए एक और महीना जिंदा रह लिए।"**(101)**

'लगभग प्रेमिका' कहानी की नायिका 'सुजाता' अपनी बेकारी के कारण व्यस्त है। इस बेकारी को दूर करने हेतु वह अपने पति के साथ नौकरी करना चाहती है। अर्थाभाव उन दोनों को पारिवारिक जीवन में होने वाले संघर्ष के कारण अलग जगह पर छोटी-मोटी नौकरी करने के लिए प्रेरित करते हैं। अपने अर्थाभाव को महसूस करती हुई वह कहती है-"पास पड़ी मेज़ पर मेरा पर्स रखा था। उसमें सिर्फ सवा चार रुपये थे। सवा चार रुपये में कितनी देत आजादी बरकरार रखी जा सकती है।"**(102)**

कई बार एक पूरी तरह से शिक्षित युवक को मजबूरन उसकी हैसियत से कम की नौकरी करनी पड़ती है। आर्थिक सवाल का हल थोड़ा-बहुत तो इससे हो ही जाता है यह सोचकर और निठल्ले बैठे रहने से कुछ न कुछ करना ही अच्छा है यह भी सोचकर वे नौकरी के लिए तैयार हो जाते हैं। ममता जी की 'प्रिया पाक्षिक' का नायक मजबूरी से महिलाओं के लिए चलाये जाने वाले मासिक के दफ्तर में काम करने लगता है- "काफी दिन परेशान और खाली-खुक्श रहने के बाद यह नौकरी हाथ आयी थी। अभी कुछ महीने पहले उससे कोई कहता कि तुम 'प्रिया' में उपसंपादकी कर लो, तो वह कहने वाले का खुब मजाक उड़ाता, 'प्रिया' एक महिला उपयोगी पत्रिका थी जो राजधानी से छपती थी और जिसका सर्कुलेशन लाखों में था।"

'चोट्टिन' नामक कहानी में बेरोजगारी के कारण सुखिया का जीवन अभावों से ग्रसित था। उसे चाट खाना बहुत पसंद था। "एक बार जब उसकी अम्मा ने पैसे दिये, उसने चाट खायी थी। फिर तो उसे ऐसी लत पड़ गयी कि वह अक्सर खाने लगी। उसके घर के चार

छः बर्तन एक-एक करके चाट वाले के पास पहुँच गये। एक दिन तो उसने अपनी प्लास्टिक की चप्पले दे डाली, चार गोल-गप्पों के लिए।"**(103)** इसप्रकार खुखिया और उसकी माँ बेरोजगारी के कारण अपना पेट पालने के लिए सब बेचकर, चोरी कर अपने अभावों से खुश रहने का प्रयास करते है।

'अनुभव' कहानी में नौकर रामू के माध्यम से बेरोजगारी के यथार्थ रूप को चित्रित किया गया है। वह गाँव से शहर नौकरी के लिए आता है लेकिन उसे घर से निकाल दिया जाता है। वह मेमसाहब उसे पैसे तो कम देती ही है और खाना भी ठीक से नहीं देती। वह उस घर में काम छोड़कर "प्राइवेट बस में अपना सामान लाद, रामू लाल किला आ गया। उसे लगा उसकी जेब में जो आखिरी तनखा के सौ रूपये हैं उनसे नई दिल्ली में तो गुजारा मुश्किल है, उसे पुरानी दिल्ली में ही जाकर टिकना चाहिए। दो चार हफ्ते मस्ती काटेगा, न हुआ तो किसी दुकान या ढाबे में काम पकड़ लेगा।"**(104)**

कहानी के नायक रामू की कई नौकरियाँ छूट जाती है क्योंकि हर बार कोई-न-कोई वजह सामने आ जाती है। एक बार वह सच बोलने के लिए निकाला जाता है तो एक बार झूठ बोलने के लिए। अपने अनुभव को याद करते हुए वह सारी वजहों के बारे में सोचता है- "ग्रेटर कैलाश के कोठी से उसे इसलिए जवाब मिल गया क्योंकि वह टमाटर सोलह रुपये किलो के भाव से खरीद लाया था जबकि टमाटर बारह रुपये किलो खुले आम बिक रहे थे। कालका जी वाले बंगले में बाबा की गेंद न ढूँढ पाने की वजह से उसकी छुट्टी हो गयी।"**(105)** इसी तरह काफी एडवान्स माँगने के कारण, कभी खुराक ज्यादा है इसलिए उसकी छुट्टी हो जाती। और फिर वह दूसरी नौकरी की तलाश में लग जाता। इसी प्रकार वह काम करने वाला होकर भी किसी न किसी वजह से उसे निकाल दिया जाता और वह बेकार हो जाता है।

इस प्रकार जीवन के हर एक क्षेत्र में बेकारी किस प्रकार मनुष्य को आगे बढ़ने से रोकती है उसकी उन्नती नहीं हो पाती। इसी के साथ वह अपने सपनों को साकार नहीं कर पाता और उसके परिवार वालों को भी दुःख का सामना करना पड़ता है। इसलिए समाज में बेरोजगारी का यथार्थपरक चित्र ममताजी ने अपनी कहानियों उतारकर हमारे सामने रखा है जिसका आज हर एक व्यक्ति शिकार है।

3.43 महँगाई:

जैसे जैसे लोग गाँव से शहर में आते है वैसे ही वह नौकरी की कमी को महसूस करते है। हमारे देश की बढ़ती जनसंख्या के कारण महँगाई भी बढ़ रही है। इस महँगाई को रोकना अब आम आदमी के हाथ में नहीं है। इसका फायदा उठाकर नेता लोग पाँच साल बाद देश को बदलने का आश्वासन देते है और जनता से वोट लेकर कुर्सी हासिल करते है और फिर लोगों के दुख-दर्द को दुर करने के बजाय खुद की जेबें भरने में लग जाते है।

महँगाई के कारण पहली ही तारीख को पैसे किस तरह समाप्त हो जाते हैं इसका चित्रण ममता जी ने अपनी कहानी 'पहली' में अन्यन्त सुंदर ढंग से किया है। जब उनका बेटा पैसे की माँग करता है- "पापा मेरी दो महीने की फीस। नोटिस निकला है, पंद्रह तर जरूर जमा होनी है।"**(106)**

इस प्रकार कालिया ने आर्थिक परिवेशगत यथार्थ को अपनी कहानियों में चित्रित किया है जो आज बहुत ही प्रासंगिक है।

3.5 धार्मिक एवं संस्कृतिक परिवेशगत यथार्थ

"धारयति इति धर्माः"**(107)** अर्थात जो धारण किया जाता है वह धर्म है। अगर मनुष्य धर्म के अनुसार कर्म करता है तो उसे धर्मराज कहा जाता है। आजकल समाज में

धर्म को लेकर अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही है। हर एक मनुष्य में दो प्रवृत्तियाँ होती है उत्तम और दूषित। दूषित प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखकर उत्तम प्रवृत्तियों को अग्रसर करना ही धर्म का प्रधान कार्य है। धर्म का संबंध व्यक्ति के नैतिक तथा आध्यात्मिक पहलू से है जो व्यक्तित्व के लिए एक महान तत्व है। समाज के उच्चवर्गीय लोग जनता को धर्म की लालसा में गुमराह करते है, समाज में कहीं तरह के भ्रष्टाचार होते हैं, मंदिरों में पुजारी भी धर्म के नाम पर अपने मन में भ्रष्ट वृत्ति रखते हैं। प्राचीन काल में धर्म के संबंध में लोग इतनी जानकारी नहीं रखते थे लेकिन मुगलकाल तक आते आते सब कुछ परिवर्तित हो गया। धर्म के आड़ में अनेक दुरव्यवहार होने लगे। जैसे सतीप्रथा, बाल-विवाह, जैसी प्रथाओं को समाज में स्थापित किया गया और धर्म के नाम पर सभी प्रथाओं का दुरूपयोग होने लगा। इसके कारण लोगों में अंधविश्वास बढ़ गया। इसके बारे में अपने विचार डॉ.कमल गुप्ता ने इस तरह व्यक्त किए है- "सामंतों का दृष्टिकोण परस्परवादी रहा। कुत्सापूर्ण एवं पापमय जीवन जीने के कारण उनके मन में ईश्वरीय भय भी विद्यमान था और यही भय विभिन्न देवी देवताओं की मान्यता एवं भूत प्रेतों के प्रति विश्वास के रूप में जब तब प्रकट भी हुआ करता था। ग्रामीण समाज में अशिक्षा और अज्ञान के कारण रुढ़ियों की चिंतनहीन स्वीकृति वहाँ की सामाजिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक व्यधि हैं।"**(108)**

आज धर्म एक समस्या के रूप में हमारे सामने उभर कर आया है। ममता कालिया ने निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से अपनी कृतियों में धार्मिक परिवेशगत यथार्थ का चित्रण अपनी कहानियों के माध्यम से प्रकट किया है।

(i) अंधविश्वास:

भारत धर्म, रूढ़ि, परंपराओं का देश है। यहाँ विभिन्न धार्मिक रीति, रिवाजों और परंपराओं को आस्था और विश्वास के साथ निभाया जाता है। यहाँ धर्म को पूजनेवाले

श्रद्धालु भक्त भी है और धर्म की आड़ में झूठ फरेब करनेवाले दंभी और पाखंडी पुजारियों की भी कमी नहीं है। प्राचीनकाल में धर्म का इतना विकृत रूप नहीं था। जीतना आज दिखाई देता है।

साहित्यकार समाज को खुली आँखों से देखता है। वह धर्म की विकृतियों को समझता है और उन सबकी अभिव्यक्ति अपने साहित्य में करता है। यहीं कारण है कि साहित्य समाज का ही प्रतिबिम्ब हैं। ममता जी की 'मेला', 'कवि मोहन', 'राजू' नामक कहानियों में धार्मिक परिवेश की विकृतियों का यथार्थ अंकन किया गया है।

ममता कालिया की 'मेला' नामक कहानी अंधविश्वास को रेखांकित करती है। धार्मिक स्थलों पर साधु, संत एवं पंडे भक्त को किस प्रकार ठगते है इसका अति यथार्थ परक चित्रण इस कहानी में दृष्टव्य है- "सबने हिसाब मिलाया सबके चेहरों पर बदहवासी। पंडे से लेकर नाववाले तक ने लूटा, बचा-खुचा गंगा मैया ने। डुबकी लगाई, गले से कंठी गायब। कहाँ गई, कुछ खबर नहीं। कोई अचक से उतार के गया। हवा से भी हल्का हाथ रहा उसका। रटप क्या लिखाएँ। कुछ पता हो तब न। कहाँ, गिरी, किसने छीनी। करमाँ दियाँ गल्लाँ। लाल सड़क पर स्वामी सुरेशानंद के शिबिर के बाहर एक औरत बिलख-बिलखकर रो रहीं है। नाम अमरा, जिला जालौन। पति साथ आया था। कल की छकापेल में बिछड़ गया। जमा-पूजाँ सब उसी के पास है।"**(109)**

'राजू' नामक कहानी में अंधश्रद्धा एवं अंधविश्वास को दिखाया गया है। राजू की माँ शादी के तुरंत बाद विधवा हो जाती है। तथा वह अपने बेटे राजू की आँख का इलाज करवाने हेतु गलत दवा का उपयोग करती है। इसी कारण राजू की एक आँख खराब हो जाती है। इस वजह से राजू की माँ को सभी लोग अपशकुनिया कहते है। राजू और उसकी माँ जब भाई की शादी में जाते है तो वहाँ उपस्थित सभी औरते राजू को मनहूस समझती है। उसकी मौसी के

विचार इस प्रकार है। "बाह्य शादी के मेले-ठेले सुहागिनों के होते हैं, कोई दूध पीती बच्ची तो हो नहीं जो कायदा समझाया जाये।"**(110)** लोगों की बातों को सुनकर नानी भग्गो का हाथ पकड़कर एक अंधेरी कोठरी में उन दोनों को बैठा देती है और कहती है- "मैं यहीं मिठाई भेज रही हूँ भग्गो तु आराम कर ले दो घडी।"**(111)** इस प्रकार खुद भग्गो के परिवार वाले भी उसका तिरस्कार करते हैं।

'लड़के' नामक कहानी में भी गंगास्नान का विकृत रूप दिखाया है। कॉलेज के लड़के जब हड़ताल करना चाहते है तब वे गंगास्नान से उसकी शुरूवात करना चाहते है। क्योंकि उनके अनुसार कोई भी अच्छा काम गंगा मैया की पूजा से शुरू होता है। इस संदर्भ में उदाहरण इस प्रकार है। "तय हुआ कि बाकायदा गंगा-स्नान के बाद नारियल तोड़कर हड़ताल का श्री गणेश किया जाए। फूलमालाएँ गले में डाल एक गट कुलपति का घेराव करे और दूसरा कक्षाओं का बहिष्कार। शहर के हर कार्यकलाप में गंगा-स्नान का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान था। अगर शहर में नदी न होती तो शहर के लोग अपना दिन कैसे शुरू करते कहना मुश्किल था लोगों का कहना था कि जिसने जो चाहा, गंगा भाई ने बक्शा था। इसलिए सुबह चार से आठ बजे तक यह शहर ताबड़तोड नहाता था।"**(112)**

इस कहानी में हमे अति यथार्थ का रूप देखने को मिलता है। आज के युवा विद्यार्थी गंगा के पवित्र जल का प्रयोग अच्छे कामों के लिए न करके हड़ताल जैसे बुरे कामों के लिए करते हैं।

इस प्रकार ममता जी ने धार्मिक रूढ़ियों, अंधविश्वास, गंगास्नान के समय पंड़ों द्वारा भक्तजनों को लूटना धर्म के नाम पर पैसा ऐंठना, धर्म के नाम पर झगड़े करना, धर्म का आधार लेकर नौकरीयाँ पाने की इच्छा रखना, अंधविश्वास के कारण रिश्तों में दरार आदि समस्याओं का चित्रण उपयुक्त कहानियों में प्रस्तुत की गयी है।

(ii) ज्योतिष:

समाज में आज भी पड़े लिखे लोग ज्योतिषी पर विश्वास करते है। स्वयम् अपने आप में कामयाबी हासिल न करने की क्षमता उन्हें इन बातों पर विश्वास करने को मजबूर करती है। इसी बात को ममता जी ने अपनी कहानी 'लकी' में दिखायी है। प्रस्तुत कहानी का नायक अंग्रेजी भाषा का अध्ययन न कर पाने के कारण अच्छी नौकरी हासिल नहीं कर पाता और पीछे रह जाता है। वह हमेशा अखबारों में अपना भविष्य फल देखता है। इन सब बातों पर वह विश्वास कर दूसरों को भी सलाह देता हैं। उसे यह लगता है कि भविष्यवाणी, एवं, ग्रह ही जीवन का विग्रह समाप्त करते है। जब नायक को नौकरी मिलती है तो "वह अपने ओवरटाइम के पैसों में से ज्योतिष की किताबें खरीदता है और दफ्तर में इनका अध्ययन करता रहता है। कभी राशी-चक्र बनाकर उसे घूरता तो कभी नम के बारे में जानकारी हासिल करता। दफ्तर के बाबू और चपरासी उसे छोटा-मोटा ज्योतिषी ही मानने लगे थे। वे साइन निकलवाने उसके पास बैठे रहते। लकी दफ्तर में किसी को परेशान देखता तो उसके मुँह से अपने आप निकल जाता, सब ग्रहों का चक्कर है।"**(113)**

(iii) ईश्वर के प्रति आस्था:

वर्तमान युग में ईश्वर के प्रति विश्वास कहीं न कहीं गुम हो गया है। आजकल ईश्वर के प्रति पूजा पाठ हर एक 'फॅशन' के रूप में हम देख सकते है। दूसरा व्यक्ति पूजा अर्चना करता है इसलिए हम भी ईश्वर के प्रति आस्था का अनुभव करते है भले ही हमे इसपर विश्वास हो या न हो। पहले के प्राचीन काल में ईश्वर के प्रति गहरी आस्था को हम देख सकते है। सुबह काम पर निकलने से पहले भगवान की पूजा किये बिना कोई घर से बाहर पैर नहीं रखता था। लेकिन आजकल हम भगवान से मन्नत माँगते है कि हमारा कोई काम सफल हो गया तो हम कोई भेटवस्तु चढ़ा देंगे। भगवान को अपने काममात्र ही समझा

जाता है। ईश्वर के नाम पर कई डोंगी बाबा दुसरों को लुटने का प्रयास करते हैं। भगवान को मध्य नजर रखते समाज में कई कुरितियों को हम देख सकते हैं। इसी बात को ममता जी ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है जो इस प्रकार है।

ममता जी की 'मेला' कहानी में चरनी मासी को ईश्वर में अटूटश्रद्धा थी। वे किसी को दूखी नहीं करना चाहती, "स्टेशन से चौक के, रिक्शेवाले ने माँगे चार, मासी ने दे डाले पाँच रूपये। तीरथ पर आयी हैं, किसी का दिल दुखी न हो। पुन्न कमालें। इतनी ठंड में दो सवारी खींच कर लाया है रिक्शे वाला।"**(114)** उनका भांजा सत्यप्रकाश जब घर में उनके रहने की व्यवस्था करता है। तब वे कहतीं हैं- "तीरथ करने निकली हैं, गृहस्थ विच नहीं रहना।"**(115)** सत्यप्रकार जब मासी से पूछता है कि वे तीरथ पर क्यों निकली हैं। वे कहती हैं- "ले मैं क्या पहली बार निकली हूँ। सारे तीरथ कर डाले, मैंने, हरिद्वार, ऋशिकेश, बद्रिनाथ, केदारनाथ, पुष्करजा, गयाजी, नासिक, उज्जैन। बस प्रयाग का यह कुंभ रह गया था, वह भी पूरा हो जायेगा।"**(116)** चरनी मासी के अनुसार तीर्थ-स्थल पर पाप धोने के लिए जाते है लेकिन उन्होंने कोई पाप नहीं किया बल्कि अनजाने में जो पाप हो जाता है उसी दूर करने हेतु वह तीर्थ स्थल जाती हैं।

'फर्क नहीं' कहानी में मुन्नी की माँ सत्संग में जाती हैं। लेकिन जब घर में वह पूजा-पाठ करती है वह सिर्फ उनकी समस्याओं से छुटकारा पाने का एक माध्यम था। वह उनके परिवार की सबसे असहमत इकाई थी।मुन्नी अपनी माँ के संबंध में कहती है- "उनका पूजा-पाठ व सत्संग इसी असहमति से शुरू होता है। वर्षी उन्होंने अपने प्रश्नों के उत्तर पिताजी से चाहे थे, अब वह अपने सब सवालात दूसरे सदन में ले गयी थीं।"**(117)**

'खानपान' कहानी में मीनाक्षी की दादी को पूजा पाठ और ईश्वर में बहुत अधिक आस्था थी। मीनाक्षी के अन्य परिजनों की आस्था पूजा-पाठ में न होने पर भी वे दादी को

प्रसन्न दखने के लिए पूजा आदि धार्मिक कार्य करते हैं। मीनाक्षी ने भी "हनुमान चालीसा इम्तहान के दिनों में रट ली थी और घर में जब-जब सुंदरकांड का पाठ रखा जाता, वह उसमें एकाध घंटा बैठकर दादी को खुश कर देती।"**(118)**

'पचीस साल की लड़की' कहानी में मिसेज शर्मा पूजा-पाठ, व्रत-उपवास करती नारी है। उन्हें अपने पूजा-पाठ पर अटूट विश्वास है। वे इसे अपनी सुरक्षा का अचूक माध्यम समझती है। वे अपने पति के ऑफिस में काम करने वाली लड़की को शक से देखती है। जब वह लड़की उससे चाय के लिए पूछती है तो वह सगर्व कहती है- "मेरा व्रत है"**(119)**

कहानी 'दूसरा देवदास' में स्त्रियाँ आरती से पहले स्नान कर रही थी। बस उन्होंने तट पर लगे कुण्डों से बंधी जंजीरें पकड़ रखी थी। हर-हर बहता गंगाजल, निर्मल, नीला निष्पाप स्त्रियों के लिए श्रद्धेय था। पण्डे औरतों के माथे पर सिंदूर का टीकै लगा देते। यहाँ कोऔ पहला पोता होने की खुशी में आरती करवाती है, काई बहू आने की खुशी में। "औरतें ज्यादातर नहाकर वस्त्र नहीं बदलतीं। गीले कपड़े में ही खड़ी-खड़ी आरती में शामिल हो जाती हैं।"**(120)** इस कहानी में एक आधुनिक लड़की भी पूजा में विश्वास रखती है और वह आँख मूंदकर पूजा-अर्चना करती हैं।

'एक अकेला दुःख' कहानी में मीना बेटे और ननद नीता के आने पर भी अस्पताल में बैठी चुपचाप शून्य में ताकती रही। तब नीता कहती है भाभी तुम क्या सोच रही हो। तुम उठकर न मुझ तक आई न गुड्डू तक। उसने कहा-"मैं दुर्गा स्पतशक्ति का पाठ कर रहीं था, देवी माँ जो चाहें करें।"**(121)** नीता स्तंभित देखती रह गयी। उस स्त्री को जिसकी माँग में भाई का दिया सिंदूर और चूड़ियाँजगमगाती रही थी। इतनी ठंडी निर्विकारिता दुर्गा सप्तशती के पाठ से उपजती है तो वह कल से ऐलान कर देगी घर-घर में द्रोही पैदा हों। नीता

स्वयं एक आस्तिक स्त्री है। लेकिन उसे भाभी का पूजा के माध्यम से विद्रोह असहनीय लगा।

'बाथरूम' कहानी में कांता की बीच वाली जेठानी बीमार होने पर भी नेम धरम से ही ठाकुरजी की पूजा कर अन्न-जल जल छूती।तेज बुखार होने पर वह कहती है-ठीक है फिर कोई मेरे मुँह में न दवा डाले न दाना। मेरा नेम न बिगाड़ना। जब कान्ता उसका पूरा शरीर स्पंजिंग से स्वच्छ कर देती है तब वह खुशी-खुशी पूजा कर पथ्य और दवा लेती है। उसकी जिद के कारण बड़ी जेठानी तनाव-ग्रस्त थीं कि "बिचली अपनी जिद में कहीं प्राण न दे दे, जिद्दिन जो ठहरी"**(122)** इस तरह के पात्र परंपरागत रूप से चले आ रहे पूजा-पाठ, व्रत उपवास जैसी रीति-रिवाजों को लेकर इतने भयभीत हैं कि स्वयं मृत्यु के निकट होने पर भी इनका पालन करते दिखाई देते हैं।

'पर्याय नहीं' कहानी में नायक डॉ.सुनील एवं उनकी पत्नी डॉ.नीना दोनों पेशे से डॉक्टर है। डॉ.सुनील भगवान पर आस्था रखता है और उसी के सहारे मरीजों का इलाज करता है। डॉ.नीना नास्तिक है वह इन बातों पर विश्वासनहीं रखती है। लेकिन जब उनकी बेटी नमिता बीमारर थी तब वह भगवान पर विश्वास करने लगती है। भगवान के प्रति उनकी अनास्था इस वाक्य से दृष्टव्य है। "फिर डॉक्टर की क्या जरूरत है, इलाज भगवान ही किया करे।"**(123)**

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ममता कालिया के पूरे कथा-साहित्य में पुरूष कहीं भी भगवान के प्रति अनास्था नहीं दिखा रहे है बल्कि वे तो अपना सारा भार स्त्रियों पर डाल स्वतंत्र हो जाते हैं। उन्हें ऐसा लगता है यदि पूजा-पाठ, उपवास नहीं किये गये तो उनके जीवन में कुछ बुरा हो जाएगा। इसलिए अपने मन में आस्था का भाव लेकर भगवान की पूजा अर्चना कर भगवान की कृपा पाने की इच्छा आज हर एक व्यक्ति को है।

3.51 सांस्कृतिक परिवेशगत यथार्थ

'संस्कृति' शब्द का अर्थ 'परिस्कृत' या 'सुरूचि' कहा जाता है। 'संस्कृति' का अर्थ जीवन की अनेक उपलब्धियाँ भी मानी जा सकती है। जैसे कि साहित्य, कला, संगीत आदि सभी में 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग किया गया है। मानव के आचार-विचार, चिंतन एवं मनन को भी संस्कृति का दर्जा दिया गया है। टेला की एक प्रसिद्ध परिभाषा इस प्रकार है-

"संस्कृति में वे सब विशिष्टताएं सम्मिलित हैं जो कि मानव ने सामाजिक सदस्य के रूप में उपर्जित की है जैसे, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून रिवाज आदि।"**(124)** संस्कृति समाज में हर मनुष्य के जीवन को उन्नति के रास्ते ले जाने वाली एक व्यापक अवधारणा है। सांस्कतिक चेतना की विशाल पृष्ठभूमि 'दिनकरजी' के शब्दों में प्राप्त होती है। वे लिखते हैं-"संस्कृति जिंदगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज में हम जी रहे हैं, उसकी संस्कृति हमारी है.....संस्कृति हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है।"**(125)** इसमें हमारे दैनिक व्यवहार, कला, साहित्य, मनोरंजन, धर्म, आनंद आदि में पाये जाने वाले रहन-सहन और विचारों का प्रकाशन होता है।

भारतीय संस्कृति को अगर देखा जाय तो वह बड़ी जटिल है, जिसे समझना मुश्किल है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह धर्म को अधिक महत्व देती है। आने वाली हर एक पीढ़ी संस्कृति से कुछ न कुछ पाती है। मनुष्य अपनी प्रवृत्तियों को परिवेश के अंतर्गत ढ़ालता है। यह संस्कृति के कारण ही हो सकता है।

"आज के युवकों के समक्ष जीवन का कोई सामना, लक्ष्य नहीं है। संस्कारों का आधार खोखला होता जा रहा है। हिसां और अहिंसा में अंतर नहीं कर पा रहा है। साथ ही

आज की युवा पीढ़ी की सहनशक्ति धीरे-धीरे खत्म हो रही है, छोटी से छोटी बात पर वह क्रूर व हिंसक हो उठता है, सुख व शांति दोनों ही उसके जीवन से समाप्त होने लगे। हमें इन मूल कारणों को जानना होगा क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों को जाने बिना परिवर्तन असंभव है। यह समस्या एक भयानक समस्या है, मनोवैज्ञानिक तौर पर विचार करें तो सबसे पहले मन में आयेगा युवकों की बेरोजगारी। ऊँची डिग्री प्राप्त करने के लिए वे कठोर परिश्रम करना सीख जाते हैं, शिक्षा के दौरान सपने, उम्मीदें तथा कुछ करने का हौसला उनके तन-मन में रच बस जाता है। लेकिन शिक्षित होने के पश्चात्य मिलती है, नौकरी की तलाश में इधर-उधर की भटकन योग्य होने के बावजूद उन्हें नौकरी नहीं मिल पाती, ऐसी स्थिति में आसपास के लोगों की उपेक्षा, तिरस्कार स्वयं के सपनों को पीड़ा साथ ही भावात्मक तथा भविष्य की असुरक्षा की चिंता से उत्पन्न निराशा, कुंठा आदि उन्हें आतंक फैलाने पर विवश करते हैं।"**(126)** सांस्कृतिक परिवेशगत यथार्थ में निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जाएगा-

(i) परोपकार:

परोपकार शब्द पर+उपकार से बना है। इसका अर्थ है दुसरों की सहायता करना। समाज में परोपकार हमें हर जगह देखने को मिलता है। पहले के जमाने में व्यक्ति व्यक्ति के बीच एक दूसरे के प्रति सहारा, मदत करने की भावना थी। लेकिन आज के आधुनिक युग में परोपकार समाप्त होता दिखाई देता है। हर एक व्यक्ति के भीतर स्वार्थ भावना उत्पन्न होने के कारण वह दूसरों के प्रति घृणा अपने मन में रखते हैं। इसी का यथार्थ चित्रण ममता जी ने अपनी 'आलमारी' नामक कहानी में चित्रित किया है।

'आलमारी' नामक कहानी की नायिका एक स्कूल में पढ़ाती है। वह अपने घर में रखी आसमारी को बेचना चाहती है क्योंकि घर में जगह की कमी थी। लेकिन उसकी

परोपकारी वृत्ति उसी स्कूल के नौकर की बात सुनकर बदल जाती है। जब वहकहता है कि उसकी बेटी की शादी कर रहा है। इस बात को सुनकर नायिका अपने घर की आलमारी को उसे मुक्त में देना चाहती है। और वह कहती है- "बस आलमारी की ही कसर है न भगवती? ले जाओ हमारी आलमारी और हाथ पीले कर दो अपनी बिटिया के। तुम भी क्या याद करोगे कि कोई शर्मा गुरूजी थी।"**(127)**

(ii) मान-मर्यादा और सम्मान:

जैसे-जैसे शिक्षा के कारण मनुष्य उन्नति करने लगा वैसे वैसे वह एपने आस पड़ोस, घर-परिवार, बड़े-बुढ़ों का मान, सम्मान करना भुल ही गया। देखा जाये तो समाज के हर एक कार्य क्षेत्र में दूसरों के प्रति सम्मान नष्ट हो गया है। हम दूसरों के सुख, दुख, पीड़ा को जाने बिना ही इसका उल्लघन भी करते है या दूसरों के प्रति हीन भावना रखते हैं। इसी बात को ममता जी ने अपनी 'बसंत सिर्फ एक तारीख' नामक कहानी में एक अध्यापिका के माध्यम से बताया है। वह अध्यापिका जो अपने गर्भावस्था के अंतिम चरण में है वह जब अपने प्राचार्या जो एक स्त्री है और स्त्री का सम्मान नहीं करती बल्कि जब अध्यापिका छुट्टी माँगने लगती है तो उसे साफ इन्कार कर देती है। प्राचार्या उस अध्यापिका के मान-मर्यादा का ध्यान न रखते हुए कहती है। "इस्तीफा दे दो। तुम्हारी भी मुश्किल दूर हो जाएगी, हमारी भी। ठीक है न? भई, हम तो साफ बात करते हैं। अब मार्च के महीने में लड़कियों की पढ़ाई कैसे हर्ज कराँएगे? यही तो कोर्स खत्म करने के दिन है। फिर इम्तहान का काम सर पर है। तुम्हारे बस का नहीं अब पढ़ाना-बढ़ाना। इस वक्त क्या कोई क्लास नहीं है?"**(128)**

(iii) मानवता:

मनुष्य में मानवता अगर खत्म हो जाती है तो मनुष्य मनुष्य न रहकर वह हैवानियत पर उतर जाता है लेकिन मानवता के नाम में आज किस तरह एक दूसरे को ठगा

जाता है, लुटा जाता है यह हम भली-भाँति जानते है। लेकिन समाज में ऐसे भी लोग बचे हैं जिनमें मानवता आज भी दिंदा है। इसी को ममता जी ने अपनी कहानी 'शॉल' में बताया है। इस कहानी में मानवता आज किस तरह खत्म हो रही है इसका यथार्थपरक रूप हमें इस कहानी में देखने को मिलता है। शिक्षित लोग भी जब दूसरों के प्रति तुच्छ भावना अपने मन में रखते हैं इसका यह बहुत ही अच्छा उदाहरण है। ननकी नामक स्त्री एक स्कूल में नौकरानी का काम करती है सभी की अच्छी सेवा करती है। इस बात पर बड़ी बहनजी सभी अछ्यापिकाओं से पैसा इकट्ठा कर उसे शॉल दिलवाती है। तो सभी उस घृणा की दृष्टि से देखते है और ताने देते हैं। यह हमें इस वाक्य से पता चलता है जब तिवारी बहनजी उसपर बरसने लगती है- "यह मेज साफ की है, तुमने नीचे जाले ही जाले लगे हैं, कुर्सी पर इतनी धूल है, मेरी सारी साड़ी खराब हो गयी। तुम्हें तो नया शॉल पहनकर बड़ी अकड़ हो गयी है, सफाई का काम मेरा है या तुम्हारा?"**(129)**

इसप्रकार आज हमारे समाज में संस्कृति किस प्रकार खत्म हो रही साथ पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण हर व्यक्ति अपने अस्तित्व को खो चुका है, सही और गलत में अंतर करना नहीं आता इसे ममता कालिया ने अपनी कहानियों में उभारा है और उसपर प्रहार किया है।

3.6 शैक्षिक परिवेशगत यथार्थ

शिक्षा का अर्थ है, "सीख, विद्याप्राप्ति, उपदेश, ज्ञान।"**(130)** सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य, व्यक्तित्व का सम्यक् विकास होता है। इसके आधार पर शिक्षा का उद्देश्य यह है कि हमारे देश के युवा अपने अस्तित्व को पहचान अर्थात अपने मन, बुद्धि और कर्म को ही सही दिशा में प्रवृत्त करने की क्षमता प्राप्त

कर सके और वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार अपना जीवन अधिकाधिक सार्थक बना सके। प्राचीन काल में गुरूकुल पद्धति के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की जाती थी। विद्यार्थियों के मन में अपने गुरूजनों के प्रति आदर भाव था लेकिन आजकल यह भावना बिल्कुल अदृश्य हो रही है। आज शिक्षा प्राप्त करना मतलब ट्यूशन फीस आदि जमा करना। विद्यार्थी तो परीक्षार्थी बन गया है। ममता जी ने अपनी कहानी साहित्य में वर्तमान शैक्षिक परिवेश और उसमें होनेवाले भ्रष्टाचार को सामने लाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने समाज के सामने यह प्रश्न खड़ा किया है कि आज हमारे समाज में कौन आदर्शवादी रह गया है। यदि एक भी लोग उन्हें आदर्शवादी रहने नहीं देते। वह मजबुर होकर अपना रास्ता बदल लेते है। शिक्षा से जुड़ी हुई कई समस्याओं को ममता जी ने अपने साहित्य में चित्रित किया है जैसे लड़के के द्वारा लड़कियों की छेड़खानी, विद्यार्थियों द्वारा अध्यापकों की छेड़खानी और शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार आदि।

शिक्षा को ज्ञान का मंदिर समझा जाता है लेकिन इस ज्ञान रूप मंदिर में कुछ स्वार्थी, मतलबी और लालची अध्यापकों ने इस व्यवस्था को प्रदुषित किया है। ममता जी समाज के शिक्षा क्षेत्र में कैसे भ्रष्टाचार को रोकना चाहती है। अध्यापक बच्चों के भविष्य के निर्माता होता है जब निर्माता ही बिगाडने वाला हो तो देश का भविष्य कैसे उज्जल होगा। यदि कोई इसे सुधारना भी चाहता है तो उसे इतना तंग किया जाता है कि वह भी हताश होकर हथियार डाल देता है।

ममता जी ने अपनी कहानियों में भी इसी समस्या को चित्रित किया है। उनकी 'नायक' कहानी इसी समस्या को दर्शाती है। इस कहानी के अध्यापक डॉ.मोहन दीक्षित(एम.डी) आदर्शवादी होने का ढोंग करते है। कुछ अध्यापक स्कूल के विद्यार्थियों को गुमराह करने की कोशिश करते हैं। अध्यापक डॉ.मोहन विद्यार्थियों को गुमराह करते हैं

और इसी कारण से छात्र वरिष्ठ प्रो.नित्यानंद का घेराव तक कर डालते है। वे कॉलेज के डीन भी है छात्र उन्हें तेरह घंटे बंधी बनाकर रखते। कहानी का नायक डॉ.मोहन के विचारों से प्रभावित होता है। जब उसके माता-पिता से पूछते है कि तुम स्कूल में अध्यापकों के साथ इस तरह का व्यवहार क्यों करते हो तो वह उन्हें छिड़क देता है। मोहन दीक्षित जैसे अध्यापक के विचारों से प्रभावित होकर वह उनके साथ दक्षिण यात्रा पर जाता है। लेकिन जब नायक के समक्ष डॉ.के विचारोंमें कथनी और करनी का अंतर देखकर उसे घोर दुख होता है। और वह स्कूल छोड़कर अपने घर वापस आता है। उदाहरण- "मैं जानता हूँ तुम किस क्षेत्र की बात कर रहे हो। वह क्षेत्र तो एम.डी ने बरसों से चुन

रखा है। न जाने क्यों वह छात्रों को बरबाद करने पर तुला है। ये सब बातें वह छात्र जीवन में भी किया करता था।"**(131)**

"और इन सबको लेकर वे क्या कर रहें हैं? वे इन्हें बगावत सिखा रहे हैं। कभी आप लोगों ने सोचा है कि जो बगावत सिखा रहा है वह खुद कितना बागी या त्यागी है?"**(132)**

'फर्क नहीं' कहानी में मिसेज चण्डोक को छात्राएँ क्यों और कैसे सताती है इसका चित्रण किया गया है। वह अपनी लड़द्ध काया कुर्सी में पसार कर सपाट, बेजान और भौंडे उच्चारण के प्रयोग करके जायसी के पद पढ़ाती थी। नायिका कहती है- "इसी तरह वह हमारी 'इंद्रियों' पर जुर्म करती और नज़र उठाकर सबको संबोधित करती, इसके अलंकार बताओ? माया इसमें कौन सा रस पैदा हुआ है? एक बार सुलक्षणा ने बैठे-बैठे ही कह दिया था, गन्ने का रस।"**(133)** मिसेज चण्डेक ने वह सारी क्लास आचरण-संबंधी नियमों को बताकर बिता दी। घर से बाहर निकलने के लिए लड़कियाँ पढ़ाई को एक बहाना बनाती थी। यहाँ तक कि कुछ लड़कियाँ सिर्फ शादी नहीं होती तब तक क्या करें यहीं सोचकर पढ़ाई करती।

ममता जी की 'कवि मोहन' नामक कहानी में ममता जी ने आर्थिक समस्या न होते हुए भी विद्यार्थी को जबरदस्ती पढ़ाई करने से रोकना इसका चित्रण यथार्थ रूप में ममता जी ने लिखा है। कवि मोहन के पिता जब सुनते हैं कि- "अब इस महीने से फीस छह की जगह साड़े सात रुपये जाया करेगी तो फौरन मुनादी कर

दी, जाओ, कह दो अपने प्रिंसिपल से हमें नाम पढ़वानौ छोरा। सारी उमर फीस भेंटगे हम और यह ससुरा बी.ए पास कर कुर्सी तोडेगौ।"**(134)** इस तरह पिता की जिद बेटे के जीवन एवं उसके विकास में बाधक बन सकता है इसका यथार्थपरक चित्रण ममता कालिया इस कहानी में करती है।

'लड़के' नामक कहानी में युवा वर्ग की शिक्षा के प्रति भ्रष्ट मानसिकता के संदर्भ में कुछ 'विशेष' करने हेतु तथा कॉलेज में बिना वजह हड़ताल को मनोरंजन का साधन बनाने वाले लड़कों के गिरते नैतिक मूल्यों को उजागर किया है। उदाहरणः "वह मारा, हाँ हड़ताल से कुछ होगा। दो लड़के एक साथ बोले, बाय, गॉड, हड्डियाँ जाम हो गयी हैं क्लास में बैठे बैठे।"**(135)**

इस प्रकार ममता कालिया ने अपने साहित्य में थोड़ी बहुत मात्रा में क्यों न हो राजनीतिक समस्या का चित्रण किया है। परंतु उससे ही राजनीतिज्ञों की स्वार्थी, वृत्ति, जनता की समस्याओं की ओर ध्यान न देने की वृत्ति, विद्यार्थीयों की एवं अध्यापकों की भ्रष्ट मानसिकता दिखाई देती है।

निष्कर्षः

ममता कालिया एक संवेदनशील साहित्यकार रही हैं। दिल्ली, मुंबई जैसे बढ़े शहरों में रहने के कारण उन्होंने समाज को अत्याधिक सूक्ष्म दृष्टि से देखा है। समाज के लोगों की समस्याओं पर भी उनका ध्यान गया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में उन समस्याओं को

उद्घाटित भी किया है। सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत दहेज, नैतिक मूल्यों का पतन, मकान की समस्या आदि समस्याओं को

ममता जी ने कुशलता के साथ यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। पारिवारिक समस्याओं में रिश्तों में दरार, स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण, अनमेल विवाह आदि का चित्रण किया है आर्थिक समस्याओं के रूप दिखाते है महँगाई, बेरोजगारी आदि को दर्शाया है। धार्मिक समस्याओं में अंधविश्वास, ज्योतिष, ईश्वर के प्रति आस्था अनास्था आदि का यथार्थ चित्रण किया है। इसी के साथ सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं अपनी साहित्यकृतियों में राजनीतिक समस्याओं को भी दर्शाया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ममता जी सभी प्रकार की समस्याओं का यथार्थपरक चित्रण करने में सफल बनी हैं।

संदर्भ-सूची

1. नेमिचंद जैनः बदलते परिप्रेक्ष्यः पृ.124
2. हेतु भारद्वाजः परिवेश की चुनौतियाँ और साहित्यः पृ.10
3. शालिनी एन.सीः भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित भारतीय

सामाजिक और राजनैतिक परिवेशः पृ.111

4. सुरेश छींगडाः हिंदी कहानी –दो दशकः पृ.16

5. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.54

6. ममता कालियाः छुटकारा,(कहानी संग्रह) पृ.49

7. विजय पड़ोडेः जैनेंद्र के उपन्यास-साहित्य में स्त्री-पुरूष संबंधः पृ.171

8. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.169

9. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.33

10. ममता कालियाः खुशकिस्मत (कहानी-संग्रह) पृ.102

11. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.289

12. ममता कालियाः उसका यौवन (कहानी संग्रह) पृ.121

13. ममता कालियाः उसका यौवन (कहानी संग्रह) पृ.105

14. ममता कालियाः उसका यौवन (कहानी संग्रह) पृ.106

15. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 2 पृ.309

16. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 2 पृ.310

17. ममता कालियाः पचीस साल की लड़कीः पृ.134

18. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.34

19. आनंद शर्माः उपन्यासकार कमलेश्वर समाजशात्रीय निकषः पृ.240

20. ममता कालियाः जाँच अभी अभी जारी है(कहानी संग्रह) पृ.42

21. ममता कालियाः जाँच अभी अभी जारी है(कहानी संग्रह) पृ.68

22. ममता कालियाः जाँच अभी अभी जारी है(कहानी संग्रह) पृ.122

23. ममता कालियाः जाँच अभी अभी जारी है(कहानी संग्रह) पृ.113

24. ममता कालियाः जाँच अभी अभी जारी है(कहानी संग्रह) पृ.113

25. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.30

26. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.73

27. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.96

28. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.99

29. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.117

30. ममता कालियाः मुखौटाः ममता कालिया की कहानियाँ खंड-2 पृ.314

31. ममता कालियाः सीट नंबर छहः पृः135

32. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.67

33. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.39

34. सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा-साहित्य में
नारी-चेतनाःपृ.104

35. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.71

36. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.96

37. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.57

38. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.85

39. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.73

40. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.104

41. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.104

42. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.148

43. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.264

44. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.178

45. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.591

46. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.268

47. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.389

48. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.390

49. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.70

50. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.75

51. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.177

52. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.160

53. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.178

54. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.15

55. ममता कालियाः प्रतिदिन(कहानी संग्रह) पृ.104

56. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.73

57. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.205

58. ममता कालियाः खुशकिस्मतः पृ.100

59. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.73

60. ममता कालियाः दस प्रतिनीधि कहानियाःपृ.66

61. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.73

62. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.74

63. ममता कालिया की कहानियाँ खंड 1 उसका यौवन(कहानी संग्रह) पृ.338

64. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.52

65. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.52

66. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.75

67. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.75

68. ममता कालियाः बोलनेवाली औरत (कहानी-संग्रह) पृ.7

69. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी चेतनाः पृ.75

70. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.38

71. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.38

72. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.66

73. घनश्याम दास भुतड़ाः समकालीन हिंदी में नारी के विविध रूपः पृ.110-111

74. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.62

75. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.65

76. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.36

77. ममता कालियाः छुटकाराः पृ.46

78. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.70

79. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.81

80. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.160

81. ममता कालियाः सीट नंबर छहः पृ.54

82. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 2 पृ.226

83. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 2 पृ.211

84. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.173

85. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.216

86. डॉ.फैमीदा बीजापुरेः ममता कालियाः व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.197

87. डॉ.सानप शामः ममता कालिया के कथा साहित्य में
नारी-चेतनाः पृ.66

88. ममता कालियाः दस प्रतिनीधि कहानियाः पृ.39

89. डॉ.ज्ञानवती अरोड़ाः समकालीन हिंदी कहानी-यथार्थ के विविध आयामः पृ.44

90. डॉ.ज्ञानवती अरोड़ाः समकालीन हिंदी कहानी-यथार्थ के विविध आयामः पृ.47

91. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.97

92. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.150

93. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.103

94. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.129

95. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.129

96. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.125

97. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.12

98. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.25

99. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.82

100. ममता कालियाः दस प्रतिनीधि कहानियाँ: पृ.34

101. ममता कालियाः दस प्रतिनीधि कहानियाँ: पृ.34

102. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.131

103. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.129

104. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.92

105. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.91

106. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.82

107. डॉ.फैमीदा बीजापुरेः ममता कालियाः व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.197

108. डॉ.फैमीदा बीजापुरेः ममता कालियाः व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.197

109. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.25

110. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.59

111. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.53

112. ममता कालियाः दस प्रतिनीधि कहानियाः पृ.42

113. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.29

114. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.13

115. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.13

116. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.13

117. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतनाः पृ.88

118. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतनाः पृ.74

119. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.42

120. ममता कालियाः पचीस साल की लड़कीः पृ.63

121. डॉ.सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतनाः पृ.88

122. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ, खंड 1 पृ.417

123.ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.77

124.डॉ.ज्ञानवती अरोड़ाः मकालीन हिंदी कहानी-यथार्थ के विविध आयामः पृ.44

125.रामधारी सिंह दिनकरः संस्कृति के चार अध्यायः पृ.653

126.प्रो.दिनेशभाई किशोरीः हिमांशु जोशी की कहानियों के परिवेश का अनुशीलनः पृ.30

127. ममता कालियाः उसका यौवन पृ.100

128. ममता कालियाः दस प्रतिनीधि कहानियाः पृ.37

129. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.146

130. द्वारका प्रसाद (संपादक) हिंदी शब्दकोशः पृ.745-746

131. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.115

132. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.115

133. ममता कालियाः सीट नंबर छह पृ.75

134. ममता कालियाः प्रतिनीधिः पृ.70

135. ममता कालियाः खुशकिस्मतः पृ.71

4. ममता कालिया का उपन्यास साहित्यः परिवेशगत यथार्थ

वर्तमान युग में उपन्यास का बदला हुआ स्वरूप देखने को मिलता है। ममता कालिया एक अच्छी कहानीकार होने के साथ-साथ एक अच्छी उपन्यासकार भी है। उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज, परिवार से जुड़ी हर एक घटना का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। प्रारंभिक उपन्यासों और आधुनिक उपन्यासों का भेद बताते हुए प्रतापनारायण टंडन कहते हैं- "प्रांरभिक उपन्यासों के सीमित परिवेश को परिभाषा-बद्ध करना फिर भी उतना कठिन नहीं था, लेकिन आज का उपन्यास इतने जटिल और विस्तृत अनुभव क्षेत्र को आत्मसात किये हुए है उसके स्वरूप का स्पष्टीकरण बहुत निश्चित अर्थों में कर सकना सरल नहीं।"**(1)**

'उपन्यास' शब्द 'उप' तथा 'न्यास' के योग से बना है इनके अर्थ क्रमशः 'समीप' तथा 'वस्तु' है। इसप्रकार उपन्यास का अर्थ हुआ, 'समीप''रखी हुई वस्तु'। अंग्रेजी में इसे नॉवेल(novel) कहा जाता है।

साहित्यिक गद्य विधाओं में उपन्यास एक सशक्त विधा है। उपन्यास अपने साथ समस्त युग एवं काल को लेकर चलता है। जीवन की किसी समस्या को लेकर तदनुरूप, यह अपना रूप ग्रहण कर लेता है। इसके अनुसार ही उपन्यास के आकार तथा तत्वों का विकास होता है। उपन्यास, जीवन की परिस्थितियों एवं चिंताओं से युक्त जीवन को संपूर्ण रूप से अभिव्यक्त करता है। कोई भी उपन्यासकार जीवन के जीते-जागते चित्रों को प्रस्तुत करता है।

हिंदी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखा है कि- "मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"(2)

मनुष्य के जीवन की झाँकी पूरी तरह से प्रस्तुत करने के लिए उपन्यास विधा एक प्रभावी माध्यम है। जीवन के किसी भी अंग का चित्रण जितनी सफलता के साथ उपन्यास में हो सकता है, उतना अन्य किसी विधा में नहीं हो सकता। कोई भी उपन्यास कथावस्तु, गुण, पात्र तथा चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देश-काल, वातावरण, तथा भाषा-शैली आदि तत्वों के आधार पर लिखा जाता है। इलाचंद्र जोशी ने उपन्यास के तीन तत्व माने हैं- 'चरित्र', 'वार्तालाप'(विवेचनात्मक विवाद) और उद्देश्य। डॉ.धर्मवीर भारती उपन्यास की परिधि बहुत बड़ी मानते है । उनके अनुसार "मानव जीवन को उसके समग्र विस्तार में चित्रित करने की जितनी क्षमता उपन्यास में हैं, अन्य विधाओं में नहीं है। वे मानते हैं कि

उपन्यास उच्च कोटि के उपन्यास का गौरव तब ही प्राप्त कर सकता है जब उसमें मानवीय पक्ष सबल एवं सशक्त होता है।"(3)

ममता कालिया ने सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, राजनीतिक आदि परिवेश की समस्याओं के ममता कालिया ने एक-एक पहलू पर विचार किया है और उसे सही दिशा देने की कोशिश भी की है।

4.1 सामाजिक परिवेशगत यथार्थ

भारतीय समाज में विवाह को एक महत्वपूर्ण एवं पवित्र बंधन माना जाता है, जिसमें पति और पत्नी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उन दोनों में अगर सामंजस्य न हो तो उनके वैवाहिक जीवन में मतभेद, दरार आ सकती है। प्राचीन काल में बाल-विवाह आदि प्रथाओं का पालन किया जाता था। लेकिन आज समाज में शादी के नाम पर दिखावा, होने लगा है। विवाह को लेकर समाज में बहुत समस्याएँ उभरने लगी है जिसे ममता कालिया ने अपने उन्यास साहित्य में यथार्थ रूप से चित्रित किया है। इस पर निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर विचार किया जाएगा।

4.11 प्रेमविवाह:

प्राचीन काल में जीवनसाथी चुनने में माता-पिता एवं रिश्तेदारों का महत्वपूर्ण योगदान रहता था। लेकिन आज के समय में लड़का एवं लड़की अपना जीवनसाथी खुद चुनते हैं। अब हम विवाह को दो परिवारों के परस्पर आत्मीय संबंध न मानकर दो व्यक्तियों का मामला कह सकते है। इसीलिए समाज में प्रेमविवाहों की संख्या बढ़ रही है। लेकिन यह प्रेमविवाह सफल भी हो सकते है और असफल भी हो सकता है। 'नरक-दर-

नरक', 'प्रेमकहानी', 'एक पत्नी के नोट्स' आदि उपन्यास इसके श्रेष्ठ उदाहरण माने जा सकते हैं।

आधुनिक सोच के साथ, परंपरागत रूढ़ियों को दूर करके एवं जाति धर्म का भेद न करते हुए यदि प्रेमविवाह करें तो उसमें सफलता प्राप्त हो सकती है, लेकिन शारीरिक आकर्षण, जोश में आ कर माँ-बाप तथा समाज का विरोध कर तथा जल्दबाजी में अगर प्रेमविवाह होता है तो उसमें प्रायः असफलता मिलती है।

ममता जी के अधिकांश उपन्यासों में प्रेमविवाह जैसी समस्या को चित्रित किया गया है।

'नरक दर नरक' उपन्यास के अंतर्गत उषा और जगन के माध्यम से इस समस्या को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास का नायक जोगेंदर उर्फ जगन साहनी केड़िया कॉलेज में लेक्चरर है। उषा और जगन की प्रेम कहानी लिफ्ट में चुंबन के साथ शुरू होती है। लेखिका के अनुसार- "वे जीवन में काफी चौकन्ने रहे थे। फिर भी पता नहीं कैसे बड़ी जल्दी प्रेम उन दोनों के बीच घुसपैठ कर गया।"**(4)**

उषा का आकर्षक व्यक्तित्व की ओर जगन खींचता चला गया। इन दोनों ने कभी नहीं सोचा था कि वह पहली बार में ही हमेशा के लिए बँध जायेंगे। जगन विवाह को एक पतनोन्मुखी संस्था मानता था। जबकि उषा परिवार के सुख को ही सब कुछ समझती है। उन दोनों की पहचान सिर्फ तीन महीने पुरानी थी। अतः उषा प्रेमविवाह करती है लेकिन उसके परिवार वाले उसका विरोध करते हैं।

'प्रेमकहानी' उपन्यास में 'जया''गिनेस' के साथ प्रेमविवाह करती है। वह अपने माता-पिता की इकलौती लड़की थी। विवाह के बारे में उसकी सोच स्वतंत्र विचारों वाली रही है। लेकिन उसके परिवार वाले परंपरा एवं रूढ़िग्रस्त विचारों वाले होने के कारण उसका

विवाह अपने मनपसंद लड़के से करना चाहते थे। गिनेस के विषय में जब जया अपने पिता से कहती है तो वह इन्कार कर देते है। इतना ही नहीं वह 'चुप रह बदतमीज' वाला रवैया अपना लेते हैं। विद्रोही स्वभाव की होने के कारण वह, गिनेस से फिर भी प्रेम करती है। वह उससे कहता है- "लो, तुम इसके लिए आतुर भी और मैं तुम्हारे लिए।" आखिर परिवार वालों के खिलाफ वह रजिस्टर्ड मैरिज विवाह करती है। गनेस के प्यार ने, मेरा संसार बदल डाला कहने वाली जया उससे तंग आकर शिकायत करती है "प्रेम भी कर लिया शादी भी कर ली, पर एक भी बार न ताजमहल गए, न कश्मीर। न कोई फोटो खिंचवाई, न जेवर बनवाए।"**(5)**

'प्रेम कहानी' उपन्यास में दूसरी ओर 'यशा' (यशस्विनी) नामक स्त्री मुहम्मद
लड़के से प्रेम करती है लेकिन अपने माता पिता के अनुशासन में जीने वाली, सहमी, शांत स्वभाव वाली प्रेमविवाह करने का निर्णय नहीं ले पाती। यहाँ यशा के बारे में कहा जा सकता है कि वह विवाह के प्रति स्वतंत्रता चाहती है, लेकिन उसका विरोध न करने के कारण वह हार जाती है।

'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में ममता जी लिखती हैं- "जिन लोगों के जीवन में प्रेम और विवाह अकस्मात अनायास आते हैं।उन्हें उसके निर्वाह में उतनी ही सायास मेहनत करनी पड़ती है जितनी उन लोगों को, जिनके विवाह अखबारों के इश्तहार तय करते हैं अथवा रिश्तेदार।"**(6)**

यह बात जितनी नायिका कविता के लिए सच थी उतनी ही नायक संदीप के लिए थी।

जब वह, कविता को पत्नी के रूप में पा लेता है तो कविता के प्रति उसका प्रेम कम होने लगता है। वह उसे हर जगह अपमानित करता है। अखिल भार्गव(मित्र) के घर में जाने के बाद वह कविता से 'कॉमन बात' के बारे में कहता है कि "हमारे आपके बीच सबसे कॉमन

बात यह है कि हम लोगों ने एक ही आधार पर विवाह किया है प्रेम। आप दोनों ने भी प्रेम-विवाह किया है?" किंतु संदीप उसी बात पर कहता है "अब तो सिर्फ विवाह बचा है।"**(7)** इस प्रकार कविता अपनी जिंदगी से ऊब जाती है। अंत में उसे लगता है कि कैसे एक विकृत आदमी से उसने मुहब्बत की, जीवनसाथी बनाया और अपनी जिंदगी के अच्छे पल दांव पर लगा दिए।

'बेघर' नामक उपन्यास की नायिका संजीवनी और नायक परमजीत एक दूसरे से प्रेम करते थे। आम प्रेमी युगुल की तरह वह परमजीत से मिलने की कोशिश करती। लेकिन एक संभाव्य दुर्घटना का अनुभव भी संजीवनी को होता है, "परमजीत उससे शारिरीक संबंध बनाने का आग्रह करता है, गुस्सा किया और कभी न बोलने का डर दिया था संजीवनी ने बहुत मना किया, कई तरह के डर दिखाये, कितने ही बहाने बनाये, फिर वह नर्वस होकर काँप गयी।"**(8)**

एक और अन्याय जो संजीवनी को खा रहा था वह यह कि "उसने उस समय महसूस किया था कि परमजीत को भी उतना ही अच्छा लगा जितना उसे, पर अलग होते ही परमजीत ने उस स्मृति को बिल्कुल ही मिटा दिया था।.....वह परमजीत से एक लंबी बहस करना चाह रही थी।"**(9)**

बिना मौका दिए परमजीत संजीवनी को दुःख के सागर में डुबों कर रमा से शादी कर लेता है। परमजीत और संजीवनी का प्रेम-विवाह होने से पूर्व ही टूट जाता है।

अंततः इतना ही कहा जा सकता है कि ममता कालिया के अधिकांश उपन्यासों में प्रेमविवाह के उदाहरण मिलते हैं।

4.12 असफल प्रेमविवाह:

प्रेम, जो विवाह में बदल जाये वह सफल प्रेम कहा जा सकता है, जो प्रेम, विवाह का रूप न ले सके वह असफल प्रेम कहा जाता है, डॉ.किरणबाला अरोड़ा लिखती है-"असफल विवाह वहाँ माना जाता है, जहाँ पति-पत्नी में समझौते के बदले असहिष्णुता की भावना है या दोनों के अंह का टकराव है या फिर एक-दूसरे को झेलने की विवशता है या फिर घर बाहर की समस्या के कारण एक दूसरे के प्रति उपेक्षा की भावना है।"**(10)**

इस परिभाषा के अनुसार यह कहा जा सकता है कि आज बहुत सारे प्रेमविवाह असफल हो रहे हैं क्योंकि पहले एक-दूसरे पर मर मिटने वाले प्रेमी, शादी के बाद एक दूसरे पर ध्यान नहीं देते। जब उनके प्यार की रंगों भरी जिंदगी खत्म हो जाती है तब वह उनके गुणों एवं स्वभाव को जानने लगते हैं। डॉ.शशिकला त्रिपाठी का कहना है-"सच तो यह है कि पुरूष में स्त्री के प्रति प्रेम (आकर्षण) तभी तक होता है, जब तक वह पा न ले। पाने के बाद प्रेम ज्वार की तरह उतर जाता है।"**(11)** इसी कारण आज के युग में 90 प्रतिशत प्रेमविवाह असफल होते दिखायी देते है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में इस समस्या का सच्चाई के साथ चित्रण किया है।

ममता जी की 'प्रेम कहानी' उपन्यास की जया, कॉलेज में 'सागरपार छात्र समिति' की सचिव है। सागर-पार में गिनेस नामक एक युवक पढ़ने के लिए आता है। उसकी जया से पहचान हो जाती है। वह जया के सामने ब्याह का प्रस्ताव रख देता है। वह गिनेस के प्रस्ताव को स्वीकार कर, उससे रजिस्टर्ड मैरिज कर लेती है।

गिनेस रेजिडेंट डॉक्टर की हैसियत से अस्पताल में नौकरी करने लगता है जिसके कारण जया को वह समय नहीं दे पाता। वह गिनेस से शिकायत करती है, इसपर वह कहता -"प्रेम और प्रेमी इतने पिटे हुए शब्द हैं कि इनका कोई अर्थ नहीं बचा है। हम एक-दूसरे के लिए जरूरी है क्या यह काफी नहीं हैं?"**(12)**

जया का जीवन नीरस होने लगा। वह सोचने लगी कि काश! मैं तुम्हारी मरीज होती, तो कम से कम दिन में दो बार मेरा हाल पूँछने आते। जया अपनी मर्जी से प्रेम विवाह करती है। लेकिन वह असफल हो जाता है।

'एक पत्नी के नोट्स' संदीप और कविता के द्वारा उक्त समस्या का अच्छा उदाहरण दिया है। इसी के आधार पर वह-कविता को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करता है। कविता का भोलापन, उसका सौंदर्य, उसकी सहजता व सादगी, उसके चेहरे की तेजस्विता, कौमार्य की गरिमा तथा उसके अकेलेपन को देखकर संदीप उस पर मुग्ध हो जाता है और एक दिन उसे अपनी गाड़ी में लिफ्ट देता है। रास्ते में शेरों-ओ-शायरी और काव्यात्मक शैली के सहारे प्रभावित करता और उसे अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहता है- "किसलिए जलाए हैं अब दिए किनारों पर, अब तो डुबने वाला डूब भी चुका होगा।"**(13)**

वह (संदीप) उसके (कविता) सामने प्रेम का प्रस्ताव रख देता है। शादी के बाद, वह उसे नौकरी दिलाता है लेकिन उसपर शक भी करने लगता हैं जिससे उसका दांपत्य जीवन असफल हो जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि असफल प्रेमविवाह होने के पीछे पति का अपनी पत्नी के प्रति अशोभनीय व्यवहार तथा शक ही मुख्य कारण रहा है।

4.13 अंतर्जातीय एवं अंतराष्ट्रीय विवाह:

स्त्री एवं पुरूष की स्वाधीनता से उत्पन्न होने वाला विवाह अंतर्जातीय विवाह है। हिंदी साहित्य के कथाकार प्रेमचंद ने भी अंतर्जातीय विवाह का समर्थन किया था। जब एक जाति की लड़की दूसरे जाति के लड़के के साथ विवाह करती है उसे अंतर्जातीय विवाह कहा

जाता है। नगरीकरण और औद्योगिककरण के बढ़ने के कारण इस तरह के विवाह हो रहे हैं। उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में अंतर्जातीय विवाह जैसी समस्या का चित्रण किया है।

'दौड़' उपन्यास में पवन और स्टैला का विवाह अंतर्जातीय होते हुए भी अंतर्राष्ट्रीय विवाह रहा है। पवन भारतीय है और स्टैला विदेशी (शिकागो)है। इस बात की खबर स्टैला अपने माता-पिता को ई-मेल द्वारा भेजती हैं। इससे उनके माता-पिता खुश होकर उसे शुभकानाएँ भेजते हैं। लेकिन पांडे परिवार, पवन की खबर पर हतबुद्धि रह गया। न उन्होंने लड़की देखी थी न उसका घर बार। आकस्मिकता के प्रति उनके मन में शंका पैदा हुई। राकेश ने पत्नी से कहा, "पुन्नू के दिमाग में हर बात फितूर की तरह उठती है। ऐसा करो, तुम एक हफ्ते की छुट्टी लेकर राजकोट हो आओ। लड़की भी देख लेना, पुन्नू को भी टटोल लेना। शादी कोई चार दिन का खेल नहीं, हमेशा का रिश्ता है। इंटर से लेकर अब तक दर्जनों दोस्त रहीं है पुन्नू की, ऐसा चटपट फैसला तो उसने कभी नहीं किया।"**(14)**

आधुनिक युग में जीने वाले पवन जैसे पात्र अपनी शादी के संबंध में अपने माता-पिता की राय जानना उचित नहीं समझ रहे हैं। यह बात सही भी है, क्योंकि ऐसे विवाह में रूढ़ि-परंपराएँ, मान्यता, जाति आदि का महत्व तो नहीं रहता लेकिन लड़का और लड़की के मन की सहमति ही अहम् है। वैश्वीकरण के युग में तो यह होना निश्चित है। पवन की माँ रेखा इस विवाह का का विरोध करती है। लेकिन रेखा और राकेश ने भी अंतर्जातीय विवाह किया था। पवन-स्टैला के ब्याह के बारे में राकेश का कथन है कि-"सब यही करते हां। क्या हमने ऐसा नहीं किया। मेरी माँ को भी ऐसा ही दुख हुआ था।"**(15)**

'प्रेम कहानी' में गिनेज और जया अंतरराष्ट्रीय एवं अंतर्जातीय प्रेम विवाह करते हैं। जबकि गिनेज मॉरीशस देश का रहनेवाला है और जया मारतीय है। लेकिन जया के घरवाले

उसे अस्वीकार करते हैं। वहीं दूसरी ओर यशा शिकागो के मुहम्मद नामक मुसलमान युवक से मुहब्बत करती है। प्रेमपत्र के द्वारा उसके घरवालों को पता चलता है। इसलिए पिता सजातीय युवक से उसकी शादी करना चाहते हैं। निश्चित रूप से उनके बीच जाति धर्म की दीवारें खड़ी हो जाती हैं। यशा के अनुसार,"मैं मुसलमानन हो जाऊँ, बनिया जाति का पतन न हो जाए।"**(16)** उसके परिवार के सदस्य उसके जाति के लड़के से उसकी शादी करवाते है। क्योंकि अपनी जाति में तथा समाज में उनकी बदनामी न हो।

ममता कालिया का 'नरक दर नरक' उपन्यास का नायक जगन, उषा के साथ विवाह करता है। जगन पंजाब राज्य के चंडीगढ़ से था तो उषा मथुरा, उत्तर प्रदेश के आर्य समाजी समाज से जुड़ी थी। उनके विवाह के बीच भी जाति, परंपरा जैसा प्रश्न खड़ा होता है। इन सब बाधाओं के बारे में ममता जी लिखती है-"अपनी-अपनी जरूरतों के आगे उन्होंने घुटने टिका दिए। घुटने उन्होंने माउंटमेरी चर्च में टिकाए थे, लेकिन फादर डिसूझा के यह कहने पर कि बिना धर्म-परिवर्तन के वे ईसाई पद्धति से विवाह नहीं कर सकते।"**(17)**

ऐसे जड़ एवं परंपरागत विचारोंवाले लोग मौजूद रहेंगे, तब तक जाति व्यवस्था बनी रहेगी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जाति व्यवस्था को खत्म करने का यह विवाह एक अच्छा माध्यम है जो समाज एवं राष्ट्र को जागृत करने के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसे विवाहों की संख्या आजकल बढ़ रही है। इसे देश के लिए एक अच्छा संदेश माना जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ममता कालिया ने इसका समर्थन किया है।

4.14 अनमेल विवाह:

भारतीय समाज में विवाह को अधिक महत्व दिया जाता है। विवाह के कारण ही परिवार का वंश बढ़ता है अनमेल विवाह में कहीं उम्र का फर्क होता है तो कहीं विचारों का

फर्क होता है। पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद के कारण उनका जीवन दुःखमयी बन जाता है। प्रेमचंद के 'गबन', 'निर्मला', 'गोदान' जैसे उपन्यास अनमेल विवाह के उत्तम उदाहरण कहे जा सकते हैं। वर्तमान दौर में पति पत्नी में अनेक मतभेद होने के कारण यह समस्या उभर कर सामने आ गई है।

ममता जी का 'बेघर' नामक उपन्यास, अनमेल विवाह की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस उपन्यास के केंद्र में (पति) परमजीत और (पत्नी) रमा है। परमजीत स्वतंत्र विचारोवाला व्यक्ति है, लेकिन पत्नी फूहड़, कंजूस, अंधविश्वासी है। रमा, अपने नंनदों से, पड़ोसियों से तथा अपने पति से अच्छा व्यवहार नहीं करती है। जब परमजीत अपने ब्याह की पार्टी का निमंत्रण देने केकी अंक्लेसरिया के पास जाता है तो रमा बिना सोचे समझे कहती है-"अरे पारसिन है! इन लोगों में शादी होना ही मुश्किल है। अलग-अलग आदमियों में खाती-पीती हैं। इसलिए इतनी जल्दी बूढ़ी हो जाती है...तुमसे अस्पताल-अस्पताल क्या कह रही थी। इसने तुम्हें रखा या तुम इसे रख रहे थे? क्यों गई थी वह अस्पताल?"**(18)** परमजीत का धैर्य टूटने लगता है। अनमेल विवाह के कारण उसका सुखी जीवन दुःखी बन जाता है। तनाव बढ़ने के कारण उसको दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो जाती है।

'नरक दर नरक' उपन्यास में जगन और उषा, विनय और सीता गुप्ता, इन दोनों दंपतियों में विचारों की असमानता दिखाई देती है। इसी कारण जगन और उषा का जीवन भी नरकमय बन जाता है। इसके साथ ही उषा और विनय का जीवन भी वेदना से परिपूर्ण हो जाता है।

'लड़कियाँ' नामक उपन्यास में अनमेल विवाह से बचने की कोशिश नायिका 'लल्ली' करती है। वह अविवाहित है। उसके लिए अनेक रिश्तें आते है। लेकिन वह फैसला नहीं कर पाती। क्योंकि हर अखबार, बहू प्रताड़ना की खबरों से भरे होते हैं। इसके परिणाम

स्वरूप उसका विवाह से मोहभंग हो जाता है। जब उसकी बहन अपने देवर का रिश्ता लेकर आयी तो वह इन्कार कर देती है क्योंकि पहले उसकी बहन, अपने देवर की काफी शिकायतें कर चुकी थी। एक लड़के के प्रस्ताव के बारे में लल्ली कहती हैं- "वह स्थानीय बैंक में एजेन्ट था और उसकी पहली पत्नी एक सड़क दुर्घटना का शिकार हो गई थी। वह मेरे साथ अपने विधुर जीवन को मधुर बनाना चाहता था।"**(19)** इसे हम अनमेल विवाह ही कह सकते हैं।

पति-पत्नी के वैचारिक टकराहट को हम 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में देख सकते है। संदीप और कविता प्रेमविवाह करते हैं। कविता कॉलेज में व्याख्याता है।आत्मनिर्भर होने के कारण दोनों के बीच 'अहं' टकराता है। दोनों के विचारों में मतभेद होने के कारण उनका जीवन तनाव ग्रस्त होता है। इस संदर्भ में लेखिका का कहना है कि- "ऐसे तनाव ज्यादा नागवार इसलिए थे क्योंकि इनकी जड़ में कोई सच्चाई नहीं थी।.....वे अभी भी पति पत्नी कम और प्रेमी ज्यादा थे, लेकिन सबसे अधिक संताप भी वे ही झेलते।"**(20)** वैचारिक भिन्नता के कारण ही उनका विवाह अनमेल बन जाता है। इसलिए कविता घर छोड़ने का निर्णय लेती है।

ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में वैचारिक मतभेद के चलते विवाह अनमेल हो रहे हैं, इसका यथार्थ चित्रण किया है।

4.15 दहेज:

कन्या के विवाह में दहेज लेने की प्रथा बहुत पुरानी है। आज वर्तमान में दहेज एक शोषण का पर्याय बन चुका है। संभवतः इसी कारण प्रत्येक युवती आज विवाह से पूर्व दहेज जैसी समस्या को लेकर अपने भीतर कुण्ठा महसूस करती है। वह सोचती है कि उसके माता-पिता को, उसका दहेज जुटाने हेतु न जाने क्या-क्या करना होगा? इस कुप्रथा के

कारण आज प्रत्येक कन्या अपने स्वाभिमान पर एक प्रश्नचिन्ह पाती है। माता-पिता अपना सर्वस्व लुटा कर भी अपनी बेटी का विवाह करना चाहते हैं। विवाह के अवसर पर अधिकांश परिवार अपने को प्रगतिशील, आदर्शवादी एवं शिक्षित दर्शाने के चक्कर में दहेज लेने से इंकार कर देते हैं। परंतु विवाह पश्चात वे शिक्षित सभ्य लोग एहसास जताने, ताने मारने, नीचा दिखाने से बाज नहीं आते। आज दहेज की बलि वेदी पर पति की उपस्थिति में सैंकड़ों औरतें जला दी जाती हैं। इसीलिए ममता जी की दृष्टि इन समस्याओं की ओर अधिक रही है।

दहेज का अर्थ होता है वह धन या सामान जो विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाता है। 21वीं सदीं तक आते आते दहेज की माँग बढ़ती जा रही हैं। यह दहेज रूपी दानव सारे समाज को कलंकित कर रहा है। दहेज लेने वाले लड़की की अच्छाई, शिक्षा, नौकरी आदि को अनदेखा करते है। आज की पीढ़ी, पुत्र जन्म को 'बियरर चेक' मान रही है और लड़की को 'घाटे का चेक' या 'परायाधन'। जनसंवेदना से जुड़ी हुई लेखिका होने के कारण ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में इस समस्या का हृदयस्पर्शी अंकन किया है।

उनके अपने 'बेघर' उपन्यास में दहेज की कुप्रथा का मार्मिक चित्रण किया गया है। कथा नायक परमजीत के ब्याह के लिए एक से एक बढ़कर एक रिश्ता आता है। वे सभी अपना धूमधाम से विवाह करना चाहते हैं लेकिन दहेज नहीं देना चाहते। इस संबंध से परमजीत की माँ के विचार है हमें धूमधाम से या शान से क्या लेना-देना? जिसमें दहेज न हो। ऐसा ही एक पढ़ी लिखी लड़की का रिश्ता आता है। लड़की के पिता का कहना था कि "देने-लेने में कोई कसर नहीं रखेंगे। फोटो भेज रहा हूँ। तुम्हें पसंद हो तो बात आगे बढ़ाये।"**(21)**

जब परमजीत की शादी तय हो जाती है तो उसकी माँ दहेज के रूप में चार हजार नगद, पंद्रह (15) तोला सोना तथा दो सूट लड़के के लिए और एक सूट पिता के लिए का माँगती है। परमजीत को पत्र द्वारा सूचित किया जाता है, "वे चार हजार नगद देंगे और पंद्रह तोला सोना। उसकी माँ पहाड़गंज जाकर लड़की देख आई है। उसे लड़की पसंद है। वह कह आई है कि वे लोग दो सौ आदमियों की बारात लाएँगे और दावत में देसी घी ही लगाना पड़ेगा, दो सूट लड़के के और एक सूट बाप का तो जरूर ही होगा।"**(22)**

विवाह में दहेज मिलने के बाद, परमजीत के माता-पिता की मानसिकता के बारे में कहा गया है कि- "सबसे पहले थूक लगा-लगाकर, दो बार चार हजार के नोट गिन लिये जो उसे नगद मिले थे। उसकी माँ ने लड़की के जेवरों को आँखों ही आँखों में तोल लिया कि वे पंद्रह तोले से ज्यादा ही के हैं, कम नहीं।"**(23)**

रमा के विवाह के बाद उसके दोनों भाइयों की दशा देखने लायक थी। लेकिन उसके पिता का कहना था, ले गई जो लेना था, अब जो है घर का है। परमजीत के ब्याह का सामान उसकी माँ ने अपनी बेटी 'बिम्मा' के विवाह में दे दिया।

यह सिर्फ परमजीत के परिवार में घटित घटना नहीं है बल्कि वर्तमान समाज में ऐसी घटनाएं हो रही है। ममता जी के 'नरक दर नरक' उपन्यास में दहेज की समस्या का बहुत ही कम विचार किया गया है। जगन के दोस्त बैजनाथ की छोटी बहन बहुत ही कुरूप थी, उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे। इसी कारण वह परेशान हो रहा था। क्योंकि दहेज की अतिरिक्त राशि जमा करनी पड़ती थी। उसके अनुसार "दहेज में दस हजार का अतिरिक्त धक्का।"**(24)**

आधुनिक युग में कुछ माता-पिता ऐसे भी होते हैं, दहेज से छुटकारा पाने के लिए बेटी की इच्छा के खिलाफ उसकी शादी कर देते हैं। 'प्रेम कहानी' उपन्यास की नायिका

'यशा' पढ़ी लिखी हैं फिर भी वह इसका शिकार हो जाती है। उसकी चार बहनें हैं। एक-एक बेटी के ब्याह करने के बाद वह राहत महसूस करते हैं। एक मजबूर पिता की व्यथा, यशा अपनी सहेली जया से व्यक्त करती है- "तू अपने घर की इकलौती औलाद है जया, तुझे क्या पता, चार लड़कियों के बाप को अपनी बेटियाँ ब्याहने की कैसी उतावली रहती है। वे रिश्ता ढूँढते समय यह नहीं देखते कि रिश्ता लड़की के लायक है या नहीं, वे तो गिनती पूरी करते हैं। मेरी दोनों दीदियों के एक-एक कर ब्याह हुए तो पिताजी ने हर बार हाथ झाड़कर कहा यह भी गई, अब बचीं तीन।"**(25)**

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट होता है कि चार-चार लड़कियों वाले परिवार की स्थिति बहुत गंभीर हो जाती है। ममता कालिया के अनुसार आई.ए.एस. दामाद पाने के लिए लोग कितने उतावले होते है। इसका चित्रण 'एक पत्नी के नोट्स' में किया है। संदीप जब आई.ए.एस. बनता है तो उसके लिए अनेक संपन्न परिवारों से रिश्तें आते हैं क्योंकि उनकी बेटी जीवन भर खुश रहेगी। इसी कारण से आज समाज में दहेज की समस्या उभर कर आयी है। लेखिका के अनुसार "घर पर संदीप के लिए एक से एक समृद्ध परिवारों की लड़कियों के रिश्ते आ रहे थे। सभी लड़कियाँ घोषित रूप से सुंदर, सुशील, शुशिक्षित और गृहकार्य में दक्ष थीं। सभी के पिता संपन्न थे और आई.ए.एस. दामाद खरीदने की हैसियत रखते थे।"**(26)** इस तरह के परिवारों की संख्या आजकल बढ़ती जा रही है लेकिन गरीब माता-पिता अपने बेटी के ब्याह के लिए दहेज की पूँजी जमा करने में लगे रहते हैं। इस प्रकार ममता कालिया ने समाज में बढ़ती दहेज की समस्या को अपने उपन्यासों में यथार्थ रूप से दर्शाया है।

4.16 नारी समस्या:

नारी समस्या आज के परिवेश की सबसे विषम और जटिल समस्या है। नारी-व्यथा की गाथा अत्यंत पुरानी है, परंतु पुरानी होने पर भी नई है। नारी आज आगे बढ़ी है, इसमें संदेह नहीं परंतु उनकी व्यथा की कथाएं आज भी अत्यंत देवता वाली धारणा पर भी प्रश्नचिन्ह लग गया है। "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र (जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता लोग भ्रमण करते है)" स्वतंत्रता के पश्चात अनेक क्रांतिकारी सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन देश में हुए। उच्चवर्ग की नारी ने हर क्षेत्र में प्रगति की है। परंतु सामान्य नारी आज भी दलित, पीडित, शोषित और उपेक्षित है। समाज की अधिकांश नारी इसी वर्ग की है। आम नारी जीवन की जरूरतों के लिए भी संघर्ष करती है। जीवन भर संघर्ष करती हुई जीती है।

नियम एवं कानून इसी वर्ग की नारी के लिए है। आज भी समाज में पुरूष द्वारा नारी की अवहेलना होती है। उसको मानसिक एवं शारीरिक कष्ट दिए जाते हैं।

डॉ. लइरामराव के अनुसार "स्त्री चाहे जितनी सुशिक्षित क्यों न हो, उसके प्रति देखने की दृष्टि इस पुरूष प्रधान संस्कृति में अच्छी नहीं हैँ। उसकी शिक्षा को कोई महत्व नहीं दिया जाता। अगर यह स्त्री पुरूष से ज्यादा पढ़ी-लिखी और होशियार हो तब तो उसकी प्रतिभा को मात देने की, उसके घर की चारदीवारी में कैद करने की प्रवृत्ति पुरूषों की होती है। ऐसी कही समस्याएँ सुशिक्षित नारियों की होती हैं।"**(27)**

'बेघर' उपन्यास की नायिका संजीवनी बैंक आफ बड़ौदा में नौकरी करती है। उसके परिवार वाले उसे पैसा कमानेवाली मशीन समझने लगते हैं। इसी कारण वह उसका ब्याह भी नहीं करना चाहते थे। दूसरी ओर अपनी बीमार माँ की जिम्मेदारी वह उठाये थी। वह अपनी व्यथा को बता नहीं सकती थी। अचानक, उसके जीवन में परमजीत आता है। उन दोनों में पारस्पारिक आकर्षण के कारण प्रेम एवं शारीरिक संबंध बनते हैं। लेकिन परमजीत

उससे खुश नहीं होता और उस पर शक करता है। परमजीत दूसरी शादी कर लेता है। संजीवनी बहुत उग्र मनःस्थिति में थी। "उसका मन हुआ शरीर पर पड़ा कंबल दाँतों से काट चिंदी-चिंदी कर दे और सड़क पर ट्याऊँ-ट्याऊँ करते पिल्ले की गर्दन दबा डाले।"**(28)** कुछ दिन पहले विपिन ने उसके साथ जबरदस्ती की थी। उसे बहुत तकलीफ हुई जैसे बिना एनेस्थिसिया दिया, उसका आपरेशन किया जा रहा हो। इस दुर्घटना को याद कर वह पीली पड़ जाती। वह विपिन एवं परमजीत जैसे पुरूषों द्वारा छली जाती है। इस प्रकार वह पारिवारिक समस्याओं से छिरी हुई है।

आधुनिक युग में लड़कियों के जन्म पर खुशियाँ नहीं मनायी जाती है। स्वयं नारी ही इसका विरोध करती दिखायी देती है। 'बेघर' उपन्यास का नायक परमजीत, ब्याह के पश्चात् लड़की चाहता है। लेकिन उसकी पत्नी रमा इसका विरोध करती है। क्योंकि वह लड़का चाहती है। इस संदर्भ में वह चिंतित दिखायी देती है। इसी मानसिकता को, भी बेघर उपन्यास में रमा के माध्यम से व्यक्त किया है। रमा को फिक्र रहती है कि कहीं लड़की न हो जाए। परमजीत के कहने पर कि मुझे तो लड़की चाहिए। तो वह कहती -"नहीं जी मेरी नाक कट जाएगी और इसी तरह नारी की जन्म से पहले हत्या की जाती है जिसे भ्रूणहत्या कहते हैं।"

'नरक दर नरक' की उषा भी पुरूषों की अशिष्टता का शिकार होती है जब उसके सहपाठी सुभाष तुरखिया ने उसे फिल्म देखने का आमंत्रण दिया। सहजस्वभाव वाली उषा जब तैयार होकर एक्सेलसियर पर जाती है तब उसके सहपाठियों ने उसे उल्लू बनाया था। लड़कों ने उसके साथ-साथ जोगेंदर साहनी को भी आमंत्रण दे रखा था। उषा बार-बार फाटक की ओर देख रही थी। "जैसे-जैसे वक्त बीत रहा था, उसका अटपटापन बढ़ता जा रहा था। उसे अपने ऊपर गुस्सा आ रहा था। क्या जरूरत थी एक ही बार में मान जाने की। कितना

नर्दादापन दिखाया उसने।"**(29)** इस तरह समाज में पुरूष वर्ग स्त्री को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करता है।

'प्रेम कहानी' उपन्यास की 'जया' के माध्यम से, पुरूष नारी पर किस तरह बुरी नज़र रखते हैं, इसका यथार्थ चित्रण ने किया गया है। जया गहरी नींद में थी इसीलिए बड़े झटके से नींद टूटी। दरअसल "नींद में यकायक लगा, जैसे कोई सारे बदन की माप ले रहा हो। आभास नींद के, समुंदर में डूबा, उतराया, फिर ऊपर आ गया। लगा, मैं दर्जी की दूकान में हूँ। लेकिन यह कूल्हे और जाँग क दरम्यान कैसी माप?.....अचकचाकर बैठी हो गई।"**(30)** देखा तो जिस घर में वह रहती थी, उस घर के स्वामी उसके साथ अश्लील हरकतें कर रहे थे जिन्हें वह अंकल कहती थी। अँधेरे में भी उनकी आतंकित, खिसियाई आकृति उसे दिख रही थी। इस तरह नारी आज भी समाज में सुरक्षित नहीं है। यह कहा जा सकता है कि ममता कालिया ने अपने उक्त सभी उपन्यासों में नारी समस्याओं के ईमानदारी से चित्रण किया है। क्योंकि वह स्वयं एक नारी होने के कारण इस समस्या को भली-भाँति समझ सकती है।

4.17 **महानगर की समस्या:**

जैसे-जैसे औद्योगिक विकास होता गया, वैसे-वैसे गाँव में रहने वाले व्यक्ति शहरों में आने लगे। और वहीं रहने लगे बड़ी संख्या में लोगों के आने से नगरों के महानगर बनते गये। लोगों के महानगरों में जाने का मुख्य कारण रहा है-रोज़गार की सुलभता। इसी कारण हर एक व्यक्ति महानगरों की ओर आकर्षित हो रहा है। इसके कारण महानगरों में कई समस्याओं का जन्म हुआ है इनमें-आवास की समस्या, महानगरीय जीवन की व्यस्तता,

पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, क्लब, पार्टियाँ, बढ़ते अपराध, नारी का शोषण आदि कई समस्याएँ आज महानगरों में विकसित हो रही हैं।

ममता का पूरा जीवन मुंबई, दिल्ली, पुणे, जैसे महानगरों में बीता है। महानगरों की अनेक समस्याओं को उन्होंने देखा, जाँचा, परखा है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से इन समस्याओं का वास्तविक चित्रण किया है।

(i) मकान की समस्या:

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ रोटी, कपड़ा और मकान है। लेकिन कपड़ा एवं रोटी की अपेक्षा मकान की समस्या अधिक महत्त्वपूर्ण है। हर व्यक्ति अपने रोजगार के लिए महानगरों में जा रहा है, जिससे महानगरों की संख्या बढ़ती जा रही है। ममता कालिया के उपन्यासों में मकान की समस्या को वास्तविक रूप से रेखांकित किया गया है। उनके उपन्यासों के पात्र इन समस्याओं से जूझते हुए दिखाई देते हैं।

ममता कालिया ने 'बेघर' उपन्यास में इसका मार्मिक चित्रण किया है। जब परमजीत मुंबई में नौकरी के लिए आता है तो उसे वह कमरा दिया जाता है। जो दिन भर दफ्तर का कमरा होता है और रात में सोने का कमरा होता है। रात के समय, धूल और काक्रोच वाला यह कमरा, जिसमें परमजीत को इच्छा-अनिच्छा से रहना पड़ता है।

मुंबई जैसे महानगर में मकान प्राप्त करने के लिए समाचार-पत्र में विज्ञापन तक देना पड़ता है। आखिर परमजीत को मकान के लिए अख़बार में विज्ञापन देना पड़ता है। तब एक ही सप्ताह में उसके पास पाँच जवाब आ जाते है। सभी मकान देखने के बाद कैडल रोड पर केकी अंक्लेसरिया का काफी पुराना 'रूस्तमविला' नामक मकान मिला। इसके लिए ढाई सौ रुपये किराया देना पड़ता है। बस एवं रेल की सेवा करीब होने के कारण यहाँ किराया ज्यादा था। परमजीत को हमेशा अपनी सीमाओं में रहकर ही मालकिन से बात करनी पड़ती

थी। परमजीत के अनुसार- "अगर केकी ने तमककर उसे नया घर तलाश करने को कह दिया तो वह बेघर हो जाएगा। इतने लंबे चौड़े शहर में वह कहाँ जाएगा।"**(31)** केकी को जब पता चलता है कि परमजीत शादी करना चाहता है तो वह स्पष्ट रूप में उसे मकान छोड़ने के लिए कहती है।

'नरक दर नरक' उपन्यास में जगन और उषा जब विवाह करके मुंबई आते हैं, तो उनके सामने पहली समस्या खड़ी होती है-मकान की। दौड़-धूप करने के पश्चात जगन को जो कमरा मिलता है वह एक नहीं, बल्कि एक बटे दो (1/2) का है। मकान की दशा इस प्रकार थी- "थोड़ी-सी बदरंग इमारत की तीसरी मंजिल पर यह कमरा था। जो हिस्सा बंद था। खिड़की उसी हिस्से के साथ बंद हो गयी थी। रोशनदान के अलावा हवा का आने-जाने का और कोई रास्ता नहीं था। बिजली की फिटिंग थी, पर बल्ब नहीं था। कमरे से जुड़ा हुआ एक सँकरा दरवाजा था, जो गुसलखाने में खुलता था। पाखाने के बारे में पूछताछ करने पर मकान मालिक, जोगेंदर को दरवाजे से बाहर लंबी गैलरी के आखिरी सिरे पर ले गया था, जहाँ पाखाना बना था, रसोई के नाम पर एक छोटी, सँकरी सुरंग थी, जिसमें एक छोटा-सा रोशनदान बना था।"**(32)**

वर्तमान समय में मुंबई जैसे महानगरों में निम्न व मध्यवर्गीय लोगों को कम से कम सुविधा मिलती है। जगन और उषा इस कमरे में घुटन महसूस करते है और मकान छोड़ देते है। जब जगन को कॉलेज से निकाल दिया गया तो वह इलाहाबाद में प्रेस चलाने का काम करता है, तो वह प्रेस के ऊपरी हिस्से में ही रहने लगता है। उस मकान की दशा तो मुंबई वाले मकान से भी बत्तर थी। प्रस्तुत उपन्यास में 'आतिश' भी इसी समस्या का सामना करता है। मुस्लिम होने के कारण उसे कोई मकान नहीं देता।

मुंबई जैसे बड़े महानगर में जगह की कमी के कारण चार, पाँच या विशाल माचिस की डिबिया की तरह बिल्डिंग बनाई जा रही हैं। 'लड़कियाँ' उपन्यास की कावसजी मैंशन इसका अच्छा उदाहरण है। कथा नायिका लल्ली के अनुसार "वह एक बहुत बड़ी इमारत थी, कावसजी मैंशन। तीन सौ छत्तीस तो मेरे फ्लैट का नंबर था और इसके ऊपर दो माले थे। कुल पाँच माले का यह मैंशन शहर के दस मालेवाले भवनों से भी ऊँचा लगता था। आजकल के फैशन के, माचिस की डिबिया जैसे फ्लैट नहीं थे इसमें। बहुत ऊँचा विक्टोरियन पटाव था इनका और लंबे लंबे गलियारे। हरेक फ्लैट में शीशेदार दरवाजे थे, बड़े-बड़े और दरवाजों में भी लंबी-लंबी चिट्खनियाँ, नीचे तक आई हुई।"**(33)**

मैंशन के किराएदार यहाँ की असुविधाओं का रोना तो रोते पर साल दस साल यहीं पर जमें रहते थे। उन्हें देखकर ऐसा लगता मानों वे इसी इमारत में उगे थे।

प्रेम कहानी उपन्यास में जया के पिता का तबादला मुंबई से मथुरा हो जाता है, तो उसके आगे की पढ़ाई की व्यवस्था उन्हें दूर की आंटी के पास करनी पड़ती है। वहाँ जाने के बाद वह देखती है कि "घर बहुत छोटा था। कमरा केवल एक, कमरे के पीछे बालकनी थी, जिसे तीन तरफ से ढक कर अंकल ने एक कमरा अपने वर्कशॉप के लिए निकाला था।"**(34)**

भारत देश की राजधानी दिल्ली जैसे शहर में गरीब व्यक्ति को, ऐसे मकान में अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसे मकान के वजह से जया की पढ़ाई में बाधा उत्पन्न होती है।

मकान की समस्या का वास्तविक चित्रण ममता कालिया दौड़ उपन्यास में करती है। इस उपन्यास के दो-तीन लड़के मिलकर एक फ्लैट किराये पर ले लेते हैं और सभी बराबर का शेअर अदा करते हैं। उनके बारे में ममता कालिया लिखती है- "दफ्तर के दो-तीन लड़के मिलकर तीन या चार हजार तक के किराए का एक फ्लैट ले लेते हैं। सभी बराबर का

शेयर करते हैं, किराया, दूध का बिल, टॉयलेट का सामान, लांड्री का खर्च।"(35) आज शहरों में काफी परिवर्तन हो चुका है लेकिन मकान की समस्या ज्यों की त्यों बनी हैं।

हम कह सकते है कि लोगों की बढ़ती संख्या के कारण यह समस्या उत्पन्न हो रही है। इसे सुधारने के लिए भारत सरकार को 'राज्य आवास योजना' का निर्माण करना चाहिए। अन्यथा यह समस्या एक दिन विकराल रूप धारण कर लेगी।

(ii) महानगरीय जीवन की व्यस्तता:

महानगरों में व्यक्ति सुबह काम पर चला जाता है और देर रात तक घर वापस आता है। नौकरी के कारण व्यक्ति दिन भर व्यस्त रहता है। वह परिवार को समय नहीं दे पाता और न बच्चों को। हफ्ते भर के छुटे काम वे छुट्टी के दिन, करते हैं। इसप्रकार महानगरीय जीवन आज व्यस्तता से गुज़र रहा है।

'प्रेम कहानी' उपन्यास के डॉ.गुप्ता अपने नौकरी तथा व्यवसाय के कारण अपने दोनों बेटे 'आकार' और 'आधार' को समय नहीं दे पाते हैं। महानगरीय व्यस्तता के कारण, अपने परिवार को भी आज का व्यक्ति समय नहीं दे पा रहा है। इस संदर्भ में डॉ.गुप्ता का, बेटा, गिनेस से शिकायत करता हुआ कहता है- "अंकल जब आप छोटे थे, आपके डैडी आपसे बोलते थे? यह आज के भौतिक रूप से सुखी व संपन्न माँ-बाप के बच्चों की कहानी है। पर गिनेस के पिता तो उसके बेस्ट फ्रेंड थे। इस पर डॉ.गुप्ता के बड़े बेटे का उत्तर- और एक है हमारे पापा। जब देखो अस्पताल, क्लीनिक, विजिट, फोन। हमें स्टेशन से लाने और स्टेशन छोड़ आने के अलावा जैसे उनका हमसे कोई मतलब नहीं।"(36) उनके बच्चें भी पैसों को महत्व नहीं देते हैं। उनका कहना है- "क्या फायदा पैसों का रात ग्यारह बजे जब पापा क्लीनिक से उठते हैं, सारे सिनेमा हाउस, रेस्तराँ, बंद हो जाते हैं। उस समय वह इतने थके होते है कि न ठीक से खाना खाते हैं, न बात करते हैं, बस सो जाते हैं। उनसे उस वक्त कहा

भी नहीं जा सकता की कहीं चलो। रात ग्यारह बजे किसी के घर नहीं जा सकते जब तक कि कोई फीस देकर ही न बुलाए।"(37) इस प्रकार महानगरीय व्यस्तता का यथार्थ चित्र ममता जी ने खींचा है।

'लड़कियाँ' नामक उपन्यास में मुंबई महानगर की व्यस्तता को दर्शाया है। नायिका लल्ली विज्ञापन एजेन्सी में नौकरी करती है। जिसके कारण वह दिन भर व्यस्त रहती है। महानगर की व्यस्तता के कारण, उन्हें घर के काम या किताब, पत्रिका पढ़ने तक के लिए समय नहीं मिलता था। इस बारे में लल्ली कहती है- "किताबें पलटने का अवकाश ही कहाँ था। आदतन, खरीद लेती, पर पढ़ नहीं पाती। दिन का बड़ा हिस्सा दफ्तर में बीत जाता और एक छोटा हिस्सा रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने में बचे-खुचे समय में पत्रिकाएँ पलट लेती।" इसप्रकार लल्ली भी महानगरीय जीवन से व्यस्त है।

(iii) पार्टियाँ:

पाश्चात्य संस्कृति के कारण भारतीय समाज का ढाँचा बदल चुका है। इसका परिणाम है क्लब, पार्टियाँ। बड़े बड़े महानगरों में सांस्कृतिक समारोह के नाम पर पार्टी का आयोजन होता तो कभी कभी विवाह, जन्मदिन, आदि के कारण पार्टी दी जाती है। इसका बेबाक चित्रण ममता जी ने निम्नलिखित उपन्यासों में किया है।

'बेघर' उपन्यास में परमजीत के ऑफिस का क्लर्क सुधाकर शिंदे अपने शादी की पार्टी देता है। उस पार्टी में सभी मेहमान सज-धजकर, सूट पहनकर आते हैं। लेकिन परमजीत जब पार्टी में जाता है तो उसे अजीब-सा लगता है। "परमजीत को अपना वहाँ बुशर्ट में पहुँच जाना अचानक अजीब लगा क्योंकि सभी सूट पहने थे।"(38)

'एक पत्नी के नोट्स' में एस.के तिवारी अपने नवजात शिशु के जन्मोत्सव तथा अपने प्रमोशन की खुशी में पार्टी का आयोजन करता है। लेखिका का यह कहना है कि यहाँ

बच्चे के जन्म के उत्सव पर मेहमानों के साथ एक भी बच्चा नहीं था। सब बड़े-बड़े लोग थे। इस उपन्यास का केंद्रबिंदु कथा नायक संदीप ही था सभी की इच्छा होती है कि "अगला जश्न संदीपजी के घर में हो, हमारी यही इच्छा है।"

आजकल की पार्टियों का मुख्य उद्देश्य अपनी इमेज दिखाना, किसी की इज्जत उतारना, एक दूसरे को नीचा दिखाना, यह सामान्य बात हो गई है। 'लड़कियाँ' उपन्यास इसका उत्तम उदाहरण रहा है इस उपन्यास का हामिद, जब अफशाँ के सम्मान में नटराज में पार्टी रखता है, तो अफशाँ की चपलता और भोलापन, पेशेवर मॉडलों के लिए चुनौती बन जाती है। मौका मिले तो मुंबई जैसे विज्ञापन दुनिया की लड़कियाँ अफशाँ को नोच ही डाले। वह उसकी खिल्ली उडाने का प्रयास करती। इस पार्टी में शराब के नशे में सभी लड़के लड़कियाँ नाच रहे हैं। कम कपड़े पहन कर अपना शरीर प्रदर्शन कर रहे है। वहाँ पर जितनी मॉडल थी वह अपने शरीर की नुमाइश कर रही है। यहाँ तक की नींबू-पानी लेने-न-लेने जैसे मुद्दों पर व्यंग्य किया जाता है और अफशाँ तो यहाँ नींबू-पानी तक नहीं लेती, तो एक प्रतिस्पर्धी सपना सारंग मॉडल, उसके उपर व्यंग्य करती है- "अरे भई, इनके लिए तो दूध का गिलास मँगाइए। नींबू पानी कहाँ पीती होंगी।"**(39)** सभी मॉडल अफशाँ को नीचा दिखाना चाहती थी लेकिन सबके आकर्षण का केंद्रबिंदू अफशाँ ही थी। इसप्रकार वर्तमान समय में पार्टियों का स्वरूप एक-दूसरे पर कीचड़ उछालना, एवं नीचा दिखाना रह गया है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को लेखिका ने अपने उपन्यासों में पार्टियों के माध्यम से दर्शाया है। आजकल इन पार्टियों के कारण ही भारतीय संस्कृति का पतन हो रहा है।

(iv) प्रदूषण की समस्या:

जैसे-जैसे पेड़ कटने लगे नगर बसने लगे, औद्योगिकरण बढता गया, जनसंख्या बढ़ती गई वैसे-वैसे प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती गयी। भारत देश में प्रदूषण की समस्या अत्यंत गंभीर हो गयी है इसका प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है। इसका निवारण करना उचित है क्योंकि यह बहुत बड़ा खतरा बन सकता है।

यह समस्या बड़े-बड़े शहरों तथा महानगरों में अधिक मात्रा में देखी जा सकती है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में इस समस्या का यथार्थपरक चित्रण किया है। जिनमें-

1. जल की समस्या:

भारत देश में जल की समस्या आज गंभीर बनी हुई है। इसकी चपेट में गंगा, यमुना जैसी बड़ी-बड़ी नदियाँ भी आ गई है। गंगा नदी में आज भी भक्तगण स्नान करते हैं, तट पर कपड़े धोते हैं, सड़े-गले शव, बहाते हैं। कभी यह जल अमृत माना जाता था लेकिन आज तो यह विषतुल्य हो गया है।

'नरक दर नरक' का जोगेंदर साहनी जब गंगास्नान करने प्रयागराज जाता है, तो उसे गंगा का पानी दूषित व गंदा लगता है। वह देखता है कि उसमें श्रद्धालु अलग-अलग प्रकार के अवशेष छोड़ रहे हैं, जिससे पानी गंदा हो रहा है। गंगा नदी के संदर्भ में वह कहता है कि- "पानी गँदला हरा था। हर लहर के साथ फूल, सूखी घास-फूस और न जाने क्या-क्या बह रहा था।"**(40)**

जब पवन (दौड़) अपने माँ बाप से मिलने अपने घर इलाहाबाद आता है, तो पहले दिन से ही उसका पेट खराब हो जाता है। वह माँ से पूछता है, "माँ पानी कौन-सा इस्तेमाल करते हो? इस पर माँ (रेखा) का उत्तर सरल सीधा होता है- "वही जो तुम जन्म से पीते आये हो गंगाजल आता है हमारे नल में।"**(41)**

इस पर पवन का कहना है कि "तब से अब तक गंगा जी में न जाने कितना मल-मूत्र विसर्जित हो चुका है। मैं तो कहूँगा यह पानी आपके लिए भी घातक है।"

2. कचरे की समस्या:

आज पृथ्वी, एक कूड़े का ढेर बनती जा रही है। जिधर देखो कचरा ही कचरा नजर आता है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों के माध्यम से इस समस्या का यथार्थ चित्रण किया है। 'लड़कियाँ' उपन्यास के कावसजी मैंशन का भी यही हाल रहा है। नायिका लल्ली सहित बिल्डिंग के सभी किरायेदार अपने मकान का कचरा कूड़ेदान में न डालकर, वहीं जीने में डाल देते हैं। मैंशन का मालिक गुस्से में कहता है- "तुम जीने में कचरा डाला, हम तुमको कचरा में डाल देगा।"**(42)** इसके बावजूद सभी किराएदार वहीं कचरा डालते हैं जिससे जानलेवा दुर्गंध आती है।

सरकारी अस्पतालों में बढ़ रहे कूड़े, कचरे को 'प्रेम कहानी' उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ के कर्मचारियों को जनरल वार्ड में सफाई करना टेढ़ी खीर सी लगती है। यहाँ आनेवाले मरीज़ भी अस्पताल को अपना घर या धर्मशाला समझते हैं। इस संदर्भ में लेखिका का कहना है- "मरीज़ व उनके अभिभावक कुछ इस अधिकार से कूड़ा फैलाते, जैसे वे अस्पताल में न होकर धर्मशाला में हों।"**(43)** इसी स्थिति में अस्पताल के बाकी मरीज भी रहतेथे। ऐसा लगता है कि वे लोग गंदगी फैलाना और गंदगी रखना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जब तक लोगों की मानसिकता नहीं बदलेगी, यह समस्या वैसी ही बनी रहेगी। प्रदूषण कम करने के लिए लोगों को अपनी मानसिकता बदलेनी होगी।

3. बिजली की समस्या:

आज बिजली समाज की आवश्यकता बन गयी है। बिजली के बगैर सभी व्यवहार ठप हो रहे हैं। इसी पर मानव का जीवन, विकास, उद्योग टिका हुआ है। आज बिजली का उत्पादन घटने के कारण तथा बड़ी मात्रा में उपकरणों की संख्या बढ़ने के कारण यह समस्या गंभीर बन गयी है। लेखिका ने इसे अपने उपन्यासों में बेबाक़ रूप से प्रस्तुत किया है।

'लड़कियाँ' उपन्यास की लल्ली जिस मैंशन में रहती है, उसके मालिक की मानसिकता बिजली के बिल के बढ़ने पर किस प्रकार की होती है और उसका असर उन किरायेदारों पर कैसे होता है इसका जीता जागता चित्र लेखिका ने अपने उपन्यास में दिखाया है। इस संदर्भ में लल्ली कहती है- "इधर जबसे बिजली के बिल का लफड़ा बढ़ गया, तबसे एस्सी ने एक और कमीनापन शुरू कर दिया था। ऊपर की मंजिलों पर वह वक्त से पानी न चढ़ने देता। पानी, नीचे से ऊपर, एक बड़े पंप की सहायता से नलों में आता।"**(44)** बिजली बढ़ने का असर मध्यवर्गीय परिवार पर कैसे होता है और उसमें भी किरायेदारों पर अपने मालिक का रौब कैसा चलता है। यहाँ लेखिका इसका यथार्थ चित्रण करती है। बिजली के बगैर लोगों की हालत कैसी होती है, इसका चित्रण ममता कालिया ने दौड़ उपन्यास में किया है। आज का युग कम्प्यूटर और इंटरनेट का है। इसे चलाने के लिए सबसे अहम् चीज है-बिजली। बिजली के बिना सब कुछ बेजान हैं। पवन जिस ऑफिस में काम करता है। वहाँ बिजली न होने के कारण ऑफिस तथा कम्प्यूटर कैसे लगता है? उसके बारे में लेखिका अपने दौड़ उपन्यास में लिखती है- "वह अपने ऑफिस में घुसा। शायद इस वक्त बिजली कटौती शुरू हो गई थी। मुख्य हाल में आपातकालीन ट्यूब लाइट जल रही थी। वह उसके

सहारे अपने केबिन तक आया। अंधेरे में मेज पर रखे कंप्यूटर की एक बौड़म सिलुएट बन रही थी। फोन, इंटरकाम सब निष्प्राण लग रहे थे। ऐसा लग रहा था संपूर्ण सृष्टि निश्चेष्ट पड़ी है।"**(45)**

बिजली के उपयोग से ज्यादा, उसका बढ़ता बिल मध्यवर्गीय परिवारों की जिंदगी एवं नींद हराम कर रहा है। 'बेघर' उपन्यास की रमा इस समस्या से परेशान हो जाती है। इसलिए वह बिल चुकाने के बाद निश्चय करती है कि अब बिजली बचानी चाहिए। इस प्रकार हम कह सकते है कि मध्यवर्गीय परिवार बढ़ते हुए बिजली के बिल के कारण परेशान है। इसीलिए डॉ.गुप्ता की पत्नी, जया से कहती है- "जया, रात तुम बिजली बंद करना भूल गई थी।" क्योंकि ऐसी स्थिति में बिजली को व्यर्थ जलाना उचित नहीं है। इसका दुष्प्रभाव आने वाली पीढ़ी पर भी पड़ सकता है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि देश में बिजली उत्पादन की कमी होने के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है। इस समस्या के हल के लिए हमे बिजली उत्पादन बढ़ाना चाहिए। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

4.2 पारिवारिक परिवेशगत यथार्थ

परिवार, समाज का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। समाज के जो नियम है उसे परिवार के सदस्यों को मानकर चलना पड़ता है। परिवार का हर व्यक्ति जीवन-मूल्यों का पालन करता है। अगर परिवार के सदस्य इनका पालन नहीं करते तो यह परिवार टूटने के कगार पर आ जाते हैं। प्राचीन काल में संयुक्त परिवार थे। जहाँ परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहते थे, जिनमें परस्पर स्नेह, प्रेम तथा आदर भावना उत्पन्न होती थी। परंतु जैसे जैसे देश में औद्योगिककरण, आधुनिकता, पाश्चात्य प्रभाव, शिक्षा का प्रचार-प्रसार,

भूमंडलीकरण का प्रभाव बढ़ता गया वैसे-वैसे लोग शहरों और महानगरों में आने लगे और संयुक्त परिवार विघटित होने लगे। इस कारण एकल परिवार की निर्मिती हुई। यह परिवार शहर में आकर स्वार्थी वृत्ति के बन गये। इसके परिणाम स्वरूप पारिवारिक समस्याओं ने जन्म लिया।

4.21 पारिवारिक संघर्ष एवं विघटन:

स्वातंत्रता के बाद भारतीय परिवारों में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। मनुष्य स्वार्थ के कारण ही अलग रहने के बारे में सोचता है। आज परिवार के सदस्य एक दूसरे से प्रेम या आत्मीयता की भावना नहीं रखते है। बढ़ती हुई स्वार्थ भावना पारिवारिक विघटन के लिए जिम्मेदार है। आज हर एक व्यक्ति आत्मकेंद्रित बन गया है इसी कारण वर्तमान समय में पारिवारिक संबंधों में अजनबीपन आ गया है।

आज नौकरी के कारण हर एक सदस्य को अपना परिवार छोड़ना पड़ता है। जिससे एकल परिवार बन चुके है। ममता कालिया ने बेघर उपन्यास में इसका यथार्थ चित्र खींचा है। परमजीत विवाह के पश्चात्य अपनी पत्नी(रमा) को मुंबई लेकर आता है। वहाँ पर रमा अपने पति पर हक जमाने लगती है। पहले तो परमजीत अपने परिवार को पैसा भेजता था लेकिन अब नहीं। वह अपने भाई की पढ़ाई की जिम्मेदारी स्वयं उठाना चाहता है लेकिन रमा उसे ऐसा नहीं करने देती। रमा के अनुसार- “पहले जिन्हें पैदा किया है उन्हें तो पढ़ाओ, बाद में दूसरों को पढ़ाना।”**(46)** परमजीत भी रमा की बातों में आ जाता है।

लेखिका ने नरक दर नरक उपन्यास में परिवार के विघटन को चित्रित किया है। शादी के पश्चात नायक जगन और उषा(नायिका) दोनों की स्थिति बहुत गंभीर हो जाती है। वे दोनों मुंबई महानगर में आते है। जीवन का आरंभ करते हैं। लेकिन जब जगन की नौकरी

चली गयी तो वह, उषा के पिता के पास जाने की सोचता है। लेकिन- "बहुत प्यार करने वाला उषा का पापा, आज इस स्थिति में जैसे पापा नहीं रह गया था।"**(47)** इस तरह पारिवारिक विघटन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

'प्रेम कहानी' उपन्यास में जया पिता के तबादले के कारण मुंबई आती है। जया भी 'सागर-पार-छात्र-समिति' की सचिव बनती है। वहीं उसकी मुलाकात गिनेश से होती है जो मॉरीशस से आया था। वह अचानक ही उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखता है इसके लिए वह तैयार हो जाती। पर अपने माता-पिता से शादी के बारे में कुछ नहीं पूछती है। गिनेश के माता-पिता चाहते है कि "हाऊस-सर्जनशीप के बाद गिनेश को मॉरीशस में रहना चाहिए।"**(48)** लेकिन वह नहीं मानता और वे दोनों दिल्ली वापस जाते हैं। अपनी नौकरी के लिए वह परिवार से अलग हो जाता है।

'दौड़' उपन्यास के पवन-स्टैला के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि वे किस तरह एकाकी जीवन जी रहे हैं। इसके लिए वे अपने परिवार को भी नजरअंदाज कर देते है।

4.22 दांपत्य संबंध:

भारतीय समाज में पुरूष प्रधान व्यवस्था आज भी है। पुरूष वर्ग हमेशा अपने परिवार पर अधिकार जमाने की कोशिश करता है। वह अपनी पत्नी, बेटी, तथा बहू को अपने काबू में रखने की कोशिश करता है। वैसे स्त्री का शादी से पूर्व एवं शादी के बाद का जीवन दुःखमयी होता है इसमें कोई संदेह नहीं है। आधुनिक काल तक पुरूष, नारी को खिलौना समझने लगा हैं। नारी चाहे कितना भी प्रयत्न क्यों न करें, परंतु पुरूष का अहंकार उसे दबाकर रखता है। इसलिए शादी के बाद भी उनके दांपत्य संबंध बिगड़ने लगते है। इसी को ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया हैं।

'नरक दर नरक' की सीता गुप्ता साधना कॉलेज में हिंदी की प्रवक्ता है। वह उच्चशिक्षित, नारी चेतना से संपन्न नारी है इसके बावजूद भी अपने पति के वर्चस्व में उसका पति विनय गुप्ता उसपर शक करता है। उसपर तरह-तरह से अत्याचार करता है। लेखिका ने उसकी असामान्य स्थिति को इस प्रकार व्यक्त किया है- "सीता का मन हुआ, वह दौड़ती जाय, न सही नर, किसी खंभे, पशु या पत्थर से टकरा-टकराकर अपने को सत-विसत कर डाले, ताकि इस छीछालेदार को बरदाश्त करने की ताकत उसमें आ जाए।"**(49)**

'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में पुरूषों द्वारा स्त्री का शोषण किस तरह होता है इसका प्रभावशाली अंकन प्रस्तुत किया है। संदीप और कविता (पति-पत्नी) है। संदीप आई.ए एस अधिकारी है। कविता प्राध्यापिका है। पर दोनों के दांपत्य में प्रेम का अभाव है। वह(संदीप) हर पल कविता पर रौब जमाता रहता है। उसका अपमान करता है। वह कविता से कहता है "तुम मेरे जीवन के सबसे सुखद प्रसंग की सबसे दुखद परिणति हो।" इसतरह के वाक्य सुनकर कविता विक्षुब्ध हो जाती। हर समय उसे पति के ताने सुनने पड़ते। हर बात पर वह कविता पर संदेह करता, उस पर पाबदिंयाँ लगाता है। जैसे घर पर समय रहते पहुँचना, लंच घर पर करना,गोष्ठी में न जाना आदि। लेखिका संदीप के ऐसे क्रिमिनल, क्रुकेड व विकृत स्वभाव के बारे में कहती है- "संदीप को बेहद तसल्ली महसूस हुई। उसे लगा, उसकी पत्नी पूरी तरह उसके कब्जे में है।"**(50)** इस प्रकार कहा जा सकता है कि पति एवं पत्नी के संबंध में सामंजस्य न रहने के कारण रिश्ते बेजान हो जाते है इसी कारण दांपत्य जीवन कभी सुखी नहीं हो सकता है।

4.23 नाते-रिश्तों में दरार:

आज कल परिवार के सदस्यों के मध्य स्नेह, प्रेम, आत्मीयता, सेवा, त्याग की भावना नहीं रही है। मूल्यों के विघटन एवं पारिवारिक विघटन के कारण मनुष्य स्वार्थ के पीछे भागता है। आज स्थिति ऐसी बनी हुई है कि ब्याह होते ही लड़का, पत्नी के साथ अलग घर बसाना चाहता है। जिससे पवित्र कहे जानेवाले पारिवारिक रिश्तों में दरार आ रही है। इसका मुख्य कारण पैसा ही रहा है।

इस समस्या का ममता जी के 'बेघर' उपन्यास में हम देख सकते है। जब परमजीत नौकरी की तलाश में मुंबई आता है। स्थायी होने के बाद वह हर महीने घर में पैसे भेजता है। घर जाते समय वह अपने भाई-बहन के लिए खेलने के लिए खिलौने भी लाता था। रमा जैसी स्वार्थी स्वभाव वाली स्त्री से जब वह विवाह करता है तो वह उसे पैसा भेजने से मना करती है। इसपर परमजीत को बहुत बुरा लगता है। परमजीत के घरवालों के प्रति, रमा का रूख कभी अच्छा नहीं रहा। परमजीत अपने भाईयों को मुंबई लाकर पढ़ाना चाहता था। रमा के ऐसे स्वभाव के कारण, उसने हर महीने घर पैसा भेजना बंद कर दिया। वह परमजीत से कहती है, "नहीं जी, बंबई में ज्यादा बड़ा मकान होगा तो रिश्तेदार लाइन बाँधकर चले आयेंगे घूमने के लिए। मैंने तो सबको लिख रखा है हमारे पास जगह नहीं है।"**(51)** इस संदर्भ में एक अन्य उद्धरण द्रष्टव्य है-

रमा, घर का आँगन पक्का करवाने के लिए पैसा नहीं देना चाहती वह कहती हैं- "नहीं जी ये सब बहाने होते हैं। फिर पता नहीं कब लौटायेंगे। घर की, घर में माँग भी तो नहीं सकते। मैं नहीं देनेवाली। बैंक में पडे हैं तो ब्याज भी लगता है, वे हमें ब्याज थोड़े देंगे।"**(52)** इस प्रकार कहा जा सकता है कि भाई-बहन के रिश्तों में तथा परिवार के अन्य सदस्यों के बीच दरार पैसों के कारण पैदा होती है।

'नरक दर नरक' की नायिका उषा माँ-बाप की इच्छा के विरूद्ध जगन के साथ प्रेम विवाह करती है। जब वह महीनों बाद अपने घर वापस लौटती है तो उसे परिवार से सहानुभूति नहीं मिलती है। यह देखकर जगन अपने ससुराल में अपमान व घुटन महसूस करता है। लेखिका के अनुसार- "शादी के बाद पूरा परिवार पहली बार इकट्ठा हुआ था, लेकिन हर एक के मन में दूसरे के प्रति आशंका दबी हुई थी। उनमें एक लँगड़ा संवाद चल रहा था।"**(53)** परिणाम यह हुआ कि वे दोनों वापस लौटने का निर्णय कर लेते हैं। इसके बारे में लेखिका लिखती है- "उषा ने स्वयं निर्णय लिया था। वापस सामान बाँध उसने ताँगा बुलाया। पंद्रह घंटों के अंदर वह इस घर में अघा गई,जहाँ उसने अपने जीवन के बेहतरीन बाईस साल गुजारे थे। इन घंटों में उसे लगा जैसे वह किसी गलत पते पर पहुँच गई है।"**(54)** उसे लगता है कि कहीं न कहीं इस रिश्ते का धागा टूटू-सा गया है। आधुनिक कहे जानेवाले नाते-रिश्तों की सही त्रासदी कही जा सकती है।

जिनके पास पैसा होता है, उन्हें रिश्ते नातों का महत्व पता नहीं होता। यह हमें प्रेम कहानी उपन्यास में देखने को मिलता है "डॉ.गुप्ता के पिता को दिल का दौरा पड़ने के कारण वे दिल्ली चले जाते हैं। उनके जल्दी लौटकर न आने से उसकी पत्नी परेशान हो जाती है। क्योंकि रोज सात सौ रुपये का नुकसान होता है। निच्छत रूप से स्त्रियाँ अपने पति को रुपये कमाने की मशीन समझने लगी है।" पैसों के कारण आगे माता-पिता जैसे रिश्ते भी गौण होते दिखाई दे रहे हैं।

'दौड़' उपन्यास में पवन, घर के प्रति अपना कर्तव्य निभाता है। इसीलिए माँ के नाम पर बीस हजार रूपये का चेक काट देता है। पर माँ को बेटे का ऐसा करना रास नहीं आता। इस घटना से दोनों में अनबन हो जाती है। आधुनिक युग में उपहार देने या न देने से परेशानी या तनाव उत्पन्न होता है। पवन की माँ जब अपने बेटे से मिलने राजकोट आती है

तब पवन और स्टैला उसे एक उपहार देते है। आभला (शीशे) की कढ़ाई की भव्य चादर, लेकिन पवन की माँ उसे स्वीकार नहीं करती। यह देखकर पवन को गुस्सा आता है वह कहता है- "आपको पता है हमारे तीन हजार रुपये इस गिफ्ट में खर्च हुए हैं। इतनी कीमती चीज़ की कोई कद्र नहीं आपको?"**(55)**

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर कहा जा सकता है कि मनुष्य से अधिक महत्व पैसों को दिया जाता है। पैसों के सामने माता-पिता का कोई मूल्य नहीं है।

4.24 बच्चों की समस्या:

आधुनिक दौर में नौकरी के कारण संयुक्त परिवार, एकल परिवार में बदल गये है। जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार हुआ नारी भी नौकरी की तलाश में घर से बाहर जाने लगी। लेकिन इसका असर छोटे बच्चों पर पड़ रहा है। सुबह काम को गये हुए माता-पिता देर रात तक वापस लौटते है। इसी कारण आज बच्चों की समस्या आ रही है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में इस समस्या को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

'प्रेम कहानी' उपन्यास में डॉ.गुप्ता के दो बेटे आधार और आकार शिमला में पढ़ते हैं किन्तु छुट्टियों में घर आते हैं, तो डॉ.गुप्ता उन्हें समय नहीं दे पाते। पैसों के पीछे भागते हुए डॉ.गुप्ता बच्चों के प्रति जिम्मेदारी भूल ही जाते है। बच्चे, उपन्यास के नायक गिनेस से इस बात की शिकायत करते हैं- "क्या फायदा इन पैसों का! रात ग्यारह बजे जब पापा क्लिनिक से उठते हैं सारे सिनेमा-हाउस, रेस्तराँ, बाजार बंद हो जाते हैं। उस समय वह इतने थके होते हैं कि न ठीक से खाना खाते हैं, न बात करते हैं, बस सो जाते हैं। उनसे उस वक्त कहा भी नहीं जा सकता कि कहीं चलो। रात ग्यारह बजे किसी के घर नहीं जा सकते जब तक कि कोई फीस देकर ही न बुलाये।"**(56)**

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि छोटे बच्चे समाज की आधारशिला माने जाते हैं। किन्तु आजकल नौकरी के कारण माँ-बाप, बच्चों से दूर होते जा रहे हैं। वे प्यार और ममता से वंचित रह जाते है। अगर इसी तरह लोग नौकरी और पैसों के पीछे भागेंगे तो आनेवाले बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। इसलिए बच्चों की मानसिक समस्याओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

4.25 स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण:

आजकल समाज में पुरूष ही स्त्री पर अत्याचार एवं शोषण नहीं करता बल्कि स्त्री भी स्त्री का शोषण करती है। चाहे वह नौकरी के क्षेत्र में या परिवार में या जब प्रश्न खुद माँ बनने का आता है तब भी एक स्त्री होकर लड़की पैदा नहीं करना चाहती। 'बेघर' उपन्यास की रमा जब माँ बनने वाली होती है तब वह लड़के की ही अपेक्षा करती है लड़की की नहीं। वह कहती है "लेकिन लड़के पर लगाने में पैसा डूबता तो नहीं है न। देख लेना अगर लड़की हुई तो मैं घर में मक्खन, अंडे, मीट सब बंद कर दूँगी।"**(57)**

ममता कालिया के उपन्यास 'दुक्खम सुक्खम' में विद्यावती की बहू, इंदू को प्रसव के लिए ले जाते पड़ोस की रामो ने असीद दी, "जाओ, बहू जल्दी अपने हाथ-पैर से खड़ी वापस लौटे, गोद में कन्हैया खेले।"**(58)** प्रसव-पीड़ा के बाद वास्तव में लड़की के जन्म पर, दादी ने सबसे पहले रामो को कोसा,"चलते चलते टोक लगाई ही।"बच्चे के जन्म के बाद दादी एक महीने के लिए बहू का चौके में घुसना भी बंद कर देती है।

अतःयह कहा जा सकता है की पारिवारिक समस्या आज देश की सबसे बड़ी समस्या है जैसे-जैसे औद्योगिकरण बढ़ता गया वैसे-वैसे परिवार बिखरने, रिश्ते टूटने लगे। नौकरी के कारण महिलाएं भी परिवार को अधिक समय नहीं दे पाती है। ममता कालिया ने इन

समस्याओं का यथार्थपरक चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। उनके अनुसार इस समस्या को दूर करने के लिए, प्रेम भावना, आदर सम्मान आदि होना आवश्यक है वरन् यह समस्या कठिन और जटिल बनती जाएगी और परिवार को ध्वस्त कर देगी।

4.3 राजनीतिक परिवेशगत यथार्थ

आज के वर्तमान दौर में राजनीतिक क्षेत्र में किस तरह के कारनामें होते है यह सब जानते है। इसका परिणाम भी लोगों को भुगतना पड़ता है। अपराधी मनोवृत्ति के लोग हर जगह, अपना वर्चस्व दिखाने की कोशिश करते है। लोगों को लूटना, पीटना यह सब उनकी भ्रष्ट नीति के कारण ही होता है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में भ्रष्ट राजनीति को ईमानदारी के साथ उभारा है। उनके उपन्यासों में सत्ता वर्ग की राजनीति, महाविद्यालयों में षड़यंत्रकारी राजनीति, आदि इसका यथार्थपरक रूप में चित्रण किया है।

4.31 महाविद्यालयों में षड़यंत्रकारी राजनीति:

वर्तमान दौर में, शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल, कालेज आदि सरकार द्वारा बनाये जाते है जो आगे जाकर व्यक्ति एवं राष्ट्र को बनाने का काम करते है। लेकिन आजकल देखा जाए तो यह केंद्र स्वार्थ की पूर्ति करने वाले केंद्र बन चुके है। इसका चित्रण ममता कालिया के उपन्यास नरक दर नरक में किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक जोगेंदरसाहनी को मुंबई के केड़िया कॉलेज में नौकरी मिलती है। जगन धीरे धीरे कॉलेज की गंदी-घिनौनी व षडयंत्रकारी राजनीति का शिकार बनने लगता है। वह एक अनुशासनप्रिय प्राध्यपक के रूप में जाना जाता है। उसके क्लास में अगर कोई देर से आ जाए तो वह उसे अंदर नहीं आने देता। एक दिन संचालक की बेटी कल्पना यादव क्लास में बीस मिनट देर

से आती है। जगन उसे अंदर आने से मना करता है। वह लड़की उसकी शिकायत प्राचार्य सामंत से करती है। जब प्राचार्य उसे केबिन में बुलाते है तो उसके गुडमॉर्निंग का जवाब भी नहीं मिलता और वे उसे बैठने के लिए भी नहीं कहते। प्राचार्य सामंत कहते हैं- "आपने अभी एक गर्ल स्टूडेंट को पाँच मिनट देर से आने पर डाँटा?" साहनी ने कहा वह-बीस मिनट लेट थी।प्राचार्य के अनुसार, "झूठ, उसने मुझे बताया कि वह सिर्फ पाँच मिनट लेट थी और उसके यह कहने पर भी कि उसकी तबीयत ठीक नहीं, आपने उसे अंदर नहीं आने दिया।.....आगे से ऐसा सुनने में न आए, गो।"**(59)** यह संस्था जगन से खुश नहीं थी क्योंकि उसने अपनी ही छात्रा(उषा) से प्रेमविवाह किया था।

आज के दौर में शिक्षा संस्थाओं में अध्यक्ष एवं प्राचार्य की पटती नहीं है। उपन्यास के प्राचार्य सामंत भी इसी श्रेणी में आते है। उन्हें संस्था के लोग हटाना चाहते है। लेकिन लंबी सेवा और नियमों को जानने के कारण वह उनसे डरते हैं। लेकिन जगन के केस में यह संस्था इस मौके का फायदा उठाकर उन्हें निकाल देना चाहती है। इस संदर्भ में लेखिका का कहना है कि- "केड़िया कॉलेज का मैनेजर गुजराती था। वह इस घटना से बहुत उद्वेलित था। सामंत को निकाल फेंकने के लिए वह इस बात को बम की तरह इस्तेमाल करना चाहता था।"**(60)** लेकिन सामंत इसका सामना करना जानता है। इसका गुस्सा वह, साहनी पर निकलता है। साहनी के मन में कई विचार आते है। इसी षड़यंत्रकारी राजनीति में उसे फँसाया जाता है। उसका विभागाध्यक्ष के.सी शाह उस पर इलजाम लगाता है। इन्ही झूठे आरोपों से (जगन) तंग आकर इस्तीफा फेंक देना चाहता है। जगन का मन कहता है कि- "इस्तीफा लिखे और जूते की नोक पर टिकाकर सामंत और शाह के मुँह पर फेंक दे।" ऐसी स्वार्थी एवं मतलब की व्यवस्था में घुट-घुट कर काम करने से अच्छा त्यागपत्र देना है। प्रस्तुत उपन्यास के प्राचार्य सामंत एक ऐसे व्यक्ति है जो हमेशा यह चाहते है कि सब

लेक्चरर, उनके पास फरमाइश लेकर आये। अगर कोई प्राध्यापक किसी राजनीतिक पार्टी से जुड़ा हो तो ऐसे संस्थाचालक उनसे डरते हैं। इसलिए प्राचार्य सामंत, लक्ष्मण देशमुख से कहते हैं- "ज़रा पता लगाते रहना, साहनी किसी राजनीतिक दल का सदस्य तो नहीं। मैं अपने कॉलेज में कोई राजनीतिक प्रपंच नहीं चाहता।" वर्तमान समय में सारी संस्थाएं राजनेताओं के हाथों में चली गयी हैं। वर्तमान दौर में पी.एच.डी. वाला उम्मीदवार रकम देकर जगह हासिल कर रहा है। बीस-पच्चीस लाख रुपये डोनेशन के रूप में संस्था वाले ले रहे हैं। जब कालेज में लक्ष्मण देशमुख को सीनियर पे-स्कूल मिलता है तो जगन गुस्सा होता है। जब जगन अपनी चार्जशीट माँगता है तब प्रिंसिपल 'कॉलेज के नियमों की फाइल' खोलकर जगन के सामने रख देता है जिसमें लिखा था- "महाविद्यालय की प्रबंध समिति प्रिंसिपल की रिपोर्ट पर किसी भी प्राध्यापक को तीन महीने का अग्रिम वेतन दे, कार्यमुक्त कर सकती है।" इस पर जगन अपना त्यागपत्र देता है। वह लिखता है- "मैं कार्यकारिणी समिति के इस पद की भर्त्सना करते हुए इसका विरोध करता हूँ और उसे लेने से इंकार करता हूँ। प्रिंसिपल सामंत के अभद्र पक्षतापूर्ण और दमनशील व्यवहार के विरोध में, मैं अपने प्राध्यापक पद से तत्काल त्यागपत्र दे रहा हूँ। इसे अनिवार्य व अंतिम समझा जाए।"**(61)** इस तरह जगन बिना वेतन और बिना प्रॉविडेंट फंड लिए घर लौटता है। नरक दर नरक उपन्यास के साधना कॉलेज के बारे में लेखिका लिखती हैं-"एक टूटी-सी इमारत में स्थित यह कॉलेज लड़कियों से ठसाठस भर रहता था।"**(62)** एक अनुदानित कॉलेज भी एक टूटी ईमारतों एवं टीन के पत्रे के सहारे चलाये जाते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण ममता जी ने 'प्रेम कहानी' उपन्यास में भी दिया है। उपन्यास की नायिका जया के पिता का तबादला मुंबई से मथुरा में हो जाता है, तब उसके सामने कॉलेज में प्रवेश लेने की समस्या उत्पन्न हो जाती है। इस संदर्भ में जया कहती है- "सबसे पहले मैं उस कॉलेज में पहुँची, जो इस शहर

का सबसे बड़ा, पुराना और प्रतिष्ठित कॉलेज था। इमारत काबिले बरदाश्त थी, लेकिन मेरे विषय मेल नहीं खाते थे।"**(63)** जब जया कॉलेज का माहौल देखती है तब उसे यह गौशाला जैसे लगता है। इसके बारे में वह कहती है- "दूसरे कॉलेज के फाटक पर गाय बँधी थी और अंदर बिल्कुल गौशाला जैसा माहौल था।"**(64)** यह सारे महाविद्यालय राजनेताओं के बल पर चलते हैं। और उसमें भी जानलेवा राजनीति चलती है। सरकार भी उनका सहयोग करती है।

उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत के शैक्षणिक संस्थाओं में जो राजनीति चल रही है इसका पर्दाफाश लेखिका ने इन उपन्यासों में किया है।

4.32 अस्पतालों में राजनीति:

आजकल हर क्षेत्र में राजनीति छायी हुई है। अस्पतालों में भी यही स्थिति है। प्रेम कहानी उपन्यास में चिकित्सालयों में भी फैली गंदी और जानलेवा राजनीति का पर्दाफाश किया गया है। दिल्ली जैसे बड़े शहर में महामारी के कारण मलेरिया फैलता है। अस्पताल में बड़ी संख्या में लोग आते हैं। इसलिए कंपनी से गोलियाँ और दवाइयाँ मँगायी जाती है। गोलियाँ लेने के लिए लोगों की भीड़ जमा हो जाती है। तभी अचानक, सूचना मिलती है कि दवा खत्म हो गई है। तभी गिनेस और डॉ.गुप्ता में बहस होती है। डॉ.गुप्ता का कहना है कि- "जितना स्टॉक था, बाँट दिया गया। अस्पताल ने क्या सारे शहर का ठेका ले रखा है? ये गलीज लोग क्या कभी ठीक हो सकते हैं! आज इन्हें मलेरिया से बचाओ, कल इन्हें फ्लू हो जाएगा, फ्लू ठीक करो, टायफाइड हो जाएगा।"**(65)** लेकिन गिनेस कहता है- गरीबी उनका हमसाया है, भुखमरी इनका भोजन। तो डॉ.गुप्ता इसका इलाज बताते हुए कहते हैं- "तो इसका इलाज हम कहाँ से करें। जाएँ ये गाँधी टोपीवाले नेताओं के पास, इनसे इलाज माँगे।

उनसे क्यों नहीं कुछ कहते, जिन्हें ये चुपचाप जाकर वोट पकडा आते हैं।"**(66)** भले ही डॉ.गुप्ता भ्रष्ट डॉक्टर है। लेकिन जो वाक्य उन्होंने कहा है, वह सच ही है। अस्पताल में राजनीति, उससे जुड़ा भ्रष्टाचार, यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। जिससे गरीब मरीज़ अवहेलना का शिकार होते हैं। गिनेस अस्पतालों की राजनीति का शिकार नहीं होना चाहता है। इसीलिए वह ऐसे माहौल में काम नहीं करना चाहता है। उसका कहना है- "अव्वल तो मुझे यहाँ प्रैक्टिस करनी ही नहीं है। अस्पताल की जानलेवा राजनीति में यहाँ डॉक्टर खुद रोगी हो जाता है।"**(67)**

यहाँ आए नये डॉक्टरों को भी इसी साजिश का शिकार बनना पड़ता है। उनका विरोध किया जाता है उन पर दबाव डाला जाता है। उनके साथ राजनीति की जाती हैं। डॉ.उस्मान इसका ज्वलंत उदाहरण है। अस्पताल में डॉक्टरों रोगियों के साथ कैसा पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जाता है इसका पर्दाफाश करता हुआ गिनेस कहता है- "परसों डॉ.उस्सान को बड़ा जरूरी एमरजेंसी ऑपरेशन करना था, थिएटर खाली नहीं मिल रहा था। उनका मरीज़ दो बजे तक कॉरीडोर में पड़ा रहा और जब ऑपरेशन थिएटर उन्हें मिला, तब ऑपरेशन के दौरान बिजली गुल हो गई।"**(68)**

ऐसे राजनीतिक षडयंत्र में मरीज़ों का हाल बेहाल हो जाता है। निश्चित रूप से उनकी आपसी बैर-भाव की राजनीति रोगियों के जान के साथ खिलवाड़ करती हुई दिखाई देती है। कभी कभी रोगी की जान भी चली जाती है। इसके जिम्मेदार, सिर्फ सरकारी अस्पताल के भ्रष्ट डॉक्टर ही होते है। आज गरीब मरीजों को ही अस्पतालों की भ्रष्ट राजनीति का सामना करना पड़ता है। डॉक्टर और नेता मिले होते है। इनके बीच सिर्फ गरीब मरीज पिसता चला जाता है।

4.33 विदेशों में राजनीति:

प्रस्तुत राजनीति का चित्रण ममता कालिया ने दौड़ उपन्यास में किया गया है। पवन का छोटा भाई 'सघन', नौकरी के लिए चीन चला जाता है। जिसके कारण उसके माता-पिता घबरा जाते हैं। उसके चाल-ढाल के बारे में पवन अपने माँ-बाप से कहता है- "हाँ पापा उसका ताइपे से खत आया था। जॉब उसका ठीक चल रहा है पर उसकी चाल-ढाल ठीक नहीं लगी।"**(69)** इस पर पवन, सघन को राजनीति छोड़ने के पचड़े से दूर रहने की सलाह देता है। वह उसे वापस हिंदुस्तान आने के लिए भी कहता है। तब सघन अपना समीकरण समझाता हुआ पिता से कहता है- "ऐसा है पापा अगर मैं लोकल लोगों के समर्थन में कहीं नहीं बोलूँगा। तो ये लोग मुझे नष्ट कर देंगे।"**(70)** इसलिए उसके पिता उसे स्वदेश लौटने के लिए कहते हैं। क्योंकि परदेस में आदमी कभी नहीं जम पाता। तंबू का खूँटा कभी न कभी उखड़ ही जाता है। इसप्रकार ममता कालिया के उपन्यासों में देश एवं विदेश के राजनीतिक परिवेश का बेबाक़ चित्रण किया गया है।

4.4 आर्थिक परिवेशगत यथार्थ

आधुनिक युग में अर्थ ही जीवन का लक्ष्य बन गया है। आज हर एक व्यक्ति को अर्थ की दृष्टि से ही जाँचा परखा जाता है। अर्थ के बिना व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है और इसके कारण वह हर बार दिशाहीन हो जाता है। पैसे वाला व्यक्ति, और पैसा कमाना चाहता है और बेचारा गरीब दिन-ब-दिन गरीब होता जा रहा है।

आर्थिक समस्या भी समाज में एक गंभीर समस्या बनी हुई है। क्योंकि पैसा जीने का मुख्य आधार है। अर्थ के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं का यथार्थपरक अंकन

ममता कालिया के उपन्यासों में किया गया है इसे निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट किया जायेगा।

4.41 बेकारी की समस्या:

आजादी के कई सालों बाद भी बेकारी की समस्या वैसे की वैसी है। यह समस्या दिन-ब-दिन भयानक रूप धारण करती है। यह हमारे भारत देश के लिए एक चुनौती का विषय बन गया है।

ममता कालिया के उपन्यासों में शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ रही बेकारी का चित्रण किया गया है। बेकारी से ग्रस्त शिक्षित युवक, उसकी मानसिकता और उसके जीवन भरे-संघर्ष को यथार्थ रूप में उपन्यासों में चित्रित किया गया है।

'बेघर' नामक उपन्यास में परमजीत के पिता की लस्सी की दुकान थी। जब वह छोटा था तो अपने पिता को बर्फ धोकर, देने का काम करता था। उसके पिता ने उसे लस्सी बनाना सिखा दिया था। उसके पश्चात परमजीत को स्कूल में भरती कराया गया। पढ़ाई पूरी होने के पश्चात वह बेकार घूमने लगा, तब उसके पिता ने अपने एक ग्राहक से कहते है- "एक बेटा है, पढ़-लिखकर इस धंधे के लिए बेकार हो गया है।"

लेखिका ने अपने 'नरक दर नरक' उपन्यास में शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ रही बेकारी से त्रस्त युवक की निराशा, उदासीनता आदि का चित्रण किया है। नायक (जगन) अंग्रेजी में एम.ए करने के परांत लंबे समय तक बेकार ही रहा। आखिर उसे अंग्रेजी विषय में अड़तालिस प्रतिशत अंक होते हुए भी मुंबई के केड़िया कॉलेज में नौकरी मिलती है। यहाँ जगन तीन साल नौकरी करता है। इसी बीच वह किरण बजाज नामक लड़की से प्रेम करने लगता है। वह लड़की उसके नौकरी लगने की प्रतीक्षा करती है जिससे वह उससे शादी कर

सके। इस संदर्भ में एक उद्धरण द्रष्टव्य है- "उन दिनों वह सारा दिन आवश्यकता है कॉलम पढ़ा करता था और अर्जियाँ भेजता। किरण बजाज बड़ी उम्मीद से इंतजार करती कि उसका इंटरव्यू होगा और वह चुन लिया जाएगा। फिर बाकायदा विवाह होगा।"(71)

बहुत इंतजार करने के बाद किरण किसी और से ब्याह कर लेती है। यह कहा जा सकता है कि बेकारी आज युवकों के बीच कबाब में हड्डी बनकर सामने आती है। अगर पैसा नहीं तो लड़की भी नहीं मिलती अगर मिलती है तो वह ज्यादा दिन तक नहीं टिक पाती।

आज का प्रत्येक बेकार युवक, समाचार पत्र में 'आवश्यकता है' वाला कॉलम पढ़ते पढ़ते थक जाता है। जगन भी इसी स्थिति से गुजरता है। कहीं रिक्त जगह निकलती भी है, तो इससे तंग आकर अपने आवेदन पत्र में कृपा जैसे शब्द भी नहीं लिख पाता है। लेखिका इस बारे में लिखती है- "जिस दिन केड़िया कॉलेज का विज्ञापन उसने पढ़ा था, उसकी टेबुल पर सिर्फ पोस्टकार्ड पड़ा था। उसी पर उसने महज़ अपनी योग्यताएँ लिखकर भेज दी थीं। निवेदन औक कृपा जैसे शब्द अर्जी में कहीं नहीं थे।"(72) इसके बावजूद भी उसे साक्षात्कार में बुलाया जाता है।

जगन का चुनाव केड़िया कॉलेज में ही जाता है। परंतु जल्द ही उस कॉलेज की राजनीति एवं गंदे माहौल में उसे फँसाया जाता है। फिर से उसे कॉलेज से निकाल दिया जाता है। उसके अनुसार- "मेरी बेकारी उनके लिए कोई नई चीज नहीं है। जीवन के पच्चीस साल मैंने बेकारी में ही गुजारे हैं।"(73) जगन जब श्यादी करता है तो उषा (पत्नी) को उसकी बेकारी का सामना करना पड़ता है और वह अपने जीवन में खुश नहीं है।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि भारत में बढ़ती जनसंख्या के कारण बेकारी बढ़ती जा रही है। लेकिन रोजगार के साधन नहीं बढ़ रहे हैं। इसका हल तभी निकल सकता है जब बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित किया जाए।

4.42 महँगाई:

आज मँहगाई के कारण भारत देश की अस्सी (80) प्रतिशत जनता पिस रही है। महँगाई के कारण लोग असंतोष और दुःख का सामना कर रहे है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे ही महँगाई भी बढ़ रही है। महँगाई के कारण हम अपनी जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते। कल तक जो वस्तु सस्ती मिलती थी, उसी वस्तु का दाम आसमान छूने लगा है। शायद बढ़ती हुई इस महँगाई का कारण सरकार भी है। इसी वजह से समाज का मध्यवर्ग एवं निम्न वर्ग कठिनाईयों से गुजर रहा है। अगर सरकार वस्तुओं पर टैक्स कम करे, तो महँगाई कम हो सकती है। बढ़ती महँगाई का मध्यवर्गीय परिवारों पर किस तरह प्रभाव पड़ रहा है। इसको ममता कालिया के उपन्यासों में यथार्थ रूप से दर्शाया गया है।

'बेघर' उपन्यास की रमा की माँ, उसको रोज बादाम खाने की सलाह देती है। उसका मन भी बादाम खाने को तरसता है। लेकिन बढ़ती हुई महँगाई के कारण वह अपना निर्णय बदल देती है। दूसरी ओर, अगर बाजार में किसी वस्तु के भाव कम हो जाए तो वह बहुत खुश हो जाती है और दिन भर उसी की चर्चा करने लगती है। उसका पति परमजीत रमा के मूड के बारे में कहता है कि, "जिस दिन टमाटर का भाव गिर जाता, वह सारा दिन प्रसन्न घूमती और काफी देर तक टमाटरों की बात करती रहती। अक्सर उसका वार्तालाप ऐसे ही किसी विषय पर होता।"**(74)**

वहीं दूसरी और 'नरक दर नरक' का नायक जगन दादर स्टेशन के कैंटीन में इसलिए जाता है, क्योंकि वहाँ सस्ती चाय और सस्ता नाश्ता मिलता था। इस पर लेखिका कहती है-

“यहाँ वह अक्सर आ जाता था। चाय का प्याला दस पैसे में और समोसे पंद्रह पैसे के दो। इससे सस्ता चाय-नाश्ता पूरी बंबई में और कहीं नहीं था।”**(75)**

आम आदमी चाह कर भी बड़े-बड़े होटलों में नहीं खा सकता। लेकिन वह अपने जेब के पैसों के बारे में सोचता है। महँगाई नौकरीपेशा मध्यवर्गीय परिवारों को भी परेशान करती है। मुंबई जैसे बड़े-बड़े महानगरों में नौकरी करने वाले लोग भी इसका सामना करते है। इतने बड़े महानगरों में रोटी, कपड़ा, मकान महँगा लगता है और आम आदमी इसका निर्वाह नहीं कर सकता। महँगाई के कारण आम आदमी विवशता में जी रहा है। जोगेंदर साहनी एक कॉलेज में पढ़ाते है लेकिन वह महँगे फ्लैट में नहीं रह पाता। वह एक लॉज में रहता है। इस संबंध में ममताजी के विचार है- “टूटी सी ढ़ियोंवाली श्रीकृष्ण लॉज को वह हर महीने नब्बे रुपये देता था। उसकी तनख्वाह इतनी कम थी कि अच्छे फ्लैट में रहना महँगा सपना लगता।”**(76)**

महँगाई का प्रभाव आम आदमी के अलावा, प्रेम करने वाले प्रेमी-प्रेमिकाओं पर भी पड़ता है। इसका उदाहरण जगन और उषा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उन दोनों का बहुत मन था की वह बड़े-बड़े रेस्तराँ में चाय का आस्वाद चख लें। बड़ी-बड़ी बातें करने वाला जगन जब शादी के बाद मुंबई आता है तो खाना बनाने तक के लिए उनके पास बर्तन भी नहीं होते है। यह देखकर सौ रुपये का नोट जेब में डाल कर वे बर्तन खरीदने जाते है। ऊँची कीमतें देखकर वह दोनों ठंडे पड़ जाते हैं। आकाशवाणी द्वारा प्रसारित राष्ट्रपति का संदेश वह बर्दाश्त नहीं करती वह अपना आक्रोश व्यक्त करती हुई कहती है- “जब तक बाज़ार में वाजिब दामों पर डालडा, चीनी और मिट्टी का तेल नहीं मिलने लगता, वह इसी तरह खिलाफ होती रहेगी।”**(77)** ममता कालिया ने अपने अन्य उपन्यासों में भी महँगाई का वास्तविक एवं दर्दनाक चित्रण किया है।

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि लेखिका ने अपने उपन्यासों में महँगाई का प्रभावशाली ढंग से चित्रण किया है। महँगाई बढ़ने के पीछे उन्होंने अनेक कारण बताये है और इसमें सुधार लाने की कोशिश भी की है।

4.43 आर्थिक अभाव:

हर महीने मिलने वाले पैसे परिवार के लिए काफी नहीं होते है। हर महीने के अंत में नौकरीपेशा पुरूष की जेब खाली हो जाती है। इसलिए वे प्रत्येक महीने की एक तारीख का इंतजार करने लगते हैं। वह ब्याज पर भी पैसे उधार लेते हुए दिखायी देते हैं। नरक दर नरक का जगन भी इस समस्या से गुजरता है। उसका (जगन) का कहना है-"तब उसे याद आया कि उन लोगों के पास इस समय सिर्फ चौबीस रुपये बचे हैं जबकि पहली तारीख आने में अभी ग्यारह दिन बाकी है। **(78)**

'प्रेम कहानी' उपन्यास में गरीब मरीजों के आर्थिक अभाव को दिखाया गया है। डॉ.गुप्ता बच्चों के डॉक्टर थे। सुबह के वक्त वह अस्पताल में रहते और शाम के वक्त अपने बँगले पर बच्चों का इलाज करते थे। वे सिर्फ रात को दस बजे तक ही मरीज को देखते थे। एक दिन एक माँ-बाप अपने बेटे को लेकर रात में डेढ़ बजे आते है तो डॉ.गुप्ता ने बैडरूम की खिड़की से कह दिया, "पूरे पचास रुपये लगेंगे इस वक्त।"**(79)**

इस प्रकार मध्यवर्गीय लोग, आर्थिक अभाव के बावजूद भी अपने बच्चों के इलाज के लिए पैसा देने के लिए तैयार हो जाते है।

'बेघर' उपन्यास की संजीवनी भी अर्थाभाव के कारण त्रस्त है यह हमें उनके माँ के माध्यम से पता चलता है। संजीवनी कॉलेज में पढ़ाती थी। और सारा परिवार उसी पर निर्भर था। वह उसकी शादी भी नहीं कराना चाहते क्योंकि संजीवनी पैसा कमाने का एक

मात्र सहारा थी। उसकी माँ बीमार थी इसलिए दिन-रात वह उसका खयाल रखती थी। आर्थिक अभाव के बावजूद भी वह परिवार का पूरा ध्यान रखती है लेकिन उसकी भाभी का कहना था "साथ-साथ कॉलेज ले जाया करो, हम तो मारे डालते हैं उन्हें।" आर्थिक अभाव के कारण मध्यवर्गीय परिवारों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ममता कालिया के उपन्यासों में इसका चित्रण किया गया है। अर्थ जीवन में कितना महत्व रखता है यह हमें इन उपन्यासों के पात्रों द्वारा पता चलता है।

4.44 डॉक्टरों की अर्थलोलुपता:

डॉक्टरी पेशे को, सेवा का पेशा माना जाता है। प्राचीन काल में डॉक्टरों को महान माना जाता था। और डॉक्टर भी निस्वार्थ भाव से मनुष्यों की सेवा करते थे। वर्तमान युग में डॉक्टर, सेवा कम तथा रुपयों की माँग अधिक करते हैं। एक समय ऐसा था जब डॉक्टरों को ईश्वर का दूसरा रूप माना जाता था। आज भी उन्हें लोग भगवान एवं मसीहा के रूप में देखते हैं। लेकिन यह संदर्भ आज अर्थलोलुप डॉक्टरों झूठी साबित हो रही है। आज मरीज़ उनके लिए इंसान नहीं, केस बन गये हैं। डॉक्टर, डॉक्टर न रहकर कसाई बन गया हैं। वे रूग्ण को कम और पैसों को अधिक महत्व देते हैं। इसलिए उनकी ओर, समाज का देखने का नजरिया बदल गया है। डॉक्टरों की अर्थलोलुपता और पदलोलुपता की समस्या भी गंभीर बनकर सामने आ रही है। ऐसे ही कुछ भ्रष्ट डॉक्टरों की पोल प्रेम कहानी उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया ने खोली है। डॉ.गुप्ता को शहर में बच्चों का जादूगर कहा जाता था। डॉ.गुप्ता सरकारी डॉक्टर होते हुए भी घर पर बच्चों को देखते हैं। इसलिए नका पोर्च हमेशा मरीजों से भरा रहता। आज समाज में डॉक्टर अधिक फीस लेकर मरिजों को देखते हैं। ऐसे डॉक्टरों की संख्या बढ़ती जा रही है। जब गिनेस, एक पेशंट को देखने उसके घर

जाता है तो उसे यह एहसास होता है कि बहुत दिनों तक उसके घर में चूल्हा नहीं जला होगा। जब दवाइयों की लिस्ट, डॉ. गिनेस उसके हाथ में देता है तो दीनता भरी आवाज में कहता है, डॉक्टर साहब, दवा कितने की है और कीमत सुनकर परेशान हो जाता है।पेशंट की पत्नी कहती है 'हँसुली बेचकर पच्चीस रुपये लाए थे, बीस तो डॉक्टर साहब को भेंट चढ़ गए, अब दवा कहाँ से आएगी? कोई सस्ती दवाई लिख दीजिए, डॉक्टर साहब"।**(80)**

डॉ. गुप्ता के आशीर्वाद से गिनेस को अस्पताल के सामने छोटा सा कॉर्टर मिल जाता है। अस्पताल का काम बढ़ता चला जाता है। गिनेस पर मरिजों की जिम्मेदारी अधिक बढ़ती है। डॉ. गुप्ता व्यवहारवादी तो थे ही मरीजों की बढ़ती संख्या देखकर भ्रष्ट भी होते हैं। पैसों के लिए वे अस्पताल में जानलेवा राजनीति फैलाते हैं। फीस न रहने पर मरणसन्न मरीज का इलाज न करनेवाले डॉ.गुप्ता के प्रति अन्य डॉक्टर, कर्मचारियों का आक्रोश बढ़ता जाता है। डॉ. गिनेस अपने आदर्शों के अनुसार ही मरीजों की समस्याओं का समाधान करने में विश्वास करता है। इसी विषय पर कई बार वह डॉ.गुप्ता से उलझ पड़ता है।

'बेघर' उपन्यास में केकी अंक्लेसरिया के माध्यम से इस समस्या को उजागर किया गया है। जब खून में इन्फेक्शन पाये जाने के कारण वह बीमार हो जाती है तब परमजीत उसे अस्पताल में भरती कराना चाहता है लेकिन वह नहीं जाना चाहती। वह अस्पताल और डॉक्टरों का पर्दाफाश करती हुई कहती है, "तुम अस्पताल को पता नहीं क्या समझते हो। मैं यहाँ के एक-एक अस्पताल की धाँधली जानती हूँ मरीज की कितनी परवाह की जाती है यह भी मालूम है। जो यहाँ का सबसे अच्छा अस्पताल है उसमें एक बार ऑपरेशन के दौरान एक मरीज के पेट में छोटी कैंची छूट गई, तीसरे दिन भयंकर दर्द और जहर से उसकी मौत हो गई। दूसरा अस्पताल जो तुम्हारे दफ्तर के पास है, वहाँ की चीफ मेट्रन इतनी खराब है कि

तंग आकर पिछले महीने ही एक नर्स ने छत से कूदकर आत्महत्या कर ली। और वह सरकारी अस्पताल तो इनसे भी बढ़कर है। वहाँ सुप्रिण्टेण्डेण्ट से लेकर चपरासी तक को रिश्वत दो तब तो जाकर बिस्तर मिले, फिर जो दवाइयाँ वे खिलाते हैं उनमें इतनी मिलावट होती है कि कुछ और बीमारियाँ भी साथ-साथ शुरू हो जाती है।"**(81)**

4.45 पैसों के कारण परिवार में तनाव:

पैसा हर एक मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण बन गया है। यह जीने का एक साधन है। पैसों के आगे परिवार के रिश्ते-नाते सब बेकार है। परिवार में पैसा ही तनाव का मुख्य कारण रहा है। ममता कालिया ने इसी समस्या का अपने उपन्यासों में यथार्थ रूप से चित्रित किया है।

'बेघर' उपन्यास की संजीवनी अपनी बीमार माँ के खातीर भाई एवं अन्य सदस्यों से पैसा नहीं माँगना चाहती। इसके परिणामस्वरूप उसे नौकरी करनी पड़ती है। उसकी माँ न बोल सकती है न सुन सकती है। बस बैठे बैठे बाहर देखती रहती है। संजीवनी का कहना है- "नौकरी करती हूँ, इसी से तो भाभी कुछ बोल नहीं सकती। जब से भाई ने बिजनेस में हाथ लगाया है भाभी का दिमाग आसमान पर चढ़ गया है, सोचती है सारा घर उनका है। पैसे वैसे की बातें सुनना मुझे पसंद नहीं! पिछले साल तक तो मैं घर पर थी। पर भाभी माँ का दवाइयों का बिल देखकर मुँह बनाती थी तो मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ।"**(82)**

'दौड़' उपन्यास में पवन अपने माँ-बाप से मिलने आता है और लौटते समय अपनी माँ के नाम बीस हजार रुपये का चेक काटता है। और माँ से कहता है, "माँ हमारे आने से आपका बहुत खर्च हुआ है, यह मैं आपको पहली किस्त दे रहा हूँ। वेतन मिलने पर और दूँगा।"**(83)** बेटे की इस व्यवहार से माँ को दुःख होता है। वह बेटे(पवन) से कहती है- "बेटे

हमें तुमसे किस्तें नहीं चाहिए। जो कुछ हमारा है सब तुम्हारा और छोटू का है। यह मकान तुम दोनों आधा आधा बाँट लेना और जो भी है उसमें तुम्हारा बराबर का हिस्सा है।"**(84)** यह कहने वाली माँ, तनाव ग्रस्त जीवन व्यतीत करती है।

निश्चत रूप से यह कहा जा सकता है की पैसों के कारण ही परिवार टूटते हैं और उनमें तनाव उत्पन्न होता है। पैसों के कारण ही इन्सानियत, भाईचारा जैसे प्रचीन मूल नष्ट हो रहे हैं। इसको ममता कालिया के उपन्यासों में दर्शाया गया है।

इस प्रकार आर्थिक समस्याओं के अंतर्गत बेरोजगारी, महँगाई, आर्थिक अभाव आदि समस्याएं आती है।

4.5 धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेशगत यथार्थ

भारत को सांस्कृतिक तथा धर्मपरायण देश माना जाता है। धर्म और संस्कृति एक व्यापक शब्द है। अतःईश्वर, आस्था, अनास्था, अंधश्रद्धा, रूढ़ि, परंपरा, धर्मांधता, पाप-पुण्य आदि इसके अंतर्गत आते है। लेकिन आजकल धर्म के नाम पर आड़म्बर हो रहे हैं। धर्म के संचालक, पुरोहितों में आज स्वार्थ की भावना बढ़ गयी है। धर्म और संस्कृति के नाम पर अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही है।

आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति हावी होने से भी धर्म का स्वरूप ही बदल गया है जिसके कारण अनेक समस्याएँ खड़ी हो गयी है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का बेबाक रूप से चित्रण किया है। वे इस प्रकार है-

(i) अंधविश्वास:

आजादी के बावजूद भी देश में अंधविश्वास की समस्या वैसे की वैसे है। पहले के जमाने में अधिकार निम्न, मध्यवर्ग या गाँव के अनपढ़ लोगों में दिखाई देती था। लेकिन

यह बात चड नहीं है। आजकल शिक्षित लोग भी अंधविश्वासी होते है। समाज की इसी विद्रुपता का वर्णन ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में किया है।

हिंदू धर्म में सफेद साड़ी पहनना विधवा का प्रतीक माना जाता है। इसी लिए अविवाहित लड़कियाँ सफेद कपड़ा ज्यादा नहीं पहनती है। 'बेघर' उपन्यास का परमजीत और उसकी प्रेमिका संजीवनी जब साड़ी खरीदने के लिए दूकान में जाते हैं, तो परमजीत उसे सफेद साड़ी खरीदने के लिए मना करता है। वहीं दूसरी ओर परमजीत की पत्नी रमा को जब दूसरा बेटा होता है तो बच्चों को किसी की नज़र न लगे, इसलिए वह अपने मकान के दरवाजों पर काले टीके लगाती है। 'अंधविश्वास' को दर्शाते हुए एक उद्धरण द्रष्टव्य है - "बहुत देर तक उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि वह इतनी खुशकिस्मत हो सकती है। पर विश्वास होते ही जल्दी-जल्दी अपने मकान के दरवाजों पर काले टीके लगा दिये। बच्चे को वह दूध पिलाते समय, बोतल कपड़े से ढक देती। उसका खयाल था उसने ऐसा कमाल कर दिखाया है कि सारी दुनिया उसे नज़र लगाने पर तुली है।"**(85)**

इस प्रकार आज भी समाज में लोग अंधविश्वास में जीते हुए दिखाई देते है। नज़र उतारना, गाल पर टीका लगाना, आदि शक के कारण हर व्यक्ति अंधविश्वासी हो गया है। दौड़ उपन्यास में रेखा का बेटा पवन जब सीढ़ियों पर चढ़ जाता है, तो रेखा डर जाती। पवन के सकुशल नीचे उतर जाने से वह भगवान को धन्यवाद देते हुए प्रसाद चढ़ाती है। वह कहती है- "हम दोनों ने उस दिन प्रसाद चढ़ाया। भगवान ने ही रक्षा की तेरी।"

ममता कालिया के उपन्यास 'नरक दर नरक' में अंधविश्वास को उजागर किया गया है। जब मुंबई से उषा और जगन अपने घर(चंडीगढ़) आते हैं, तो जगन की माँ परंपरागत रूप से इन दोनों की नज़र उतारती है। लेखिका जगन की माँ के बारे में लिखती

है- "लपककर वे रसोई से तेल लाई, दहलीज के दोनों ओर तेल चुआया, तब कहीं वे अंदर घुसने दिए गए।"**(86)**

'नरक दर नरक' उपन्यास का जगन जब कॉलेज छोड़कर अपने घर आता है तब उसकी माँ उसे चिंतपुरनी देवी के बारे में बताती है। उसके कुछ चमत्कारों का उल्लेख करती कहती है- "तू फिकर न कर। चिंतपुरनी चले चलना मेरे साथ, चिंतपुरनी देवी सब ठीक कर देंगी। अभी माघ में बड़े काका की चिट्ठी आई थी, सैंडी के पैर में सूजन बैठ गई है, लकड़ी के सहारे चलती है। मैं चिंतपुरनी में मानता मान आई। पिछले महीने चिट्ठी आई, वह बिल्कुल ठीक हो गई। हमारे घर की सारी चिंताएँ चिंतपुरनी देवी ने मिटाई हैं। बड़ा सहारा है उस शेराँवाली का।"**(87)**

ममता कालिया के उपन्यास 'प्रेम कहानी' में भी अंधविश्वासों को दिखाया गया है। प्रायः देखा जाता है पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक अंधविश्वासी होती हैं। उपन्यास का नायक गिनेस जब अपनी पढ़ाई के सिलसिले में कई गर्भवती महिलाओं का साक्षात्कार लेता है, तो पाता है कि उनमें से अधिकांश महिलायें अंधविश्वासी हैं। महिलाओं ने साक्षात्कार के समय गिनेस से कहा कि "वह रोज़ सुबह उठकर अपनी बेटियों की ओर पीठ कर किसी नर-पक्षी का दर्शन करती है, इससे शर्तिया लड़का पैदा होता है।" तो दूसरी ने बताया, "ग्रहण के समय उसने द्वार की साँकल उचककर खोली थी, इसलिए उसके पेट का बच्चा लँगड़ा पैदा हुआ" और तीसरी बताती है-"वह गर्भावस्था के दिनों में साबुन से नहीं नहाती, इससे बच्चे काले हो जाते हैं।"**(88)**

निष्कर्ष रूप में यह कहा जाता है कि भारतीय समाज में आज भी अनेक अंधविश्वास फैल रहे है। यह समाज एवं देश की प्रगति के लिए बाधक हो सकता है। ममता कालिया ने

समाय की इस रूग्ण मानसिकता को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। उनका कहना है कि इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए समाज की मानसिकता बदलनी जरूरी है।

(ii) प्राचीन रुढ़ियों में जकड़ना:

स्वतंत्र भारत देश आज भी कई प्राचीन रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है। ममता कालिया के उपन्यासों में इस समस्या का चित्रण यथार्थ रूप में किया है।

'बेघर' उपन्यास की वालिया की पत्नी अपने पति को रोज ग्रंथ साहब पढ़ने को कहती है। इससे परेशान होकर वालिया अपनी पत्नी को हनीमून के समय ही छोड़ दिया था। वह वालिया के पीछे पड़ गई थी कि,"रोज़ ग्रंथ साहब पढ़ा करो, केश रखो। उसका यह कहना था, नहीं तो उसके रिश्तेदारों में उसकी हँसी उडेगी।"**(89)** सिख धर्म के कड़े नियम होते हैं। 'क' अक्षर से शुरू होने वाले चीजों को यह लोग खूब महत्व देते हैं। जैसे-कंघी, कृपाण, केशा आदि। वालिया इन सबका उल्लंघन करता है और अपने बाल भी काट लेता है। इस वजह से घर में कुहराम मच जाता है। माँ छाती पीट-पीट कर रोती है जैसे उसका बेटा ही मर गया हो। लेकिन वह जिस लड़की से शादी करता है वह उसके पीछे पड़ जाती है कि,"जे मैनूं जरा भी चाँहदे हो तो केश रख लो। सच एड्डे लंबे लंबे केश दे ऊपर पग बंध के एन्ने सोणे लगोगे गुरूजी दी सोंह।"

इसी उपन्यास में संजीवनी नामक पात्र भी अपने धर्म का पालन करनेवाली है। वह एक गुजराती लड़की है जो मांस, मंछी नहीं खाती है। जब वह परमजीत के साथ रेस्तराँ में कॉफी पीने के लिए जाती है, तो परमजीत कॉफी के साथ प्रॉन फ्राय उसके मुँह में डालता है। तब उसकी धार्मिक वृत्ति सामने आती है वह कहती है, "तुमने तो मेरा धर्म भी बिगाड़ कर रख दिया।"

'प्रेमकहानी' उपन्यास में भी ऐसे ही पात्रों का चित्रण किया गया है। विवाह के बाद जब जया, गिनेस के साथ उसके घर जाती है तब गिनेस की माँ लाल रंग की एक खानदानी साड़ी उसे पहनने के लिए देती हुई कहती है, "यह तीन पुश्तों की अमानत तुम्हें देती हूँ जया। बड़ी अम्मा आज होती तो ऐसे तुम्हें घर पर थोड़े ही आने देती, बाक़ायदा अग्नि के सामने विवाह की रस्म होती...."**(90)**

'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास की 'कविता' आधुनिक विचारों वाली नारी है। वह प्राचीन रूढ़ि-परंपरा को नहीं मानती है। इसीलिए वह 'हरतालिका' का व्रत नहीं रखती है। इस पर उसका पति-संदीप कहता है, "तुम इतनी परंपरा-शून्य क्यों हो..." इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक नारी इस तरह की सड़ी-गली परंपराओं में जकड़ कर नहीं रहना चाहती है।

बेटी अपने माता-पिता का अंतिम संस्कार नहीं कर सकती हैं। भारतीय समाज में ये अधिकार केवल बेटों को ही दिया गया है। ममता कालिया के 'दौड़' उपन्यास में इसी रूढ़ि परंपरा को उजागर किया गया है। उपन्यास के एक पात्र सिद्धार्थ के पिता की जब हार्ट अटैक से मौत हो जाती है। न्यूयार्क में रहने के कारण वह समय पर नहीं आ पाता है। यहाँ बेटी द्वारा अपने पिता का अंतिम संस्कार न करवा कर किसी अन्य भूषण नामक लड़के से अंतिम संस्कार करवाया जाता है। इस संदर्भ में मिसेस सोनी(सिद्धार्थ की माँ) अपने पडोसियों से कहती है-"यह ऐसा काम है जो औरतें नहीं कर सकती हैं।" इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि आज लड़के-लड़की में भेद नहीं करना चाहिए। कहने का अर्थ यह है कि लड़कियाँ भी अपने माता-पिता की चिता को अग्नि दे सकती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में आज भी प्राचीन रूढ़िया व्याप्त है। इससे छुटकारा पाने के लिए हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी। वनरा यह समस्या समाज के लिए घातक हो सकती है।

(iii) भ्रष्ट पंडे और पुरोहित:

प्राचीन काल में पंडों और पुरोहितों का अधिक बोलबाला था। लेकिन आज भी भारतीय समाज में इनको महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। वे भक्तों को पाप-पुण्य की बातें तथा मोक्ष कैसे प्राप्त किया जाए, इसके उपाय बताते रहते हैं। लेकिन आज समाज में इनका (पंडे, पुरोहित) लोगों के प्रति दृष्टिकोण बदल गया है। वे स्वार्थी एवं लोभी प्रवृत्ति के हो गए हैं। आज धर्मिक स्थलों पर पंडे, पुरोहित, भक्तों श्रद्धालुओं को धर्म के नाम पर लूटते है। पाप-पुण्य के नाम पर धमकाते है, दुहाई देते है। भक्तगण इन बातों से डर जाते हैं। जैसा वे चाहते हैं वैसा ही करते जाते हैं।

'नरक दर नरक' उपन्यास में मल्लाह तथा उनके प्रतिनिधि तीर्थयात्रियों को अपनी-अपनी नाव पर बैठाने की जी-तोड़ कशिश करते हैं। वे न्हें पंडे और पुरोहितों के पास ले जाते हैं जिनसे उनका कमीशन बंधा हुआ है। जब जगन प्रयागराज पहुँचता है तब पंडे उससे कुछ संकल्प करने का आग्रह करने लगते है। जब वह एक पंडे से पूछता है कि 'संगम कहाँ है' तो उसका उत्तर वह (पंडा) इस प्रकार देता है, "उहाँ है, चलो नहवा लाँय, संकल्प करायँ, पुण्य-लाभ कर लें। बड़भाग से प्रयागराज आइन हो, पूर्णमासी की परब है, पाँच बिराहमिन को भरपेट खवाएँ, सारे मनोरथ पूरे होइ हैं बाबू। पूरी नाव सिरफ बीस रुपया।"**(91)** गंगा को पवित्र माना जाता है लेकिन आजकल यहाँ पंडे, पुजारी, लोगों को लुटते है। यहाँ पैसों का महत्व बढ़ गया है। यह इलाहाबाद के (प्रयागराज) का ही चित्र नहीं है बल्कि भारत के हर धार्मिक स्थलों पर देखने को मिलता है। जगन देखता है कि एक पुजारी भक्त को कहने के लिए मजबूर कर रहा था कि, "कहो, पाँच ब्राह्मणों को भरपेट भोजन करवाएँगे" कुछ भक्त मूर्खतापूर्ण-हाँ कहते हुए दिखायी देते हैं।

प्राचीन काल में जहाँ पंडे, पुरोहित दूसरों की मनोकामना पूरी करने का प्रयत्न करते थे वही आज वे स्वार्थी, लालची रूप में देखने को मिलते है। जो भक्त अपने मन में संकल्प करते है उन भक्तों की यात्रा विफल होने का भी डर वे दिखाते और कहते हैं- "हम वशिष्ठ हैं। हमें प्रसन्न नहीं किया तो यह यात्रा विफल हो जाएगी। अगली पूर्णमासी फिर आना पड़ेगा। बहुत पछताना पड़ेगा, बताइत है तुमका।"**(92)**

'दौड़' उपन्यास में पवन इलाहबाद का होने के नाते देखता है कि कुंभ के पर्व पर भक्तगण हर साल माघ मेले में असाध्य कष्ट, को झेलते हुए प्रयाग संगम तट तक पहुँचते हैं और मुक्ति की कामना भी करते हैं। उनके बारे में पवन का कहना है- "कुंभ के पर्व पर लाखों की संख्या में ये भक्त गंगा मैया तक पहुँचते, डुबकी लगाते और मुक्ति की कामना के साथ घर वापस लौट जाते।.....वे भक्त बस इतना समझते कि गंगा पतित पावन है और उनके कृत्यों की तारिणी।"**(93)**

इस प्रकार पंडे पुजारी यात्रियों को लूट रहे है, इसी वजह से धार्मिक स्थल भी कलंकित हो गये हैं। इनको अगर रोकना है तो तीर्थ स्थलों पर कड़े नियम बनाने चाहिए। वरना भक्त एवं भगवान इस माहौल में बदनाम हो जाएगें।

(iv) व्रत-त्योहार का महत्व:

आज भी भारतीय संस्कृति में व्रत-त्यौहारों का अधिक महत्व है। ज्यादातर हिंदू धर्म में कई तरह के व्रत या उपवास होते है। कभी कभी अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए व्रत-उपवास किया जाता है। व्रत और उपवास का आज भी समाज में अधिक महत्व है। भारतीय संस्कृति कोश के अनुसार- "निर्धारित काल के लिए अथवा आमरण पालन किया जाने वाला विशिष्ट नियम ही व्रत है।"**(94)**

'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में ममता जी ने हरितालिका जैसे व्रत को विशेष महत्व दिया है कथा नायिका कविता इस व्रत के बारे में कुछ भी नहीं जानती हैं। उसके जीवन में कई बातें गैरजरूरी थी उसमें पूजा-पाठ व्रत-उपवास भी एक है। उसके माँ-बाप भी उसे पर्व एवं त्यौहार का एक सांस्कृतिक स्तर पर ही देखते है। संदीप अपने दोस्त रस्तोगी के घर जाता है उसकी पत्नी नीलम उनके लिए चाय नाश्ता बनाती लेकिन वह कुछ नहीं खाती क्योंकि उसने हरितालिका का व्रत रखा था। लेकिन संदीप उसे जानबूझकर चाय पीने के लिए कहता है तब नीलम कहती है- "आज मैं पानी भी नहीं पी सकती, मेरा हरितालिका का व्रत है।"**(95)** इसका महत्व उसका पति रस्तोगी बताता है- "जन्म-जन्मांतर इसी जन्म का साथी फिर-फिर मिले, इसलिए किया जाता है-यह व्रत। भारतीय धर्म में सबसे कठिन उपवास माना जाता है यह। पति-पत्नी संबंधों का स्वर्णिम इतिहास इस एक व्रत के आधार पर लिखा जा सकता है।" हरितालिका का व्रत कठिन माना जाता है। उसी प्रकार उत्तर प्रदेश में करवा चौथ भी मनाया जाता है जो चाँद निकलने पर तोड़ा जाता है। लेकिन हरितालिका में पूरा दिन व्रत रखना पड़ता है वो भी निर्जल रहना पड़ता है। उपर्युक्त घटना से पति-पत्नी में टकराहट उत्पन्न हो जाती है। संदीप भी नीलम की तरह कविता को व्रत रखने के लिए जिद्द करने लगता है। लेकिन कविता को यह सब नाटक-सा लगता है। संदीप यह सब बर्दाश्त न करता हुआ पत्नी से कहता है-"दरअसल तुम मुझसे ऊब चुकी हो। अगले जन्म में तुम परिवर्तन चाहती हो।"**(96)**

'नरक दर नरक' उपन्यास में लेखिका ने धनतेरस को विशेष महत्व दिया है। दीपावली के दिन पंचमुखी दीपक जलाये जाते हैं। क्योंकि यह महापर्व पाँच दिनों तक चलता है। व्यापारी लोग इस त्यौहार को अपने व्यापार के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। धनतेरस के दिन पायधुनी रात भर खुली रहती थी। डेढ़-दो बजे तक तो ग्राहकों की ही भीड़

वहाँ मौजूद रहती थी। उस दिन गयाप्रसाद सात-आठ हजार रुपये का माल बेचते थे। धनतेरस के रात में उनका एक कड़ा नियम था। उसके बारे में लेखिका कहती है-"वे धनतेरस की रात में दुकान पर घी का दीया जलाते और लक्ष्मी पूजन के अगले रोज तक उस प्रज्वलित रखते।"**(97)**

'लड़कियाँ' उपन्यास की अफशाँ लल्ली से 'दिये' जलाने के लिए हट करती है और कहती है- "लेकिन कितने प्यारे लगते हैं दिये। मँगाइए न आपा, मैं जलाऊँगी।" अफशाँ अपने फ्लैट के बरामदे में दिये जलाने लगी। जिसने सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास की नायिका कविता ऐसे त्योहारों से अनजान एवं निरपेक्ष है। फिर भी उसके घर में त्यौहार मनाया जाता है। उसे जीवन एवं नियमों के बारे में लेखिका कहती है-"उसने पर्व-त्यौहारों को सिर्फ सांस्कृतिक स्तर पर जाना था या पकवानों के स्तर पर। उसके घर में जब होली आती तो गुझिया बन जाती, दीवाली आती तो खील-बताशे आ जाते। यहाँ तक की बैसाखी पर उसके पिता छोले-भटूरे और लस्सी का प्रोग्राम बनाते।"**(98)**

इस तरह त्यौहारों को समाज में उतना ही महत्व दिया जाता है जितना पहले दिया जाता था। इनसे कोई भी अनजान नहीं रह सकता। जैसे जैसे लोग शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने लगे वह व्रत, पर्व-त्यौहार का महत्व भूलने लगे। इसकी ओर आधुनिक पीढ़ी के मन में कोई भी लगाव नहीं है। सभी ओर पाश्चात्य संस्कृति का बोलबाला चल रहा है। लेकिन भारतीय संस्कृति आज भी पूरे विश्व में और लोगों के मन में फैली हुई है जिसे लेखिका अपने उपन्यासों के माध्यम से बताने की कोशिश करती है।

(v) सांप्रदायिकता की समस्या:

आज के वर्तमान समाजिक परिवेश में सांप्रदायिकता चुनौती एवं एक गंभीर समस्या बनकर आयी है। सांप्रदायिकता ने बड़ा ही उग्र रूप धारण किया है। पहले सभी जाति धर्म के लोग एक साथ रहते लेकिन धीरे-धीरे हर जाति का आज अलग अस्तित्व बनता जा रहा है। एक साथ रहने वाले लोग जाति को लेकर मारने और मर मिटने के लिए तैयार हो जाते है। ज्यादातर राजनेताओं ने अपने स्वार्थ के लिए सांप्रदायिकता को साधन बनाया है। इस विषय में गीतेश शर्मा ने लिखा है- "सांप्रदायिकता आज देश की अखंडता और एकता के लिए एक चुनौती ही नहीं है, बल्कि उसने उसे समस्त मानवीय रिश्तों और मानवीय मूल्यों को झकझोर कर रख दिया है। सांप्रदायिक और जातिय दंगे आज हमारे जीवन के अंग से बन गए हैं।"**(99)**

वर्तमान युग में सांप्रदायिकता के नाम पर दंगे फसाद कराना, छोटी सी घटना को एक बड़ा और गंभीर रूप देना, अपहरण आदि समाज में देखने को मिलता है। इसका चित्रण ममता जी ने नरक दर नरक उपन्यास में किया है। कथा नायक जगन जहाँ रहता है वहाँ हिंदू और मुसलमान दोनों जाति धर्म के लोग रहते हैं। सभी लोग अपने त्यौहार खुशी ले मनाते है। लेकिन वहाँ एक ऐसी घटना घटती है जिसके कारण दोनों धर्मों के बीच में झगड़े उत्पन्न हो जाता हैं। ऐसी एक घटना मुहरम के समय घटित होती है।

प्रस्तुत उपन्यास में अँधेरा होते ही मुहर्रम का जुलूस निकलता है। वे इमाम हुसैन की याद में मातम करते हैं। इस गमगीन माहौल के बारे में लेखिका लिखती हैं- "जुलूस के साथ होता पैगंबर साहब का दुलदुल, ऊँचे-ऊचे आलम, ताबूत, बारजों पर बुर्कानशीन औरतों की कतार और इस सबको बेधती हुई किसी नौजवान की दर्द में डूबी, कलेजे से निकली गमगीन आवाज़, जो सुनने वालों की नस-नस में उदासी के नश्तर लगा जाती।"**(100)** उस दिन सारा माहौल गमगीन ही रहता था। जगन के घर का बारजा ठीक गली में खुलता है।

वहाँ काफी भीड़ इकट्ठा होती है। मर्सिया पढ़ती हुई औरतें भी मातम करती है। इस दृश्य को देखकर उषा का कलेजा हिल जाता। और उसका बेटा बबलू भी प्रभावित हो जाता है। इधर उषा अपने कामों में व्यस्त थी तो जगन के प्रेस के दरवाजे के पास मातम करने वाले जमा हो जाते है। इस बीच बबलू पानी पीने लगता है। लेकिन पानी का गिलास उसके हाथ से छुटकर बारजे पर गिर जाता है। जिसके कारण काफी पानी जुलूस पर गिरता है। इस घटना से जुलूस में खलबली मच जाती है। पानी कहाँ से आया?, कौन नापाक पानी फेंक रहा है? कोई काफिर मूत रहा है! यह कहकर भीड़ पुलिस के काबू से बाहर हो जाती है और जगन के प्रेस को आग लागा दी जाती है। इसी बीच बबलू खो जाता है।

सिर्फ पानी गिरने की वजह से यह लोग उत्तेजित हो जाती है। मंदिर-मस्जिद के नाम पर सांप्रदायिक दंगे आज भी हो रहे है। सांप्रदायिकता के कारण समाज का बिगड़ा रूप हमारे सामने आता है। प्रस्तुत उपन्यास में उषा और जगन का बेटा एक मुस्लिम घर में मिलता है। यहाँ धर्म से ज्यादा इंसानियत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि ममता कालिया के उपन्यासों में विभिन्न धार्मिक परिवेश की समस्याओं को देखा जा सकता है। आधुनिक युग में भी भारतीय समाज इन सभी समस्याओं में जकड़ हुआ है। इसे अगर रोकना है तो हर एक व्यक्ति की सोच बदलनी होगी। अन्यथा यह समस्याएँ देश एवं समाज के लोगों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

4.6 शैक्षिक परिवेशगत यथार्थ

आज भारत देश में शिक्षा प्राप्त करना, एक फैशन बन चुका है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सिर्फ अच्छी नौकरी प्राप्त करना हो गया है। आज के युग की शिक्षा पद्धति ने अनेक

कठिन समस्याओं को जन्म दिया है। जिसमें शिक्षा के प्रति छात्रों के मन में उदासीनता, डिग्री के लिए शिक्षा प्राप्ती, भ्रष्टाचार, सिफारिश आदि कई समस्याएँ आज शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न हो गयी है।

आज शिक्षा का रूप बदल चुका है। विद्यार्थीयों के मन में वह आदर भाव खत्म हो गया है। अध्यापकों की मानसिकता भी बदल चुकी है। आज शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ गया है। हर एक शिक्षा का क्षेत्र आज पैसे लिए बिना एडमिशन नहीं कराता। आज भी भारत देश में सिफारिश तथा डोनेशन के बिना अच्छी नौकरी या प्रवेश नहीं मिल पाता। श्रीकृष्ण गोयल के अनुसार शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य है- "व्यक्तित्व का सर्वतोमुखी विकास"**(101)** लेकिन यह मत आज की शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर रहा है।

ममता कालिया स्वयं एक अध्यापिका होने के कारण अपने उपन्यासों में उन्होंने शिक्षा की समस्याओं का यथार्थ रूप खींचा हैं। जिसे निम्नलिखित आधार पर स्पष्ट किया जाएगा।

4.61 विद्यार्थियों की मानसिकता:

ममता कालिया ने 'बेघर' उपन्यास में यह बताने की कोशिश की है कि नायक परमजीत पढ़ाई के कारण कॉलेज में एड़मिशन नहीं, बल्कि पंजाबी होने के नाते उसे छात्रवृत्ति मिलती है। इसलिए वह कॉलेज जाता है। लेखिका का कहना है- "लालचंद्र प्राइवेट कॉलेज में तो परमजीत इसलिए पहुँच गया था क्योंकि उसके पड़ोसी ने बताया कि उसे पंजाबी होने के नात लाला बग्गूमल छात्रवृत्ति आसानी से मिल सकती है।"**(102)** भारत सरकार ने विद्यार्थियों के लिए ऐसी उपयोगी योजनाएँ लागू की हैं, लेकिन इसका उल्टा

परिणाम ही देख सकते हैं। विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने नहीं बल्कि छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए महाविद्यालयों में प्रवेश लेते हैं।

21वीं सदीं में शिक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य है नौकरी प्राप्त करना। इसका बहुत ही अच्छा उदाहरण नरक दर नरक उपन्यास में ममता जी ने किया है। नायिका उषा जब जगन से अंग्रेजी में एम.ए. करने का कारण पूछती है, तो वह कहता है- "क्योंकि अंग्रेजी में अड़तालीस प्रतिशत नंबर लाकर भी मुझे नौकरी मिल गई।" भले ही अंग्रेजी विषय में जगन की रूचि न हो लेकिन फिर भी वह अंग्रेजी विषय लेता है। देखा जाये तो आजकल लड़कों से ज्यादा लड़कियाँ पढ़ाई में आगे बढ़ रही हैं। लेकिन कुछ लड़कियाँ पढ़ाई के अलावा पाठ्यपुस्तक में अधिक रूचि न देकर फेमिना या फिल्मफेयर जैसी पत्रिकाओं में अधिक ध्यान दे रही हैं। इसपर नरक दर नरक उपन्यास में लेखिका लिखती है- "वे सभी एक-दो वर्ष के अंतर से बी.ए. इंटर, बी.एस.सी आदि की छात्राएँ थीं, पर उनके हाथ में पाठ्यपुस्तक शायद ही कभी दिखाई देता, वे अक्सर फेमिना या फिल्मफेयर थाने मिलती।"**(103)**

शिक्षा संस्थाओं को, अपनी घर की संपत्ति माननेवालों की संख्या अधिक मिलती है। इसे हम 'नरक दर नरक' उपन्यास में संस्थाध्यक्ष के माध्यम से देख सकते है। वह अपनी भतीजी का ब्याह कॉलेज में करवाना चाहते है। लेकिन उषा के पिता जो इस कॉलेज के प्राचार्य थे, वे यह करने के लिए तैयार नहीं है। इसपर उषा कहती है- "उनके मैनेजर चिरौंजीलाल ने अपनी भतीजी के ब्याह के ब्याह पर नसे माँग रखी कि, वे तीन दिन के लिए कॉलेज बंद कर दें और बिल्डिंग बारात के लिए खाली करवा दें। उन्होंने कहा कि बिना वजह कॉलेज में छुट्टी नहीं दी जाएगी। चिरौंजीलाल खफ़ा हो गए।आखिर उनकी इकलौती भतीजी का विवाह था और बारात बंबई से आ रही थी। यों आसानी से कोई धर्मशाला ले सकते थे।

पर उनका यह कहना था जब इतना पैसा लगा कर उन्होंने कॉलेज बनवाया है तो वे पराई जगह क्यों माँगे? कॉलेज उनका है, न कि लड़कों का।”**(104)**

दूसरी ओर उषा के पिता एक आदर्श अध्यापक थे। उनका यह विचार था कि विद्यार्थी अध्ययनशील बने लेकिन आज के शिक्षा क्षेत्र में अंक बढ़ाना, पर्चा लीक करना आदि सब बातों का की बोलबाला है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि एक संस्कारी, आदर्शमयी, मेहनती अध्यापक को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। आजकल मेहनती और अध्ययन करने वाले अध्यापक कम मिलते है। सालों से वही नोट्स लिखवाने वाले अध्यापक ज्यादा मिलते है। इस उपन्यास में जगन के विभागाध्यक्ष प्रा.के.सी.शाह ऐसे अध्यापकों में गिने जाते है। जगन के अनुसार- “दस साल पहले नियुक्ति के प्रथम वर्ष में उसने जो नोट्स बनाए थे, उन्हीं को वह हर साल छात्रों को लिखवा देता।”**(105)**

इस तरह के अध्यापकों के कारण शिक्षा का क्षेत्र बदनाम हो रहा है। वे वेतन के रूप में पैसा जुटाने का काम कर रहे है।

आजकल विद्यार्थी, अध्यापिकाओं की इज्जतही नहीं करते हैं। एक लड़की का भाई ऐसा ही दुर्व्यवहार नंदिता(बड़ी बहन जी) से करता है। और पेपर वेट उनके सिर पर दे मारता है।

माता-पिता के तबादले के कारण बच्चों की शिक्षा पर कैसा असर होता है इसका यथार्थ चित्रण ममता कालिया ने ‘प्रेम कहानी’ उपन्यास में किया है। नायिका जया के पिता सरकारी नौकरी करते है हर तीन साल में उनका तबादला हो जाता है। इसी वजह से जया की पढ़ाई में बाधा उत्पन्न होती है। इसपर लेखिका कहती है- “सरकारी नौकरी करनेवाले बाप के बच्चे किसी एक जगह के नहीं होते। ते डेढ़ दो साल के लिए शहर में डेरा डालते हैं। तबादले का कागज आते ही वे ट्रक में सामान डाल अगले अनजान शहर की तरफ निकल

पड़ते हैं। दस दिन में उनके स्कूल बदल जाते हैं, बीस दिन में बोली बानी। सरकारी बंजारे।"**(106)**

यहाँ पर तबादला केवल जया के पापा का नहीं बल्कि सब का होता है। मुंबई से मथुरा जाने पर जया के सामने नया कॉलेज ढूँढ़ने की समस्या उत्पन्न होती है। वह कहती है- "मुझे नया कॉलेज ढूँढ़ना था। पापा ने मेरे हाथ में फीस के रुपए थमाए और कॉलेजों के नामों की सूची दी जहाँ पसंद आए, प्रवेश ले लो। यह तरीका वह तब से आजमाते आ रहे थे, जब से मैं दर्जा आठ में थी।"**(107)**

तबादले के कारण बच्चों की पढ़ाई पर होने वाले परिणामों को ममता जी ने प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है। निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि ममता कालिया ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में विद्यमान शैक्षिक परिवेश का प्रभावशाली एवं यथार्थपरक चित्रण किया है।

4.7 वैश्विक परिवेशगत यथार्थ और ममता कालिया का कथा साहित्य

ममता कालिया के कथा साहित्य में वैश्विक परिवेश का अंकन भी किया गया है। इस दृष्टि से 'दौड़' उपन्यास और कुछ कहानियाँ उल्लेखनीय है। 'दौड़' उपन्यास में इक्कीसवीं सदी के आर्थिक उदारीकरण और बाज़ारवाद के जीवनगत परिणामों का यथार्थ चित्रण हुआ है। इक्कीसवीं सदी में आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय बाज़ार जो शक्तिशाली बनाया। इसने व्यापार प्रबंधन के शिक्षा के द्वार खोले और छात्रवर्ग को व्यापार प्रबंधन में विशेषता प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने रोज़गार के नए अवसर प्रदान किए। युवा वर्ग ने पूरी लगन के साथ इस जादुई नगरी के द्वारा को खोला और इसमें

प्रविष्ट होने का अवसर प्राप्त कर लिया। वर्तमान सदी में अन्य वाद की तरह एक नया वाद आरंभ हो गया बाज़ारवाद और उपभोक्तावाद। इसके अंतर्गत बीसवीं सदी का सीधा-सादा खरीददार चतुर उपभोक्ता बन गया। जिन युवा प्रतिमाओं न यह कमान संभाली उन्होंने कार्यक्षेत्र में तो खूब सफलता पाई पर मानवीय संबंधों में तनाव की स्थिति उत्पन्न कर दी। 'दौड़' उपन्यास इन प्रभावों और तनावों की पहचान कराता है। एम.बी.ए जैसे जादुई शब्द, आम जनता को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। आज की पीढ़ी के नवयुवक कड़ी मेहनत करके कैट, मैट या एम.बी.ए जैसी कठिन परिक्षाओं में सफलता प्राप्त करके कंपनी की रफ्तार में दौड़ लगाने के लिए तत्पर हो जाते है। उस समय माता-पिता का प्यार भी उन्हें रोक नहीं पाता है। इनको अपनी जन्म भूमि में कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। पवन अपनी माता से इन्हीं विचारों को व्यक्त करता हुआ कहता है- इलाहाबाद में कुछ भी बदलता नहीं है, माँ दो साल पहले जैसा था वैसा ही अब भी है। तुम राजकोट चली जाओ।**(108)**

इन्हें कंप्युटर वर्ल्ड अपनी ओर खींच रहा है। प्रोड्यूसर्स का मार्केट जिस महानगर में है वहीं अपना कैरियर बन सकता है। यह उनका विश्वास है कल्चर्ड शहर के बजाय कंज्यूमर क्लचर वाला शहर उन्हें पसंद है। आज का युवा, मानवता प्रधान नहीं बल्कि अर्थ प्रधान हो गया है। इस संदर्भ में पवन के विचार इस प्रकार है- सच तो यह है पापा जहाँ हर महीने वेतन मिले, वही जगह अपनी होती है और कोई नहीं।**(109)**

भूमंडलीकरण की आड़ में सांस्कृतिक शोषण का एक व्यापक अभियान चल रहा है। इस शोषण में शिक्षा, साहित्य, कला, मीडिया आदि की भूमिका पूर्व नियोजित है। और ये सब बखूबी अपना काम भी कर रहे है। इसका षड्यंत्र इतना व्यापक और शातिराना है कि लोगों के सामने इसको अपनाने के सिवाय और कोई रास्ता भी नहीं है। वक्त का यही तकाज़ा है कि कामयाबी उसी के कदम चूमती है जो उसके साथ-साथ चले और आज का

ज़माना तो भूमंडलीकरण का है। दुनिया की नज़रों में वही देश सफल है जिसने तकनीकी क्षेत्र में उन्नति पी हो। टेक्नॉलाजी के ज़रिए देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने के बड़े-बड़े आयोजन हो रहे हैं। और इसी आयोजन के तहत बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पनपने की खुली छूट मिल गई है। इन कंपनियों में जगह पाने की होड़ में व्यक्ति के रिश्ते नाते सब पीछे छूट गए हैं। उनका लक्ष्य सिर्फ एक है-पैसा। इसके लिए मानवीय मूल्यों की बलि चढ़ाने में भी, वह नहीं हिचक रहा है। इन सबसे भारतीय संस्कृति को काफी नुकसान पहुँच रहा है।

यही है आज के जीवन की वास्तविकता जिससे स्वीकारने में परंपराओं में ज़कड़ी पीढ़ी को काफी समय लगेगा जिस पीढ़ी के लिए बेटा सहारा होता है, वह पीढ़ी बुढ़ापा अकेले नहीं काट सकती। जो बहू को पारंपारीक रूप में देखने के आदी हैं वह उसके कैरियर को नज़रअंदाज नहीं कर सकते हैं। समय जिस तेजी से बदला है, हमारे विचार उस तेज़ी से आगे बढ़ नहीं पा रहे हैं। पैसा और ग्लैमर अब केवल सुख-सुविधाओं का खेल नहीं रह गए हैं। प्रतिस्पर्धी दिमाग और तरक्कीशुदा सपनों के साथ भागनेवाले नए खून का स्वागत किया जाना भी जरूरी है। कब तक हम परंपराओं, रूढ़ियों और नैतिकता को अपनाते रहेंगे। कब तक बच्चों के कंधों पर लदकर मरघट तक जाने के सपने देखेंगे। सामाजिक दिखावों, दकियानूसी विचारों और रूढ़ियों से मुक्ति पाने के लिए अब हमें 'दौड़ना' होगा, हम नई पीढ़ी की 'दौड़' के आगे 'स्पीडब्रेकर' बनकर क्यों, उनकी गति धीमी करने की तथा हतोत्साहित करने की चेष्टा करें। हम उनके सहभागी बनने का साहस न जुटा पाएँ लेकिन उनके निर्णयों को अपनी सोच से प्रभावित करने का भाव तो छोड़ ही सकते हैं।

आजकल (Live in Relationship) अर्थात बिना विवाह के किसी के साथ अपना जीवन बिताना। इसका वर्णन ममता जी ने अपनी कहानियों में किया है जो इस प्रकार है 'अपत्नी'

कहानी में पाश्चात्य सभ्यता के परिवेश में विवाहपूर्व, पति-पत्नी के समान, संबंध बनानेवाले दंपतियों का चित्रण हुआ है।

'दौड़' उपन्यास में पवन और स्टैला (Live in Relationship) में विश्वास करते है और विवाह के बिना ही दोनों साथ में रहते है। माँ से स्टैला का परिचय पवन इन शब्दों में कराता है- "माँ स्टैला मेरी बिजनेस पार्टनर, लाइफ पार्टनर, रूम पार्टनर तीनों है"। ऐसा सुनकर माँ (रेखा) का आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक है।

'बच्चा' कहानी में पाश्चात्य सभ्यता में डूबे पिता के बुरे व्यवहार के कारण बेटे के मानसिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है। 'उड़ान' कहानी में माता-पिता की अपेक्षाओं को नज़रअंदाज़ कर अपनी व्यावसायिक सफलता की 'उड़ान' भरने में युवक नायक के, जीवन सिद्धांतों को पाश्चात्य सभ्यता के परिवेश में उज़ागर किया गया है। निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि ममता कालिया के कथा साहित्य में वैश्विक परिवेशगत यथार्थ का चित्रण भी किया गया है।

समकालीन जीवन की विविध संघर्षों और समस्याओं को चित्रित करने के लेखिका का दृष्टिकोण यथार्थपरक रहा है। ममता कालिया ने अपने कथासाहित्य द्वार में नारी के प्रति पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक चेतना की रचना और रुपांतरण में विशेष रूचि दिखाई है। इनके कथासाहित्य में नारी चेतना के संदर्भ में उस प्रक्रिया को उन्मुक्त करने का प्रयास किया गया है जिससे नारी परिष्कृत होकर पूर्ण मानव की दिशा में गतिशील हो सके। नारी का समग्र व्यक्तित्व, समाज की जड़ता को नव्य और दिव्य चेतना से अनुप्रणित कर विकास में चरम उत्कर्ष को प्राप्त कर सके। ममता कालिया के कथा साहित्य में मध्यम वर्गीय सामान्य स्त्रियाँ है जो जिजीविषा से भरपूर है और जीवन की विद्रूपताओं से उबरने के लिए सचेष्ट है। जीवन की त्रासद स्थितियाँ उन्हें तोड़ बिखरा नहीं

पाती वरन विपरित स्थितियों से जूझते हुए वे निरंतर आगे बढ़ती हैं। कहीं न कहीं लेखिका ने नारी पात्रों को संघर्ष करते हुए आकांक्षाओं और कामनाओं से भरपूर दिखाया है। उनके पात्रों में शिक्षा के प्रति भी बहुत लगाव है और अनेक स्त्रियाँ उच्च शिक्षित हैं एवं कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं जिन्हें बचपन में पढ़ने का अवसर नहीं मिलता वे वृद्धावस्था में भी पढ़ने का प्रयास करती है।यथा 'दुक्खम सुक्खम' उपन्यास की विद्यावती अपनी बेटियों और पोतियों की किताबे पढ़कर संतुष्टि प्राप्त करती है। शिक्षा से स्त्रियों में नई चेतना का विकास हुआ है इसीलिए वे अपने अस्तित्व ओर स्वतंत्रता के प्रति जागरूक है। सामाजिक दायित्वों को भी समझती हैं और समाज एवं परिवार में अपना उचित स्थान प्राप्त करना चाहती हैं और स्वावलंभी बनना चाहती हैं।

पिछले कुछ दशकों में स्त्री-पुरूष की स्थिति में काफी अंतर आया है। स्त्री ने शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करके अपनी अलग पहचान बनाई है। इसीलिए पारंपारिक प्रेम, विवाह एवं दांपत्य के प्रतिमान भी बदल रहे हैं। त्याग और बलिदान पर आधारित प्रेम एवं विवाह स्त्री के जीवन की धूरी नहीं रह गए हैं। विवाह एवं दांपत्य में भी स्त्री अपने अस्तित्व एवं सुरक्षा के प्रति सजग हुई है। ममता कालिया के साहित्य में कई ऐसी स्त्रियाँ हैं जो अतिरिक्त सजगता और असुरक्षा के भय के कारण अविवाहित रहने का निर्णय लेती हैं लेकिन अविवाहित रहने के कारण उनमें देह मुक्ति की कामना नहीं है बल्कि बाद में उन्हें अपने इस निर्णय पर पछतावा होता है। लड़कियाँ उपन्यास की मुख्य नारी पात्र और जिंदगी-सात घंटे बाद की कहानी की आत्मीया को एक आयु के बाद अपने अविवाहित होने और अकेले रहना बहुत परेशान करता है। आपके साहित्य में कुछ ऐसे भी पात्र है जो सामाजिक प्रतिबद्धताओं के विपरित जीवन जीना चाहते हैं। बंधन उन्हें स्वीकार नहीं। कुछ ऐसे भी पात्र हैं जो विवाहपूर्व और विवाहेत्तर संबंध बनाते हैं लेकिन ऐसा

करनेवाले पात्र कहीं न कहीं परिस्थितियों के आगे बेबस दिखाई देते हैं। अपत्नी कहनी की लीला, साथ कहानी की सुनंदा, बेघर उपन्यास की विजया केलकार और दौड़ उपन्यास की स्टैला ऐसे पात्र हैं जो बिना विवाह किए पुरूषों के साथ रहते हैं लेकिन इन सभी स्त्रियों की इच्छा विवाह करने की है। इन सब में स्टैला का सहजीवन सबसे सफल है। स्टैला अपने प्रेमी के साथ विवाह कर सुखी वैवाहिक जीवन जीती है। हमारे समाज में अविवाहित मातृत्व किसी सामान्य नारी के लिए अभिशाप से कम नहीं हैं। ममता कालिया के कथा साहित्य में अविवाहित मातृत्व का पूर्णरूप से अभाव है। उन्होंने बाल बाल बचने वाली कहानी में अविवाहित मातृत्व के शंका मात्र से सुचेता के जीवन में होनेवाली कठिनाईयों का मार्मीक चित्रण किया है।

ममता कालिया के नारी पात्र नई चेतना से संपन्न है और अपनी मुक्ति के लिए संघर्षशील भी है लेकिन उनका संघर्ष देह मुक्ति के लिए नहीं है। वे वास्तविक अर्थों में स्वतंत्रता चाहते हैं। वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर आर्थिक आत्मनिर्भरता भी प्राप्त करना चाहते हैं। वे जैसी परिस्थितियों में है उससे अच्छा जीवन जीना चाहते हैं। उनके कथा साहित्य की नारियाँ न तो काल्पनिक लगती है और नहीं उनके चरित्र का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन है। मध्यमवर्गीय स्त्री के जीतने भी रूप समाज में हैं। ममता कालिया के रचनाओं में उनके वे सभी रूप देखने को मिलते हैं। उनके यहाँ संयुक्त परिवार के शिकंजे में पीड़ित और छटपटाती दीपशिखा और कालिंदी जैसी नारी है तो अपने अस्मिता के लिए संघर्ष करती हुई आशा और सुधा, महिमा जैसी जीवंत नारी भी है। गरीबी के मकड़जाल में फँसी संत्रस्त नारी की छटपटाहट उनकी कहानी चोट्टिन और शॉल देखी जा सकती हैं, वहीं आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र स्पृहा में ऑफिस और अन्य प्रतिस्थानों में पुरूष की चालबाजियों में फँसकर पीड़ित होती नारी की दास्तान उनकी कहानी जाँच अभी जारी है में मुखरित हुई है। ममता कालिया

के नारी पात्र संघर्षशील है वे विपरित परिस्थितियों हार नहीं मानते वरन् संघर्ष करते हैं। उनके साहित्य में स्त्रियाँ अपने आत्मसम्मान से समझौता नहीं करती। ममता कालिया नारी चेतना के आक्रमक रूप को सही नहीं मानती। जो लेखिकाएँ नारी विमर्श को देह विमर्श के रूप में प्रस्तुत करती हैं ममता कालिया इसे नारी चेतना का विकृत स्वरूप मानती हैं। वे कहती हैं-"वो जो देह मुक्ति की बात करते हैं। कहते हैं कि- स्त्री को स्वाधीनता मिल जाए। वो स्वाधीनता लेकर क्या करेगी? दुरूपयोग तो उसी को होगा जो स्वाधीनता का इस्तेमाल करेगा"(ममता कालिया के साक्षात्कार से)। ममता कालिया का मानना है- "अतिवादियों की एक फौज तैयार होती जा रही है। ये समाज में विघटन फैला रहे है कृष्णा अग्नीहोत्री, जयश्री राय, मैत्रेयी पुष्पा, शैल सिंह आदि ऐसी कुछ लेखिकाएं हैं जो समाज के विरूद्ध लिखती जा रही हैं।" वे कहती हैं केवल अपवाद पर ही नहीं लिखना चाहिए। एक संतुलन होना चाहिए लेखन में।

संदर्भ सूची

1. डॉ.फैमिदा बीजापुरेः ममता कालियाः व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.97
2. डॉ.फैमिदा बीजापुरेः ममता कालियाः व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.98
3. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.7
4. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.165
5. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.183
6. ममता कालियाः एक पत्नी के नोट्सः पृ.5
7. ममता कालियाः एक पत्नी के नोट्सः पृ.5

8. ममता कालियाः बेघरः पृ.92

9. ममता कालियाः बेघरः पृ.92

10. डॉ.किरणबाला अरोड़ाः साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारीः पृ.36

11. डॉ.शशिकला त्रिपाठीः उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्रीः पृ.36

12. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.165

13. ममता कालियाः एक पत्नी के नोट्सः पृ.7

14. ममता कालियाः दौड़ः पृ.50

15. ममता कालियाः दौड़ः पृ.50

16. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.170

17. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.7

18. ममता कालियाः बेघरः पृ.157

19.डॉ.लहूरामराव मुंडेः ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित समस्याएःविविध आयामः पृ.70

20. ममता कालियाः एक पत्नी के नोट्सः पृ.24

21. ममता कालियाः बेघरः पृ.130

22. ममता कालियाः बेघरः पृ.141

23. ममता कालियाः बेघरः पृ.145

24. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.43

25. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.117

26. ममता कालियाः एक पत्नी के नोट्सः पृ.11

27. डॉ.लहूरामरावः ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित

समस्याएः विविध आयामः पृ.53

28. ममता कालियाः बेघरः पृ.98

29. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.22

30. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.121

31. ममता कालियाः बेघरः पृ.71

32. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.43

33. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (लड़कियाँ) पृ.70

34. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.115

35. ममता कालियाः दौड़ः पृ.21

36. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.168

37. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.168-169

38. ममता कालियाः बेघरः पृ.136

39. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (लड़कियाँ) पृ.95

40. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.101

41. ममता कालियाः दौड़ः पृ.47

42. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (लड़कियाँ) पृ.72

43. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.178

44. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (लड़कियाँ) पृ.9

45. ममता कालियाः दौड़ः पृ.17

46. ममता कालियाः बेघरः पृ.172

47. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.105

48. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.91

49. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.133

50. ममता कालियाः एक पत्नी के नोट्सः पृ.34

51. ममता कालियाः बेघरः पृ.173

52. ममता कालियाः बेघरः पृ.175

53. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.82

54. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.1

55. ममता कालियाः दौड़ः पृ.61

56. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.168-169

57. डॉ.सीमाः ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतनाः पृ.78

58. डॉ.सीमाः ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतनाः पृ.78

59. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.48

60 . ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.49

61. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.77

62. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.130

63. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.113

64. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.113

65. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.162

66. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.162

67. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.160

68. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.160

69. ममता कालियाः दौड़ः पृ.93

70. ममता कालियाः दौड़ः पृ.94

71. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.32

72. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.33

73. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.78

74. ममता कालियाः बेघरः पृ.153

75. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.32

76. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.34

77. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.70

78. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.54

79. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.152

80. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.158

81. ममता कालियाः बेघरः पृ.133

82. ममता कालियाः बेघरः पृ.166

83. ममता कालियाः दौड़ः पृ.68

84. ममता कालियाः दौड़ः पृ.68

85. ममता कालियाः बेघरः पृ.171

86. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.83

87. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.83

88. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.155

89. ममता कालियाः बेघरः पृ.126

90. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यास (प्रेमकहानी) पृ.147

91. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.100

92. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.102

93. ममता कालियाः दौड़ः पृ.34

94. महादेव शास्त्रीः भारतीय सांस्कृतिक कोश (खंड1) पृ.164

95. ममता कालियाः एक पत्नी के नोट्सः पृ.30

96. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.31

97. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.44

98. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.28

99. सीमा गुप्ताः समकालीन हिंदी उपन्यासःमहानगरीय बोधः पृ.164

100. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.139

101. श्रीकृष्ण गोयलः शिक्षा का वास्तविक लक्ष्यः पृ.4

102. ममता कालियाः बेघरः पृ.24

103. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.9

104. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.10-11

105. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.51

106. ममता कालियाः अंधेरे का तालाः पृ.78

107. ममता कालियाः अंधेरे का तालाः पृ.78

108. ममता कालियाः दौड़ः पृ.34

109. ममता कालियाः दौड़ः पृ.34

5. ममता कालिया का कथा साहित्यःभाषा एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य

साहित्यकार अपनी मनोगत भावनाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करना चाहता है। इस अभिव्यक्ति को सौंदर्ययुक्त बनाने के लिए वह विविध ढंग एवं विधियां अपनाता है। इनमें दो विधियां प्रमुख है- भाषा एवं शैली। भावों और विचारों की सफलतम, सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त और व्यावहारिक माध्यम भाषा है। कृति के वस्तुपक्ष के साथ ही साथ भाषा-शैली भी अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।

5.1 भाषा एवं शिल्प का विवेचन

इस संदर्भ में रोहिताश्व का कहना है- "किसी भी कलाकृति में वस्तु और रूप अलग-अलग नहीं होते है बल्कि दोनों मिलकर एक समग्रता का जिसे रचना कहते हैं, उसका निर्माण करते हैं पर विवेचन का सुविधा के लिए हम उन्हें अंतर्वस्तु, भाषा-शैली, शिल्प

माध्यमों के अनुखंडों में देखने के अभ्यस्त हैं। शिल्प रूप के अंतर्गत अंतर्वस्तु के प्रभावी पक्षों में व्यवहृत बिंब, अलंकार, छंद, आद्यबिंब आदि का अपना-अपना विशिष्य योगदान होता है। अतः कलाकृति को केवल वस्तुपक्ष में अथवा रूप पक्ष में व एकांगी रूप विवेचन में देखने से हम सौंदर्य-बोधी संरचना के विवेचन से वंचित रह जायेंगे।"**(1)**

कथासाहित्य की भाषा-शैली पर उसके परिवेशगत यथार्थ का गहरा प्रभाव पड़ता है सोनिया सिरसाट का कथन है- "रचनाकार जिन परिस्थितियों, जीवन-संदर्भों और आसपास के परिवेश का अंकन करता है, वह सब कुछ उसे भाषा से ही प्राप्त नहीं होता। दृश्य, संवेग, मूक घटनाओं और स्पष्ट स्थितियों की भाषा निर्मित करनी पड़ती है। अतएव लेखन का सारा संघर्ष अनुभव को संप्रेषित करने का होता है।"**(2)**

5.2 भाषिक वैशिष्ट्य

भाषा, परंपरा और समाज द्वारा धीरे-धीरे विकसित होती है। भाषा के संबंध में भोलानाथ तिवारी का मत उल्लेखनीय है जो इस प्रकार है- "भाषा मानव-उच्चारण वयवों से उच्चारित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं, लेखक, कवि या वक्ता रूप में अपने अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते हैं तथा अपने वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व, विश्ष्टता तथा अस्मिता() के संबंध में जाने-अनजाने जानकारी देते हैं।"**(3)**

भाषा के संबंध में श्यामसुंदर का कहना है- "भाषा ऐसे शब्द समूहों का नाम है जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात, दूसरे के मन तक पहुँचाने तथा उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होती है।"**(4)**

भाषा के संदर्भ में कृष्णा सोबती का मत इस प्रकार हैं- "जिस भाषा को आप जीते नहीं, जिन शब्दों से आपको लगाव नहीं, जानकारी मात्र से आप उन्हें सृजन के स्तर पर, शैली के बनावट में संजो नहीं सकते। उन्हें फूहड़पन से सजा भले लो।"(5) मृदला गर्ग के भाषा-संबंधी विचार इस प्रकार हैं- "मैं समझती हूँ कि जब लेखक सांस्कृतिक मूल्य व्यवस्था को पुनः परिभाषित करने की प्रेरणा से कहानी के कथ्य, शिल्प व भाषा में प्रयोग करता है तो हम कह सकते हैं कि वह उसमें एक नये भावबोध के स्वर देने का प्रयास कर रहा है।"**(6)**

भाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए लॉज कहते है- "उपन्यासकार का माध्यम भाषा है। वह उपन्यास की हैसियत से जो कुछ करता है, भाषा में तथा भाषा के माध्यम से करता है।"**(7)** ममता कालिया के कथा-साहित्य के भाषा की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

5.21 भाषिक-यथार्थ

ममता जी मथुरा, वृंदावन, इलाहाबाद, दिल्ली, पूना और गोवा आदि नगरों एवं महानगरों में रह चुकी है। इन सभी परिवेशों की भाषा का यथार्थ चित्रण, इनकी कहानियों एवं उपन्यासों में हुआ है-

'बड़े दिन की पूर्व सांझ' में पाश्चात्य सभ्यता के परिवेश के अनुकूल भाषिक यथार्थ दिखाई देता हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है-कहानी की नायिका

कहती है- "बड़े दिन की पूर्व साँझ को नृत्य जाने बिना नाचना मैं अजीब न मानती, पर रूप ने मोमबत्ती नहीं खरीदी थी।"**(8)**

'दौड़' उपन्यास में वैश्विक परिवेश के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया हैं। इससे उपन्यास में यथार्थता का पुट आ गया है-

1. युवा समीक्षक कृष्ण मोहन लिखते हैं- “बीसवीं शती के अंत में भारतीय समाज के सबसे गहरे सांस्कृतिक संकट का आख्यान है दौड़।हमारा समाज आज ऐसे दोराहे पर खड़ा है जहाँ से एक रास्ता बहुराषट्रीय कंपनियों की चरम उपभोक्तावादी संस्कृति के अंधे कुएँ को जाता है तो दूसरा संस्कार, सुरक्षा और सामंती सामुदायिकता की पुरानी और गहरी खाई की ओर। दोनों एक-दूसरे की कमजोरियों से ताकत पाते हैं। तीसरा रास्ता मिलता नहीं।”**(9)**
2. “कहने को महानगर पर मार्केटिंग की दृष्टि से एकदम लद्धड़। कलकत्ते में प्रोड्यूसर्स का मार्केट है कंज्यूमर्स का नहीं। मैं ऐसे शहर में रहना चाहता है जहाँ कल्चर हो न हो, कंज्यूमर कल्चर जरूर हो। मुझे संस्कृति नहीं उपभोक्ता संस्कृति चाहिए तभी मैं कामयाब-रहूँगी।”**(10)** ममता कालिया के कथा साहित्य में शैक्षिक परिवेश भी उजागर हुआ है। ‘अँधेरे का ताला’, ‘नरक दर नरक’ उपन्यास तथा ‘लड़के’ कहानी में शैक्षिक परिवेश के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। इस संदर्भ में कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- “क्लास में डस्टर का भी यही हाल है। कितना भी सँभाल कर रखा जाय, मौके पर डस्टर मिलता ही नहीं।” एक अन्य उदाहरण- “नयी अध्यापिकाओं में जी-तोड़ मेहनत से पढ़ाया। नतीजा यह कि छब्बीस की छब्बीस छात्रायें अच्छे अंकों में उत्तीर्ण हो गयी। रानी लक्ष्मीबाई डिग्री कॉलेज के लिए यह बहुत अच्छी शुरूआता हुई।”**(11)**

ममता जी के कथासाहित्य अवधी, ब्रजभाषा और भोजपुरी बोलियों का बहुतायत से प्रयोग किया गया हैं। इससे ज्ञात होता है कि लेखिकाएँ अपने कथा साहित्य में बोलियों का भरपूर प्रयोग कर रहीं हैं। इस दृष्टि से ममता कालिया और मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

ममता कालिया ने अपने अधिकतर उपन्यासों में हिंदी का ही प्रयोग किया है, लेकिन उनके उपन्यासों में कहीं-कहीं अवधी भोजपुरी और ब्रजभाषा का प्रयोग भी मिलता हैं- ननकी एक स्कूल में काम करती है। उसकी भाषा में अवधी बोली का पुट है-जैसे-"नहीं बहनजी आपके हाथ जोरत है, हम शॉल न लेब। सुबह से फबती सुन सुन हमारी छाती फट गयी।"**(12)**

इस दृष्टि से 'दुक्खम-सुक्खम' उपन्यास भाषा का नया तेवर देखने को मिलता है। इसमें ब्रज भाषा की सुंदर छटा बिखरी है। लेखिका की बाल्यवस्था वृंदावन और मथुरा में बीती हैं इसलिए वे वहाँ की स्थानीय ब्रजभाषा से चिरपरिचित हैं। ब्रजभाषा का एक उदाहरण इस प्रकार हैं- "तेरे भैया ने पीपर समूल उपारौ, येई मारे महल अटारी निचाट पेरे हैं, एकास्सी के दिन सौंताल के किनारे फिर से तेरी भाभी पीपर लगायें, रोज ताल में नहाये, पीपर पूजै अनजल ले तब जाकें जे कलंक मिटै। फिर तू नौ महीनन में जौले-जौले दो मतीजे खिलाइयौ।"**(13)**

'बेघर' उपन्यास पंजाबी परिवेश पर आधारित है। इसलिए पंजाबी भाषा का खूब प्रयोग किया गया है। पंजाबी भाषा का एक उदाहरण देखिए- "पुत्तर मेरा किन्ना भाड़ा हो गया है। खबर कर देन्दा न।"**(14)**

5.22 पात्रानुकूल भाषा

ममता जी कहानियों एवं उपन्यासों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। ममता जी कथाभाषा, पात्रों के स्तर तथा उनके संस्कारों के अनुकूल पायी जाती हैं। इसी तरह प्रसंग के अनुसार भी भाषिक विधान हुआ हैं। पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में ममता जी सिब्दध्स्त हैं। इस प्रयोग से कहानियों में जीवंतता एवं स्वाभाविकता आ जाती है। उदाहरण

के लिए 'राएवाली' कहानी में सास ब्रजभाषा एवं तद्भव शब्दों का ही अधिक प्रयोग करती है इस संदर्भ में उदाहरण द्रष्टव्य हैं "नैक सौ ले ले। हाँ जे जे बहौत दुखतौ है राम जी दर्द की नस पकड़ के हींच। अरी ओ क्या नाम है राएवाली ज़रा मेरी कमर तो दबा जा।"**(15)**

'बेतरतीब' कहानी की कहानी की नायिका शिक्षित हैं। इसलिए उसकी भाषा शुद्ध हिंदी है- वह अपने प्रेमी आनंद को अपनी ओर आकर्षित करती हुई कहती है- "आनंद जी, आप बर नहीं आये अभी?.....तुम बड़े पैसिव हो आनंद।"**(16)**

नौकर-नौकरानियों की भाषा एक अलग तरह की है 'शॉल' कहानी की नौकरानी एक स्कूल में काम करती हैं। उसकी भाषा में अवधी बोली का पुट है।

ममता जी के उपन्यासों में भी पात्रानुकूल भाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है। 'बेघर' उपन्यास के अन्य पात्र दैनिक जीवन में पंजाबी भाषा ही बोलते हैं।

पात्रानुकूल भाषा से ममता जी का 'दुक्खम-सुक्खम' उपन्यास एक नया प्रयोग रहा है। विवेच्य उपन्यास का एक बड़ा आकर्षण है। ब्रजभाषा का सहज सरस प्रयोग प्रचीन परिवेश के सभी पात्र पूरी तरह ब्रजसंस्कृति में भाषा की शब्दावली, मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग करते हैं। सुशील सिद्धार्थ खंजन नयन उपन्यास की भाषा से तुलना करते हुए कहते हैं- "लेखिका का जीवनानुभाव अपनी सर्वोत्तम रचनाशीलता के साथ दुक्खम सुक्खम में आकर पा सका है। अमृतलाल नागर के उपन्यास खंजन नयन के बाद ब्रजभाषा की मिठास, टीस और अभिव्यक्ति का सबसे सार्थक उपयोग इस उपन्यास में हुआ है।"**(17)**

लाला नत्थूमल और विद्यावती अधिकतर ब्रजभाषा ही बोलते क्योंकि उनका अधिकतर जीवन मथुरा एवं वृंदावन में ही बीता है। उनकी ब्रजभाषा शुद्ध स्थानीय शब्दों से भारी भाषा है।कुछ उद्धरण इस प्रकार हैं-

लाला नत्थूमल की भाषाः- “नई, मैं भूल गयौ। पप्पू की दुकान पर एक और छोरे ने बतायौ। तभी लोग कंसटीले की तरफ भजे। मैं कहूँ जो एक होती तो वा आदमी लेकर भज गयौ हैतो। दो छोरियाँ, दोनों मरखनी। उससे सँभरी नायँ।”**(18)** विद्यावती की भाषाः- “धुलैंडी तो कल है, हुरियार कहाँ से आय गये।”

कन्हैया हो या राधारानी, री रामो, मेरे बेटे के पहलौठे को टोक न लगा।”**(19)** बहू की ब्रजभाषा में हिंदी-मिश्रित भाषा का प्रयोग मिलता है-जैसे

इंदु की भाषाः-“जीजी मेरा कमरा कुछ रोज़ ठहरकर बदलतीं तो अच्छा होता। अभी शरीर में बिल्कुल जान नहीं है ऊपर-नीचे चढ़ने की।”**(20)** लेकिन कवि की भाषा में स्थान-भेद के अनुसार परिवर्तन आता रहता है। जब परिवार वालों से संवाद करता है तब ब्रजभाषा का ही प्रयोग करते हैं। दिल्ली में तो शुद्ध हिंदी ही बोलते है- जैसे “नहीं जीजी, तुम्हारे हाथ का कौला का साग और परामठा खाने को तरस गया।”**(21)** पूना में रहते हुए उन्होंने भी मराठी भाषा सीख ली।

इस प्रकार भाषा के स्तर पर यह उपन्यास विशिष्ट है। पूरे उपन्यास की भाषा अपनी जीवंतता के कारण विशिष्ट है। इसमें ब्रज का सहज एवं प्रवहमान रूप पाठकों का ध्यान सहज रूप से आकृष्ट करता है।

स्त्री की भाषा-स्त्रियों के अनुकूल ही स्त्रीलिंग क्रिया का प्रयोग किया गया है। इससे संबोधित एक उदाहरण द्रष्टव्य है- “कुसुम ने कहा, दीदी, आप इसे संस्तुत और अग्रसारित कर दीजिए। हम स्वंय आवेदन-पत्र लेकर बाबू जी के पास जायेंगी।”**(22)**

एक अन्य उदाहरण इस प्रकार है- “मालती गुपता ने कहा, नहीं जी हम खुद जायंगी।”**(23)**

5.23 शब्द-चयन

ममता जी के कथा साहित्य अनेक भाषाओं एवं बोलियों के शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रसंगानुकूल तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी उर्दू-अरबी-फारसी एवं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है जो इस प्रकार हैं।

1. तत्समः

प्रतिरक्षा-कानून, प्रतीक्षा, यात्रा, निश्चेष्ट, जीवन, रूप, रंग, संस्कृत, मदनातुर कृष्ण, मस्तक, दृढ़, विश्वास, विलक्षण, अद्‌वितीय विकृत, पाठक, आहत, चरणों, मन, कृपा, अपेक्षा आदि।

2. तद्भवः

बखत, ऊँध, मूत, भरतार, लुगाई जनम, तकलिफ देह, कइस, मानूस, हमारेकू चुप्पी, भुचड़ा, पुरपेच, चिल्ली, पुन्नी, पसरी, चटोरी, नेमधरम

3. विदेशीः

(उर्दू-अरबी-फारसी)

अफसोस, बर्दाश्त, क्रबिस्तान, मनहूस, मायूस, मुकाम, लियाकत, वाक्या, गर्मी, गैर मुमकिन, जरूरत, हदबंदी, इस्तिफा, हुजूर, सावल, माफी अंधेरा, ओंठ, रोशनदान रुखसत, ताज्जुब, रजाई, नफीस, फिदा, वाकई नाजायज, इस्तिफा

4. अंग्रेजीः

पैसिव, आइसक्रीम, दवाई, कैश, सेल्फ, रिपोर्ट, सी, क्लास क्वार्टर, कॉलेज, क्लास, रोल कॉल, मदर, हुक, कज़िन, लिफ्ट, सिफ्फनी, फील्डिंग, यार, प्लेन, क्लब, ज्वॉइन, एलिफंटा-केव्हज, रिपोर्ट, पेपर वैक

बोली के शब्दः

1. ब्रजभाषाः

थरिया, मोय, नोनो. छोरियाँ, कछ छटमारो, लायौ, बानौ, रहयौ ब्यालू, बिथा- कथा, इत्ती, परकी-साल, भुरस-गयौ, मौय. ब्याह, लुगाइयों, पलोथन, एम्मे, धौरे, सूधे

2. अवधीः

आवा, लिट्टी, तनी, इत्ती जून, ले लिहिन, इत्ता, भौजाई, आब, दिवाय दें, जिनगीभर

अन्य क्षेत्र के शब्द-

1. अपशब्दः

साले, कमबख्त, हरामजादे, निकम्मा आदि।

2. द्विशक्त शब्दः

साथ-साथ, अपनी-अपनी, सुबह-सुबह, पसीने-पसीने, जगह-जगह आदि।

3. मराठीः

वेणी, लोणच्या, माझी शकुन, तू डरू नका, पूरनपोली, आदि।

4. सहयोगी शब्दः

खुसर-पुसर, चहल-पहल, निराई-गुडाई, लंबे-चौड़े, मोल-भाव आदि।

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि कथाकार ममता जी का शब्द भंडार अत्यंत विस्तृत एवं विशाल है।

5.24 प्रतीकात्मक भाषा

कथ्य को अधिकाधिक ग्राह्य बनाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है इस संदर्भ में अज्ञेय का कथन है,"महत्व या मूल्य, प्रतीक का या प्रतीक में नहीं होता, वह उससे मिलने वाली अनुभूति की गुणात्मकता में होता है।"**(24)**

राजेंद्र यादव, प्रतीकों को लेखक, पाठक व रचना तीनों के लिए आवश्यक मानते हैं- “प्रतीकों की लक्षणिक प्रवृत्ति ने जहाँ गंभीर अर्थसत्ता को पकड़ने और उसके संप्रेषण के साधारणीकरण की दिशा में अनेक प्रयोग करने का गौरव दिया है, वहाँ व्यक्ति को, अपने अनुभवों को तटस्थ होकर देखने की निर्वैयक्तिकता भी दी है।”**(25)**

प्रतीक, रचनाकार के अमूर्त भावों को मूर्त एवं साकार करने में विशेष रूप से सहायक होते हैं। संप्रेषणीयता की दृष्टि से प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान है। उदाहरण के लिए ‘राजकमल चौधरी’ का उपन्यास ‘मछली मरी हुई’ में ‘मछली’ यौनकुठाओं की शिकार ‘युवती’ का प्रतीक है। कांता भारती का उपन्यास ‘रेत की मछली’ में ‘मछली’ मानसिक रूप से तड़पती हुई नारी का प्रतीक है जहाँ उसका पति, दूसरी स्त्री को अपना लेता है तथा उनके संबंधों को, न सह पाने के कारण वह रेत में पड़ी मछली की तरह तड़पती है। इसी प्रकार ममता जी ने कथा साहित्य में प्रतीकों का खूब प्रयोग हुआ हैं-कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-‘अँधेरे का ताला' उपन्यास का शीर्षक ही प्रतीकात्मक है अँधेरा।

यह शीर्षक की इसमें कविता जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ से लिया गया है जो इस प्रकार है-

जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ, आओ, आओ।

आज अमीरों की हवेली

किसानों की होगी पाठशाला

धोबी, पासी, चमार, तेली,

खोलेंगे अँधेरे का ताला।

एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ।**(26)**

अशिक्षा, अव्यवस्था का प्रतीक हैं। इस ताले को अच्छी शिक्षा व्यवस्था रूपी कुंजी से ही खोला जा सकता है। यही इस उपन्यास का उद्देश्य भी है।

5.25 बिंबात्मक भाषा

प्रतीक की तरह बिंबों का भी कथा साहित्य में अधिक प्रयोग हो रहा हैं। बिंब को अंग्रेजी में 'इमेज'(Image) कहा जाता है।बिंब सूक्ष्म मनोभावों को अभिव्यक्त करते हैं। रचनाकार सक्षम अभिव्यक्ति के लिए बिंबों का सहारा लेता है। हिंदी साहित्य कोश में बिंब को इस प्रकार परिभाषित किया गया है....."मनुष्य के जीवन में बिंब विधान अथवा कल्पना विधान का बड़ा महत्व है। प्रस्तुत परिवेश के संवेदनाओं और प्रत्यक्ष के अतिरिक्त उसके मानस में अतीत की तथा कभी अस्तित्व न रखने, न करनेवाली वस्तुओं और घटनाओं की असंख्या प्रतिमाएँ भी रहती हैं। बिंब शब्द इसी मानस प्रतिभा का पर्याय है।"**(27)**

स्वाधीनता संघर्ष की लहर संपूर्ण भारत में व्याप्त हो रही थी। मथुरा जैसा शहर भी इससे प्रभावित था। बीसवीं शताब्दी की मथुरा अगर बदल रही थी तो इसलिए क्योंकि परिवर्तन की लहर समूचे भारत में उठी हुई थी। कांग्रेस जन-मन की चेतना पर गहरा असर डाल रही थी। आज़ादी की अभिलाषा ने बच्चे-बड़े सबको आंदोलित कर डाला था। एक तरफ लोगों में स्वदेशी पहनने की होड़ लग गयी थी दूसरी तरफ स्वदेशी वस्तुएँ इस्तेमाल करने की। लाला नत्थीमल के कुनबेमें मिल का कपड़ा छोड़ खादी अपनायी गयी तो इसलिए भी क्योंकि खादी सस्ती पड़ती

थी। **(28)**

5.26 सांकेतिक भाषा

प्रतीक और बिंब की भांति संकेत भी भाषा सौंदर्य को बढ़ाते है। आज के कथा साहित्य में सांकेतिका का खूब प्रयोग हो रहा है। संकेत का सृजन एवं प्रयोग किसी भी कलाकृति का सशक्त आधार भी बन सकता है।

साठोत्तरी कथा साहित्य में अधिकतर लेखिकाओं ने सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया है। ममता कालिया ने भी सांकेतिक भाषा को सार्थक रूप दिया है और अपने कथा-साहित्य में इसका उपयोग किया है। ममता जी के कथासाहित्य में संकेत बहुत सारी अनकही बातों को स्पष्ट करते हैं। सांकेतिकता का एक सूक्ष्म प्रयोग ममता जी के साहित्य में देखा जा सकता है।

'जिंदगीःसात घंटे बाद की' कहानी सांकेतिक रूप से प्रौढ़, सुशिक्षीत, अविवाहीत, नौकरी पेशा नारी के अकेलेपन की समस्या को रेखांकीत किया गया है। कहानी की नायिका आत्मीया दफ्तर में दस से पाँच तक काम करती है। इस सात घंटे की जिंदगी को वह सही अर्थों में जीती है उसके पश्चात की जिंदगी अकेलेपन के कारण उसे जिंदगी नहीं लगती

5.27 डॉट्स भाषा

मानसिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अथवा तनावपूर्ण भावों को प्रकट करने के लिए भाषा में डॉट्स का प्रयोग हुआ हैं। ममता जी के कथासाहित्य की भाषा में डॉट्य का प्रयोग भी हुआ हैं- 'बेघर' उपन्यास में संजीवनी की मानसिक स्थिति को रेखांकित करता एक उदाहरण इस प्रकार है- एक और अन्याय जो संजीवनी को परेशान कर रहा था, वह यह कि "उसने समय महसूस किया था कि परमजीत को भी उतना ही अच्छा लगा जितना उसे, पर अलग होते ही परमजीत ने उस स्मृति को बिल्कुल ही मिटा दिया था।.....वह परमजीत से एक लंबी बहस करना चाह रही थी।"**(29)**

इस संदर्भ में एक अन्य उदाहरण है 'लड़कियाँ' उपन्यास की लल्ली की मनोदशा को इस प्रकार व्यक्त किया गया है- "अब मैंने अपने सारे इरादे भुला दिए थे। मेरे व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ अंग नौकरी को समर्पित था। मेरी समस्त संवेदना, कल्पनाशीलता और रचनात्मकता जिंगल और स्लोगन लिखने में लगी हुई थी।.....उठते-बैठते, सोते-जागते, टैक्सी में चलते साबुत की टिकिया या चाय पत्ती का डिब्बा आँखों के आगे नाचता रहता।"**(30)**

'काके दी हट्टी' में इसका उदाहरण स्पष्ट है-"बताओं अब दिल्ली की लड़कियाँ बूढ़ों के पीछे पड़ गयीं। कहती हैं हमें बूढ़े छेड़ते हैं। और गंजे....."**(31)**

'नरक दर नरक' उपन्यास में यह उदाहरण दृष्टव्य है "ऊपर लिफ्ट की जरूरत पड़ सकती है। प्रेम और पवित्रता दो अलग-अलग चीजें हैं, एक-दूसरे की विरोधी। फिर यह तो शायद अभी प्रेम भी नहीं.....।"**(32)**

'जाँच अभी जारी है' की अपर्णा अपने पत्नी से बहस करती हुई करती है कि अपर्णा ने अपना कवच और कुंडल निकाला, देखिए मुझे माँ के साथ.....।**(33)**

ममता जी के 'वर्दी' नामक कहानी में एक डाट्स का उदाहरण इस प्रकार है-"नहीं, रमाशंकर गरजा, मैं इसकी हड्डी-हड्डी तोड़ डालूँगा। तुम्हीं इसे पैसे दे दे कर बरबाद कर रही हो। तुम्हें पता है पैसे कितनी मुश्लिल से आते हैं? साले....."**(34)**

'प्रेमकहानी' उपन्यास में एक उदाहरण दृष्टव्य है कुछ किताबें उपयोगी थीं। मैं डायरी में वे तारीखें नोट करने लगी, जब वे किताबें इशू होने के लिए रिलीज़ की जा रही थीं। तभी पीछे से एक पहचानी आवाज़ ने कहा, "एक्सक्यूज मी.....।"**(35)**

'अँधेरे का ताला' उपन्यास में क्लास का वर्णन करने हुए कहा गया है "क्लास में रखे डस्टर का भी यही डाल है। कितना भी सँभाल कर रखा जाय, मौके पर डस्टर मिलता ही

नहीं। टीचरों ने इन सब मुश्किलों का हल अपने स्तर पर कर लिया है। वे श्यामपट पर खाली जगह का इस्तेमाल कर उसे वैसा ही छोड़ देती हैं। हिंदी, संस्कृच, अंग्रेजी की गड्ड मड्ड इबारत कुछ इस तरह बनती है तू दयानि दीन हौं, विद्यायाश्च फलं ज्ञान विनयस्य, शेक्सपीरियन सॉनेट.....।"**(36)**

'बोलने वाली औरत' नामक कहानी में सास, बहू से बहस कर पूछती है "यह झाड़ू सीधी किसने खड़ी की? बीजी ने त्योरी चढ़ाकर विकट मुद्रा में पूछा। जवाब न मिलने पर उन्होंने मीरा को छमकाया, इस तरह फिर कभी झाड़ू की तो.....।"**(37)**

5.28 काव्यात्मक एवं आलंकारिक भाषा

ममता कालिया की भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता-आनव काव्यका है। अधिक प्रयोग गद्य भाषा में काव्य का सा आनंद मिलता है।इस संदर्भ में कुछ उदाहरण दृष्टव्य है- बाज़ार बहुत रंगीन है, चमक और चहल-पहल से भरा। यहाँ जो कुछ भी मिलता है उसमें से एक भी चीज सुखिया ने कभी नहीं खरीदी। अधिकांश चीजें वह पहचानती है। यह पर्स की दुकान है, यह कपड़े की। और यह बायें हाथ को स्वराज होटल है, यहाँ रात को खूब बलियाँ जलती हैं। जाने कौन लोग बाज़ार में हर दम भीड़ लगाये रहते हैं। क्या इनकी जेबों में हमेशा पैसे भरे रहते हैं। इतना-इतना सामान आखिर कैसे खत्म करते होंगे लोग। अलंकार युक्त भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है- "प्रेम करो, प्राणिमात्र से प्रेम करो। प्रेम टेलीफोन कनेक्शन नहीं है जो आप सिर्फ एक मनुष्य से बात करें। प्रेम वह आलोक है जो समूचे कमरे को, समूचे जीवन को आलोकित करता है, अब हम ध्यान करेंगे, ओम्।"**(38)** एक अन्य उदाहरण इस प्रकार है- "तलकटोरा बाग में हुए दस दिवसीय यूथ फेस्टिवल में समूह नृत्य प्रतियोगिता में पूना विश्वविद्यालय ने प्रथम स्थान पाया। सभी अख़बारों में इस आइटम की तस्वीर

छपी। कवि-परिवार ने आँखे गड़ाकर प्रतिभा को पहचानने की कोशिश की। समूह नृत्य में कुल छह लड़कियों का झुंड था। सज धजकर सब एक समान सुंदर लग रही थी। बड़ी मुश्किल से प्रतिभा की पहचान हो पायी। अख़बारों की प्रतियाँ सँभालकर रख ली गयीं।"**(39)**

5.29 भाषा में उद्धरणों का प्रयोग

उपन्यासकार अपने उपन्यास को प्रभावी एवं आकर्षक बनाने के लिए किसी कवि या शायर के गति, कविता एवं शेर की पंक्तियाँ भी उद्धृत करता हा। ममता जी ने 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में स्थान-स्थान पर शेर-शायरी को उद्धृत किया है-कुछ उद्धरण इस प्रकार हैं-

1. "किसलिए जलाए हैं अब दिए किनारों पर, अब तो डूबने वाला डूब भी चुका होगा"।**(40)**
2. "रति सुख सारे गतभिसारे मदन-मनोहर-वेशम्। पीन-पयोधर-परिसर-मर्दन-चंचलकर-युगशाली(गीत गोविंद)।"**(41)**
3. आह, संगमरमर-सा यह रेशमी शफ्फाक बदन, देखने वाले तुझे ताजमहल कहते हैं।**(42)**
4. "तकदीर तो कौमों की हुआ करती हैं, एक शरण्य की किस्मत में तकदीर कहाँ।"**(43)**
5. "भौंहें सुरचाप चारू प्रमुदित पयोधर भूषण जराइ जोति तड़ित रल्याई है।दूरी करी सुख सुखमा ससी की नैन, अमल कमल दल दलित निकाई है.....।"**(44)**
6. "कहती थी बहन कैसे असगर को भुला दूँगी भैया की जुदाई में जान अपनी गँवा दूँगी।"**(45)**
7. "यह लाश तेरी असगर ले जाऊँगी महशर में कितने तुझे मारा है बाबा से

बता दूँगी।”**(46)**

8. सारे ही बोलो जय माता दी, सबने कहा। उच्चे बालो जय माता दी, प्रेम से बोलो जय माता दी, जोर से बोलो, जय माता दी, मैं नई सुणया जय माता दी, हल्ले नहीं सुण्या, जय माता दी, ड्रायवर भी बोले, जय माता दी, कंडक्टर भी बोले, जय माता दी, स्याणे बोलें जय माता दी, न्याणें बोलें जय माता दी, शेराँ वाली जय माता दी, चिंतपूरणी जय माता दी।**(47)**

9. “अब तक क्यों न समझ पाया था थी जिसकी जग में छवि छायामुझे आज
भावी पत्नी का मधुर ध्यान क्षण भर को आया।”**(48)**

10.“एक आँख बाकी कूआ कानी एक में घुस गयौ चैंटो। अरी मेरौ ससुर
कनैटो।”**(49)**

11.“किसलिए जलाए हैं अब दिए किनारों पर, अब तो डूबने वाला डूब भी चुका
होगा।”**(50)**

12.“तकदीर तो कौमों की हुआ करती है, एक शख्स की किस्मत में तकदीर
कहाँ।”**(51)**

13.“मैं भूल गई दाता, मैं भूल गइयाँ, धर्म दा राह छह ओझड़ पइयाँ। आज दी न भूली मैं कल दी न भूली जनम जनम दी आई हाँ रूलदी। सोच समझकर देख ले मनुआ। यह सब नाल किसी दे न जइयाँ।”**(52)**

14. शॉल की काव्य पंक्तियाँ इस प्रकार है-

“We look before and after
And pine for what is not
Our sincerest laughter
Is with some pain fraught
Our sweetest songs are those that it up

Of saddest, thought”**(53)**

15. होने सवार ज्यों बढ़े चरण चमका एड़ी का गौर वर्ण कर नमस्कार, कुछ

नमित वदन जब मुड़ी हो गये रक्त कर्ण।**(54)**

5.210 मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ

ममता जी की रचनाओं में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी सहज रूप से हुआ है कुछ उदाहरण हैं-

1. मुहावराः

जिद पर अड़ जाना तिलमिलाहट होना, खयालों के हवाले कर देना, संकोच से सिमट जाना, मोहभंग होना, सिन घुनना, फट पड़ना, पीली पड़ जाना, खून का घूँट पीना,

शैली वैशिष्ट्य

साहित्य की रचना विभिन्न-पद्धति एवं प्रणालियों एवं रीतियों से होती है। इन्हीं को रचना शैली कहा जाता है। यहाँ ममता जी की रचना शैली पर विचार किया जाएगा। रचनाकार अपनी भावनाशक्ति को विशेष पद्धति से व्यक्त करने का प्रयास करता हा, उसे ही शैली कहते है।

शैली कथा साहित्य का महत्वपूर्ण तत्व है, शैली को अंग्रेजी में ‘स्टाइल’ ‘(style)’ कहा जाता है। संस्कृत विद्वानों ने शैली को रीति कहा है। आचार्य वामन रीति का विश्लेषण करते हुए उठे विशिष्ट पद रचना कहा है।**(55)**

फ्रांसीसी उपन्यासकार ‘स्तान्धाल’ ने भी शैली को अच्छी रचना का गुण मानते हुए कहा है- “शैली का अस्तित्व इसमें निहित है कि दिए हुए विचार के साथ उस सब

परिस्थितियों को जोड़ दिया जाए। जो कि उस विचार के प्रभाव को संपूर्णता में उत्पन्न करनेवाली है"।**(56)**

शैली के संबंध में बर्नाड शा का विचार है कि प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही शैली का अर्थ और इति है।**(57)**

इस प्रकार कहा जा सकता है शैली अभिव्यक्ति के प्रकार विशेष से सूबंध रखती है।

प्रत्येक कलाकार की अपनी अलग-अलग शैली होती है। अपनी विशिष्ट शैली क माध्यम से वह अपने भाव एवं विचारों को अभिव्यक्त कारण है। इसीलिए साहित्यकार चाहता है कि उसकी शैली में नवीनता एवं मौलिकता है। एक सी शैली प्रयोग के कारण पाठकों के मन में अब खीज तथा पैदा होने का खतरा बना रहता है। इसी के ध्यान में रखती हुए कथासाहित्य में विविध प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार कथा साहित्य में रोचकता और आकर्षकता आ जाती है।

पाठकों की अभिरूचि भी बढ़ जाती है। कथासाहित्य में जिन शैलियों का प्रयोग किया जाता है-वे इस प्रकार है।

शैली

साहित्य में शैली का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक काल में इस शैली को अंग्रेजी स्टाइल का पर्याय मान लिया गया है। संस्कृत आचार्यों ने शैली का रीति कहा है। आचार्य वामन ने काव्यालंकार सूत्र में रीति का विश्लेषण करते हुए उसे विशिष्ट पद रचना कहा है।**(58)** शैली का अर्थ रचनाकृति के बाह्य परिधान से है, जिसका निर्धारण भाषा और शब्दों के विशिष्ट प्रयोग द्वारा होता है।

इस संबंध में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का कथन दृष्टव्य है-“आज तक हम शैली शब्द का प्रयोग पश्चिमी अर्थ में करते हैं तब हमारा आशय केवल शब्द और भाषा योजना तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समस्त रूपगत विशेषताओं तक प्रसारित रहता है और हम कवि की वैयक्तिक प्रवृत्तियों और कला योजनाओं तक का आकलन करते है।”**(59)**

हिंदी साहित्य कोश में शैली को इस प्रकार परिभाषित किया है- “शैली अनुभूत विषय वस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है, जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते है।”**(60)**

5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

5.31 वर्णनात्मक शैली

वर्णन या चित्रण करना इस शैली की प्रधान विशेषता है। कथा-लेखन में सर्वाधिक प्रचलित और परंपरागत शैली वर्णनात्मक ही है। विश्व की अधिकांश भाषाओं में कथा-साहित्य इसी शैली में लिखे गए हैं। इस शैली के उपन्यासों की कथावस्तु, पात्र तथा स्थितियों का वर्णन उपन्यासकार तृतीय पुरूष के रूप में करता है। प्रेमचंद युग के उपन्यासकारों ने इस शैली को अपनाया है। सामाजिक तथा ऐतिहासिक उपन्यासों में भी अधिकतर इस शैली को अपनाया गया है।

भूत, वर्तमान, भविष्य से संबंधित घटनाओं का वर्णन इस शैली के द्वारा ही होता है। प्रत्येक कहानी और उपन्यास में कम-अधिक मात्रा में वर्णनों की उपस्थिति रहती ही है। बिना वर्णन के उपन्यास की कल्पना तक नहीं की जा सकती है।

अधिकतर महिला कथाकारों ने भी उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती आदि के नाम महत्वपूर्ण है। ममता जी के कथा साहित्य में वर्णनात्मक शैली के उदाहरण इस प्रकार है ‘राएवाली’

नामक कहानी में व्यक्ति के नामों का वर्णन किया है- "मुहल्ले में सभी के दो दो नाम थे, एक घर का, जो आंगन से लेकर गली की आखिरी हद तक जोरों से गुहारा जाता, दूसरा जो स्कूल के रजिस्टर में दर्ज रहता। घर के नाम का कोई नामकरण संस्कार नहीं होता था, वह अपने आप ही पड़ जाता। जैसे पप्पू की बहन पैदा हुई तो पप्पू ने कहा हाय अम्मा यह तो ऐसी मुलायम है कि इसे मैं हप्प कर जाऊं।और बहन का नाम हप्पो पड़ गया। इसी तरह राकेश का नाम तोते, शारदा का नाम ठुन्नो और अमरवती का नाम इमरती पड़ गया। स्कूल वाला नाम बाकायदा लड्डू हाथ में देकर निकाला जाता था। लेकिन उसका प्रयोग केवल हाईस्कूल के प्रमाण-पत्र और शादी के कार्ड तक सीमित था।"**(61)**

'बेघर' उपन्यास में परमजीत के बाप का वर्णन इस प्रकार किया है।"परमजीत के बाप की लस्सी की दुकान थी। लस्सी बिलोते-बिलोते उसकी उसकी हथेलियों में स्थायी ठेकें और सूजन बैठ चुकी थी। दुकान में तख्त पर गुम्बदाकार लोटा, मथानी और दही का कूंडा, चीनी वगैरह लिये वह बैठा रहता। तख्त के एक किनारे मुरादाबादी कलई के गिलास कायदे से रखे रहते। जब परमजीत छोटा था तब वह बाप को बरफ धो-धोकर पकड़ाया करता था। बाप ने उसे लस्सी बिलोनी सिखानी चाही थी, पर उसके ग्राहक नहीं माने। फलतः उसने पाँच रुपये का एक चिकना नोट देकर परमजीत को स्कूल में दाखिल करा दिया।"**(62)**

'अंधेरे का ताला' उपन्यास से वर्णनात्मक शैली का एक उदाहरण दृष्टव्य है- "कॉलेज से सटा गोरा क़ब्रिस्तान है। वहाँ सैंकडों साल पहले दिवंगत हुए अंग्रेजों की क़ब्रें हैं। कई क़ब्रों पर ऊँचे बुर्ज बने हैं। दो-तीन पर मध्यम आकार की मीनारें। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने पिछले दो साल से यहाँ माली रख कर बग़ीचा लगवा दिया है। तरह-तरह के फूलों के बीच क़ब्रे ऐसी लगती हैं जैसे तरंगित जीवन के बीच मृत्यु के शिलालेख।"**(63)**

5.32 आत्मकथात्मक शैली

आज के युग में अधिकांश कथा साहित्य इसी शैली में लिखा जा रहा है। इस शैली में लिखे गये उपन्यास में रचनाकार अपने वैयक्तिक अनुभवों को प्रथम पुरूष(मैं) प्रकट करता है। आत्मकथात्मक शैली अधिक विश्वसनीयता पैदा करने की तथा मानवीय आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम होती है। इसमें रचनाकार तथा पाठक काफी करीब आ जाते हैं। साठ के बाद के उपन्यासों में आत्मकथात्मक शैली को सर्वाधिक अपनाया गया है। इस शैली में सारी कथा नायक या नायिका के मुख से कहलवायी जाती है। इसी शैली के अंतर्गत मैं चरित्र का आत्मविश्लेषण उत्कृष्ट ढंग से होता है। इस संदर्भ में शिवानी की कृति कस्तूरी मृग का उदाहरण दिया जा सकता है। आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग सभी महिला कथाकारों ने किया है। ममता कालिया ने आत्मकथात्मक शैली में कथा साहित्य लिखा है।

कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी है। इसमें मैं शब्द का प्रयोग किया गया है। जब नायक और नायिका बड़े दिन की पूर्व सांझ में क्लब जाते है तो वहाँ पर एक दूसरे के साथ जांस कर रहे उस पाश्चात्य सभ्यता का वर्णन नायिका कर रही हैं-“मैं रूप को ढूँढने नहीं जा रही थी। दरअसल मैं उस उलजलूल कवायद से तंग आ गई थी अनभ्यस्त होने की वजह से हमारे जूते बार-बार एक दूसरे के पैर पर पड़ रहे थे। वह मेरी साड़ी पर बहुत बार पैर रख चुका था। और मुझे उसके फाटने की आशंका थी।”**(64)**

ममता जी भी ‘प्रेम कहानी’ उपन्यास भी आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। उपन्यास की नायिका जया अपने पापा के तबादले का वर्णन करती है। “पदोन्नति के साथ-साथ पापा का तबादला इस छोटे-से शहर में हो गया। जिस दिन पापा ने दफ्तर से आकर हमें यह खबर सुनाई तो वह स बात पर विश्वास नहीं करती क्योंकि रोडियों स्टेशन का

संबंध वह महानगरों से मानती आयी है। परंतु वह सोचती है कि मथुरा में पेडा हो सकता है, पण्डा हो सकता है, परमात्मा हो सकता है लेकिन रेडियो स्टेशन नहीं।"**(65)**

5.33 विश्लेषणात्मक शैली

इस शैली में कथानक की स्थूलता नहीं होती है। इसमें कथा की सूक्ष्मता होती है। विश्लेषणात्मक शैली में लिखी गई रचना के केंद्र में कोई न कोई एक विचार होता है। उसी का विवेचन और विश्लेषण कृति में किया जाता है। यह शैली तर्क प्रधान होती है। अमूर्त भावों की अभिव्यक्ति के लिए यह शैली उपयुक्त होती है। इस प्रकार की शैली में लिखी गई रचनाओं में बौद्धिक या शिक्षित पात्र अधिक होते है।

ममता कालिया अपने कथा साहित्य में विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग निम्नलिखित रूप से करती है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है- "बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के तीन जादुई अक्षरों ने बहुत से नौजवानों के जीवन और सोच की दिशा ही बदल डाली थी। ये तीन अक्षर थे एम.बी.ए. नौकरियों में आरक्षण की आँधी से सकपकाए सवर्ण परिवार धडाधड़ अपने बेटे-बेटियों को एम.बी.ए. में दाखिल होने की सलाह दे रहे थे। जो बच्चा पवन, शिल्पाऔर रोजविंदर की तरह कैट, मैट जैसी परिक्षाएँ निकाल ले वह तो ठीक, जो न निकाल पाए उसके लिए लंबी-चौड़ी कैपिटेशन फीस देने पर एम.एम.एस के द्वार खुले थे। हर बड़ी संख्या ने ये दो तरह के कोरेस बनै दिए थे। एक के जरिए वह आता जा रहा था।एम.बी.ए. में लड़के वर्ष भर पढ़ते, प्रोजेक्ट बनाते, रिपोर्ट पेश करते और हर सत्र की परिक्षा में उत्तीर्ण होने को जी तोड़ मेहनत करते। एम.एम.एस में रईस उद्योगपतियों, सेठों के बिगडे शहजादे एन.आर.आई. कोटे से प्रवेश लेते, जमकर वक्त बरबाद करते और

दो की जगह तीन साल में डिग्री लेकर अपने पिता का व्यवसाय सँभालने या बिगाने वापस चले जाते।"**(66)**

5.34 मनोविश्लेषणात्मक शैली

मनोविश्लेषणात्मक शैली में रचनाकार पात्रों की सूक्ष्म भावनाओं के उद्घाटन द्वारा कथा का विकास करता है। "फ्रायड, डार्विन युग जैसे पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक विद्वानों के प्रभाव स्वरूप साहित्य में मनुष्य के चेतन, अवचेतन एवं कुंठाओं का विश्लेषण होने लगा। आंतरिक संघर्ष में जकड़े हुए पात्रों के अंतर्मन का चित्रण या मानसिक द्वंद्व का आविष्कार करने का प्रयास मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा होता है।"**(67)**

इस शैली के द्वारा लेखक पात्रों के चरित्र की गहराई को पाठकों के सामने लाता है। इस शैली के माध्यम से पात्रों के मन में परिस्थितिवश अकेलापन अंतर्द्वंद, तनाव अहंभावना आदि भावनाएं उत्पन्न हो सकती है, उसका स्वाभाविक चित्रण लेखक करता है। ममता जी की कथा साहित्य में मनोविश्लेषणात्मक शैली का निर्वाह हुआ है जिसे निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है।

'मंदिरा' नामक कहानी में पत्नी के तनावग्रस्त जीवन को चित्रित किया है। मंदिरा अपने नाम के समान ही बहुत सारी उमंगों को लेकर पारिवारिक जीवन में रोमामच का अनुभव करना चाहता है। परंतु नीरस स्वभाव वाले पति वाजपेयी को पाकर सकी उमंग तितर बितर हो जाती है। उसे लगा, "यह पैसा पति है, म दुख में विचाछित होता है न सुख में। परम आल्हाद के क्षण भी उसके ऊपर से ऐसे गुज़र जाते हैं जैसे रेलगाड़ी के ऊपर से पंछी।"**(68)**

'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास का पति संदीप, कविता पर अत्याचार करता रहता था। नारी की सबसे बड़ी चाहत शिशु प्राप्ति होता है। कविता इस चाहत का इज़हार पति के

समक्ष नहीं कर सकती थी। जब एस.के तिवारी के नवजात शिशु के जन्मोत्सव से कविता वापस आती है तो उसे देर रात तक नींद नहीं आती है-उसे लगा उसकोपहलु में उसका स्वस्थ, सुंदर समर्थ पौरुषमय पति सोया था पर वह उससे नहीं कह सकती थी, "सुनो, मैं माँ बनना चाहती हूँ, क्या कभी हमारा एक किलकारी भरा घर नहीं होगा।"**(69)**

5.35 पूर्व-दीप्ति शैली(फ्लैश बैक शैली)

पूर्व दीप्ति पद्धति अथवा फ्लैश बैक शैली उपन्यास लेखन की महत्वपूर्ण शैली है। इस शैली में उपन्यासकार कथा कहते-कहते अकस्मात प्रसंग के किसी एक सूत्र अथवा घटना को भूत घटना से जोड़ देता है। इस शैली में लिखे गए उपन्यासों में 'अज्ञेय' का 'शेखर एक जीवनी', 'जैनेंद्र कुमार' का 'सुखदा' उल्लेखनीय हैं। देखा जाय तो आधुनिक कालीन उपन्यासों में इस शैली का बहुत ही कम मात्रा में प्रयोग होता है। महिला कथाकारों में अधिकार लेखिकाओं ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग अपने साहित्य में किया है। ममता जी ने अपने 'नरक दर नरक' उपन्यास में पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग किया है जब उषा और जगन दोनों को ही अपनी पहली प्रेम कहानी याद आती है।"उन जैसे तरोताज़ा दिमाग वाले लोगों को इतनी घिसी हुई संज्ञा प्रेम कैसे ले बैठी-पर कोई फायदा नहीं हुआ। प्रेम अपनी जगह डटा रहा। जगन बोला उसने नहीं सोचा था, उस जैसा आदमी इस आसानी से पकड़ा जाएगा। उषा ने भी शरमाते हुए कहा, उसने नहीं सोचा था कि पहली बार ही वह हमेशा के लिए बँध जाएगी। फिर इस विषय पर दोनों चुप हो गए। ज्यादा बोलना न के लिए खतरे पैदा कर सकता था। इसलिए शायद प्रेम में मौन रहा जाता है। इतना वे ताड़ गए कि इस चुप में ही दोनों की भलाई है।"**(70)**

इस शैली में घटनाओं को अतीत की स्मृति के सहारे विकासित किया जाता है। पात्रों की स्मृति के द्वारा अतीत की घटनाओं को प्रकाशित किया जाता है। पवन जब अपने

ऑफीस में आता है तो यकायक बिजली चली जाती है। और कंप्युटर के माउस को देखकर उसे अपना छोटा भाई सघन याद आ जाता है- "रात में बिस्कुटों की तलाश में वे दोनों रसोईघर में जाते। रसोई में नाली के रास्ते बड़े-बड़े चूहे दौड़ लगाते रहते। उन्हें बड़ा डर लगता। रसोई का दरवाजा खोलकर बिजली जलाते हुए छोटू लगातार म्याँऊँ-म्याँऊँ की आवाज़े मुँह से निकालता रहता कि चूहे यह समझे कि रसोई में बिल्ली आ पहुँची है और वे डरकर भाग जाएँ। छोटू का जन्म भी मार्जार योनि का है।"**(71)**

'तस्की को हम न रोये' कहानी की रूप सी नायिका आशा शादी के कुछ दिन बाद ही अपने सौंदर्य को फूल के समान मुरझा हुआ पाती है। अपने विवाह पूर्व रूप को याद करती हुई कहती है-"वह शीशे के सामने खड़ी हो जाती। वह चेहरा है, वही आँखें हैं, वहीं होंठ है, वही बाल है लेकिन वह जादू गायब है जिसके आधार पर वह एक बार मसूरी में क्वीन चुनी गई थी।.....उसके लिए अतीतीजीवी होते जाना एक अनिवार्य परिणति थी।"**(72)**

पत्रों के द्वारा पात्रों की आंतरिक भावनाओं को खेल रूप में एक-दूसरे के सामने प्रकट कर सकते है।इसके द्वारा घटनाओं का विकास प्रामाणिक रूप में व्यक्त होता है।इसके लिए कुछ पत्र घटना, घटित होने के दौरान लिखे जाते हैं। तो कुछ पूर्व में लिखी गये पत्रों से भी घटनाओं का पूर्व संकेत दिया जाता है। पत्र शैली में एक व्यक्ति द्वारा लिखे गए पत्र या पत्रों के योग से या विभिन्न पात्रों द्वारा लिखे गए पत्रों के आदान-प्रदान से उपन्यास का सृजन किया जाता है। 'अनदेखे अनजान पुल' (राजेंद्र यादव), 'अंधेरे बंद कमरे' (मोहन राकेश) आदि उपन्यास इसी शैली में लिखे गए हैं।

'नरक दर नरक' उपन्यास की पात्र उषा को जब होस्टलमें एक खत आता है तो उसमें लिखा रहता है कि तुम्हें संभलकर रहना है। छोटा-सा खत थाः

उषा तुम्हें गाड़ी में चढाकर हम लोग पापा को घर छोड़ आए थे। शनिवार को

प्रोफेसर शुक्ल मिले थे। समर इंस्टीट्यूट में तुम्हारे जाने से प्रसन्न थे। मैं आजकल सुबह-शाम लाइब्रेरी में बैठी रिसर्च सब्जेक्ट ढूँढ़ता हूँ। नहीं तो सोचता हूँ, एक और एम.ए. कर डालूँ।

कल घर गया था ममी-पापा तुम्हारे बिना सुस्त हैं। उन्होंने कहा है, तुम टॉनिक लेना न भूल जाना। बहनजी तुम्हें स्नेह भेजती हैं। बहुत सँभलकर रहना।**(73)**

तुम्हारा प्रकाश

'बेघर' उपन्यास में परमजीत की माँ उसे चिट्ठी लिखती है। उसमें वह लिखती है की "गर्मी बहुत बढ़ गई है वह बेड़े या छत पर छिड़काव करके खाट बिछा लिया करें। शक्तिनगर में रहते-रहते उसकी माँ बगैर बेड़े और छत के मकान की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। गर्मियों में वे सब बारी –बारी से छत पर पानी छिड़कते और बिस्तर लगाते। और तब परमजीत देर तक मुँडेर पर से अपने से नीची छतों पर सोते लोग देखता रहता और उन्हें दिन में पहचानने की कोशिश किया करता। उसकी माँ देर तक इस चिंता में बार-बार चौंकती कि बिंबा चादर पाँवों से हटने न दे, फिर वह सबसे छोटे-बच्चे के मुँह में अपना दूध पकड़ा कर सो जाती।"**(74)**

ममता जी के 'झूठ' नामक कहानी में पत्रात्मक शैली की प्रयोग मिलता है। कहानी का नायक चिन्मय बाबू जो संपादक है किसी के द्वारा भेजा हुआ पत्र पढ़ता है जो निमनलिखित है।

"प्रिय महोदय"

यदि आप अपने को एक जाँबाज संपादक समझते हैं, तो मेरी कहानी छाप कर

दिखाइए। एक निर्भीक लेखिका होने के नाते मैं सिर्फ दिलेर संपादकों को अपनी रचना भेजने की पहल करती हूँ। यदि अगले छः माह के अंदर यह रचना आपके यहाँ नहीं छपी, तो मैं मान लूँगी कि बेबाक पत्रकारिता का जो नकाब आप ओढे हैं, वह नकली है।"

5.36 डायरी शैली

डायरी शैली पाश्चात्य लेखकों हाथा विचारकों की प्रिय शैली रही है। इस शैली के उपन्यासों में प्रमुख पात्रों के रोजमर्रा के जीवन का वृतांत होता है। कथा मुख्य रूप से प्रधान पात्र के इर्द-गिर्द घूमती है। बहुधा ऐसा होता है कि सामाजिक बंधनों के कारण जिन अत्यंत निजी बातों की अभिव्यक्ति संभव नहीं होती है, वे ही बातें डायरी शैली के माध्यम से व्यक्त होती है। यह किसी व्यक्ति का अनुभूत सत्य होता है। इसमें पात्र संक्षिप्त रूप से अपने विचारों को लिखता जाता है। अज्ञेय, मोहन राकेश, श्रीलाल शुक्ल आदि ने अपनी रचनाओं में डायरी शैली का प्रयोग किया है।

ममता कालिया के कथा साहित्य में प्रस्तुत शैली का कम प्रयोग मिलता है। 'दुक्खम-सुक्खम' उपन्यास में कवि पात्र डायरी लिखता है। इसके कुछ अंश इस प्रका है- "कवि रोज़ डायरी लिखते। पहले बेटियाँ सोचती थीं कि पापा भी खर्च का हिसाब लिखते हैं। वे आपस में चुहले करतीं कि कैसे दो आदमी मिलकर सारा दिन खर्च का हिसाब लिखते हैं पर हिसाब है कि निपटने में ही नहीं आता। बहुत बाद में पापा की एक पुरानी डायरी मनीषा के हाथ पड़ गयी। उसने जल्दी-जल्दी उसके पृष्ठ पलटे। उसमें कोई ख़र्च का हिसाब नहीं लिखा था। उसमें पापा के विचारों का गंगासागर था। उन सुभाषितों से उनके सौंदर्यबोध, विचार-संपदा, बौद्धिक ऐश्वर्य और मौलिक चिंतन का परिचय मिलता था। वे कभी आधी रात में उठकर टेबिल लैंप जलाकर लिखते, कभी भोर में जाग जाते। वे पढ़ते, प्रतिक्रियायित्

होते और स्फूट विचार लिखते। उन पर किसी वाद-प्रतिवाद का प्रभाव या बंधन नहीं था। कई बार प्रगतिवादी मित्रों ने इन्हें प्रगतिशील साहित्य गोष्ठियों में प्रतिबद्ध साथी की तरह दर्ज करना चाहा पर वहाँ जाकर वे सृष्टि के रहस्य और अलौकिक शक्तियों की मीमांसा पर भाषण झाड़ आये। जहाँ किसी सहंस्य और अलौकिक शक्तियों की मीमांसा पर भाषण झाड़ आये। जहाँ किसी तात्विक विषय पर शाश्वत चिंतन होता वहाँ वे समाज की समकालीन समस्याओं पर बोलने लगते। उन्हें अपने बारे में विभ्रम रखना अच्छा लगता।"(75)

5.37 वार्तालाप एवं संवादात्मक शैली

वार्तालाप या संवाद कथा सूत्रों को गति प्रदान करता है। पात्रों के पारस्पारिक संववादों से पात्रों के विचारों, भावनाओं से पाठक परिचित हो जाता है। संवादों के जरिए भाषा सशक्त बनती है। कथावस्तु में नया मोड़ और गत्यात्मकता लाने का काम संवाद ही करते है। संवादों में अनेकरूपता तथा पात्रानुकूलता होने से पात्रों में चरित्र विश्लेषण में सुविधा रहती है।इस शैली का कथाकार खूब प्रयोग करते हैं। प्रस्तुत संवाद में विद्यार्थियों की अनुशासन हीनता को प्रकट किया गया है।

हाज़िरी पूरी होने तक दस-बीस लड़कियाँ सक्सेना बहनजी को घर लेती हैं- "हमारा नाम, मैडम हमारा नाम? लंबी छात्राएँ उचल-उचल कर रजिस्टर में झाँकती हैं, मिस, कल हम उपस्थित थे, आपने एब्सेंट कैसे लगाया? सक्सेना बहनजी निरूपाय-सी पी लगा देती हैं। कुछ देर ए को पी बनाया जाता है। अब बहनजी अपनी पुस्तक खोलती हैं-काव्य सुषमा। रंजन श्रीवास्तव चतुर्थ अभी तक खड़ी है।मैम आपने मुझे ए कैसे लिखा? घर से तो मैं रोज़ आती हूँ। बिंदू पांडे और माया तिवारी कहती है, पर कॉलेज कहाँ पहुँचती हो? भई, इस तरह

रोलकॉल को लेकर रोज़ समय नष्ट न किया करो।मैं अटेंडेंस लेनी बिल्कुल बंद कर दुँगी। सक्सेना बहनजी कहती है।"**(76)**

'नरक दर नरक' उपन्यास में कई जगहों पर पात्रों के अनुकूल कथोपकथनों का निर्माण किया है। जैसे कॉलेज में अध्यापकों के संवाद उन्हीं की शिक्षा के अनुकूल प्रौढ़ भाषआ में है-"आप छात्रों से ज्यादा व्यक्तिगत बातचीत तो नहीं करते? सामंत बोले। सर नहीं, उनका प्रसंग ही कैसे उठ सकता है? ऐसे बातों से अनुशासन भंग होता है। फिर छात्र गलत बातों में भी अध्यापकों का अनुसरण करते हैं।"**(77)**

इसके विपरीत जगन जब अपने दोस्तों के साथ बैठता है तब उनके संवाद होते हैं जो इस प्रकार हैं- "जौगेंदर को जब पता चला वह भड़क गया, पहुँच गये फिर वही तुम नाली और पटरे से ऊपर उठना ही नहीं चाहते, है न। अतिश बड़े लाड़ से हँसा, साला तू कौन सा महलों में बैठा है? हम पटरी पर तो तू पटरे पर। देख, आइंदा मुझे ये साफ उँगलियाँ दिखाकर मत धमकाना। तुम्हें शर्म आती है, तो तुम से नहीं मिलूँगा पर करूँगा वह जो मेरा मन होगा। आखिर उन कमबख्तों के कुछ भेजूँगा या सीधे जहर ही?"**(78)**

5.38 व्यंग्यात्मक एवं संकेतात्मक शैली

इस शैली का प्रयोग धार्मिक रूढ़िवादिता, समाज की भेड़चाल, राजनीति के शतरंजी खेल को प्रकट करने के लिए किया जाता है। महाभोज, राग दरबारी आदि उपन्यासों में इस शैली का भरपूर प्रयोग हुआ है। कोई भी रचनाकार अपनी भावभिव्यंजना हेतु व्यंग्य का आश्रय लेता है।व्यंग्य के प्रयोग से सामाजिक और राजनीतिक समस्या को प्रकट करने में ममता कालिया सफल रही है। 'नरक दर नरक' उपन्यास में साधना कॉलेज के बारे में

लेखिका व्यंग्य करते हुए लिखती हैं- "एक टूटी-सी इमारत में स्थइत यह कॉलेज लड़कियों से ठसाठस भरा रहता था।"**(79)**

संकेतात्मक शैली-संकेत स्वतंत्र एवं अनिश्चित होते है। पाठक अपनी समझ के अनुसार संकेत का अर्थ में सकता है। संकेत भले ही छोटी-छोटी है किंतु प्रभावपूर्व बात समझने के लिए संकेतात्मक शैली का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"आज कॉलेज में सबके चेहरे खुशी से चमक रहे हैं। बड़े बाबू अपनी प्रिय अध्यापिका के पास बैठे चाय पी रहे हैं। संस्कृत का तीसरा पीरियड हैलेकिन संस्कृत प्रवक्ता भी पास बैठी स्वेटर बुन रही है। बिरजू ने अभी-अभी चम्पा सुरती की फंकी लगायी है और आँखे आकाश में टाँग कर अपने स्टूल पर मगन बैठा है।"**(80)** यह उदाहरण इस बात का संकेत देता है कि अनुशासन प्रिय बड़ी बहनजी आज कॉलेज नहीं आयी थी। इसलिए सभी आज स्वतंत्रता का सुख अनुभव कर रहे थे।

5.39 बिंबात्मक शैली

कथा साहित्य में बिंब विधान को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका है। बिंब विधान के कारण सरलता, स्पष्टता एवं बोधगमय्ता आ जाती है। कथा साहित्य में भाषा को संप्रेषणीय बनाने के लिए बिंबों का प्रयोग किया जाता है। बिंब के प्रयोग से विषयवस्तु का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। विवेच्य लेखिका ने अपने साहित्य में बिंब का प्रयोग किया है।

इस शैली का उदाहरण 'बीमारी' कहानी है जिसमें भाई के स्वार्थ का ऐसा बिंब खड़ा किया गया है कि वह चित्र आँखों के सामने आ जाता है-"कहानी की नायिका नौकरी के लिए अकेली रहती है और अपनी बीमारी में अपने भाई और भाभी को बुलाती है। वे दोनों आ जाते हैं परंतु वे उसका ख्याल ठीक से रख नहीं पाते और उसे अपने घर चलने के लिए कहते हैं।

वह सोचती है कि वहाँ जाने से अस्पताल में रहना अच्छा है कि आठ दिन में भाई से उसके लिए हुए खर्चे के बारे में पूछती है तो- भाई ने झेंपते हुए अपनी जेब से पर्स निकाला और कई कागज़ उलट-पुलट कर एक कागज़ मुझे थमा दिया। उनमें उन पैसों का हिसाब था, जो इधर-उधर मेरे सिलसिले में आने-जाने में खर्च हुए थे और जो फल मेरे लिए लाये गये थे।"**(81)**

संदर्भ सूची

1. रोहिताश्वः समकालीन कविता-सौंदर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य मेः पृ.262

2. सोनिया सिरसाटः राजेंद्र यादव के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक विवेचन, पृ.100

3. भोलानाथ तिवारीः भाषाविज्ञानः पृ.4-5

4. श्यामसुंदर दासः साहित्यालोचनः पृ.259

5. कृष्णा सोबतीः सोबती एक सोहबतः पृ.374

6. मृदुला गर्गः समागमःपृ.7

7. प्रभा वर्माः हिंदी उपन्यासः सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूपः पृ.323

8. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाः पृ.29

9. ममता कालियाः दौड़ः पृ.7

10.ममता कालियाः दौड़ः पृ.40-41

11.ममता कालियाः अँधेरे का तालाः पृ.31

12.ममता कालियाः अँधेरे का तालाः पृ.67

13.डॉ. सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना पृ.93

14.डॉ.फैमिदा बीजापुरेः ममता कालियाः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.115

15.डॉ. सीमा शर्माः ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना

पृ.205 कहानियाँ खंड-1

16.ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाँ: पृ. 74, खंड-1

17. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमः फ्लौप 2 से उद्धृत

18. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमः पृ.63

19. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमः पृ.7

20. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमः पृ.16

21. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमःपृ.19

22. ममता कालियाः अँधेरे का तालाः पृ.32

23. ममता कालियाः अँधेरे का तालाः पृ.32

24. अज्ञेयः आत्मनेपदः पृ.256

25. राजेंद्र यादवः एक दुनिया समानांतरः पृ.67

26. ममता कालियाः अँधेरे का तालाःपृ.1

27. धीरेंद्र वर्माः हिंदी साहित्यकोशः पृ.431

28. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमःपृ.52

29. ममता कालियाः बेघरः पृ.100

30. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.79

31. ममता कालियाः काके दी हट्टीः पृ.59

32. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.29

33. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.31

34. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.125

35. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.130

36. ममता कालियाः अँधेरे का तालाः पृ.9

37. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.7

38. ममता कालियाः जाँच अभी जारी हैः पृ.131

39. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमःपृ.235

40. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.9

41. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.11

42. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.15

43. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.133

44. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.132

45. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.140

46. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.140

47. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.86

48. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमःपृ.33

49. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमःपृ.73

50. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.9

51. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.133

52. ममता कालियाः बोलनेवाली औरतः पृ.18

53. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमःपृ.161

54. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमःपृ.109

55. दंगल झाल्टेः उपन्यास समीक्षा के नये प्रतिमानः पृ.82

56. धीरेंद्र वर्माः हिंदी साहित्यकोश भाग-1, पृ.681

57. धीरेंद्र वर्माः हिंदी साहित्यकोश भाग-1, पृ.263

58. दंगल झाल्टेः उपन्यास समीक्षा के नये प्रतिमानः पृ.84

59. नंददुलारे वाजपेयीः रीति और शैलीः पृ.163

60. धीरेंद्र वर्माः हिंदी साहित्यकोश भाग-1, पृ.837

61. ममता कालियाः खुशकिस्मतः पृ.96

62. ममता कालियाः बेघरः पृ.21

63. ममता कालियाः अँधेरे का तालाः पृ.8

64. डॉ.सानप शामः ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतनाः पृ.90

65. ममता कालियाः तीन लघु उपन्यासः पृ.111

66. ममता कालियाः दौड़ः पृ.21

67. शोभा वेरेकरः साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों का शिल्प विकासः पृ.148

68. ममता कालियाः ममता कालिया की कहानियाः खंड-1, पृ.289

69. डॉ.सानप शामः ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतनाः पृ.226

70. ममता कालियाः दौड़ः पृ.9

71. डॉ.सानप शामः ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतनाः पृ.162

72. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.7

73. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.7

74. ममता कालियाः बेघरः पृ.31

75. ममता कालियाः दुक्खम सुक्खमःपृ.246-247

76. ममता कालियाः अँधेरे का तालाः पृ.7

77. डॉ.फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.123

78. डॉ. फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.123

79. ममता कालियाः नरक दर नरकः पृ.130

80. ममता कालियाः अँधेरे का तालाः पृ.11

81. डॉ. फैमिदा बीजापुरेः ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्वः पृ.189

6. उपसंहार

प्राचीन आचार्यों ने ठीक कहा है कि साहित्य समाज का दर्पण है। सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक-सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिवेशों के यथार्थ से एकाकार हो जाने पर रचना कालजयी बन जाती है। ममता जी एक ऐसी कथाकार है जो व्यक्तिगत एवं साहित्यिक रूप से विविध परिवेशों से जुड़ी रही है। ममता जी ने यथार्थ के धरातल पर ही अपने कथा साहित्य विविध परिवेशों एवं उनकी समस्याओं की अभिव्यक्ति की है। घटनाओं और परिस्थितियों का चयन भी उन्होंने वास्तविक जीवन-जगत से ही किया है।

परतंत्र भारत में जो-जो समस्याएँ थी वे सारी समस्याएँ स्वतंत्र भारत में भी थोड़े बदलाव के साथ मौजूद है। इनमें मँहगाई-गरीबी, बेकारी, पारिवारिक संघरेष एवं विघटन, नारी समस्याओं आदि का ममता जी के कथा साहित्य में यथार्थ चित्रण किया गया है।

6.1 ममताजी का कथा साहित्यः उपलब्धियाँ एवं समस्याएँ

ममता कालिया बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार हैं। उन्होंने अपने साहित्य में उपन्यास, कहानी नाटक-एकांकी, काव्य(हिंदी एवं अंग्रेजी) तथा संस्मरण आदि विधाओं का सफलता पूर्वक प्रयोग किया है। मौलिक कथ्य एवं निर्भीक अभिव्यक्ति के कारण उनका लेखन चर्चित रहा है।

ममता जी ने साठोत्तरी परिवेश को केंद्र में रखकर कथासाहित्य लेखन किया है।इनमें स्त्री-पुरूष संबंध, दांपत्य-संबंध, नारी-समस्याएँ एवं चेतना राजनीतिक विडंबनाएँ, सामाजिक विसंगतिया, आर्थिक विवशता आदि संदर्भों को यथार्थवादी ढंग से अभिव्यक्त किया है।

ममता जी ने सामाजिक परिवेश के अंतर्गत विवाह और उससे कथासाहित्य कई समस्याओं का अंकन अपने कथासाहित्य में किया है। उनमें प्रेमविवाह, असफल

प्रेमविवाह, दहेज प्रथा तथा अनमेल विवाह आदि महत्वपूर्ण है। इनमें आज दहेज का परिवेश विकृत हो गया हैं।

ममता जी के कथा साहित्य का प्रमुख विषय दहेज ही रहा है। इस दृष्टि से 'बिटिया', 'रिश्तों की बुनियाद', 'अकेलिया-दुकेलिया' आदि कहानियाँ तथा 'बेघर', 'नरक दर नरक' आदि उपन्यास में दहेज का भयावह रूप दिखाया गया है।

'अकेलियाँ-दुकेलियाँ' कहानी की नायिका जब भी अपने विवाह के बारे में सोचती, दिमाग में भक्-भक् एक लाले रोशनी जलती और वह ठंडी पड़ जाती। शायद अखबारों ने उसकी मानसिकता को विकृत कर डाला था। वह सोचती है-"कोई ऐसा दिन न था जब विवाहित नवयुवतियों को मार डाले जाने के सचित्र समाचार न छपते हो। अच्छे पढ़े-लिखे, रोज़गार लड़के एक अदद स्कूटर, फ्रिज या टी-वी के लिए अपनी पत्नी को जला मारने में कतई संकोच न करते।

मानव व परिवार का गहरा संबंध है। स्त्री-पुरूष के संयोग से परिवार का निर्माण होता है। नारी के बिना परिवार की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इतना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होने पर भी उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे उसका जीवन दुखमय बन जाता है।

ममता जी कथासाहित्य में दांपत्य जीवन में विघटन अत्याधिक रूप में परिलक्षित होता है। 'बेघर' उपन्यास में दैहिक संबंधों के कारण परमजीत-संजीवनीका प्रेम असफल हो जाता है। बाद में वह रमा से शादी कर लेता है। संजीवनी के सपनों की तो दुनिया ही उजड़ जाती है। दांपत्य या पारिवारिक जीवन की नीरसता यह अनुभव नरक दर नरद की उषा के लिए जीतना घातक सिद्ध हुआ उतना ही 'एक पत्नी के नोट्स' की कविता के लिए भी उतना ही अधिक पीड़ा दायक था।

कभी समाज, पुरूष प्रधान कहा जाता था लेकिन आज यह अवधारणा में परिवर्तन हुआ है। अब समाज अर्थ प्रधान होता जा रहा है आज युवा वर्ग में बेकारी बढ़ती जा रही हैं।

इनमें अनेक युवा अपराधी मनोवृत्ति के बनते जा रहे है। 'शॉल' कहानी की नायिका 'ननकी' ने तो बड़े प्रयत्न से अपनी बेकारी दूर करने के लिए एक स्कूल में चपरासी की नौकरी स्वीकार कर ली है। पर नौकरी अस्थायी होने के कारण बेकारी को लेकर वह चिंतित रहती है- "उसे स्कूल में काम करते ग्यारह साल हो गये थे, लेकिन उसकी नौकरी अभी भी कच्ची थी। कच्ची नौकरी कैसे पक्की होती है, यह ननकी को मालूम न था, बस, इतना मालूम था कि कच्ची नौकरी वालों को पक्की नौकरी वालों से आधा वेतन मिला करता है-"2

भारतीय समाज का धार्मिक परिवेश भी अनेक रूढ़ियों एवं अंधविश्वास से ग्रस्त हो गया है। समस्याग्रस्त इस परिवेश का यथार्थ चित्रण ममता जी ने अपने कथासाहित्य में विव्स्तार पूर्वक किया है।

ममता कालिया की कहानी 'आत्मरक्षा' में विमला प्रसव पीड़ा से अस्पताल जाती है और वहाँ बेहोश हो जाती है। तब पड़ोस में रहनेवाली स्त्री उसके पति को सुझाव देती है, "विमला को दाएँ पैर के जूते का तला सुँघा देने से अभी होश आ जायेगा। यह बेहोशी दूर करने की शर्तिया दवा है।"लेकिन जब विमला अपने शिशु के साथ दम तोड़ देती है तो पड़ोसी स्त्री रोते हुए कहती है- "विमला को दाएँ पैर के जूते का तला सुँघा दिया होता तो आज यह दिन न देखना पड़ता। इस दवा से कितने ही मुर्दे हँसते-खेलते उठ खडे हुए हैं।"3 ये ऐसी रूढ़ियाँ हैं जो मृत्यु पर भी स्पष्ट नहीं होती।

'बेघर' और 'दुक्खम-सुक्खम' उपन्यास में भी धार्मिक परिवेश को यथार्थ रूप से उभारा गया है।

शैक्षिक परिवेश का यथार्थ 'लड़के' कहानी तथा 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'अँधेरे का ताला' उपन्यासों में दिया गया है। वैश्विक परिवेश को दौड़ उपन्यास में विस्तारपूर्वक चित्रित किया गया है।

ममता जी के कथासाहित्य में अधिकांशतः महानगरीय, उच्चवर्गीय, मध्यवर्गीय नारियों की समस्याओं को उजागर किया गया है। लेकिन ग्रामिण नारियों का विषय अनछुआ ही रह गया है या उस पर कम ही विचार किया गया है।

भाषा एवं शैली की दृष्टि से ममता जी का कथा साहित्य उल्लेखनीय है। इनमें कथासाहित्य भी मुख्य विशेषता भाषिक यथार्थ है। ममता जी के 'दुक्खम-सुक्खम' उपन्यास की पृष्ठभूमि मथुरा एवं वृंदावन है। अतः इसी के अनुकूल संपूर्ण उपन्यास में ब्रजभाषा का ही अधिक प्रयोग किया गया है। इससे उपन्यास में स्वाभाविकता आ गई है।

अतीत में नारी का स्वरूप कुछ भी रहा हों किंतु वर्तमान में वह अपना भविष्य स्वयं बनाना चाहती हैं। "पूर्व में कुछ भी पाने के लिए वह पुरूष की दया की मोहताज रही है। अब वह सबकुछ स्वाभाविक रूप से पाना चाहती है। वह आगे किसी की मोहताज नहीं होना चाहती, दया का पात्र नहीं बनना चाहती, किसी की जूठन नहीं बनना चाहती। किसी के पैरों की जूती नहीं बनना चाहती। बनना चाहती है तो एक संपूर्ण व्यक्तित्व, जिसके अंश-अंश की नियता वह स्वयं हो। उस पर न कोई बंधन हो, कोई पूर्वाग्रह न इतिहास की कोई युक्ति।"

भूमंडलीकरण, संचार क्रांति एवं आर्थिक उदारीकरण के कारण ही नारी के परिवेश में बदलाव आया है। आज नारी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी हुई है। इस संदर्भ में अर्चना वर्मा लिखती है- "मुक्त होने के लिए स्त्री के पास अपना बटुआ होना चाहिए। स्त्री सार्वजनिक, सरकारी कार्यशक्ति का हिस्सा हुए बिना स्वतंत्र नहीं हो सकती है।"2

ममता कालिया के कथासाहित्य में भी नारी पात्र आर्थिक स्वतंत्रा को महत्व देते है और नारी मुक्ति के लिए इसको आवश्यक मानते है। आधुनिक युग में नित्यप्रति, प्रयोग क्षेत्र में रोज़गार की खोज करती, नारी सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस संदर्भ में दुक्खम-सुक्खम, बेघर, दौड़, एक पत्नी के नोट्स उपन्यासों तथा पयार्य नहीं, जिंदगी सात घंटे बाद की, साथ, बाल-बाल बचने वालें आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है।

'दुक्खम-सुक्खम' उपन्यास की 'भगवती' ने दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त कर अपने स्कूल एवं परिवार का नाम रोशन करती है। उसी साल वह कस्तूरबा विद्यालय में नौकरी प्राप्त कर लेती है लेकिन लाला नत्थीमल इस खबर से हक्काबक्का रह गये, क्योंकि उन्होंने कभी कल्पना ही नहीं की थी कि ऐसा जमाना भी आयेगा जब लड़की भी कमाई करने लगेली। आदत के अनुसार वे इसका विरोध करते है- "भग्गो काम पर नहीं जाएगी। लोग क्या कहेंगे? बनिया बिरादरी में तो नाक कट जायेगी।" लेकिन विद्यावती अपनी बेटी का साथ देती है। वह अपनी बेटी का वेतन डाकखाने में जमा करवा देती है।

वर्तमान समय में नारी ने हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। शिक्षा, राजनीति, सामाजिक आंदोलन खेल, फैशन आदि सभी जगह में वह कार्यरत है।

ममता कालिया ने दौड़ की 'स्टैला' डिमैलो एंटरप्रइस कापोरेशन में पार्टनर थी और उसकी कंपनी गुर्जर गैस कंपनी को कंप्युटर सप्लाई करती थी। 'एक पत्नी के नोट्स' की कविता लेक्चरर थी। 'लड़कियाँ' उपन्यास की 'लल्ली' विज्ञापन एजेंसी में काम करती है।'दुक्खम-सुक्खम' के मध्यवर्गीय परिवार की 'प्रतिभा' मॉडल का कार्य करती है। प्रतिप्रश्न कहानी की महिमा महागौरी पत्रिका में संपादिका है। उत्तर अनुराग की सूजी की अपना ब्यूटी पार्लर है। चिरकुमारी की दिशा यूनिवर्सिटी में जंतुविज्ञान की प्राध्यापिका है। ममता कालिया के ये

सभी नारी पात्र अलग-अलग व्यवसाय चुनकर अपने कार्यों को पूरे परिश्रम एवं ईमानदारी से करती है।

ममता कालिया ने संघर्षशील नारी का चित्रण किया है। वह भाग्य के सहारे नहीं रहती। वह अपना भाग्य बनाने में अब संक्षम है। दुक्खम-सुक्खम, दौड़, बेघर, नरक-दर-नरक, एक पत्नी के नोट्स और कहानियों के पात्र संघर्ष शील है।

दुक्खम-सुक्खम उपन्यास में विद्यावती का पूरा जीवन संघर्षपूर्ण रहा, लेकिन विद्यावती ने कभी हार नहीं मानी। कभी वह अपने लिए कभी अपने बच्चों के लिए, कभी गांधीवादी आदर्शों के लिए संघर्ष करती रही। गांधी जी की अस्ती विसर्जन के समय पति के मना करने के बावजूद वह, जाने को तैयार हो जाती है। उसका कहना है, "आज मुझे मत रोकों, नहीं तो मैं बावली हो जाऊँगी।"

ममता जी ने ऐसे नारी पात्रों की सृजन भी कई है जिनमें शिक्षा प्राप्त करने के प्रति ललक है। दुक्खम-सुक्खम की लीला इसका उत्तम उदाहरण है फर्क नहीं कहानी की प्रमुख पात्र लड़की की पढ़ाई में बहुत रूचि रखती है।

आर्थिक स्वतंत्रता, व्यवसायिक दक्षता संघर्षशीलता एवं शिक्षा से नारी जीवन में एक नई चेतना आयी है, वे आत्मनिर्भर बनी है। अतः नारी के जीवन में जो बदलाव आया है उसका यथार्थ चित्रण ममता कालिया के कथासाहित्य में किया है।

इस प्रकार ममता जी ने अपने कथासाहित्य में सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक परिवेश की अनेक समस्याओं का यथार्थ रूप से चित्रण के साथ ही इनसे सावधान रहने की चेतावनी भी देती है।

परिशिष्ट - I

सहायक ग्रंथ - सूची

मूल ग्रंथ

(i) कहानी-संग्रह

क्र.सं	लेखिका	ग्रंथ	प्रकाशन	सन्	संस्करण
1.	ममता कालिया	छुटकारा	लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली	1969	प्रथम
2.	ममता कालिया	एक अदद औरत	लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली	1975	प्रथम
3	ममता कालिया	सीट नंबर छह	लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली	1976	प्रथम
4	ममता कालिया	प्रतिदिन	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नयी दिल्ली	1983	प्रथम
5	ममता कालिया	उसका यौवन	लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली	1985	प्रथम
6	ममता कालिया	जाँच अभी जारी	लोकभारती प्रकाशन,	1998	प्रथम

		है	नयी दिल्ली		
7	ममता कालिया	बोलने वाली औरत	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	-	प्रथम
8	ममता कालिया	मुखौटा	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2003	प्रथम
9	ममता कालिया	निर्मोही	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2004	प्रथम
10	ममता कालिया	पच्चीस साल की लड़की	लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली	2006	प्रथम
11	ममता कालिया	थिएटर रोड़ के कौवें	पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रा.लि. नयी दिल्ली	2006	प्रथम
12	ममता कालिया	काके दी हट्टी	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2010	प्रथम
13	ममता कालिया	ममता कालिया की कहानियाँ खंड-1	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2005	प्रथम
14	ममता कालिया	ममता कालिया की कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2006	प्रथम

ii) उपन्यास-साहित्य

क्र.सं	लेखिका	ग्रंथ	प्रकाशन	सन्	संस्करण
1	ममता कालिया	बेघर	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	1971	प्रथम
2	ममता कालिया	नरक दर नरक	किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली	1975	प्रथम
3	ममता कालिया	प्रेम कहानी	किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली	1980	प्रथम
4	ममता कालिया	लड़कियाँ	किताबघर प्रकाशन,	1987	प्रथम

			नयी दिल्ली		
5	ममता कालिया	एक पत्नी के नोट्स	किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली	1997	प्रथम
6.	ममता कालिया	दौड़	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2000	प्रथम
7	ममता कालिया	दुक्खम सुक्खम	भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली	2009	प्रथम
8	ममता कालिया	अँधेरे का ताला	हितकारी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2010	प्रथम
9	ममता कालिया	तीन लघु उपन्यास	किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली	2007	प्रथम

(iii) नाटक तथा एकांकी - संग्रह

क्र.सं	लेखिका	ग्रंथ	प्रकाशन	सन्	संस्करण
1	ममता कालिया	आत्मा अठन्नी का नाम है	-	1977	प्रथम
2	ममता कालिया	यहाँ रोना मना है	-	1989	प्रथम
3	ममता कालिया	आप न बदलेंगे	-	1989	प्रथम

(iv) कविता - संग्रह

क्र.सं	लेखिका	ग्रंथ	प्रकाशन	सन्	संस्करण
1	ममता कालिया	एट्रिव्यूट टू पापा एण्ड अदर पोयमस्	-	1978	प्रथम
2	ममता कालिया	खाँटी घरेलू औरत	-	2004	प्रथम

(v) बाल - साहित्य

क्र.सं	लेखिका	ग्रंथ	प्रकाशन	सन्	संस्करण
1	ममता कालिया	ऐसा था बजरंगी	-	-	प्रथम

परिशिष्ट - II

आलोचनात्मक-ग्रंथ

क्र.सं	लेखक	ग्रंथ	प्रकाशन	वर्ष	संस्करण
1	अज्ञेय	आत्मनेपद	भारतीय वाराणसी	1960	प्रथम
2	डॉ. अशोक भाटिया	समकालीन हिंदी कहानी का इतिहास(सन् 1971-2000)	भावना प्रकाशन, कानपुर	2003	प्रथम
3	डॉ.आदित्यप्रसाद त्रिपाठी	औपन्यासिक समीक्षा और समीक्षाएँ	अनुभव प्रकाशन, कानपुर	1981	प्रथम
4	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	हिंदी साहित्य का इतिहास	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	2004	प्रथम
5	डॉ. आनंद शर्मा	उपन्यासकारःकमलेश्वर का समाज शास्त्रीय निष्कर्ष	नयी दिल्ली, प्रकाशन	2002	प्रथम
6	डॉ.इशरत खान	महिला उपन्यासकार-एक मूल्यांकन	विद्या प्रकाशन, कानपुर	2014	प्रथम
7	उमेश शास्त्री	हिंदी साहित्य का	-	-	प्रथम

		निबंधात्मक इतिहास			
8	कार्ल कैपलर	संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी	-	-	प्रथम
9	किरणबाला अरोड़ा	साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में नारी	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर	1990	प्रथम
10	कृष्णा सोबती	सोबती एक सोहबत	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नयी दिल्ली	1998	प्रथम
11	दंगल झाल्टे	समीक्षा के नये प्रतिमान	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2014	प्रथम
12	घनश्याम दास भुतड़ा	समकालीन हिंदी में नारी के विविध रूप	-	-	प्रथम
13	डॉ.दिनेशभाई किशोरी	हिमांशु जोशी की कहानियों के परिवेश का अनुशीलन	ज्ञान प्रकाशन, कानपुर	2014	प्रथम
14	डॉ.धीरजभाई वणकर	कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ	ज्ञान प्रकाशन, कानपुर	2010	प्रथम
15	नंददुलारे वाजपेयी	रीति और शैली	नयी दिल्ली, प्रकाशन	2007	प्रथम
16	डॉ.नामवर सिंह	इतिहास और आलोचना	लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली	1973	प्रथम
17	पुरूषोत्तम नारायण अग्रवाल	नालंदा अघतन कोष	-	-	प्रथम

18	डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा	हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान	अभय प्रकाशन, कानपुर	1990	प्रथम
19	प्रेमचंद	उपन्यास नामक लेख-गद्य काव्य-तरंगिनी	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	2000	प्रथम
20	प्रभा वर्मा	हिंदी उपन्यासः समकालीन परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप	-	1990	प्रथम
21	डॉ.फैमीदा बीजापुरे	ममता कालियाःव्यक्तित्व एवं कृतित्व	विनय प्रकाशन, हसपुर, कानपुर	2004	प्रथम
22	डॉ.भोलानाथ तिवारी	भाषा विज्ञान	लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली	-	प्रथम
23	डॉ.मंजुषा	भीष्म साहनी के उपन्यासों में यथार्थवादी परिदृश्य	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	-	प्रथम
24	मृदुला गर्ग	समागम	ज्ञान प्रकाशन, कानपुर	1975	प्रथम
25	राजश्री अग्रवाल	समाज दर्शन की भूमिका	अभय प्रकाशन, कानपुर	-	प्रथम
26	राजेद्र सिंह चौहान	मालती जोशी का कथात्मक साहित्य	समता प्रकाशन, कानपुर	2005	प्रथम
27	रोहिताश्व	समकालीन कविता-सौंदर्य शास्त्र के परिप्रेक्ष्य में	-	-	प्रथम
28	डॉ.लहूरामराव	ममता कालिया के	पुजा	2016	प्रथम

	मुंडे	उपन्यासों में चित्रित समस्याएःविविध आयाम	पब्लिकेशन,		
29	डॉ.विद्या शशिशेखर शिंदे	दौड़ में भूमंडलीकरण की सार्थकता का यथार्थ चित्रण	ए.बी एस पब्लिकेशन, वाराणसी	2012	प्रथम
30	विजय पड़ोडे	जैनेंद्र के उपन्यास-साहित्य में स्त्री-पुरूष संबंध	-	-	प्रथम
31	डॉ.विपिन गुप्त	हिंदी नाटक में समसामयिक परिवेश	-	-	प्रथम
32	श्यामसुंदर दास	साहित्यालोचन	-	-	प्रथम
33	शालिनी एन.सी	भीष्म साहनी के उपन्यासों में चित्रित भारतीय सामाजिक और राजनैतिक परिवेश	-	2013	प्रथम
34	शशिकला त्रिपाठी	उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री	-	-	प्रथम
35	डॉ.शोभा वेरेकर	साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में स्त्री	पीयूष प्रकाशन दिल्ली	2001	प्रथम
36	सत्यकाम	आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रेमचंद	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1994	प्रथम
37	सरिता वाशिष्ठ	निर्मल वर्मा की कहानियों का विदेशी परिवेश	-	-	प्रथम

38	डॉ.सानप शाम	ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतना	विकास प्रकाशन, कानपुर	2010	प्रथम
39	डॉ.सीमा शर्मा	ममता कालिया के कथासाहित्य में नारी चेतना	अनुसधान पब्लिकेशन,	2016	प्रथम
40	सुरेश छींगड़ा	हिंदी कहानी-दो दशक	-	-	प्रथम
41	डॉ.सोनिया सिरसाट	राजेंद्र यादव के कथासाहित्य का मनोविश्लेषणात्मक विवेचन	-	-	प्रथम
42	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिंदि उपन्यास और यथार्थवाद	हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी	1965	प्रथम
43	डॉ.ज्ञानवती अरोड़ा	समकालीन हिंदी कहानी यथार्थ के विविध आयाम	-	-	प्रथम

परिशिष्ट - III

पत्र - पत्रिकाएँ

हंस	मधुमती
आजकल	समीक्षा
पूर्वाग्रह	कथाक्रम
आलोचना	कथादेश
साहित्य धर्मिता	नवभारत टाइम्स
समकालीन सृजन	साहित्य वार्षिकी

परिशिष्ट - IV

कोश-ग्रंथ

1	कालिका प्रसाद	बृहत हिंदी कोश ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
2	धीरेंद्र वर्मा	हिंदी साहित्य कोश भाग -1ज्ञानमंडल लिमिटेड,वाराणसी
3	Readers Digest	Universal Dictionary
4	रामचंद्र वर्मा	मानक हिंदी कोश
5	वामन शिवराम	संस्कृत – हिंदी कोश
6	हरदेव बाहरी	संक्षिप्त अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश
7	Harry Shaw	Dictionary of Literature Terms
8	फादर कामिल बुल्के	अंग्रेजी - हिंदी कोश